

नौकरी की किताब

सत्र 1: पुस्तक के बारे में व्याख्या संबंधी समस्याएं और गलत विचार

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 1 है: पुस्तक के बारे में व्याख्या संबंधी समस्याएं और गलत विचार।

परिचय [00:24-2:06]

नमस्ते, मैं जॉन वाल्टन हूँ। मैं व्हीटन कॉलेज में ओल्ड टेस्टामेंट पढ़ाता हूँ। मैं लगभग 15 वर्षों से यहाँ हूँ। इससे पहले, मैंने मूडी बाइबल इंस्टीट्यूट में पढ़ाया, जहाँ मैंने 20 वर्षों तक पढ़ाया। मैंने अपनी पीएच.डी. की। सिनसिनाटी में हिब्रू यूनिवर्सिटी कॉलेज में काम किया, जिसने मुझे उन चीजों के लिए अच्छी तरह से तैयार किया जो मैं करता हूँ। मूलतः, मैं एक टेक्स्ट व्यक्ति हूँ; यानी, मैं ग्रंथों का विश्लेषण करता हूँ, चाहे वह हिब्रू ग्रंथ हों या प्राचीन निकट पूर्व के ग्रंथ हों। मैं बाइबल को बेहतर ढंग से समझने में हमारी मदद करने के लिए उन्हें एक साथ लाने का प्रयास करता हूँ।

हम एक साथ नौकरी की पुस्तक को देखने जा रहे हैं। नौकरी की किताब एक बहुत ही कठिन किताब है। यह अद्वितीय है, न केवल पुराने नियम के पन्नों में बल्कि संपूर्ण प्राचीन विश्व में। नौकरी की किताब जैसा कुछ भी नहीं है। हालाँकि निश्चित रूप से, कुछ चीजें हैं जो किसी न किसी बिंदु पर इसके साथ ओवरलैप होती हैं।

हम पुस्तक को समग्र रूप से समझने का प्रयास करेंगे, साथ ही पुस्तक को इसके विभिन्न भागों में भी समझने का प्रयास करेंगे। तो हम इसी पर काम करेंगे जब हम नौकरी की किताब के बारे में एक साथ सोचेंगे और यह हमें क्या प्रदान करती है।

तो चलो शुरू हो जाओ। मैं उन कुछ समस्याओं के बारे में बात करके शुरुआत करना चाहता हूँ जिनका सामना हम नौकरी की किताब से निपटते समय करते हैं। चारों ओर व्याख्या की समस्याएँ हैं, और गलत विचार हैं। अय्यूब की किताब में कुछ ऐसी बातें हैं जिनके बारे में लोग सोचते हैं जो उन्हें शुरू से ही गलत रास्ते पर ले जाती हैं। इसलिए, हम इस श्रृंखला की शुरुआत में ही उन्हें चुनना चाहते हैं और यह सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहते हैं कि हमारा लक्ष्य सही दिशा में है।

अय्यूब क्या कहता है? [2:06-3:32]

निपटने वाली पहली समस्या यह है कि पुस्तक वास्तव में क्या कहती है? अय्यूब की पुस्तक में हिब्रू पुराने नियम में सबसे कठिन हिब्रू है। यह एक समस्या रही है। ऐसे कई शब्द हैं जो हिब्रू बाइबिल में केवल एक बार आते हैं जिनका सामना हमें जॉब की पुस्तक में मिलता है। कठिन वाक्यविन्यास है। शब्दों के अर्थ समझने और उनके प्रयोग में तमाम तरह की दिक्कतें आती हैं। तो, हमारा पहला काम एक बहुत ही कठिन हिब्रू किताब का अनुवाद करना है।

एक बार भी हम अनुवाद की बात पर पहुँच जाएँ तो हमें साहित्य के बारे में प्रश्न पूछना ही पड़ेगा। लेखक ने पुस्तक को कैसे पैकेज किया? इसे कार्यान्वित करने के लिए आपने इसे एक साथ कैसे रखा?

कुछ लोगों ने सोचा है कि नौकरी की किताब एक पैचवर्क रजाई है, कि कुछ हिस्से मूल रूप से नहीं थे, और फिर समय के साथ धीरे-धीरे अलग-अलग हिस्से जोड़े गए। और कभी-कभी, वे यह भी सोचते हैं कि वे हिस्से एक-दूसरे के विरोधाभासी हो सकते हैं। मैं उस राय का नहीं हूँ। मैं अय्यूब को एक एकीकृत संपूर्ण सुसंगत पाठ के रूप में सोचता हूँ, लेकिन यह शाब्दिक रूप से क्या कर रहा है, इस पर विचार करने के लिए कुछ काम करना पड़ता है। लेखक ने इस पुस्तक को किस प्रकार एक साथ रखा है ताकि यह काम कर सके? और इसलिए, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे हम उनमें से कुछ पर नज़र डालेंगे।

दार्शनिक/धार्मिक मुद्दे [3:32-4:32]

अगली चीज़ जिससे हमें निपटना है वह दार्शनिक मुद्दों का संपूर्ण विचार है; पुस्तक जो धार्मिक बिंदु बता रही है। हम अच्छी तरह से जानते हैं कि नौकरी की किताब में, कुछ वक्ता गलत हैं। वे गलत होने के लिए ही हैं। अय्यूब के दोस्तों के पास सच्चाई नहीं है। कभी-कभी उनके पास कुछ सच्चाई होती है। कभी-कभी उनके पास काफी सच्चाई भी होती है, लेकिन वे जो कर रहे हैं वह स्वाभाविक रूप से समस्याग्रस्त है। और इसलिए, हमें यह चुनने में सक्षम होना होगा: पुस्तक का धर्मशास्त्र कैसे काम करता है? यह जो करता है वह कैसे करता है? और इसलिए दार्शनिक/धार्मिक पहलू हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

एक बार जब हम वहां पहुंच जाते हैं, तो हमें इस विषय पर आगे बढ़ना होगा, ठीक है, पुस्तक के धर्मशास्त्र के लिए ठीक है, ईसाई धर्मशास्त्र के बारे में - आज के ईसाइयों के बारे में क्या? हमें किताब कैसे पढ़नी चाहिए? इसमें हमें क्या देना है?

झूठी उम्मीदें [4:32-5:42]

अब, पुस्तक के बारे में कुछ ग़लत अपेक्षाएँ पुस्तक के वितरण को कठिन बना देती हैं। कुछ लोग यह उम्मीद करते हुए किताब पढ़ेंगे कि यह एक ऐसी किताब होगी जो उन्हें पीड़ा के बारे में बताएगी और वे कैसे समझ सकते हैं कि वे क्यों पीड़ित हैं। और वे पुस्तक के अंत तक पहुंचते हैं, और वे भगवान के भाषण पढ़ते हैं, और वे हैरान हो जाते हैं। यहाँ क्या चल रहा है? और फिर अय्यूब को ये सारी चीज़ें वापस मिल जाती हैं, और किताब ख़त्म हो जाती है।

लोग बहुत असंतुष्ट महसूस करते हैं क्योंकि वे कहते हैं कि इसने मुझे कुछ नहीं बताया। वितरित करने के लिए कौन सी पुस्तक उपलब्ध है? यदि आप यह सोचकर अय्यूब की किताब की ओर जाते हैं कि आपको इस बात का उत्तर मिल रहा है कि दुनिया में या आपके जीवन में दुख क्यों है, तो आप ग़लत कारण से जा रहे हैं। और आप निराश होने वाले हैं। यह आपको यह बताने वाला नहीं है।

1) नौकरी में परीक्षण हैं। नौकरी पर मुकदमा नहीं चल रहा है [5:42-7:48]

तो, आइए उन कुछ चीज़ों पर एक नज़र डालें जो किताब करती है और जो नहीं करती है। सबसे पहले, अय्यूब के पास परीक्षण हैं। नौकरी पर मुकदमा नहीं चल रहा है। अय्यूब सोचता है कि उस पर मुकदमा चल रहा है। उसके दोस्तों को लगता है कि उस पर मुकदमा चल रहा है, लेकिन किताब शुरू से ही यह स्पष्ट कर देती है कि अय्यूब पर मुकदमा नहीं चल रहा है। आखिरकार, यह किस प्रकार का परीक्षण होगा जब उसे पहले कुछ छंदों में दोषमुक्त कर दिया जाएगा? और जब प्रमुख पात्र पूरे रास्ते इस बात पर ज़ोर देते रहे कि यहाँ समस्या अय्यूब नहीं है। इसलिए यद्यपि अय्यूब पर परीक्षण चल रहे हैं, फिर भी वह परीक्षण में नहीं है।

अय्यूब सोचता है कि वह एक आपराधिक मामले में प्रतिवादी है, उस पर ग़लत काम करने का आरोप लगाया गया है, और उसे इसके लिए दंडित किया जा रहा है। और इसलिए, उसे ऐसा लगता

है जैसे वह उस मामले में प्रतिवादी है जहां उस पर मुकदमा चल रहा है। अय्यूब उसे बदलने का प्रयास करता है। वह इसे स्थापित करने का प्रयास करता है ताकि वह एक दीवानी मामले में वादी बन सके; यानी, वह दावा करता है कि उसके साथ अन्याय हुआ है, कि उसके साथ अनुचित व्यवहार किया गया है, और उसे कुछ मुआवजा मिलना चाहिए - दिशा में बदलाव। इसलिए, वह चीजों को बदलने की कोशिश करता है ताकि वह प्रतिवादी नहीं बल्कि वादी बन जाए। यह रणनीति में एक दिलचस्प छोटा बदलाव है। लेकिन वास्तव में, दोनों में से कोई भी सही नहीं है। हम पाठकों के रूप में इसका पता लगाते हैं, और वैसे, अय्यूब को कभी इसका पता नहीं चलता। पाठकों के रूप में हमें पता चलता है कि अय्यूब बचाव पक्ष का मुख्य गवाह है। इसलिए, वह जो सोचता है या उसके आस-पास के लोग सोचते हैं कि वह उसमें है, उससे उसकी एक अलग भूमिका है। इसलिए, याद रखें कि अय्यूब के पास परीक्षण हैं, लेकिन वह परीक्षण में नहीं है।

2) नौकरी, नौकरी के बारे में नहीं है। यह भगवान के बारे में है [7:48-9:31]

दूसरा बिंदु, कुछ लोग इस पुस्तक से शुरुआत करते हैं और वे कहते हैं कि यह नौकरी की पुस्तक है। और इसलिए, वे, स्वाभाविक रूप से, कल्पना करते हैं कि पुस्तक अय्यूब के बारे में है; यह किताब अय्यूब के बारे में है। यह। किताब भगवान के बारे में है। अय्यूब एक मुख्य पात्र है। अय्यूब एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, लेकिन यह पुस्तक अय्यूब से अधिक ईश्वर के बारे में है। पुस्तक के अंत में, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम अय्यूब के बारे में क्या सोचते हैं; यह मायने रखता है कि हम ईश्वर के बारे में क्या सोचते हैं। इसलिए, जैसे-जैसे हम किताब के पास आते हैं, याद रखें कि हम इस बात की तलाश कर रहे हैं कि यह हमें ईश्वर के बारे में क्या सिखाती है, न कि यह हमें अय्यूब के बारे में क्या सिखाती है।

हमें यह सोचकर पुस्तक के पास नहीं जाना चाहिए कि अय्यूब एक आदर्श के रूप में खड़ा होगा, या तो पीड़ा के लिए, धैर्य के लिए, बातचीत के लिए, या किसी भी चीज़ के लिए एक आदर्श। नौकरी यहां कोई रोल मॉडल नहीं है। अय्यूब एक तरह से अपने से बड़ी किसी चीज़ में फँस गया है, और उसकी प्रतिक्रियाएँ कभी अच्छी होती हैं, कभी बुरी; कभी-कभी यह बताना कठिन होता है। लेकिन यह किताब यहां नहीं है ताकि अय्यूब हमारे लिए एक आदर्श बन सके। यह एक ज्ञान पुस्तक है,

और यह हमें ज्ञान देने के लिए है, और ज्ञान अंततः ईश्वर के बारे में है। तो वह बिंदु संख्या दो थी; यह अय्यूब से अधिक परमेश्वर के बारे में है।

3) नौकरी ईश्वर के न्याय के बारे में नहीं है; यह ईश्वर की बुद्धि के बारे में है [9:31-13:05]

नंबर तीन, हम अक्सर यह सोचकर किताब पढ़ते हैं कि इससे हमें यह समझने में मदद मिलेगी कि ईश्वर का न्याय दुनिया में कैसे काम करता है। यह ईश्वर के न्याय के बारे में एक पुस्तक है जो ईश्वर के न्याय की रक्षा करना चाहती है। और फिर, मैं कहूंगा, नहीं, मुझे नहीं लगता कि ऐसा होता है। यह वह नहीं है जो यह कर रहा है। आप देखेंगे कि अंत में, जब ईश्वर अपनी बात कहता है, तो वह अपने न्याय की रक्षा नहीं करता है। वह न्याय के संदर्भ में सामने आए परिदृश्य की कभी व्याख्या नहीं करते। यदि आप अय्यूब की पुस्तक से कुछ पाने के लिए कुछ देख रहे हैं जो वास्तव में आपको ईश्वर के न्याय को समझने में मदद करता है, तो फिर, आप निराश होकर चले जाएंगे क्योंकि पुस्तक ईश्वर के न्याय की व्याख्या या बचाव नहीं करती है। परमेश्वर के विरुद्ध अय्यूब के आरोप परमेश्वर के न्याय से संबंधित हैं। पीड़ा के बारे में हमारे प्रश्न अक्सर ईश्वर के न्याय से संबंधित होते हैं, लेकिन नौकरी की पुस्तक ईश्वर के न्याय का बचाव नहीं करती है। इसके बजाय, यह उसकी बुद्धिमत्ता का बचाव करता है। यह ज्ञान ग्रंथ है, न्याय ग्रंथ नहीं। यह परमेश्वर की बुद्धि का बचाव करता है क्योंकि हम इसी पर भरोसा करते हैं।

यदि हम सोचते हैं कि यह उसके न्याय की रक्षा करता है, तो हम, हर मोड़ पर, औचित्य साबित करने, किसी तरह समझाने, बचाव करने की कोशिश कर रहे हैं। और उस सब के लिए, हमें सारी जानकारी की आवश्यकता होगी। मेज पर मौजूद सारी जानकारी के बिना न्याय नहीं किया जा सकता। यदि हम अदालत में किसी फैसले और किसी प्रसिद्ध मुकदमे के बारे में सुनते हैं, तो हमारे सामने बैठकर इस बारे में बात करने से कोई फायदा नहीं है कि क्या हमें लगता है कि न्याय हुआ या नहीं, अगर हमारे सामने सभी सबूत नहीं हैं। जज के पास सबूत हैं। जूरी के पास सबूत हैं, लेकिन हमारे पास शायद ही ऐसा हो। और इसलिए, यह निष्कर्ष निकालना मुश्किल है कि न्याय हुआ या नहीं हुआ। और भगवान के साथ, हमें कभी भी सारी जानकारी नहीं मिल सकती। हम इस स्थिति में नहीं हैं कि इस बारे में बात करने की कोशिश करें कि ईश्वर न्यायकारी है या नहीं।

वास्तव में, उस संपूर्ण फ्रेमिंग में समस्याएँ हैं। जिस क्षण हम कहते हैं कि ईश्वर न्यायकारी है, हमारा तात्पर्य यह है कि न्याय नामक कोई बाहरी श्रेणी है, और ईश्वर उसके अनुरूप है। धार्मिक रूप से, ईश्वर किसी भी चीज़ के अनुरूप नहीं है क्योंकि इससे आकस्मिकता का पता चलता है कि किसी तरह उसके बाहर कुछ है जिसे उसे मापना है। और यह भगवान के बारे में सच नहीं है। ईश्वर आकस्मिक नहीं है। तो, यह कहना कि ईश्वर महज़ एक बाहरी प्रकार का मानक हो सकता है। यह कहना बेहतर होगा कि न्याय ईश्वर से आता है। लेकिन फिर, हम कभी यह पता नहीं लगा पाते कि ये सभी मानदंड कैसे काम करते हैं। तो, उस संबंध में, पुस्तक न्याय के बारे में नहीं है। यह ईश्वर की बुद्धि के बारे में है।

4) नौकरी दुख के बारे में नहीं है; यह इस बारे में है कि ईश्वर के बारे में कैसे सोचा जाए जब हम पीड़ित होते हैं [13:05-14:33]

नंबर चार, किताब का इरादा हमें यह सिखाने का नहीं है कि दुख के बारे में कैसे सोचा जाए। दुख हैं, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम इसे किस स्तर पर अनुभव करते हैं या इसका निरीक्षण करते हैं, यह कठिन है। हमें स्पष्टीकरण पसंद आएगा, लेकिन यह पुस्तक हमें यह जानने में मदद करने के लिए नहीं बनाई गई है कि दुख के बारे में कैसे सोचा जाए। यह हमें यह जानने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है कि जब हम पीड़ित हों तो भगवान के बारे में कैसे सोचें। वास्तव में हमें यही जानने की जरूरत है। मैं भगवान को कैसे जवाब दूँ? क्या हम उसे दोष देते हैं? क्या हम उससे नाराज़ हो जाते हैं? क्या हम उसकी उपेक्षा करते हैं? क्या हम उससे दूर भागते हैं? हम क्या करते हैं? जब दुनिया हमारे चारों ओर गलत हो रही है तो हम भगवान के बारे में कैसे सोचते हैं? जब हमारा जीवन ढलान की ओर जा रहा है, हर चीज़ दक्षिण की ओर जा रही है; हम परमेश्वर को कैसे प्रत्युत्तर दें?

आखिरकार, यह सोचना आसान है: उसे इसे ठीक करने में सक्षम होना चाहिए। अय्यूब और उसके दोस्तों के बारे में सोचना आसान है : क्या हम इसके लायक हैं? यदि नहीं, तो क्या हो रहा है? फिर, यह पुस्तक हमें यह समझने में मदद करने के लिए है कि जब हम पीड़ित हों तो ईश्वर के बारे में कैसे

सोचें। और यह उस बिंदु पर वापस जाता है जिसे हमने पहले कहा था कि यह ईश्वर के बारे में है, अय्यूब के बारे में नहीं।

5) नौकरी उत्तर पाने के बारे में नहीं है; यह भगवान पर भरोसा करने के बारे में है [14:33-16:08]

बिंदु संख्या पाँच, बहुत बार, हम उत्तर पाने की कोशिश करने के लिए अय्यूब की पुस्तक पढ़ते हैं, ऐसे उत्तर जो हमारी अपनी पीड़ा को समझा सकते हैं; ऐसे उत्तर जो दुनिया में हमारे द्वारा देखे जाने वाले कष्टों को समझा सकते हैं। दुनिया इतनी कठिन जगह क्यों है? और इसलिए, हम सोचते हैं कि नौकरी की पुस्तक हमें उत्तर दे सकती है। हम आशा करते हैं कि। हम वास्तव में उत्तर चाहेंगे। और इसलिए, हम उत्तर की तलाश में नौकरी की किताब की ओर जाते हैं। यहीं समस्या है क्योंकि यह पुस्तक उत्तरों की तुलना में विश्वास करने के बारे में अधिक है। यदि आप सभी उत्तर जानते हैं तो आपको भरोसा करने की आवश्यकता नहीं है। जब हम नहीं जानते कि क्या हो रहा है तो भरोसा करना ईश्वर के प्रति हमारी प्रतिक्रिया है। जब हम स्वयं चीजों का पता नहीं लगा सकते हैं, तो भरोसा करना हमारी अज्ञानता और हमारे भ्रम की प्रतिक्रिया है। तब हमें भगवान की ओर मुड़ने की जरूरत है। अय्यूब की पुस्तक उत्तर नहीं देगी। यह हमें भरोसा करने के लिए प्रेरित करेगा।

6) नौकरी इस बारे में नहीं है कि कष्ट क्यों या कैसे उठाया जाए; यह हमारी धार्मिकता के बारे में है [16:08-17:24]

अंत में, नंबर छह, यह पुस्तक इस बारे में अधिक है कि धार्मिकता क्या है, न कि इस बारे में कि हम कष्ट क्यों सहते हैं। याद रखें कि पहले अध्याय में ही जो प्रश्न मेज पर रखा गया है, वह ईश्वर से पूछा गया है: क्या अय्यूब बिना कुछ लिए ईश्वर की सेवा करता है? यह वास्तव में एक प्रश्न है जो इस बारे में पूछता है कि अय्यूब की धार्मिकता को क्या प्रेरित करता है। क्या उसकी धार्मिकता सचमुच परीक्षा में खरी उतरती है? आखिरकार, यदि अय्यूब वैसा ही व्यवहार कर रहा है जैसा वह करता है, आप जानते हैं, नेक, ईमानदार, बुराई से दूर रहना, यदि वह यह सब सिर्फ इसलिए कर रहा है क्योंकि वह इससे समृद्धि और इनाम पाने की उम्मीद करता है, तो यह टिकने वाला नहीं है जब सारे अच्छे लाभ छीन लिए जाते हैं; वह तथाकथित धार्मिकता बस हवा में घुलने वाली है।

अय्यूब का संदेश [17:24-19:12]

तो, यह धार्मिकता के बारे में एक किताब है। यह हमें नहीं बताता कि कैसे कष्ट सहना है। यह हमें कष्ट होने पर भी धर्मी बने रहने की चुनौती देता है। यह हमें धार्मिक होने की चुनौती देता है क्योंकि धार्मिकता ही हमारे जीवन की विशेषता होनी चाहिए। यह हमें ईश्वर के प्रति वफादार रहने के लिए कहता है क्योंकि ईश्वर ईश्वर है इसलिए नहीं कि वह उदार है। भगवान कोई वेंडिंग मशीन नहीं है। और इसलिए, पुस्तक में यहाँ प्रश्न यह है कि क्या चीज़ लोगों को धर्मी बनने के लिए प्रेरित करती है। पीड़ा केवल वह तरीका है जिससे अय्यूब की पुस्तक में धार्मिकता का परीक्षण किया जाता है। पीड़ा यह जानने के लिए है कि अय्यूब की धार्मिकता वास्तविक है या नहीं।

इसलिए, जब तक हम किताब के अंत तक पहुँचते हैं, हमें यह पता लगाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि मैं पीड़ित क्यों हूँ? हमें यह जानने की आशा करनी चाहिए: क्या मैं सचमुच धर्मी हूँ? क्या मैं ग़लत कारणों के बजाय सही कारणों से धर्मी हूँ? क्या मेरी धार्मिकता कष्ट की कसौटी पर खरी उतरती है? किताब हमें यही जानने में मदद करेगी। अय्यूब के साथ वास्तव में यही हो रहा है।

समीक्षा: छह बिंदु [19:12-21:10]

तो, आइए मैं इन छह बिंदुओं की समीक्षा करता हूँ। अय्यूब पर मुक़दमे चल रहे हैं, लेकिन उस पर मुक़दमा नहीं चल रहा है। यह पुस्तक अय्यूब से अधिक ईश्वर के बारे में है। यह पुस्तक ईश्वर के न्याय से अधिक उसकी बुद्धि के बारे में है। यह किताब इस बारे में नहीं है कि दुख के बारे में कैसे सोचा जाए, बल्कि यह है कि जब हम दुख में हैं तो भगवान के बारे में कैसे सोचा जाए। यह पुस्तक उत्तरों से अधिक विश्वास के बारे में है। और यह पुस्तक इस बारे में अधिक है कि धार्मिकता क्या है, न कि इस बारे में कि हम कष्ट क्यों सहते हैं।

ये छह बिंदु हमें झूठी धारणाओं, ग़लतफहमियों और झूठी उम्मीदों को दूर करने में मदद करेंगे जो हमें अय्यूब की पुस्तक में हो सकती हैं। ये छह प्रश्न हमें इस बात पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करेंगे कि पुस्तक वास्तव में क्या कर रही है। हम और अधिक स्पष्ट रूप से देख पाएंगे कि यह उन चीज़ों को कैसे कर रहा है। उम्मीदें महत्वपूर्ण हैं। यदि हम जीवन से, एक-दूसरे से, ईश्वर से, संसार से झूठी अपेक्षाएँ रखते हैं; यदि हम झूठी उम्मीदें स्थापित करते हैं, तो हमारा निराश होना तय है। इसलिए, हमें यह सोचने की ज़रूरत है कि ईश्वर वास्तव में कैसे कार्य करता है, और नौकरी की

पुस्तक इसमें हमारी सहायता कर सकती है। तो, आइए पुस्तक के संदेश को समझने का प्रयास करने के लिए इसके पृष्ठों पर एक साथ नज़र डालें।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और अय्यूब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 1 है: पुस्तक के बारे में व्याख्या संबंधी समस्याएं और गलत विचार। [21:10]

नौकरी की किताब
सत्र 2: दिनांक और लेखकत्व
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 2, तिथि और लेखकत्व है।

कोई किताब और लेखक नहीं [00:21-1:37]

आइए, अय्यूब की पुस्तक की तारीख और लेखकत्व के बारे में बात करते हुए कुछ क्षण बिताएँ। अब, जब मैं उस पंक्ति का परिचय दे रहा हूँ, हमारे सामने समस्याएँ हैं। हम अक्सर पुस्तक की तारीख और लेखकत्व के बारे में पूछने के लिए बाइबल की विभिन्न पुस्तकों को देखने का प्रयास करते हैं। समस्या यह है: प्राचीन दुनिया में कोई किताबें नहीं हैं, और प्राचीन दुनिया में कोई लेखक नहीं हैं। प्राचीन विश्व बिल्कुल भी हमारी दुनिया जैसा नहीं है। वास्तव में एक लेखक जैसी कोई चीज़ नहीं होती जो किताब लिखता हो। लेखकों के बजाय, हमारे पास बोलने वाले प्राधिकारी व्यक्ति हैं; और हमारे पास लिखने वाले लेखक हैं। और, निस्संदेह, वे किताबें नहीं लिखते। वे दस्तावेज़ लिखते हैं, शायद एक दस्तावेज़ जो मिट्टी की गोली या पपीरस या उस प्रकार की किसी चीज़ पर दर्ज किया गया हो, यहाँ तक कि मोम की गोलियों पर भी। इसलिए, हमारे पास प्राचीन दुनिया में न तो किताबें हैं और न ही लेखक।

श्रवण प्रधान संस्कृति [1:37-2:45]

प्राचीन विश्व श्रवण-प्रधान विश्व है। श्रवण-प्रधान से मेरा तात्पर्य यह है कि वे बोलने और सुनने के माध्यम से अपनी जानकारी प्राप्त करने के आदी हैं। यह उनके लिए सामान्य बात है। वास्तव में, आधिकारिक शब्द इसी तरह आते हैं। उनके लिए बोला गया, सुना हुआ संदेश लिखित पाठ की तुलना में अधिक अधिकार रखता है। यह वैसा नहीं है जैसा हम सोचते हैं। बेशक, आज लेखकों के पास बौद्धिक संपदा है। कॉपीराइट है। प्राचीन विश्व में ऐसा कुछ भी नहीं है। और इसलिए, हमारे पास जो है वह एक बहुत अलग दुनिया है। जब हम लेखकों और किताबों के बारे में पूछना शुरू

करते हैं, तो हम पहले ही बातचीत को उसकी दुनिया में होने के बजाय अपनी दुनिया में धकेल देते हैं जहां वह है।

आधिकारिक आवाज़ [2:45-4:13]

तो, एक अर्थ में, हम गलत प्रश्न पूछ रहे हैं। पुराने नियम की अधिकांश पुस्तकें पुस्तकों के रूप में प्रारंभ नहीं हुईं। बेशक, मुझे यह संशोधन करना होगा कि पुराने नियम में जिन्हें हम किताबें कहते हैं उनमें से अधिकांश अंततः किताबों के रूप में हमारे पास आई हैं, लेकिन वे किताबों के रूप में शुरू नहीं हुईं। वे मौखिक भाषण के रूप में शुरू हुए। वे तब शुरू हुए, उनमें से कुछ दस्तावेजों, व्यक्तिगत खातों, व्यक्तिगत भविष्यवाणियों और दस्तावेजों में व्यक्तिगत भजन के रूप में थे। वे किताब लिखने के लिए बैठे किसी व्यक्ति के साथ शुरुआत नहीं करते हैं। और फिर भी, जो अंततः एक पुस्तक बन जाती है वह अभी भी उन आधिकारिक आंकड़ों से मजबूती से जुड़ी हुई है जिन्होंने उस संचार प्रक्रिया को शुरू किया था। लेकिन कभी-कभी, यह हमारे पास मौजूद पुस्तकों में संकलित होने से पहले सदियों तक प्रसारित होता रहा होगा। फिर भी, किताबें अतीत की उस आधिकारिक आवाज़ को सुरक्षित रखती हैं। इसलिए, किताबें प्रक्रिया के अंत में आती हैं, प्रक्रिया की शुरुआत में नहीं। यह किताब से शुरू नहीं होता। यह किताब के साथ समाप्त होता है।

एक किताब के रूप में नौकरी [4:13-4:55]

ऐसा कहने के बाद, अय्यूब अपवादों में से एक हो सकता है। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि अय्यूब की किताब में बहुत कुछ ऐसा है जिससे ऐसा लगता है कि यह एक साहित्यिक रचना है। अर्थात्, इसे एक संपूर्ण अंश के रूप में एक साथ रखा गया है, न कि केवल एक मित्र के भाषण और दूसरे मित्र के भाषण के रूप में जिन्हें अलग-अलग या कुछ और रखा गया है। ये सभी मिलकर काम करते हैं। तो, ऐसा हो सकता है कि अय्यूब पुराने नियम की कुछ या एकमात्र पुस्तक में से एक है जो वास्तव में एक पुस्तक के रूप में शुरू हुई प्रतीत होती है।

श्रवण प्रधान संस्कृति में लेखन [4:55-6:44]

अब, निःसंदेह, हमारे पास अय्यूब की परंपरा, अय्यूब की कहानी और वह कथा हो सकती है जो पहले मौजूद रही होगी। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे हम उनमें से कुछ चीज़ों से निपटेंगे। लेकिन यह

पुस्तक साहित्य का एक अत्यंत रचित नमूना है। और इसलिए, हमें इसे ध्यान में रखना होगा। अब प्राचीन दुनिया में, वे नैतिकता, वाणी और श्रवण से बंधे नहीं थे क्योंकि वे अशिक्षित थे। निश्चित रूप से, लोगों ने संभवतः कम से कम बुनियादी स्तर पर लिखना सीख लिया है। और निःसंदेह ऐसे भी लोग हैं, जो प्रशिक्षण और अपने पेशे के कारण काफी साक्षर थे--खासकर मुंशी। लेकिन प्राचीन दुनिया में लोगों को लिखने की ज़रूरत नहीं थी। उन्हें पढ़ने की ज़रूरत नहीं थी। यह श्रवण-प्रधान संस्कृति थी और इसलिए, संस्कृति में कुछ भी उनके पढ़ने या लिखने पर निर्भर नहीं था। इसका मतलब है कि भले ही उन्होंने इसका थोड़ा सा भी सीखा हो, उन्होंने कभी इसका इस्तेमाल नहीं किया।

यह आज कुछ लोगों की तरह है जो हाई स्कूल में होने पर विदेशी भाषा सीखते हैं, और फिर कभी उसका उपयोग नहीं करते हैं। और जब उन्होंने इसका अध्ययन किया, और हो सकता है कि इससे उन्हें कहीं न कहीं कुछ फायदा होगा, उन्हें यह याद नहीं है। कुछ समय बाद वे इसे खो देते हैं। ऐसा कुछ नहीं है कि वे वास्तव में उस भाषा में काम करने में सक्षम हों। मुझे लगता है कि प्राचीन दुनिया में पढ़ने और लिखने के मामले में यह काफी हद तक ऐसा ही है। वे कुछ बुनियादी काम कर सकते थे, लेकिन समाज और संस्कृति का संचालन पढ़ना-लिखना जानने वाले लोगों पर निर्भर नहीं था। यह केवल कुछ लोगों पर निर्भर था कि वे यह जानते थे कि यह कैसे करना है।

शास्त्रियों की भूमिका [6:44-7:51]

आज हमारे समाज में बहुत से लोगों को कानूनी आवश्यकताओं की बुनियादी समझ है, लेकिन वे वकील नहीं हैं। वे समझते हैं कि यदि उन्हें वास्तव में गंभीरता से कुछ करने की ज़रूरत है, तो उन्हें एक वकील के पास जाना होगा और एक दस्तावेज़ तैयार करना होगा। वे इसे अपने आप नहीं करेंगे। और इसलिए, प्राचीन दुनिया में, उनके पास शास्त्री थे। और जब उन्हें वास्तव में कुछ लिखने की ज़रूरत होती थी, जो हमारे जितना नहीं होता था, तो वे इसे करने के लिए एक लेखक की मदद लेते थे। जो दस्तावेज़ लिखे गए थे वे पहुंच योग्य नहीं थे, भले ही आप इस्राएलियों की कुछ कथा परंपराओं को बाद में लिखने के बजाय पहले लिखे जाने के बारे में सोचते हों। यदि वे होते, तो उन्हें लिख दिया गया होता, और वे अभिलेखीय अभिलेखों में हैं, और वास्तव में उन तक किसी की पहुंच

नहीं है। कोई भी किताब पढ़ने के लिए पुस्तकालय से बाहर नहीं ले जाता। यह उस तरह से काम नहीं करता। इसलिए भले ही वे दस्तावेज़ों में लिखे गए हों, शास्त्री उनकी नकल करके अपना काम कर रहे हैं, इस तरह की चीज़ें।

एक साहित्यिक रचना के रूप में कार्य [7:51-8:44]

तो, यह एक बहुत ही अलग संस्कृति है, और यह श्रवण प्रधान संस्कृति है। अय्यूब की पुस्तक के भाषण अत्यधिक साहित्यिक भाषण हैं। यह हम पर तुरंत प्रहार करता है; ये ऐसी बातें नहीं हैं जिन्हें बहुत से लोग बिना सोचे-समझे बोल सकते हैं। यह अत्यंत पुष्पपूर्ण गद्य और कभी-कभी एक प्रकार की कविता है। लेकिन यह भाषा का एक परिष्कृत स्तर है। संभवतः ऐसे कुछ लोग हैं जो अचानक इस तरह की बातें कर सकते हैं, लेकिन बहुत बार नहीं। और इसलिए, हम अय्यूब की पुस्तक के भाषणों को साहित्यिक रचना के रूप में सोचते हैं। हम बाद में उस मुद्दे पर वापस आएं।

अय्यूब की घटनाएँ [प्रारंभिक]; अय्यूब का लेखन [देर से] [8:44-10:58]

इसलिए, हम वास्तव में लेखकत्व की तारीख और नौकरी की पुस्तक के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। यदि लेखक और पुस्तक वास्तव में प्राचीन दुनिया के लिए उपयोग के लिए बहुत स्वीकार्य लेबल नहीं हैं, तो हम इस बारे में थोड़ा जानना चाहेंगे कि पुस्तक एक साथ कैसे आई। खैर, एक और बात जो हमें समझनी है वह यह है कि हमें यह सोचने की ज़रूरत नहीं है कि किताब उस समय लिखी गई थी जब अय्यूब रहता था। पुस्तक में कुछ संकेतक हैं जो बताते हैं कि अय्यूब अपने आस-पास के समाज के संदर्भ में बाद के नहीं बल्कि पहले के दौर में रहता है। लेकिन किताब में ऐसे संकेत भी हैं कि किताब का साहित्यिक फोकस पहले की बजाय बाद पर है। यह हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि भले ही अय्यूब को बहुत प्रारंभिक काल का व्यक्ति बताया गया हो, इसका मतलब यह नहीं है कि पुस्तक उस प्रारंभिक काल में लिखी गई थी या लिखी गई थी; आइए उस शब्द का उपयोग तटस्थ के रूप में करें, जिसकी रचना उस प्रारंभिक काल में हुई थी। व्यक्ति जल्दी हो सकता है, और रचना देर से हो सकती है। इसलिए, सिर्फ इसलिए कि हम अय्यूब की पुस्तक में कुछ संकेतक देखते हैं कि वह प्रारंभिक समय अवधि से हो सकता है, इसका मतलब यह नहीं है कि पुस्तक एक प्रारंभिक उत्पाद है।

इसलिए, जब हम पुस्तक में विवरण देखते हैं, तो हमें कुछ बहुत छोटी चीज़ें मिलती हैं। उदाहरण के लिए, यह पैसे की एक इकाई के बारे में बात करता है जो कि *केसिता* है और हम केवल पहले के समय में पैसे की उस इकाई के बारे में जानते हैं। यह एक बहुत छोटी चीज़ है, खासकर जब से हम इज़राइल के बाहर की स्थिति से निपट रहे हैं, लेकिन आपके पास यह है। पुस्तक में कलडीन और सबियन जैसे कुछ छापा मारने वाले दलों के बारे में भी बात की गई है। और उस काल के इतिहास पर किए गए कुछ शोधों में, ऐसा लगता है कि यह बाद के समय के बजाय पहले के समय का सुझाव देता है।

अय्यूब एक गैर-इस्राएली है, लेकिन पुस्तक इस्राएलियों के लिए लिखी गई है [10:58-12:43]

कुछ लोगों ने सोचा कि पुस्तक प्रारंभिक होनी चाहिए, अर्थात् मूसा से पहले सिनाई से पहले, क्योंकि इसमें वाचा या कानून या मंदिर का कोई उल्लेख नहीं है। यह सच है। उन बातों का जिक्र नहीं है। इसके अलावा, हम अय्यूब को एक पितृसत्तात्मक पुजारी के रूप में कार्य करते हुए देखते हैं। वह परिवार के लिए एक पुजारी के रूप में कार्य करता है, और यह कुछ लोगों को पहले का मुद्दा लगता है।

लेकिन एक क्षण के लिए पुस्तक पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि अय्यूब एक इस्राएली नहीं है। यदि अय्यूब इस्राएली नहीं है, तो हम वाचा या कानून या मंदिर की अपेक्षा नहीं करेंगे। अन्य संस्कृतियों में, और इज़राइल के बाहर के अन्य समाजों में, जनजातीय संस्कृति में पितृसत्ता के लिए पुजारी के रूप में कार्य करना बहुत उपयुक्त होगा। वे चीज़ें वास्तव में हमें तारीख पहचानने में मदद नहीं करतीं। वे हमें केवल यह देखने में मदद करते हैं कि यह कोई इस्राएली नहीं है जिसके साथ हम काम कर रहे हैं। अय्यूब उज़ देश से है। और हम इस बारे में कुछ बात करेंगे कि वह कहां है और यदि हम जानते हैं कि वह कहां है। लेकिन यह एक मजबूत बात है कि वह इस्राइली नहीं है। और यदि वह इस्राएली नहीं है, तो उन विवरणों का वास्तव में कोई मतलब नहीं है।

दूसरी ओर, दिलचस्प बात यह है कि यह पुस्तक इस्राएलियों के लिए लिखी गई है, और हम इसका पता लगा सकते हैं; हम इस पर थोड़ा बाद में, बाद के व्याख्यान में विचार करेंगे। हम उस इज़राइली

रुझान का पता लगा सकते हैं, यहां तक कि उस किताब में भी जो एक गैर-इज़राइली चरित्र पर केंद्रित है।

रचना की तिथि [12:43-13:12]

इसलिए, पुस्तक की रचना की तारीख संभवतः घटनाओं की तारीख से भिन्न है। और इसलिए, हम घटनाओं से पुस्तक की तारीख नहीं बता सकते। यदि यह वास्तव में इस्राएलियों पर केंद्रित पुस्तक है, तो हम उम्मीद करते हैं कि यह पहले के बजाय बाद में होगी। और इसलिए, हम उनमें से कुछ मुद्दों पर गौर करेंगे।

बुद्धि की पुस्तक के रूप में कार्य: स्थायी सत्य [13:12-14:43]

इतना सब कहने के बाद, हमें यह याद रखना होगा कि अय्यूब की पुस्तक एक ज्ञान पुस्तक है। इसका उद्देश्य सिर्फ किसी की कहानी बनना नहीं है। इसका उद्देश्य एक ज्ञान पुस्तक होना है। और ज्ञान साहित्य की प्रकृति ही यह है कि सत्य कालातीत होते हैं। यही बुद्धिमत्ता की बात है कि ये सत्य हैं जिनसे कोई भी, किसी भी समय लाभान्वित हो सकता है। और इसलिए, हमें वास्तव में यह समझना होगा कि अंत में, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम इसे मौखिक या लिखित के रूप में सोचते हैं, चाहे हम इसे एक किताब के रूप में सोचते हैं या दस्तावेजों के संकलन के रूप में सोचते हैं, चाहे हम इसे साहित्यिक दृष्टि से सोचते हैं या अलंकारिक शब्दों में, चाहे हम इसे इज़राइली या गैर-इज़राइली के रूप में सोचें, जल्दी या देर से, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हम पुस्तक को उसके ज्ञान शिक्षण के लिए पढ़ रहे हैं। इसमें पुस्तक का अधिकार निहित है। और इसलिए, हम इसी पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं - ज्ञान शिक्षण। और हम तारीख और लेखकत्व के मुद्दे को सुरक्षित रूप से अलग रख सकते हैं क्योंकि इससे किताब पढ़ने के तरीके में कोई फर्क नहीं पड़ता है।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 2 है: दिनांक और लेखकत्व। [14:43]

नौकरी की किताब

सत्र 3: अधिकार और प्रेरणा के साथ एक पुस्तक के रूप में कार्य

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 3 है, अधिकार और प्रेरणा के साथ एक पुस्तक के रूप में कार्य।

परिचयात्मक प्रश्न [00:24-1:06]

तो, यहाँ समस्या यह है कि यदि अय्यूब के मित्र जो कहते हैं उनमें से अधिकांश गलत हैं, और यदि अय्यूब स्वयं जो कुछ बातें कहता है वह भी गलत हैं, तो हम पुस्तक के बारे में कैसे सत्य के रूप में बात कर सकते हैं? हम इसे अधिकार कैसे मानें? यह भगवान से कैसे आता है? इसलिए, हमें अय्यूब के बारे में एक प्रामाणिक पुस्तक के रूप में - एक प्रेरित पुस्तक के रूप में अय्यूब के बारे में थोड़ी बात करने की आवश्यकता है। तो, आइए देखें कि हमें यहां क्या मिला है।

प्रेरणा: ईश्वर इसका स्रोत है [1:06-1:58]

सबसे पहले, हमें अपनी शर्तों को समझने की जरूरत है। जब हम प्रेरणा के बारे में बात करते हैं, तो हमारा तात्पर्य यह है कि पुस्तक का स्रोत ईश्वर में है। प्रेरणा का अर्थ कान में किसी प्रकार की फुसफुसाहट की आवाज या मन में उपजे विचार नहीं हैं। प्रेरणा इंगित करती है कि स्रोत ईश्वर है। निःसंदेह, नए नियम का यही अर्थ है जब वह परमेश्वर के वचन को परमेश्वर द्वारा प्रस्फुटित होने के बारे में बात करता है। इसका स्रोत ईश्वर है। तो, प्रेरणा से हमारा यही मतलब है। हमें यह सोचने की जरूरत नहीं है कि ईश्वर एलीपज़ या ज़ोफ़र या बिलदद के कानों में किसी तरह ग़लत विचार फुसफुसा रहा है। तो, यह प्रेरणा है--प्राधिकरण।

अधिकार और हमारी विनम्र प्रतिक्रिया [1:58-2:53]

प्राधिकरण का अर्थ है कि पुस्तक वह जानकारी देती है जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं। प्राधिकार का इससे लेना-देना है। प्राधिकरण इंगित करता है कि पुस्तक को बोलने का अधिकार है।

और निःसंदेह, यह इसकी प्रेरणा के कारण है। ईश्वर की प्रेरणा के आधार पर, पुस्तक को बोलने का अधिकार है, और यही इसे एक आधिकारिक स्थिति प्रदान करता है। लेकिन सिर्फ बोलने का ही अधिकार नहीं है। यह जो बोलता है उसमें सही है क्योंकि यह अच्छा अधिकार है, बुरा अधिकार नहीं। इसलिए, यह ऐसी जानकारी देता है जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं और जिसे हमें प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। इसी तरह आप अधिकार के साथ जवाब देते हैं।

रहस्योद्घाटन और बुद्धि की पहचान संदेश [2:53-5:19]

हम पुस्तक के बारे में रहस्योद्घाटन के रूप में भी बात करते हैं। हम बाइबल को ईश्वर द्वारा स्वयं का रहस्योद्घाटन कहते हैं। और इसका मतलब है कि हमें किताब सच्ची और भरोसेमंद लगती है, उसी तरह की बातें जिनके बारे में हमने दूसरे शब्दों में बात की है। यह हमें यह भी बताता है कि किताब क्या कर रही है और क्या नहीं कर रही है। पुस्तक क्या नहीं कर रही है, इस बारे में हमारी चर्चा पर दोबारा विचार करें। यह विचार कि यह ईश्वर का स्वयं का रहस्योद्घाटन है, का अर्थ है कि हम उस रहस्योद्घाटन में पुस्तक के अधिकार को खोजने जा रहे हैं जो यह हमें देता है। यह उस संदेश में रहस्योद्घाटन है, जिसकी पुष्टि उसमें मौजूद ज्ञान साहित्य के माध्यम से की जा रही है। और इसलिए, इसका रहस्योद्घाटन और इसका अधिकार भाषणों में वर्णित कथा से अधिक ज्ञान संदेश से जुड़ा हुआ है। हमें संदेश को समझना होगा क्योंकि अधिकांश पुस्तक गलत सोच वाली है। यह गलत सोच रखने के लिए है। ताकि सोचने के गलत तरीके को देखकर हमें सोचने के सही तरीके को पहचानने का प्रयास करने का मौका मिले।

इसलिए, हमें यह पहचानने की ज़रूरत है कि किताब किस चीज़ को सच मानती है। पुस्तक की विषय-वस्तु में मौजूद हर चीज़ किसी प्रकार की सच्चाई या सच्चे संदेश की पुष्टि नहीं कर रही है। हमें सावधान पाठकों के रूप में इसे समझना होगा। वफ़ादार व्याख्याकार हमेशा यही करते हैं; पता लगाएँ कि पाठ की पुष्टि क्या है। अय्यूब के दोस्तों को सच बोलने वाला नहीं माना जा सकता, हालाँकि कभी-कभी वे सच बोलते हैं। और कभी-कभी, वे जो कहते हैं उसका झूठ सच से थोड़ा सा अलग होता है। आखिरकार, वे सबसे प्रभावी झूठ हैं, जो बिल्कुल सच जैसे लगते हैं। लेकिन इसी

तरह, सच बोलने के लिए स्वर्गीय प्रतिपक्षी पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। फिर, कभी-कभी वह ऐसा करता है। हम उस बारे में बात करेंगे।

प्राधिकार अपनी ऐतिहासिकता में नहीं है [5:19-6:37]

शायद एक अधिक कठिन मुद्दा, और मैं चाहता हूँ कि आप इसके बारे में ध्यान से सोचें, वह यह है कि पुस्तक का अधिकार इस बात से जुड़ा नहीं है कि यह वास्तविक अतीत में वास्तविक घटनाओं का सटीक विवरण है या नहीं। इसे कथा के माध्यम से सत्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता है। इसे ज्ञान के माध्यम से सत्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसका मतलब यह नहीं है कि हम मान लें कि कहानी झूठी है, या ऐसा कभी हुआ ही नहीं, बल्कि हमें सावधानी से सोचना होगा। अधिकार इसकी ऐतिहासिकता में नहीं है, क्योंकि यह उस तरह की किताब नहीं है। सत्य उसकी ऐतिहासिकता पर निर्भर नहीं करता है, कि क्या घटनाएँ वास्तव में घटित हुई हैं, क्या वे वास्तव में वास्तविक अतीत की घटनाएँ हैं। सत्य उस पर निर्भर नहीं है। इसका मतलब यह नहीं है कि वे नहीं हुए, लेकिन हमें बस इस पर ध्यान से सोचना होगा। और, अंत में, जिस चीज़ में हमारी रुचि होनी चाहिए वह है पुस्तक का अधिकार।

यीशु के दृष्टान्तों के समान [6:37-7:41]

और यह पुस्तक किसी कथात्मक घटना की पुष्टि करने से अधिक ज्ञान की शिक्षा देने की पुष्टि कर रही है; हमें इसके प्रति जागरूक रहना होगा। यह वही बात है जो यीशु के दृष्टान्तों के साथ घटित होती है। वे आख्यान हैं, लेकिन यीशु उन्हें वास्तविक अतीत की वास्तविक घटनाओं के रूप में प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं। उनके पास उनके बारे में यथार्थवाद है, लेकिन उनमें आम तौर पर कुछ अवास्तविक तत्व भी होते हैं जो दृष्टान्त को यथार्थवादी सेटिंग बनाते हैं, लेकिन कुछ असामान्य, यहां तक कि अजीब चीजें भी घटित होती हैं। यही बात इस दृष्टान्त को व्यावहारिक बनाती है। यही बात हम यहां अय्यूब के साथ भी पाते हैं। मैं यह नहीं कह रहा कि यह एक दृष्टान्त है, लेकिन उसी तरह, यह उन दृष्टान्तों की तरह है जो वास्तविक घटनाओं पर निर्भर नहीं हैं। यह कुछ मायनों में बहुत

यथार्थवादी है और कुछ मायनों में बहुत अवास्तविक है। और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे हम इसके बारे में और अधिक बात करेंगे।

प्राधिकरण अपने ज्ञान संदेश में [7:41-10:03]

इसलिए, अधिकार ऐतिहासिकता में नहीं है, और सत्य ऐतिहासिकता पर निर्भर नहीं करता है। अधिकार पुस्तक के ज्ञान संदेश में है, भले ही ये किसी वास्तविक अतीत की वास्तविक घटनाएँ हों। बुद्धि स्वयं घटनाओं से भी गहरे सत्य तक पहुँचती है। बुद्धि एक ऐसे सत्य की तलाश में है जिसे आवश्यक रूप से घटनाओं के प्रकट होने में ही नहीं देखा जा सकता है। हम अपने जीवन में चीज़ों को घटित होते हुए देख सकते हैं, और वहाँ घटनाएँ हमारे सामने होती हैं। लेकिन हम उनका क्या करते हैं? हम उनके बारे में कैसे सोचते हैं? हम अपने जीवन में होने वाली घटनाओं पर बुद्धिमानी से कैसे प्रतिक्रिया देते हैं?

घटनाओं के सामने आने से बुद्धि स्वतः नहीं आती। बुद्धिमत्ता तब आती है जब हम घटना से परे देखते हैं, घटना में गहराई से देखते हैं, और उस सच्चाई को समझने के लिए घटना से परे देखते हैं जिसे हमें देखने की ज़रूरत है; वह ज्ञान जिसे हम प्राप्त कर सकते हैं। और उस अर्थ में, ज्ञान घटनाओं से परे है। और जैसे मसीह के दृष्टांतों का ज्ञान उन घटनाओं से आगे निकल जाता है जिन्हें वह अपनी कहानियों के लिए एक साथ रखता है, वैसे ही, हम इसे अय्यूब की पुस्तक में सत्य पाएंगे। बुद्धि एक गहरे सत्य तक पहुँचती है। विचारों में सच्चाई है, सच्चाई है जिसे हमें उन विचारों में समझने की ज़रूरत है जो किताब प्रस्तुत करती है, ऐसी चीज़ें जो देखी नहीं जा सकतीं। और जो देखा जा सकता है उससे जुड़े होने के बजाय, यह एक प्रकार का सत्य है जिसे ज्ञान हमारी तत्काल दृष्टि से परे ले जाता है। और इसलिए हमें उन विचारों को देखना होगा जो पुस्तक प्रस्तुत कर रही है। यहीं पर पुस्तक का अधिकार निहित है।

ईश्वर को जानना [10:03-12:03]

आइए मैं आपको एक और विचार देता हूँ। हम इसके बारे में ईश्वर द्वारा स्वयं के रहस्योद्घाटन के रूप में बात करते हैं। हालाँकि, अंत में, इस पुस्तक में हमें जो रहस्योद्घाटन मिलता है वह इस बारे में थोड़ा और अधिक है कि ईश्वर कैसे कार्य करता है और कैसे कार्य नहीं करता है। यह हमें केवल

सीमित जानकारी देता है कि ईश्वर कौन है। यह एक समस्या है, क्या यह हमारे साथ नहीं है? हम ईश्वर को जानना चाहते हैं, और हमें लगता है कि हम उसे पवित्रशास्त्र के पत्रों के माध्यम से जान सकते हैं। लेकिन फिर भी हमें ऐसा लगता है, सबसे पहले, कि हमें वास्तव में उसे जानने में परेशानी हो रही है क्योंकि यह उन लोगों के साथ हमारे संबंधों के समान नहीं है जिनसे हम हर दिन मिलते हैं और बातचीत करते हैं।

और इसलिए, हमें ऐसा लगता है कि कुछ बाधाएँ हैं। सबसे बड़ी बाधा यह है कि वह भगवान है, और हम नहीं हैं। और इसलिए उसे हम बहुत गहराई से नहीं जान पाते। हम उसे उस हद तक जान सकते हैं जिस हद तक उसने स्वयं को प्रकट किया है, लेकिन उसके तरीके हमारे तरीके नहीं हैं। और इसलिए, हम उसके बारे में सब कुछ नहीं जान सकते। जितना अधिक हम यह सोचने लगते हैं कि ईश्वर को हम पूरी तरह से जानते हैं, संभवतः उतना ही अधिक हमने उसे अपनी छवि में बना लिया है। इसलिए, हमें यह पहचानना होगा कि ईश्वर के ज्ञान की कुछ सीमाएँ हैं जिन्हें हम प्राप्त कर सकते हैं।

प्रकाशितवाक्य का बाइबिल और पाठ्यक्रम चित्रण [12:03-14:23]

उसने खुलासा किया है कि वह क्या कर रहा है, और ऐसा करते हुए, उसने अपने कुछ हिस्सों का खुलासा किया है जिन्हें हम जान सकते हैं। मैं तुम्हें एक उदाहरण देता हूँ। जब मैं एक पाठ्यक्रम तैयार करता हूँ और उसे छात्रों को सौंपता हूँ, तो मैं उन्हें कुछ बता रहा होता हूँ। मैं पाठ्यक्रम के लिए अपनी योजनाओं, पाठ्यक्रम में अपने उद्देश्यों का खुलासा कर रहा हूँ, और मैं उन्हें बता रहा हूँ कि उनसे पाठ्यक्रम में भाग लेने की उम्मीद कैसे की जाती है। वास्तव में, इस सीखने के अनुभव में भागीदार बनने के लिए। वे महत्वपूर्ण चीजें हैं, और पाठ्यक्रम इसी के लिए है: मेरी योजनाओं और उद्देश्यों को प्रकट करना ताकि वे सक्रिय भागीदार के रूप में भाग ले सकें। अब, यदि वे पाठ्यक्रम के प्रति बहुत चौकस हैं, तो वे एक प्रोफेसर, एक व्यक्ति और एक शिक्षक के रूप में मेरे बारे में कुछ समझ या अनुमान लगा सकते हैं। वे यह भी समझ सकते हैं कि मैं व्यवस्थित हूँ या नहीं, मेरे पास डिज़ाइन की प्रतिभा है या नहीं। वे उस सिलेबस से मेरे बारे में कुछ बातें बता सकते हैं। और

उस अर्थ में, पाठ्यक्रम मेरे बारे में थोड़ा सा प्रकट करने की कोशिश कर रहा है, भले ही यह मेरी योजनाओं और उद्देश्यों पर केंद्रित हो।

मुझे लगता है कि बाइबल के बारे में एक पाठ्यक्रम की तरह सोचने का लाभ है। इसके पन्नों में, भगवान ने अपनी योजनाओं और उद्देश्यों, अपने राज्य और उस राज्य में हमारी क्या भूमिका है, इसका खुलासा किया है। उन्होंने हमें उनके काम में भाग लेने, उनके साथ भागीदार बनने के लिए काफी कुछ दिया है। उन्होंने हमें एक प्रक्रिया में अपने साथ भागीदार बनाने के लिए अपनी छवि में बनाया है। और इसलिए, उसने हमें यह जानने के लिए काफी कुछ दिया है कि उसकी योजनाओं और उद्देश्यों में भाग लेने के लिए हमें क्या करने की आवश्यकता है। रास्ते में, हम उसके व्यक्तित्व के बारे में बहुत कुछ जान सकते हैं, लेकिन वहाँ और भी सीमाएँ हैं।

सारांश [14:23-15:17]

इसलिए, जब हम अय्यूब की पुस्तक और उस रहस्योद्घाटन के बारे में सोचते हैं जो यह हमें प्रदान करता है, तो हम समझते हैं कि यह हमें ईश्वर के कार्य के बारे में जानकारी प्रदान करता है, वह कैसे काम करता है, और वह कैसे चाहता है कि हम उसके बारे में सोचें, लेकिन यह नहीं देगा ईश्वर जो करता है वह क्यों करता है इसकी सभी व्याख्याएं और हमें ईश्वर के तर्क पर एक अंतरंग अंदरूनी नजरिया प्रदान करती हैं। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे हमें ये भेद करने होंगे। तो, हमें एक किताब मिली है जो भगवान के प्रेरित शब्द का हिस्सा है। इसका स्रोत ईश्वर में है। हमारे पास एक ऐसी पुस्तक है जो जिस बात की पुष्टि करती है उस पर अधिकार के साथ बात करती है - अपना ज्ञान संदेश। और हमसे उस प्राधिकारी के प्रति समर्पण की अपेक्षा की जाती है।

अधिकार के निहितार्थ और उसके प्रति हमारी अधीनता [15:17-16:20]

एक बार जब हम बाइबल को आधिकारिक रूप से स्वीकार कर लेते हैं, तो हम स्वयं को चुनने और चुनने की विलासिता, स्वतंत्रता की अनुमति नहीं दे सकते। कहने का मतलब है, ठीक है, मैं वह हिस्सा लूंगा, और मैं वह हिस्सा नहीं लूंगा। आखिरकार, उदाहरण के लिए, हमारे पास अपनी सरकारों को यह कहने की आज़ादी नहीं है कि हम कर के इस हिस्से का भुगतान करेंगे, लेकिन उस हिस्से का नहीं। हम अधिकार के अधीन हैं। और एक बार जब हम आधिकारिक संदेश को

समझ लेते हैं, तो हम खुद को उस संदेश के प्रति एक प्रेरित अंश के रूप में प्रस्तुत करने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं जिसका अधिकार है। और यह हमें थोड़ा-सा बताता है कि ईश्वर कैसे कार्य करता है और कैसे नहीं। यह उस प्रकार का ज्ञान संदेश है जिसकी पुष्टि अय्यूब की पुस्तक में हमारे लिए की गई है। और हम इसके हर एक अंश को समझना चाहते हैं जो हम कर सकते हैं।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 3 है, अधिकार और प्रेरणा के साथ एक पुस्तक के रूप में कार्य। [16:20]

नौकरी की किताब
सत्र 4: शैली और संरचना और बुद्धि की प्रकृति
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 4 है, शैली और संरचना, और बुद्धि की प्रकृति।

परिचय [00:24-00:57]

खैर, अब समय आ गया है कि हम बुक ऑफ जॉब की शैली और इसकी संरचना के बारे में बात करें। तो, यहाँ हमें इस बारे में सोचना है: क्या यह पुस्तक वास्तविक है? कुछ लोग इस प्रश्न का उत्तर यह पूछकर देंगे कि क्या यह इतिहास है या कल्पना? मुझे लगता है कि यह एक झूठा द्वंद्व है। मेज पर केवल यही दो विकल्प हैं।

शैली का महत्व [00:57-4:16]

और इसलिए, हमें यह सोचना होगा कि पुस्तक क्या कर रही है और यह कैसे कर रही है। अब यह शैली का सवाल है, लेकिन हमें यह समझना होगा कि शैली एक मुश्किल चीज़ है। शैली हमें यह जानने में मदद करती है कि किताब कैसे पढ़ी जाए। आप जानते हैं, अगर हम कोई रहस्य पढ़ रहे होते, तो हम उसे जीवनी पढ़ने की तुलना में अलग तरह से पढ़ते। यदि हम संपादकीय पढ़ रहे हैं, तो यह कॉमिक स्ट्रिप पढ़ने से अलग है। जब हम चीज़ों की शैली को समझते हैं तो हम उन्हें अलग तरह से पढ़ते हैं।

लेकिन शैली क्या करती है या शैली की पहचान साहित्य के एक टुकड़े को समान साहित्य के समुदाय में स्थान देती है। यह उन चीज़ों की पहचान करता है जो उसके जैसी हैं, और ऐसा करके, यह हमें पढ़ने के लिए रणनीतियाँ देता है जो समग्र रूप से समूह पर आधारित होती हैं। इसका मतलब है कि किसी शैली की पहचान को सार्थक बनाने के लिए, हमें सेट में अन्य सदस्यों को रखना होगा, अन्यथा, यह वास्तव में हमें पढ़ने में मदद नहीं करता है।

यहीं पर हमें अय्यूब के साथ कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ता है। एक ओर, हम इसे ज्ञान साहित्य के रूप में आसानी से पहचान सकते हैं। यह एक व्यापक श्रेणी है, लेकिन हम जानते हैं कि

ज्ञान साहित्य की कई अलग-अलग शैलियाँ हैं। लोकोक्ति, कहावत ज्ञान साहित्य की एक विधा है। यह एक संवाद से कहीं अलग है; ज्ञान संवाद हो सकता है। और इसलिए, यह कहना कि यह ज्ञान साहित्य है, हमें एक व्यापक श्रेणी प्रदान करता है और हमें अपेक्षा की कुछ भावना देता है, लेकिन यह वास्तव में हमें कोई रणनीति नहीं देता है।

और यहीं पर हमें नौकरी की पुस्तक के साथ एक समस्या का सामना करना पड़ता है। ऐसा कुछ नहीं है। ज्ञान के व्यापक दायरे के अलावा साहित्य का कोई समुदाय नहीं है। यह सच है, मेरा मतलब है, हमारे पास साहित्य के टुकड़े हैं जो संवाद हैं और अय्यूब के पास इसमें कुछ संवाद हैं। हमारे पास साहित्य के टुकड़े हैं जो ज्ञान भजन हैं, और अय्यूब के पास ज्ञान भजन है। हमारे पास साहित्य के टुकड़े हैं जो प्रवचन हैं, और अय्यूब के पास कुछ प्रवचन हैं। तो, इसमें शैलियों के टुकड़े और टुकड़े हैं जिन्हें हम अन्य टुकड़ों से जानते हैं।

लेकिन जब आप अय्यूब की पुस्तक को समग्र रूप से देखते हैं, तो ऐसा कुछ भी नहीं है। ऐसी अन्य पुस्तकें भी हैं जो प्राचीन विश्व में निर्दोष पीड़ाओं से संबंधित हैं, लेकिन वे वास्तव में अय्यूब की तरह बिल्कुल भी नहीं हैं। तो, परिणामस्वरूप, हमारे पास पुस्तक के भीतर कई शैलियाँ हैं। हमारे पास प्राचीन निकट पूर्वी दुनिया में कई समान परिदृश्य हैं, लेकिन हमारे पास वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं है जो नौकरी की किताब जैसा हो, जिसका अर्थ है कि हम उन सामान्य श्रेणियों से थोड़ा बाहर हैं जिन्हें हम कर सकते हैं से निपटें।

एक विचार प्रयोग के रूप में कार्य [4:16-5:57]

यह ज्ञान साहित्य है, और यह पढ़ने की रणनीति के बारे में हमारे कई प्रश्नों के माध्यम से हमारा मार्गदर्शन कर सकता है। ज्ञान साहित्य का एक रूप, और यही वह है जिसे मैं प्रस्तावित करना चाहूंगा, विचार प्रयोग का रूप है। एक विचार प्रयोग में, आप एक परिदृश्य का प्रस्ताव करते हैं। यह एक ऐसा परिदृश्य है जिसे किसी मुद्दे की खोज के लिए आवश्यक सभी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए सावधानीपूर्वक तैयार किया गया है। पुनः, हम पाते हैं कि यीशु दृष्टांतों में ऐसा करते हैं। दृष्टांत वास्तविक घटनाओं के बारे में कोई विवरण, कथा नहीं हैं। वे ऐसी घटनाएँ हैं, जो कुछ अर्थों में वास्तविक हो सकती थीं, लेकिन दूसरे अर्थ में नहीं हैं। किसी मुद्दे के बारे में सोचने में हमारी मदद

करने के लिए विवरणों को एक विशेष तरीके से एक साथ रखा जाता है। तो, दृष्टांत विचार प्रयोग का एक रूप है।

मैं नहीं मानता कि अय्यूब एक दृष्टांत है, लेकिन मुझे लगता है कि यह विचार प्रयोग का दूसरा रूप है। एक विचार प्रयोग में, यह एक तरह से क्या होगा-अगर परिदृश्य जैसा है। अगर हमारे सामने ऐसी स्थिति हो तो क्या होगा? मुद्दा यह दावा करने का नहीं है कि विचार प्रयोग में घटनाएँ घटित हुईं, बल्कि वे अपनी दार्शनिक शक्ति कल्पनाशील उपकरण की यथार्थवादी प्रकृति से प्राप्त करते हैं।

चरम सीमाओं को धकेलना [5:57-7:28]

इसके बारे में सोचें, और यह वास्तव में हो सकता है, लेकिन यह अधिक चरम है। अय्यूब की किताब में हर चीज़ चरम पर है। हम देखेंगे कि हर चीज़ यथासंभव चरम सीमा तक फैली हुई है। यह वे चरम सीमाएँ हैं जो पुस्तक को कार्यान्वित करती हैं। यदि अय्यूब कम धर्मी होता, वह अधिकांश समय बहुत अच्छा रहता, तो किताब काम नहीं करती क्योंकि आप कह सकते थे, "ओह, उसने कुछ चीज़ें गलत कीं," और यही समस्या हो सकती है। यदि उसकी पीड़ा कम नाटकीय थे, यदि यह धीरे-धीरे आया होता या वास्तव में इतना गहन, व्यापक नहीं होता, तो हम कह सकते थे, "ठीक है, उसे थोड़ा कष्ट हो रहा है। हर किसी को थोड़ा-बहुत कष्ट होता है।" और, आप जानते हैं, शायद हम इसका हिसाब दे सकते हैं। थोड़ा-सा अनुचित व्यवहार और थोड़ा-सा कष्ट, और ठीक है, यही वह दुनिया है जिसका हम अक्सर सामना करते हैं। लेकिन नहीं, नहीं, में नौकरी की किताब, हर चीज़ को चरम सीमा तक खींच लिया गया है। ताकि मेज पर कोई आसान उत्तर न बचे, देखें कि यही रणनीति है। सभी आसान उत्तर हटा दें, और आपको दार्शनिक विचार, ज्ञान बिंदु से निपटने के लिए छोड़ दिया जाएगा।

एक साहित्यिक रचना के रूप में कार्य [7:28-11:21]

फिर यह प्रश्न कि क्या घटनाएँ वास्तविक हैं, ग़लत है। वे लगभग अवास्तविक होने के लिए एक साथ रखे गए हैं फिर भी पर्याप्त रूप से वास्तविक हैं, लेकिन जो हम कल्पना कर सकते हैं उससे कहीं अधिक, अधिक चरम हैं। अब, आइए इस पर थोड़ा विचार करें। यदि यह एक विचार प्रयोग है, तो

कम से कम पुस्तक के कुछ हिस्सों में, हमें इसे एक वास्तविक घटना, एक साहित्यिक रचना के बजाय सिर्फ एक साहित्यिक रचना कहना होगा।

अब पुस्तक के कुछ हिस्से ऐसे हैं जिनके बारे में हर कोई लंबे समय से सहमत है कि वे साहित्यिक रचनाएँ हैं। दोस्तों के भाषण, लोग यूँ ही, यूँ ही बातें नहीं करते। लोग इस अत्यधिक उन्नत भाषा में यूँ ही बात नहीं करते। यहां तक कि हमारे कुछ सर्वश्रेष्ठ वक्ता भी इस तरह से बात नहीं करते हैं। और इसके अलावा, भले ही उन्होंने ऐसा किया हो, भले ही आप कह सकें, ठीक है, प्राचीन दुनिया में उन्होंने ऐसा किया था, और ये वास्तव में स्मार्ट लोग थे और वगैरह, वगैरह, कोई स्टेनोग्राफर नहीं है। प्राचीन विश्व में उनके पास ऐसे आशुलिपिक नहीं हैं जो वहां बैठकर यह सब समझ सकें। मित्रों के भाषण एक साहित्यिक रचना हैं। इसे सभी ने पहचान लिया है।

लेकिन क्या आप देखते हैं कि वह क्या करता है? जैसे ही हम पुस्तक के कुछ भाग को साहित्यिक रचना के रूप में पहचानते हैं, तब हमें यह प्रश्न पूछना पड़ता है कि वह कितनी दूर तक जाता है? इसमें से कितना हिस्सा साहित्यिक रचना है, और कितना हिस्सा सिर्फ घटनाओं का रिकॉर्ड हो सकता है? आपने पंक्ति को कहां खींचा था? और एक बार जब आप यह स्वीकार कर लेते हैं कि पुस्तक के कुछ हिस्से एक साहित्यिक रचना हैं, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कहां रेखा खींचते हैं क्योंकि एक साहित्यिक रचना एक विचार प्रयोग में ठीक है।

अब मुझे विश्वास है कि अय्यूब वास्तविक अतीत में एक वास्तविक व्यक्ति था, वह प्राचीन दुनिया में एक बहुत अच्छे व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध हो गया था, जिसके साथ वास्तव में निराशाजनक घटनाएं घटी थीं। मुझे लगता है कि वह सचमुच एक ऐसा व्यक्ति है। लेकिन मुझे लगता है कि उनके बारे में यह कहानी एक विचार प्रयोग है जिसमें ज्ञान की अवधारणा की जांच करने के लिए इस प्रसिद्ध व्यक्ति का उपयोग किया गया है। इसलिए, मैं कथा का मूल रूप लेता हूँ। नहीं, मुझे यह नहीं कहना चाहिए कि मूल सामग्री और कथा, जिसका अर्थ है अय्यूब का जीवन, एक व्यक्ति की धार्मिक पीड़ा, वास्तविक अतीत में एक प्रकार का ऐतिहासिक लंगर है। लेकिन मुझे लगता है कि किताब का बाकी हिस्सा एक विचार प्रयोग, एक साहित्यिक रचना है। फिर, चरम सीमाओं का उपयोग, और जिन दार्शनिक मुद्दों को मेज पर लाया जाता है, वे सभी मुद्दे को स्पष्ट करते हैं।

एक विचार प्रयोग में परमेश्वर के वचन [11:21-12:53]

अब, शायद आप उस विचार से जूझ रहे हैं। इसके बारे में सोचते रहें। शायद आप नहीं हैं, लेकिन हो सकता है कि मेरा अगला कदम ऐसा हो जिसे निगलना और भी कठिन हो। तो, मेरे साथ सोचें, यदि पुस्तक, अधिकांश भाग के लिए, एक विचार प्रयोग है, एक साहित्यिक रचना है, तो क्या यह भगवान के भाषणों के बारे में भी सच है? क्या यह भी एक प्रेरित लेखक है, जो मौजूदा मुद्दे को संबोधित करने के लिए भगवान के मुँह में शब्द डाल रहा है? और यह स्वर्ग में शुरुआती दृश्य के बारे में क्या कहता है? क्या वह भी कोई साहित्यिक रचना है? क्या वह भी एक चरम स्थिति उत्पन्न करने के लिए बनाया गया है? इसके बारे में इस तरह सोचना महत्वपूर्ण हो सकता है। मैं प्रस्ताव कर रहा हूँ कि आप कम से कम इसके बारे में उन शर्तों पर सोचें। याद रखें, पुस्तक की सच्चाई उसके ज्ञान शिक्षण में है, अर्थात्, जिसकी पुष्टि की जा रही है। पुस्तक की सच्चाई को ऐतिहासिकता के स्तर पर किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है। यह एक ज्ञान पुस्तक है। और यदि यह एक सोचा हुआ प्रयोग है। इसे चरम सीमा में चित्रित किया गया है।

नौकरी को एक विचार प्रयोग के रूप में देखने के लाभ [12:53-14:40]

यहां साहित्यिक निर्माण विचार प्रयोग के हिस्से के रूप में स्वर्ग के दृश्य के बारे में भी सोचने का लाभ है। यह हमें यह सोचने की महत्वपूर्ण समस्या से बचने में मदद करेगा कि ईश्वर वास्तव में कैसे काम करता है। यदि यह एक विचार प्रयोग है, तो यह केवल यह कह रहा है कि क्या होगा यदि स्वर्ग में ऐसा कोई दृश्य खुल जाए? यदि बातचीत इसी रूप में हुई तो क्या होगा? यह सब अय्यूब के लिए परिदृश्य तैयार करने के लिए है। क्या आप देखते हैं कि यह उन कुछ चीज़ों से कैसे बचता है जिनसे पाठक अक्सर किताब में जूझते हैं? इसका उद्देश्य ऐसे ईश्वर की तस्वीर व्यक्त करना नहीं है जो शैतान के साथ दांव लगाता है; कुछ लोगों के लिए, यह सोचना एक वास्तविक समस्या रही है कि ईश्वर इस तरह से कार्य करेगा। कुछ लोगों के लिए, वे पुस्तक को देखते हैं, और वे अपने जीवन को देखते हैं, और वे कहते हैं, "शायद भगवान और शैतान मेरे बारे में बातचीत कर रहे हैं। शायद मेरे अनुभव किसी दैवीय दांव के कारण हैं।" यह वह नहीं है जो हमें इस पुस्तक से प्राप्त करना चाहिए।

वह मेज पर कोई विकल्प नहीं है. यह किताब ऐसा नहीं कर रही है। ये स्पष्ट रूप से जटिल मुद्दे हैं और हमारे लिए इस पर विचार करना जटिल है। लेकिन इसके बारे में सोचो.

पुस्तक स्वर्गीय चर्चाओं के बारे में नहीं है [14:40-15:47]

पुस्तक की शिक्षा घटनाओं की वास्तविकता से बंधी नहीं है। पुस्तक का शिक्षण निर्धारित साहित्यिक परिदृश्य से निर्मित होता है। और यदि यह एक सोचा-समझा प्रयोग है, तो उस परिदृश्य को प्रस्तुत करने में काफी रचनात्मकता लगी है। बस इसकी कोशिश। बस इसे आजमाएं ताकि आसान उत्तर सामने आ सकें, और इस बारे में चर्चा की गुंजाइश हो कि हमें दुनिया के बारे में कैसे सोचना चाहिए और भगवान क्या करता है या क्या नहीं करता है। मेरा मतलब यह नहीं है कि वह स्वर्ग में एक सत्र में क्या करता है या क्या नहीं करता है, बल्कि हम ईश्वर और पीड़ा के लिए उसकी जिम्मेदारी के बारे में कैसे सोचते हैं या वह पीड़ा के लिए कैसे जिम्मेदार नहीं है? हम संसार में हमारे सामने आने वाली घटनाओं में ईश्वर की भूमिका के बारे में कैसे सोचते हैं? यह इस बारे में नहीं है कि स्वर्गीय चर्चाओं में क्या चल रहा है।

अलंकारिक रणनीति: संरचना और बुद्धि भजन [15:47-20:20]

तो, उस प्रकार के विचार प्रयोग विचार को ध्यान में रखते हुए, हम इस बारे में बात करना चाहते हैं कि पुस्तक अपने शिक्षण को कैसे पूरा करती है। इसे ही हम आलंकारिक रणनीति कहते हैं। यह इस बारे में बात करता है कि पुस्तक को शाब्दिक रूप से कैसे प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक की संरचना को पहचानना बहुत आसान है। इसका सैंडविचिंग प्रभाव होता है। हमें स्वर्ग के दृश्य और अय्यूब के अनुभवों के साथ एक गद्य प्रस्तावना मिली है। हमारे पास एक गद्य उपसंहार है जहां भगवान अय्यूब को पुनर्स्थापित करता है। तो ये दो बहीखाते हैं।

पुस्तक के बिल्कुल मध्य में, हमारे पास ज्ञान का एक भजन है। कई लोगों ने ज्ञान के उस भजन के बारे में आश्चर्य किया है। सामान्य तौर पर पढ़ने पर कोई भी आसानी से सोच सकता है कि यह जॉब बोल रहा है। अय्यूब अध्याय 27 में बोल रहा है। अध्याय 28 बुद्धि का भजन है। और अध्याय 29 में,

अय्यूब बोल रहा है। यह 28 में कोई नया स्पीकर पेश नहीं करता है। और इसलिए, कुछ लोगों ने मान लिया है कि यह सिर्फ जॉब है जो सीधे बोल रहा है।

लेकिन एक समस्या है। जो खंड 27 में समाप्त होता है वह पुस्तक का संवाद खंड है। 29 से शुरू होने वाला खंड पुस्तक का प्रवचन खंड है। ज्ञान का यह भजन बिल्कुल उनके बीच में है। वास्तव में, यह संवाद अनुभाग से प्रवचन अनुभाग में संक्रमण प्रदान करता है। हम जो पाते हैं, चाहे हम संवाद अनुभाग में देख रहे हों या प्रवचन अनुभाग में, वह यह है कि कहीं भी अय्यूब के पास उस तरह का परिप्रेक्ष्य नहीं है जैसा कि अध्याय 28 में दर्शाया गया है। ज्ञान के भजन में एक स्थिति, एक परिप्रेक्ष्य और अंतर्दृष्टि है जो अय्यूब के पास है एक व्यक्ति के रूप में न तो पहले और न ही बाद में। इसलिए, यह वास्तव में अय्यूब के मुँह से बाहर है।

विकल्प, और जिसे बहुत से लोग अपनाते हैं और मैं उससे सहमत हूँ, वह यह है कि अध्याय 28 में ज्ञान के भजन में, वर्णनकर्ता वापस खेल में आता है। जिसने हमें उपसंहार दिया, मुझे क्षमा करें, प्रस्तावना और उपसंहार, जिसने दृश्य खड़ा किया और उसे निष्कर्ष तक पहुंचाया, वह वापस बीच में आ गया है। और अय्यूब और उसके दोस्तों के बीच बातचीत पूरी होने के बाद वह वापस आता है।

यह संवाद अनुभाग है जो अध्याय तीन से शुरू होता है और अध्याय 27 तक चलता है। अय्यूब और उसके दोस्त बारी-बारी से एक-दूसरे से बात करते हैं, और वह सब खत्म हो जाता है, भाषण छोटे हो जाते हैं। और आखिरी में, ज़ोफ़र के पास कहने के लिए कुछ भी नहीं है। उन्होंने अपनी बात रख दी है। उसने कर लिया। बिलडैड का बहुत छोटा है। संवाद में उनका जोश खत्म हो गया है। याद रखें, यह संवाद प्राचीन विश्व में ज्ञात सबसे बुद्धिमान लोगों के बीच हो रहा है, और आप इसके अंत तक पहुँचते हैं और ज्ञान का भजन बहुत विस्तृत और वाक्पटु तरीके से मूल रूप से कहता है, "क्या आपके पास बस इतना ही है मिल गया? क्या यह बात है? क्या आपको लगता है कि यह बुद्धिमत्ता है? आपने सतह को खरोच तक नहीं किया है।"

और फिर किताब, ज्ञान के उस भजन में, न्याय के बारे में चर्चा की तरह दिखने वाली चीज़ों से हमारा ध्यान हटा देती है। और यह कहता है, "नहीं, आप इसे खो रहे हैं। आप इसे पूरी तरह से खो रहे हैं।"

यह ज्ञान के बारे में है।" इसलिए, मेरा मानना है कि ज्ञान का भजन, पुस्तक के मध्य में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह हमें संवाद से प्रवचन की ओर ले जाता है, क्योंकि यह दर्शाता है कि वास्तव में संवाद खंड ने कुछ भी हासिल नहीं किया है क्योंकि यह एक कथावाचक को वापस उसी स्थिति में ले आता है। हमें अगले भाग की ओर ले जाएँ। और इससे हमें यह देखने में मदद मिलती है कि वास्तव में समस्या क्या है। हम बाद में उस पर वापस आएंगे।

संवाद और प्रवचन [20:20-23:30]

तो, हमें अपना प्रस्तावना और उपसंहार मिल गया है। हमें बीच में ज्ञान का भजन मिला है, और फिर प्रमुख भाग संवाद और प्रवचन हैं। संवाद सबसे पहले आता है। यहीं पर हम अय्यूब और उसके दोस्तों को मुद्दों पर चर्चा करते हुए पाते हैं। और इसलिए, हमारे पास एलीपज और बिलदद, और सोफर हैं, प्रत्येक भाषण देते हैं, और अय्यूब उनका उत्तर देता है। वह संवाद अनुभाग है। यह अध्याय तीन में अय्यूब के विलाप से शुरू होता है और अध्याय चार में एलीपज के भाषण से शुरू होता है और 27 तक जाता है, फिर ज्ञान के भजन और फिर प्रवचनों तक जाता है।

प्रवचन संवादों से भिन्न हैं क्योंकि उनमें परस्पर आदान-प्रदान नहीं होता है। और इसलिए, यहाँ, ये केवल तीन पात्र भाषण दे रहे हैं। अय्यूब 29 से 31 में अपना भाषण देता है, एलीहू 32 से 37 में अपना भाषण देता है, और फिर यहोवा भाषण देता है और वह प्रवचन अनुभाग भरता है।

तो, हमारे पास संवाद और प्रवचन हैं, जिनमें पुस्तक की बहुत सारी कच्ची सामग्री शामिल है। और फिर उपसंहार सब कुछ खत्म कर देता है। अब मुझे लगता है कि यह संरचना हमें अलंकारिक रणनीति को समझने में मदद करती है। यानी, संरचना हमें इस बात पर काम करने में मदद करती है कि मामला कैसे बनाया जा रहा है। मुझे नहीं लगता कि पुस्तक में से कोई भी अंश आसानी से छोड़ा जा सकता है और फिर भी सुसंगत रहेगा और अपने उद्देश्यों को पूरा कर सकेगा। हाँ, वे शाब्दिक रूप से बहुत भिन्न हैं। आपके पास आख्यान है; आपके पास संवाद है; आपके पास प्रवचन है; आपके पास भजन है। वे बहुत अलग हैं, लेकिन वे सभी एक साथ काम करते हैं, और आप उनमें से किसी को भी नहीं छोड़ सकते हैं और फिर भी उनके पास कुछ ऐसा है जिसमें एक सुसंगत संदेश है।

इसलिए, जैसे-जैसे हम पुस्तक पर काम करते हैं, हम अलंकारिक रणनीति का निर्माण करते जा रहे हैं। हम उस योगदान की तलाश में रहेंगे जो पुस्तक का प्रत्येक भाग करता है क्योंकि हमारा मानना है कि प्रत्येक भाग एक योगदान देता है। हम पुस्तक को एक सुसंगत समग्रता के रूप में मान रहे हैं, न कि ऐसी चीज़ के रूप में जिसे एक चिथड़े की रजाई के रूप में या कई अलग-अलग हाथों से एक साथ फेंक दिया गया हो। इसीलिए मैंने पहले इस विचार के बारे में बात की थी कि यह उन टुकड़ों में से एक हो सकता है जो एक किताब के रूप में एक साथ आते हैं। यदि यह एक साहित्यिक रचना है, यदि इसका निर्माण, रचना, एक ज्ञान संदेश के साथ एक विचार प्रयोग और सभी अंश इसका हिस्सा हैं, तो यह वास्तव में एक पुस्तक के रूप में रचा गया होगा। हालाँकि, प्राचीन विश्व के विद्वान प्रतिभाशाली थे, और वे इसे एक मौखिक रचना के रूप में भी प्रस्तुत कर सकते थे। इसमें सीखने के लिए बहुत कुछ होगा, याद रखने के लिए बहुत कुछ होगा, लेकिन प्राचीन दुनिया के कवियों ने ऐसा किया। होमरिक साहित्य का कुछ हिस्सा अपने आप में काफी लंबा है, और वह मौखिक रूप से प्रसारित किया गया था। इसलिए, यह बताना कठिन है, और अंत में, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

बयानबाजी की रणनीति और लेखकीय इरादा [23:30-26:17]

हमें किताब वैसी ही मिल गई है जैसी वह थी। इसमें एक पहचानने योग्य, वास्तव में आसानी से पहचाने जाने योग्य संरचना है। और यही इसे इसकी अलंकारिक रणनीति प्रदान करता है। और इसलिए, उससे, हम पुस्तक के संदेश को समझने का प्रयास करने जा रहे हैं।

अलंकारिक रणनीति हमें बताती है कि लेखक क्या कर रहा है। अलंकारिक रणनीति लेखक की रणनीति है। फिर से, मैं लेखक का उपयोग कर रहा हूँ; यह संचारक के लिए एक तरह का शॉर्टकट है, चाहे वह मौखिक हो या लिखित। यह अलंकारिक रणनीति है जो हमें लेखक के इरादे को देखने में मदद करती है। और यह वह इरादा है जिसका अधिकार है। याद रखें, यह ईश्वर का अधिकार है, लेकिन ईश्वर ने वह अधिकार एक मानव संचारक में निहित किया है। और यदि हमें ईश्वर का आधिकारिक संदेश प्राप्त करना है, तो हमें इसे मानव संचारक के माध्यम से प्राप्त करना होगा। इसलिए, हम हमेशा उस चीज़ की तलाश में रहते हैं जिसे हम लेखक का इरादा कहते हैं। उन्हें क्या मिल रहा है?

मेरा मानना है कि लेखक की मंशा का वह हिस्सा एक विचार प्रयोग है। कुछ भिन्न हो सकते हैं, और यह ठीक है। इससे फर्क पड़ेगा। इसका प्रभाव इस बात पर पड़ेगा कि हम पुस्तक के विभिन्न भागों के बारे में कैसे सोचते हैं। लेकिन अंत में, हम इसी तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं। याद रखें, वफादार व्याख्याकार, उस पुस्तक के संदेश का अनुसरण कर रहे हैं जो ईश्वर द्वारा, एक मानव संचारक, एक मानव उपकरण के माध्यम से, हम तक पहुँचाई गई थी।

बाइबल हमारे लिए लिखी गई थी, लेकिन यह हमारे लिए नहीं लिखी गई थी। और इसलिए, हमें यह समझने की कोशिश करनी होगी कि वह मानव संचारक क्या हासिल कर रहा था। यहीं हमें अधिकार मिलेगा। हमें प्रीलांस करने, उसमें अपनी चीज़ पढ़ने की आज़ादी नहीं है। हमें यह कहने की आज़ादी नहीं है, "ओह, मुझे लगता है कि किताब सचमुच चाहती है कि मैं इस तरह सोचूं।" यदि आप इसे पुस्तक से ही प्राप्त नहीं कर सकते, तो आप इसे ईश्वर से नहीं प्राप्त कर रहे हैं। और फिर यह क्या अच्छा कर रहा है?

इसलिए, हम अपने द्वारा सुझाई गई सभी समस्याओं के साथ-साथ शैली पर भी ध्यान देते हैं। हम अलंकारिक रणनीति पर ध्यान देते हैं, वह सब, हमें प्रेरित पुस्तक में क्या कहना है, इसकी सर्वोत्तम समझ पाने में हमारी मदद करने की कोशिश करते हैं, जैसा कि भगवान ने उनके माध्यम से बताया था, लेखक का इरादा था।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 4 है, शैली और संरचना, और बुद्धि की प्रकृति। [26:17]

नौकरी की किताब
सत्र 5: नौकरी और प्राचीन निकट पूर्व
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 5, अय्यूब और प्राचीन निकट पूर्व है।

समीक्षा [00:22-2:44]

अगली चीज़ जिसके बारे में हमें बात करने की ज़रूरत है वह यह है कि अय्यूब और अय्यूब की पुस्तक प्राचीन निकट पूर्वी पृष्ठभूमि से कैसे संबंधित हैं जिसमें वे मौजूद हैं। हम पहले ही इस विचार के बारे में बात कर चुके हैं कि बाइबल हमारे लिए लिखी गई है लेकिन यह हमारे लिए नहीं लिखी गई है। यह हमारी भाषा में नहीं है। यह हमारी संस्कृति में नहीं है। यह उस समय से हमारी संस्कृति या किसी अन्य संस्कृति का पूर्वानुमान नहीं करता है। इसलिए, यह बीजान्टिन संस्कृति की आशा नहीं करता है और बीजान्टिन संस्कृति की बात करता है। यह मध्यकालीन संस्कृति की आशा नहीं करता। यह सुदूर पूर्वी संस्कृति या अफ्रीकी संस्कृति या अमेरिकी संस्कृति की आशा नहीं करता है।

यह किसी संस्कृति की आशा नहीं करता, लेकिन लोगों की ज़रूरतों में कुछ समानताएँ होती हैं। हमें ईश्वर को जानने की ज़रूरत है। और इसलिए, यह हमारा काम है कि हम परमेश्वर और उसकी योजनाओं और उद्देश्यों को जानने में हमारी मदद करें; ईश्वर के बारे में अच्छा और सही सोचना, लेकिन यह हमारे लिए नहीं है। यह हमारी संस्कृति को नहीं मानता या हमारी संस्कृति का अनुमान नहीं लगाता।

अय्यूब की पुस्तक तब पूरी तरह से प्राचीन दुनिया में अंतर्निहित है। भले ही यह प्राचीन विश्व के किसी भी साहित्य का ऋणी नहीं है, फिर भी यह इसमें अंतर्निहित है। और उस अन्तर्निहितता का मतलब है कि बातचीत उस संदर्भ में सामने आ रही है, भले ही अय्यूब की किताब उस समय और संस्कृति के अन्य लोगों की तुलना में एक अलग परिप्रेक्ष्य ले रही हो, तब भी उस संस्कृति के संदर्भ में बातचीत हो रही है। हमने बताया है कि अय्यूब इस्राएली नहीं है। वह उज़ देश से है। तो, वह एक

इस्राएली नहीं है, लेकिन यह बहुत स्पष्ट है कि यह पुस्तक एक इस्राएली पुस्तक है। अर्थात्, इसे इस्राएलियों द्वारा इस्राएलियों के लिए तैयार किया गया है।

प्राचीन निकट पूर्वी (एएनई) साहित्य में पवित्र पीड़ित [2:44-6:33]

एक पवित्र पीड़ित की स्थिति के बारे में बात करते हुए, यह उस श्रेणी में फिट बैठता है जो प्राचीन दुनिया में जाना जाता है। ऐसे बहुत से साहित्य हैं जो पवित्र पीड़ित पर चर्चा करते हैं। लेकिन अय्यूब की पुस्तक में दिए गए उत्तर प्राचीन विश्व में हमें जो उत्तर मिलते हैं, उनसे काफ़ी भिन्न हैं।

प्राचीन दुनिया में कुछ टुकड़े जो इस तरह के पैटर्न का पालन करते हैं, वह प्रारंभिक सुमेरियन टुकड़ा है, जिसे ए मैन एंड हिज गॉड कहा जाता है। वहां पीड़ित व्यक्ति अपने द्वारा किए गए किसी भी अपराध के बारे में स्वयं को अनभिज्ञ बताता है। उसकी हालत यह है कि वह एक बीमारी से पीड़ित है। वह सामाजिक बहिष्कार है। लेकिन पुस्तक के अंत में, उसके पापों की पहचान की जाती है, और वह अपने पापों को स्वीकार करता है और स्वास्थ्य में बहाल हो जाता है। उस पुस्तक के पीछे का दर्शन यह है कि कोई भी पाप रहित बच्चा पैदा नहीं होता है। दूसरे शब्दों में, हर किसी में पाप होते हैं, और इसका परिणाम स्तुति के भजन में होता है, जो उस पुस्तक का धर्मशास्त्र है।

एक अकाडियन मेसोपोटामिया के टुकड़े को एक आदमी और उसके भगवान के बीच एक संवाद कहा जाता है। फिर, वे किसी भी संभावित अपराध से अनभिज्ञ हैं। पवित्र पीड़ित का मूल भाव यह विचार है कि कोई ऐसा व्यक्ति, जो सतही तौर पर ऐसा दिखता है जैसे उन्होंने वह सब कुछ कर लिया है जो उन्हें करना चाहिए और वे सभी आवश्यक तरीकों से पवित्र हैं, लेकिन वे पीड़ित हैं। और इसलिए, एक आदमी और उसके भगवान के बीच इस संवाद में, यह आदमी बीमारी से पीड़ित होता है और अंततः स्वस्थ हो जाता है। वहां कोई दर्शन प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसमें किसी दैवीय कृपा का आश्वासन नहीं दिया गया है।

प्राचीन दुनिया के सबसे प्रसिद्ध टुकड़ों में से एक को लुडलुल बेल नेमेकी कहा जाता है, मैं बुद्धि के देवता की स्तुति करूंगा। यह एक अक्काडियन टुकड़ा है और इसलिए बेबीलोनियन है। यहां फिर से, हमारे पास एक ऐसा चरित्र है जो हर तरह से कर्तव्यनिष्ठ और पवित्र है, किसी भी संभावित अपराध से अनभिज्ञ है। और फिर भी, वह स्वयं को सामाजिक रूप से बहिष्कृत पाता है। देवताओं

से संचार अस्पष्ट है. वह एक बीमारी से पीड़ित है. उसकी सुरक्षात्मक आत्माओं को भगा दिया गया है। वह राक्षस उत्पीड़न के बारे में बात करता है। और इसलिए, वह इस तरह की स्थिति में है। उसकी स्थिति के समाधान में, भगवान उसके सपने में प्रकट होते हैं और उसे सूचित करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उसे शुद्धिकरण की पेशकश करने का एक तरीका दिया जाता है जिससे तृष्णीकरण होता है, और उसके अपने अपराध दूर हो जाते हैं। उसके राक्षसों को निष्कासित कर दिया गया है, वह स्वास्थ्य में बहाल हो गया है। यह, फिर, इंगित करता है कि वह वास्तव में अपराध के बिना नहीं था। इस टुकड़े के पीछे का दर्शन कहता है कि देवता गूढ़ हैं; कौन जानता है कि वे क्या कर रहे हैं। और इसका परिणाम बेबीलोन के देवता मर्दुक की स्तुति के भजन के रूप में मिलता है।

एक अंतिम को बेबीलोनियन थियोडिसी कहा जाता है। इसमें, फिर से, व्यक्ति धर्मपरायणता का दावा करता है, लेकिन उसका परिवार चला गया है, और वह गरीबी से पीड़ित है। और, इस मामले में, वास्तव में उसकी स्थिति का कोई समाधान नहीं है। वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि ईश्वर के उद्देश्य दूरस्थ हैं और आप वास्तव में नहीं बता सकते कि वे क्या कर रहे हैं। यह मत व्यक्त करता है कि देवताओं ने लोगों को दुष्ट प्रवृत्ति वाला और कष्ट भोगने वाला बनाया है। और इसलिए दुनिया ऐसी ही है।

एनई स्रोतों में विचार [6:33-11:02]

ये कुछ अधिक लोकप्रिय टुकड़े हैं जिन्हें हम प्राचीन दुनिया से जानते हैं। और हम देख सकते हैं कि वे देवताओं और लोगों द्वारा अनुभव की जाने वाली पीड़ा पर एक बहुत अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। तो, जो उत्तर हमें यहां मिलता है वह दैवीय गूढ़ता है। आप वास्तव में नहीं जान सकते कि देवता क्या कर रहे हैं। मानवता की अंतर्निहित पापपूर्णता, हर कोई पाप करता है, हर कोई अपराध करता है, और इसलिए पीड़ा में, आप कभी यह दावा नहीं कर सकते कि वह इसके योग्य नहीं थी। या फिर देवता भी इंसानियत को टेढ़ा बना देते हैं. अन्य समय में वे यह विचार व्यक्त करते हैं कि कोई भी वास्तव में वह सब कुछ नहीं कर सकता जो देवताओं को चाहिए। इसलिए, हमेशा कुछ ऐसा होगा जिससे देवता क्रोधित हो सकते हैं।

आम तौर पर, प्राचीन निकट पूर्व में दोष मढ़ने की प्रवृत्ति कम होती है। लोग वास्तव में जानकारी से वंचित हैं। देवताओं ने स्पष्ट रूप से संवाद नहीं किया है। जब आप मिस्त्रियों या बेबीलोनियों या कनानियों, या हितियों के बारे में बात करते हैं, तो देवताओं ने स्वयं को प्रकट नहीं किया है। और इसलिए, इस बारे में कोई स्पष्ट संचार नहीं है कि वे क्या चाहते हैं, क्या उन्हें प्रसन्न करेगा या क्या उन्हें नाराज करेगा। प्राचीन दुनिया में इसका कोई मतलब नहीं है।

इसके अलावा, लोगों का मानना था कि देवता काफी हद तक असंगत थे। उनके अपने एजेंडे हैं, और वे मनमौजी हैं। दिन-ब-दिन, वे अलग-अलग कार्य कर सकते हैं। और इसलिए, भले ही उन्हें लगता है कि उनकी स्थिति भगवान की उपेक्षा या क्रोध या किसी कारण या किसी अन्य कारण से मन में बदलाव का परिणाम है, उनके पास वास्तव में इस सब पर विचार करने का कोई तरीका नहीं है। प्राचीन दुनिया में, उनका मानना था कि यदि देवता क्रोधित हो जाते हैं, तो वे अपनी सुरक्षा हटा देंगे, और परिणामस्वरूप, व्यक्ति असुरक्षित हो जाएगा, राक्षसी शक्तियों या आसपास मौजूद ताकतों से खतरे में पड़ जाएगा। और इसलिए, हमने पाया कि उस टुकड़े में जिसे मैंने लुडलुल बेल नेमेकी के रूप में पहचाना है, पीड़ित ने वह सब कुछ किया है जो वह करने के बारे में सोच सकता है। उनके ये शब्द हैं : "काश मुझे पता होता कि ये चीजें किसी के भगवान को प्रसन्न कर रही हैं। जो स्वयं के लिए उचित है वह उसके भगवान के लिए अपराध है। जो किसी के दिल में घृणित लगता है वह उसके भगवान के लिए उचित है। कौन जानता है कि उसकी इच्छा क्या है स्वर्ग में देवता? अधोलोक के देवताओं की योजनाओं को कौन समझता है? मनुष्यों ने कभी भगवान का मार्ग कहाँ सीखा है?"

क्या आप उसकी हताशा सुन सकते हैं? क्या आप समझ सकते हैं कि ऐसी दुनिया में रहना कैसा होगा, यह जानते हुए कि वहाँ शक्तिशाली प्राणी हैं जो जीवन के हर हिस्से को प्रभावित करते हैं और फिर भी आपको यह नहीं बताया है कि वे आपसे क्या उम्मीद करते हैं या क्या बात उन्हें प्रसन्न या क्रोधित करेगी।

सोचिए अगर आपने ऐसी नौकरी की हो, जहाँ आपका बॉस आपको जवाबदेह ठहरा रहा हो और फिर भी आपने कभी यह स्पष्ट नहीं किया हो कि आपको क्या करना चाहिए या क्या नहीं करना

चाहिए। और यह कि आपको आपके अनुमानों के आधार पर दंडित या पुरस्कृत किया गया। यह बहुत असुविधाजनक है।

मुझे आशा है कि यह अंतर्दृष्टि हमें हमारे ईश्वर की एक नई सराहना करने में मदद करेगी जिसने संचार किया है और खुलासा किया है कि उसे क्या पसंद आएगा या नहीं और जिसने हमें बताया है कि वह कैसा है और कहा है कि यह दिन-ब-दिन बदलने वाला नहीं है। इससे हमें एक नई सराहना और कृतज्ञता मिलनी चाहिए जो ईश्वर ने अपनी कृपा से हमें बताई है। तो, अय्यूब जैसी पुस्तक के साहित्य के पीछे जो कुछ है, उनमें से कुछ परिदृश्य इस प्रकार हैं। परन्तु अय्यूब अब तक उनसे आगे निकल गया है; देने के लिए और भी बहुत कुछ है।

अय्यूब की इजरायली सोच है: 1) कोई बहुदेववाद नहीं [11:02-12:12]

अब, मैंने बताया कि अय्यूब एक इस्राएली की तरह सोचता है, भले ही वह एक इस्राएली नहीं है। हम उसे कहां देखते हैं? उदाहरण के लिए, हम इसे इस रूप में देखते हैं कि अय्यूब का बहुदेववाद की ओर किसी भी प्रकार का झुकाव नहीं है। यह वास्तव में अजीब है क्योंकि प्राचीन दुनिया में, बहुदेववाद देवताओं के बारे में सोचने का एकमात्र तरीका है। और इसलिए, यह विचार कि ईश्वर समुदाय में है, हम ईश्वरीय परिषद के कारण शुरुआती अध्यायों में एक समुदाय का थोड़ा सा हिस्सा देखते हैं, लेकिन बहुदेववाद की ओर कोई झुकाव नहीं है। वास्तव में, अय्यूब बहुदेववाद के विरुद्ध खड़े होने के लिए कुछ प्रतिज्ञाएँ करता है। अय्यूब 31:26 में अपनी शपथ में, वह शपथ लेता है कि उसने सूर्य या चंद्रमा की ओर हाथ नहीं उठाया है। यह केवल इजराइली संदर्भ में ही समझ में आता है। आसपास के बाकी सभी लोग नियमित रूप से सूर्य और चंद्रमा की पूजा करते थे और खुशी से ऐसा करते थे। वह कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जो कोई दोष थी। इसलिए, केवल इजराइली संदर्भ में ही यह दावा करना उचित होगा कि उसने ऐसा नहीं किया है।

2) कोई जिज्ञासा नहीं कि कौन सा देवता मुसीबत लाता है [12:12-12:46]

दूसरी बात यह है कि अय्यूब इस बारे में कोई जिज्ञासा नहीं दिखाता कि किस ईश्वर ने उसके लिए मुसीबत खड़ी की है। ऐसा लगता है कि उसे ठीक-ठीक पता है कि वह किस भगवान से बात कर रहा है, और स्थिति को खराब करने या भ्रमित करने के लिए कोई अन्य व्यक्ति मौजूद नहीं है। वह

किसी अन्य देवता से कोई अपील नहीं करता। कभी-कभी यदि एक भगवान आपको परेशानी दे रहा है, तो आप इससे निपटने में मदद के लिए दूसरे भगवान से अपील कर सकते हैं। अय्यूब ऐसा कुछ नहीं करता। वह केवल एक ईश्वर के माध्यम से कार्य कर रहा है।

3) योग्य या अयोग्य सज़ा [12:46-14:33]

वह इस बारे में सोचता है कि उसे सज़ा मिलनी चाहिए या नहीं। अब प्राचीन विश्व में, मैंने विभिन्न टुकड़ों का उल्लेख किया है। वे किसी भी अपराध के प्रति अपनी अज्ञानता के बारे में बात करते हैं और इसलिए, कल्पना नहीं कर सकते कि देवताओं के क्रोध को भड़काने के लिए उन्होंने क्या किया होगा। लेकिन अंत में, वे अक्सर यह मान लेते हैं कि कोई अपराध हुआ है। उन्हें इसकी जानकारी ही नहीं थी। वे इससे अनभिज्ञ थे और उन्होंने किसी तरह देवताओं को नाराज कर दिया था। अय्यूब इस बारे में सोचता है कि क्या उसकी धार्मिकता या अपराधों के कारण वास्तव में उसे यह सज़ा मिली है। और यह प्राचीन निकट पूर्व में आपने जो पाया था उसकी तुलना में सोच का थोड़ा स्पष्ट स्तर दर्शाता है। विशेष रूप से, इसके दूसरे पक्ष की तरह, अय्यूब अपनी धार्मिकता के प्रति पूर्णतया आश्वस्त है। प्राचीन निकट पूर्व में, वे केवल यह सुनिश्चित कर सकते थे कि उन्होंने भगवान को खुश रखने के लिए उचित अनुष्ठान करने के लिए वह सब कुछ किया है जो वे जानते थे।

लेकिन धार्मिकता, जिस तरह से इसे अय्यूब में चित्रित किया गया है, वास्तव में प्राचीन दुनिया में मेज पर नहीं है। प्राचीन दुनिया में लोगों के दायित्व अनुष्ठानिक प्रकृति के थे, अमूर्त रूप में किसी प्रकार की पूर्ण धार्मिकता नहीं जिसे परिभाषित किया जा सके। उनकी एकमात्र धार्मिकता उन देवताओं को प्रसन्न करने के लिए कुछ भी करने में थी जिनकी मांगें बहुत प्रसिद्ध नहीं थीं। अय्यूब को अपनी धार्मिकता के बारे में काफ़ी निश्चितता है। फिर, यह इसे एक बहुत ही इज़राइली एहसास देता है।

4) द ग्रेट सिम्बायोसिस नॉट इन जॉब [14:33-18:24]

इसके अलावा, उससे जुड़े अय्यूब में, जिसे मैं महान सहजीवन कहता हूँ, उसका कोई सुझाव नहीं है। आइए मैं आपको यह समझाता हूँ। प्राचीन दुनिया में महान सहजीवन इस बारे में बात करता है कि देवता और लोग कैसे बातचीत करते हैं। प्राचीन विश्व में बड़े पैमाने पर, उनका मानना था कि देवताओं ने मनुष्यों को इसलिए बनाया क्योंकि देवता अपनी जरूरतों को पूरा करने से थक गए थे।

इस प्रकार सोचने पर, देवताओं को भूख लगती है, देवताओं को प्यास लगती है, देवताओं को वस्त्र की आवश्यकता होती है, और देवताओं को आवास की आवश्यकता होती है। वे काफी हद तक इंसानों की तरह हैं; उनकी जरूरतें थीं। उन्हें अपना भोजन स्वयं उगाना था, अपने खेतों की सिंचाई स्वयं करनी थी और अपने घर स्वयं बनाने थे। और यह बस थका देने वाला, थका देने वाला काम था। देवता इससे थक गये थे। और इसलिए, वे निर्णय लेते हैं, हम दास श्रम पैदा करेंगे। हम लोग बनाएंगे, और वे हमारी जरूरतें पूरी करेंगे। हम लोग पैदा करेंगे और वे खाना उगाएंगे और हमें खिलाएंगे। वे हमारे लिये सुन्दर वस्त्र बनाकर हमें पहिनायेंगे। और वे शानदार घर बनाएंगे, और वे हमें हर तरह से लाड़-प्यार देंगे। उत्तम विचार। और इसलिए, उन्होंने यही किया। इसलिए, लोगों को इसलिए बनाया गया ताकि वे देवताओं की जरूरतों को पूरा कर सकें और उन्हें लाड़-प्यार दे सकें। अब यह महान सहजीवन का एक पक्ष है: लोगों को देवताओं के लिए क्या करना चाहिए था। लेकिन निस्संदेह, इसका दूसरा पक्ष भी है, इसलिए, देवताओं को लोगों के लिए क्या करना पड़ा। क्योंकि एक बार जब वे अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए लोगों पर निर्भर हो गए, तो उन्हें किसी तरह उन्हें संरक्षित करना पड़ा। उन्हें पर्याप्त बारिश भेजनी पड़ी ताकि लोग देवताओं को खिलाने के लिए और खुद को खिलाने के लिए भोजन उगा सकें क्योंकि अन्यथा, वे मर जाएंगे और वे देवताओं को नहीं खिला सकेंगे। उन्हें उनकी रक्षा करनी थी ताकि आक्रमणकारी आकर उन्हें नष्ट न कर दें क्योंकि तब वे देवताओं को भोजन नहीं दे सकते थे। इसलिए, देवताओं को लोगों के लिए प्रावधान करके और लोगों की रक्षा करके उनके हितों की रक्षा करनी थी।

तो, इस तरह, यह कोडपेंडेंसी बनती है; जहां देवता लोगों को लाड़-प्यार देने, उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए उन पर निर्भर रहते हैं। और लोग अपनी रक्षा और भरण-पोषण के लिए देवताओं पर निर्भर रहते हैं।

यह थोड़ा सा है जहां न्याय प्रणाली में आता है क्योंकि देवता न्याय को संरक्षित करने में रुचि रखते थे। इसलिए नहीं कि न्याय किसी तरह से उनके स्वभाव में अंतर्निहित था, बल्कि इसलिए कि अगर समाज में तबाही और अराजकता और परेशानी होती, अगर समाज व्यवस्थित और न्यायपूर्ण नहीं होता, तो सभी प्रकार की समस्याएं होतीं, और लोग अपनी समस्याओं पर ध्यान नहीं दे पाते। काम।

कार्य था: देवताओं को लाड़-प्यार देना। इसलिए, यदि लोग आपस में लड़ रहे थे, यदि समाज अशांति से भरा था, तो देवताओं की ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा था। इसलिए, समाज में न्याय और व्यवस्था सुनिश्चित करने में देवताओं का कुछ स्वार्थ था। तो, यह महान सहजीवन है, यह सहनिर्भरता है, पारस्परिक आवश्यकता है, जहां देवताओं को लोगों की आवश्यकता होती है, और लोगों को देवताओं की आवश्यकता होती है।

5) क्या अय्यूब मुफ्त में परमेश्वर की सेवा करता है ?— इस्राएली [18:24-19:51]

अब, जब अय्यूब के बारे में प्रश्न सामने रखा जाता है, तो क्या अय्यूब बिना कुछ लिए परमेश्वर की सेवा करता है? आप देख सकते हैं कि यह इस महान सहजीवन की बुनियाद पर चोट करता है। प्राचीन दुनिया में, कोई भी बिना कुछ लिए भगवान की सेवा नहीं करता था। भगवान की सेवा करने का पूरा विचार यह था कि भगवान उस उपकार का बदला चुकायें। अनुष्ठानों की पेशकश करने का उनका विचार यह था कि देवता समृद्धि और सुरक्षा लाएँ। प्राचीन विश्व में किसी ने भी बिना कुछ लिए ईश्वर की सेवा नहीं की। इससे हमें पता चलता है कि यह पुस्तक कितनी इज़राइली है क्योंकि पुस्तक में प्रश्न का आधार ही एक ऐसा आधार है जो इस बात से इनकार करता है कि महान सहजीवन हमेशा बना रहेगा या इस पर काम किया जा रहा है। केवल इज़राइल में ही आप उस दिशा में सोचना शुरू कर सकते हैं। अय्यूब एक इस्राएली की तरह सोच रहा था। महान सहजीवन में निष्काम धार्मिकता की कोई अवधारणा नहीं है।

6) दोस्तों के साथ अय्यूब की असहमति दर्शाती है कि वह इस्राएली है [19:51-21:56]

इसके अलावा, अय्यूब की इज़राइली सोच तब परिलक्षित होती है जब वह अपने दोस्तों के साथ असहमति में प्रवेश करता है। उसके दोस्त प्राचीन निकट पूर्वी लोगों की तरह सोचते हैं। वे सोचते हैं कि अय्यूब को परमेश्वर को प्रसन्न करने की आवश्यकता है ताकि परमेश्वर उसे उसके लाभ वापस दे दे। मैं इसे अपना सामान वापस पाना, अपना सामान वापस कैसे प्राप्त करना कहता हूँ। अय्यूब के दोस्तों की सारी सलाह इस बारे में है कि आपको अपना सामान वापस पाने के लिए क्या करना होगा। यदि आप ये काम करेंगे तो भगवान का क्रोध शांत हो जाएगा और आपको अपना सामान वापस मिल जाएगा। दूसरे शब्दों में, वे इस दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जो कहता है,

"नौकरी, यह वास्तव में सामान के बारे में है।" जबकि किताब में मुद्दा यह है कि यह सामान के बारे में नहीं है, या क्या अय्यूब वास्तव में सोचता है कि यह सामान के बारे में नहीं है? क्या अय्यूब की धार्मिकता में कोई दिलचस्पी नहीं है? अर्थात् क्या सचमुच उसकी रुचि लाभ में न होकर केवल धार्मिकता में है? अय्यूब के दोस्त उसकी रुचि को इस लाभ की ओर मोड़ने का प्रयास करते रहते हैं कि वह अपना सामान कैसे पुनर्स्थापित कर सकता है। यदि अय्यूब उनकी बात सुनता है, तो पूरी किताब बिखर जाती है। तो, दोस्त प्राचीन निकट पूर्वी लोगों की तरह सोचते हैं, और अय्यूब उस तरह की सोच को स्वीकार करने से इनकार करके अपनी तरह की इज़राइली-शैली की सोच दिखा रहा है।

तो, अय्यूब एक इस्राएली नहीं है, लेकिन वह एक इस्राएली की तरह सोचता है। वह एक इस्राएली की तरह व्यवहार करता है। और इसलिए, एक इज़राइली पाठक स्वयं को अय्यूब के दृष्टिकोण से पहचानेगा।

7) पुस्तक का फोकस इज़राइली है: कोई अनुष्ठानिक तुष्टिकरण नहीं [21:56-23:24]

अब, केवल इतना ही नहीं, बल्कि पुस्तक का फोकस इज़राइली है। अय्यूब न केवल एक इस्राएली की तरह सोचता और कार्य करता है, बल्कि पुस्तक का फोकस भी इस्राएली पर है। इसलिए, उदाहरण के लिए, यह सोचने की कोई संभावना नहीं है कि अय्यूब की स्थिति के स्पष्टीकरण के रूप में कोई धार्मिक अपराध है। प्राचीन निकट पूर्व में ऐसा ही रहा होगा। साहित्य के उन सभी टुकड़ों में ऐसा ही है जिन्हें हमने देखा। विचार यह था कि अवश्य ही कोई अनुष्ठानिक अपराध हुआ होगा और इसलिए, कुछ अनुष्ठानिक तुष्टिकरण, कुछ अनुष्ठानिक समाधान होना चाहिए। अय्यूब की पुस्तक उस संभावना पर कोई ध्यान नहीं दे रही है। यह इज़रायली फोकस ले रहा है।

प्रभावी प्रतिक्रिया के रूप में तुष्टिकरण के बारे में कोई विचार नहीं है। विचार यह है कि किसी तरह ईश्वर अतार्किक रूप से क्रोधित है और उसे प्रसन्न करने की आवश्यकता है। यदि ऐसा होता, तो अय्यूब उसे स्पष्टीकरण के लिए अदालत में नहीं बुला रहा होता। इसलिए, उस तरह के तुष्टिकरण के बारे में कोई विचार नहीं है। उसके दोस्त चाहेंगे कि वह उन्हें खुश करे। हालाँकि, फिर भी, यह अनुष्ठानिक अर्थ में तुष्टिकरण नहीं है। किताब वह युक्ति नहीं अपनाती। इसलिए, यहां तक कि जो

मित्र प्राचीन निकट पूर्वी सोच का प्रतिनिधित्व करते हैं, वे भी कोई अनुष्ठान समाधान प्रस्तावित नहीं करते हैं।

8) परमेश्वर का न्याय और अय्यूब की धार्मिकता इस्राएली है [23:24-24:51]

यह विचार कि पुस्तक में रुचि है, ईश्वर के न्याय करने और अय्यूब की धार्मिकता दोनों में, यह इसे प्राचीन निकट पूर्व में सोच के मैट्रिक्स से बहुत अलग बनाता है। प्राचीन निकट पूर्व उन चीजों में रुचि नहीं दिखाएगा। देवता वही करते हैं जो वे करते हैं। और इसलिए, जबकि उनका मानना है कि देवता न्याय में रुचि रखते हैं, यह विचार कि किसी तरह देवताओं को न्याय के साथ कार्य करना होगा, वास्तव में तस्वीर में नहीं है; देवता वही करते हैं जो वे करते हैं। और इसलिए, यह विचार कि अय्यूब की धार्मिकता, जो प्राचीन निकट पूर्व में अपरिभाषित है, और परमेश्वर के न्यायपूर्ण कार्य चित्र में हैं, इजरायली सोच को दर्शाता है।

एक और बात जो हम किताब में देखते हैं वह यह है कि अय्यूब को शुरू से ही धर्मी घोषित किया गया है। वाह, यह प्राचीन निकट पूर्व की किसी भी चीज़ से भिन्न है कि उसे स्पष्ट घोषित किया जाएगा। फिर, यह पुस्तक की चरम सीमाओं में से एक है। आप देख सकते हैं कि कैसे यह सभी प्राचीन निकट पूर्वी व्याख्याओं को सामने ला देता है। यदि यह शुरू से ही अय्यूब को दोषमुक्त कर देता है, तो अय्यूब की पीड़ा के बारे में सभी उत्तर अब उपलब्ध नहीं हैं; वे सभी जो प्राचीन निकट पूर्व देता है।

9) ईश्वर का उत्कृष्ट दृष्टिकोण [24:51-25:14]

और अंत में, एक और चीज़ जो हमें किताब में इजरायली फोकस दिखाती है वह है देवता का उत्कृष्ट दृष्टिकोण, कि ईश्वर इन सबसे ऊपर रहता है। अब फिर से, आप उस पहले या दो अध्याय को कैसे पढ़ते हैं इसके आधार पर इसे कम किया जा सकता है। और हम इसके बारे में आगे बात करेंगे. लेकिन कुल मिलाकर, देवता का एक उत्कृष्ट दृष्टिकोण है।

पुस्तक के उत्तर मानव स्वभाव या दैवीय स्वभाव पर नहीं, बल्कि दुनिया में ईश्वर की नीतियों पर निर्भर हैं। भगवान कैसे कार्य करता है? और उस अर्थ में, फिर से, यह उससे बहुत भिन्न है जो हम प्राचीन निकट पूर्व में पाते हैं।

एनई साहित्य को मित्र पदों द्वारा एक पत्री के रूप में उपयोग किया जाता है [25:14-26:32]

अय्यूब की पुस्तक, तो मैं कहूंगा कि प्राचीन निकट पूर्वी साहित्य के किसी भी टुकड़े का ऋणी नहीं है। यह प्राचीन निकट पूर्वी साहित्य को एक पत्री के रूप में उपयोग करता है। यह चाहता है कि आप इसके बारे में सोचें, जबकि यह चाहता है कि इसके दर्शक दिए गए अन्य उत्तरों के बारे में सोचें क्योंकि इससे पता चलेगा कि वे कितने दिवालिया हैं। प्राचीन निकट पूर्व तब जॉब की पुस्तक के लिए एक वार्तालाप भागीदार है। इसराइली उस व्यापक बातचीत से बहुत अच्छी तरह परिचित हैं। अय्यूब की पुस्तक उस वार्तालाप में प्रवेश कर रही है, लेकिन वह इसे एक विषमता के रूप में उपयोग कर रही है क्योंकि यह एक अलग प्रकार की स्थिति लेगी और एक ऐसा उत्तर देगी जो प्राचीन दुनिया में उपलब्ध नहीं था, विशेष रूप से उस तरीके के कारण जिसके बारे में लोगों ने सोचा था प्राचीन विश्व में देवता। अय्यूब के मित्र प्राचीन निकट पूर्वी सोच का प्रतिनिधित्व करते हैं, लेकिन अय्यूब इसका विरोध करता है, और पुस्तक इसका विरोध करती है।

सारांश: अय्यूब स्पष्ट रूप से इस्राएली है [26:32-28:32]

तो, आइए विशिष्ट इज़राइली विशेषताओं को संक्षेप में प्रस्तुत करें। सबसे पहले, कोई महान सहजीवन नहीं है। ईश्वर की कोई आवश्यकता नहीं है, और हम इसे अय्यूब 22:3 जैसे स्थान पर व्यक्त करते हुए देखते हैं। दूसरे, ईश्वर के न्याय में रुचि है। और फिर, यह प्राचीन निकट पूर्व में उतना मजबूत तत्व नहीं होगा। एक अमूर्त अवधारणा के रूप में धार्मिकता में रुचि है। ऐसा प्रतीत होता है कि अय्यूब में व्यक्तिगत धार्मिकता की भावना है जो प्राचीन दुनिया द्वारा प्रदान की जा सकने वाली चीज़ों से कहीं आगे है। यहां किसी अनुष्ठानिक अपराध पर विचार नहीं किया जाता है या अनुष्ठानिक उपाय सुझाए या अपनाए नहीं जाते हैं, और कोई तुष्टीकरण नहीं किया जाता है। दिव्य ज्ञान एक प्रमुख विषय है और वास्तव में पुस्तक का केंद्र बिंदु है। और फिर, जो हम प्राचीन निकट पूर्व में पाते हैं उससे बिल्कुल अलग। प्राचीन निकट पूर्व में, यह केवल दैवीय अधिकार था। देवता वही करते हैं जो वे करते हैं। यहां दैवीय ज्ञान का विचार हमें यह समझने में मदद करता है कि ईश्वर का संसार को चलाना कैसा है और उसकी नीतियां कैसी हैं। इसलिए, प्राचीन निकट पूर्व के बाकी

लोग अपने देवताओं के बारे में जिस तरह सोचते थे, उससे अलग ढंग से उनके बारे में सोचने से मदद मिलती है।

तो, अय्यूब एक ऐसी किताब है जो प्राचीन दुनिया से बहुत गहराई से जुड़ी हुई है। यह प्राचीन विश्व के ज्ञान को मानता है, लेकिन यह प्राचीन विश्व में हम जो पाते हैं उससे विपरीत दृष्टिकोण रखता है। ऐसा करने से, यह हमें ईश्वर, यहोवा का रहस्योद्घाटन देता है, जो कि प्राचीन दुनिया के देवताओं में से किसी एक के बारे में दी जा सकने वाली किसी भी चीज़ से बहुत अलग है।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 5, अय्यूब और प्राचीन निकट पूर्व है। [28:32]

नौकरी की किताब
सत्र 6: नौकरी की पुस्तक का उद्देश्य
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन है और यह अय्यूब की पुस्तक पर शिक्षण है। यह सत्र 6 है, पुस्तक का उद्देश्य।

परिचय [00:22-1:07]

तो, अब हम वास्तव में महत्वपूर्ण मुद्दों पर आ रहे हैं। आइए बात करें कि नौकरी की पुस्तक का उद्देश्य क्या है। हमने इस बारे में बात की है कि इसमें किस प्रकार अधिकार है और हमें ईश्वर का रहस्योद्घाटन करने के लिए प्रेरित और प्रेरित करता है। तो, हमने इसकी सेटिंग, इसकी शैली, तिथि और लेखकत्व के मुद्दों के बारे में बात की है, लेकिन अब, पुस्तक का उद्देश्य क्या है? आलंकारिक रणनीति से उद्देश्य की पूर्ति होती है। संरचना के माध्यम से उद्देश्य की पूर्ति होती है। लेकिन हमें पुस्तक का उद्देश्य क्या लगता है?

जब हमने अपनी कुछ गलतफहमियों के बारे में बात की, तो हमने इस विचार के बारे में बात की कि अय्यूब पर मुकदमा नहीं चल रहा है। यह अय्यूब वगैरह से ज़्यादा ईश्वर के बारे में है। तो, आइए इसे कुछ विशिष्टता दें।

उद्देश्य [1:07-2:16]

यह पुस्तक हमें यह सीखने में मदद करती है कि आपदा आने पर ईश्वर के बारे में कैसे अच्छा सोचना चाहिए। जब आपदा आती है तो हम ईश्वर के बारे में सही और उचित तरीके से कैसे सोचते हैं? मैं यह सुझाव देना चाहूँगा कि पुस्तक का उद्देश्य ईश्वर की नीतियों का पता लगाना है। ईश्वर संसार में कैसे कार्य करता है?

हम सोचते हैं कि यदि ईश्वर अच्छा है और ईश्वर सर्वशक्तिमान है, तो उसे दुखों को रोकने में सक्षम होना चाहिए। और इसलिए, हमें आश्चर्य होता है कि जब हम पीड़ा का सामना करते हैं, खासकर उन लोगों की पीड़ा का सामना करते हैं जो पूरी तरह से अयोग्य लगते हैं तो भगवान क्या कर रहे हैं। हम परमेश्वर की नीतियों के बारे में कैसे सोचते हैं? वह दुनिया में कैसे काम करता है? मैं आपको यह

सुझाव दूँगा कि वास्तव में यह पुस्तक हमें समझने में मदद करने का प्रयास करेगी। भगवान दुनिया में कैसे काम करता है, खासकर जब हम पीड़ित होते हैं?

चुनौती देने वाले का आरोप: धर्मी को पुरस्कृत करना अच्छा नहीं है [2:16-5:49]

अब, पुस्तक में अलग-अलग दिशाओं से ईश्वर पर लगाए गए दो आरोपों को शामिल किया गया है। हमारे पास स्वर्ग में प्रतिद्वंद्वी, प्रतिपक्षी, चुनौती देने वाला है, जिसे कभी-कभी शैतान भी कहा जाता है। हम थोड़ी देर में उस तक पहुंचेंगे। यह एक और व्याख्यान है, लेकिन आइए अभी उसे "चुनौती देने वाला" कहें। हमें चुनौती देने वाला मिल गया है, और जब चुनौती देने वाला भगवान के सामने खड़ा होता है, तो भगवान अय्यूब की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। "क्या तुमने मेरे नौकर अय्यूब पर विचार किया है? उसके तुल्य कोई नहीं है।" फिर, अय्यूब का वर्णन अत्यंत न्यायसंगत और धर्मसम्मत है, सर्वोत्तम व्यक्ति हो सकता है।

और याद रखें कि चुनौती देने वाले का प्रश्न है: "क्या अय्यूब बिना कुछ लिए परमेश्वर की सेवा करता है?" अब, ऐसा लगता है कि यह अय्यूब की प्रेरणाओं के बारे में एक प्रश्न है, और यह बिल्कुल सीधे तौर पर यही है। अय्यूब वास्तव में उस प्रकार का व्यक्ति बनने के लिए क्या प्रेरित करता है जैसा वह है?

लेकिन उस प्रश्न में अंतर्निहित है, और मुझे लगता है कि इसका वास्तविक फोकस इस बात से है कि ईश्वर चीजों को कैसे काम करता है, ईश्वर की नीतियां क्या हैं। तो, वास्तव में चुनौती देने वाला यह पूछ रहा है: हे भगवान, क्या आपके लिए धर्मी लोगों के लिए समृद्धि लाना एक अच्छी नीति है? यह काफी तार्किक लगता है लेकिन इसके बारे में सोचें। यदि धर्मी लोगों को उनकी धार्मिकता के कारण सभी प्रकार के लाभ और समृद्धि और सफलता और अच्छा स्वास्थ्य, हर प्रकार के लाभ मिलते रहते हैं, तो क्या आप वास्तव में उन्हें भाड़े के सैनिक बनने के लिए प्रशिक्षित नहीं कर रहे हैं? क्या आप वास्तव में उन्हें धर्मी होने का एक गुप्त उद्देश्य नहीं दे रहे हैं? यदि आप धर्मी लोगों को लाभ देने में पर्याप्त समय व्यतीत करते हैं, तो आप उन्हें धार्मिकता की परवाह करने के बजाय लाभों की लालसा करने के लिए प्रशिक्षित करते हैं।

आप उन्हें अलग ढंग से सोचने के लिए प्रशिक्षित करें। वह भिन्न प्रकार की सोच वास्तव में सच्ची धार्मिकता के लिए विध्वंसक है क्योंकि जितना अधिक व्यक्ति निर्णय लेगा कि उन्हें लाभ पसंद है, उतना ही कम वह सच्ची धार्मिकता के बारे में सोचेगा। आपको इस पर पुनर्विचार करना चाहिए, भगवान। क्या नेक लोगों के लिए समृद्धि लाना एक अच्छी नीति है? क्या यह वास्तव में आपके सर्वोत्तम हित में और सच्ची धार्मिकता के सर्वोत्तम हित में है? यह किसी व्यक्ति की प्रेरणा को भ्रष्ट करता है, अच्छी नीति को नहीं।

अब, हम इस चुनौती देने वाले के बारे में जो भी सोचते हैं, हम देख सकते हैं कि यह उठाना एक तार्किक मुद्दा है। यह एक महत्वपूर्ण बात है। वास्तव में, हम उत्पत्ति 22 और इब्राहीम द्वारा इसहाक के बलिदान पर वापस जा सकते हैं और देख सकते हैं कि उसी प्रकार का प्रश्न पूछा जा रहा है। हम उस पर दूसरी बार वापस आएं। तो, भगवान के खिलाफ, भगवान की नीतियों के खिलाफ आरोप का एक पहलू, भगवान की प्रकृति पर सवाल नहीं उठाता है; यह उनकी नीतियों पर सवाल उठाता है। तो, इसका एक पक्ष यह है: क्या धर्मी लोगों की समृद्धि के लिए यह वास्तव में अच्छी नीति है?

अय्यूब का आरोप: धर्मी के लिए कष्ट सहना अच्छा नहीं है [5:49-6:47]

अब, जब अय्यूब पर विपत्तियाँ आती हैं और विपत्ति उसे घेर लेती है, तो हम पाते हैं कि जैसे ही वह ईश्वर के साथ बातचीत करना शुरू करता है, उसे एक अलग चुनौती मिलती है। उनकी चुनौती है: "आप जानते हैं, भगवान, क्या आपके लिए धर्मी लोगों को कष्ट देना वास्तव में एक अच्छा विचार है? मेरा मतलब है, हम अच्छे लोग हैं। हम आपकी तरफ हैं; हम आपकी टीम में हैं। ऐसा क्यों है क्या हम कष्ट सहते हैं? यह धर्मी लोगों को कष्ट सहने देने की बहुत अच्छी नीति नहीं लगती है।"

और आप समस्या देख सकते हैं। चुनौती देने वाला कह रहा है, "नेक लोगों की समृद्धि के लिए यह अच्छी नीति नहीं है।" अय्यूब इस मुद्दे को उठा रहा है: "धर्मी लोगों को कष्ट सहना अच्छी नीति नहीं है।" भगवान को क्या करना है? क्या बाकि है? ऐसा क्या है कि भगवान को कार्य करना चाहिए? उचित नीति क्या होगी?

पुस्तक का फोकस: जब चीजें गलत हो जाती हैं तो आप भगवान के बारे में कैसे सोचते हैं?

[6:47-7:58]

अब हम किताब देखेंगे. यह पुस्तक वास्तव में इसी को संबोधित करने का प्रयास कर रही है। जब सब कुछ गलत हो जाता है तो हम भगवान की नीतियों के बारे में कैसे सोचते हैं? उस अर्थ में, चुनौती देने वाला अय्यूब पर गलत इरादों का आरोप नहीं लगा रहा है। वह कह रहा है कि हमें नहीं पता. हम नहीं जानते कि अय्यूब के इरादे क्या हैं क्योंकि आपने, हे भगवान, आपने उस स्थिति को सामने नहीं आने दिया है। वह स्पष्टतः धर्मी है। ऐसा प्रतीत होता है कि सब कुछ ठीक चल रहा है, लेकिन आपने उसे इतना समृद्ध किया है कि हम वास्तव में नहीं जानते कि वह वास्तव में धर्मी है या नहीं। एकमात्र तरीका जिससे हम यह बता सकते हैं कि अय्यूब धर्मी है या नहीं, लाभ छीन लेना है। यह एक स्पष्ट रणनीति है और एक बार जब आप इसके बारे में सोचते हैं तो यह वास्तव में स्पष्ट हो जाता है। परीक्षण करने का यही एकमात्र तरीका है। उस अर्थ में, फिर से, पुस्तक पीड़ा के बारे में नहीं है। किताब धार्मिकता के बारे में है. अय्यूब की धार्मिकता का स्वभाव क्या है, उसकी शक्ति क्या है?

निष्कर्ष: मैं भगवान हूँ, आप नहीं, पावर कार्ड [नहीं] [7:58-8:40]

अब, जब हम पुस्तक के अंत तक पहुँचते हैं, तो पुस्तक इसका समाधान कैसे करती है, और हम इस पर बाद में अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे, लेकिन मैं कार्ड मेज पर रखने जा रहा हूँ। कुछ लोग सोचते हैं कि जब तक आप पुस्तक के अंत तक पहुँचते हैं, आपको "मैं भगवान हूँ, आप नहीं हैं" की पंक्ति के साथ एक और कथन मिल गया है। और इसके साथ यह निहितार्थ आता है, इसलिए अपने काम से काम रखो, या इसलिए मैं जो चाहूँ वह कर सकता हूँ, या तुम तुलना में बेकार हो, या बस चुप रहो। आप जानते हैं, हमें यह आभास होता है कि ईश्वर बस पावर कार्ड खींच रहा है। तुम्हें पता है, मैं भगवान हूँ, तुम नहीं हो।

निष्कर्ष: मैं भगवान हूँ, मुझ पर विश्वास करो, ट्रस्ट कार्ड [हां] [8:40-9:24]

और मुझे नहीं लगता कि यह वास्तव में बताता है कि किताब कहां पहुंचती है। ऐसी भावना है कि मैं भगवान हूँ, और आप नहीं हैं, लेकिन उन अन्य निहितार्थों के साथ नहीं। यह इस पंक्ति के समान है, "मैं ईश्वर हूँ जो अत्यंत बुद्धिमान और शक्तिशाली है। और इसलिए, मैं चाहता हूँ कि आप मुझ पर

भरोसा करें, तब भी जब आप न समझें।" वह पावर कार्ड नहीं है. वह एक करुणा कार्ड है. वह एक भरोसे का कार्ड है. "मैं परम बुद्धिमान और शक्तिशाली भगवान हूँ। मुझ पर विश्वास करो।"

उद्देश्य: ईश्वर इस संसार में कैसे कार्य करता है? [9:24-11:00]

पुस्तक का उद्देश्य, हमें जीवन के सबसे कठिन समय में भी ईश्वर के बारे में भरोसेमंद और भरोसेमंद सोचने में मदद करना है। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि किसी तरह उनकी नीतियां संदिग्ध हैं. ऐसा सोचना आसान है क्योंकि जब चीजें गलत हो रही होती हैं, तो हम दोष देने के लिए किसी को ढूंढते हैं, और भगवान को दोष देना सबसे आसान है।

तो, यह विचार कि ईश्वर संसार में कैसे कार्य करता है? हम अपनी पीड़ा को कैसे समझें ताकि हम ईश्वर पर भरोसा करने में सहज महसूस कर सकें? अगर हम सोचें कि वह वही है जो दुख लेकर आया है, तो उस पर भरोसा करना मुश्किल होगा। और इसलिए, हमें सीखना होगा कि इस बारे में कैसे सोचा जाए कि वह दुनिया में कैसे काम कर रहा है।

जब परमेश्वर वास्तव में अय्यूब को उत्तर देता है, जब वह अंतिम अध्यायों में अय्यूब की स्थिति के बारे में बात करता है, तो वह हमसे इस बारे में बात करता है कि वह दुनिया में कैसे काम करता है। और इसलिए, जब हम पुस्तक के उद्देश्य के इस बड़े ढांचे के बारे में बात करते हैं तो हम इसी पर गौर करने जा रहे हैं।

भगवान की नीतियों के बारे में कैसे सोचें और भगवान के बारे में अच्छा सोचें, आपदा आने पर भगवान के बारे में उचित तरीके से सोचें।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और अय्यूब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 6 है, पुस्तक का उद्देश्य।

[11:00]

नौकरी की किताब
सत्र 7: नौकरी की पुस्तक का धार्मिक आधार,
प्रतिकार सिद्धांत त्रिभुज
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 7 है, नौकरी की पुस्तक का थियोलॉजिकल फाउंडेशन, प्रतिशोध सिद्धांत त्रिभुज।

प्रतिशोध सिद्धांत का परिचय [00:26-2:46]

इससे पहले कि हम पुस्तक की ओर बढ़ें, हमें पुस्तक के कुछ धार्मिक आधारों के बारे में बात करने के लिए पुस्तक के उद्देश्य पर विस्तार करने की आवश्यकता है। इस तरह, हम प्राचीन दुनिया में महान सहजीवन के विचार से आगे बढ़ रहे हैं, विशेष रूप से उस चीज़ के बारे में बात करने के लिए जिसे प्रतिशोध सिद्धांत कहा जाता है। प्रतिशोध सिद्धांत मूलतः यह विचार है कि धर्मी लोग समृद्ध होंगे और दुष्ट लोग पीड़ित होंगे। मूलतः, लोगों को वही मिलता है जिसके वे हकदार हैं। जब मैं धर्मी, चौकस, विश्वासयोग्य कहता हूँ, तो उन शब्दों में से कोई भी शब्द प्रतिस्थापित करें, और वे समृद्ध होंगे। खैर, यह हो सकता है, आप जानते हैं, अच्छा स्वास्थ्य, सफलता, उनकी फसलें बढ़ती हैं, चाहे कुछ भी हो, खुशहाल परिवार। और दुष्ट वे हैं जो वफादार नहीं हैं, धर्मी नहीं हैं, ईमानदार नहीं हैं, वे फिर से पीड़ित होंगे, चाहे वह किसी स्तर पर या किसी अन्य पर आपदा हो। तो, यह इस विचार के बारे में बात करने का एक तरीका है कि लोगों को वही मिले जिसके वे हकदार हैं। धर्मी लोग समृद्ध होंगे; दुष्टों को कष्ट होगा। हम इसे प्रतिशोध सिद्धांत कहते हैं।

अब, निस्संदेह, लोगों के लिए यह विश्वास करना आम बात है कि जीवन में उनकी परिस्थितियाँ किसी न किसी तरह दर्शाती हैं कि वे भगवान या देवताओं के पक्ष में हैं या पक्ष से बाहर हैं। और उन्होंने कुछ ऐसा किया है जिसके कारण उन पर ये परिस्थितियाँ आई हैं। फिर, चाहे वह बुरा हो या चाहे वह अच्छा हो। वे पक्ष में हैं या पक्ष से बाहर, और यह उनकी परिस्थितियों में प्रतिबिंबित होता है, यह प्राचीन निकट पूर्व में लोगों के इस तरह सोचने के बारे में मान्यता प्राप्त थी। और इसी तरह

आज लोगों का इस तरह सोचना बहुत आम है, कि उनकी परिस्थितियाँ पक्ष में या पक्ष में नहीं होने को दर्शाती हैं।

भी हम बहुत लापरवाही से बात करते हैं, "ओह, मैंने जरूर कुछ सही किया होगा।" या "मैंने इसे अर्जित करने के लिए क्या किया?" जब चीजें बुरी हो जाती हैं। तो, यह प्रतिशोध सिद्धांत है जो अय्यूब की पुस्तक की नींव में है।

नौकरी में प्रतिशोध सिद्धांत [2:46-4:06]

वास्तव में, अय्यूब की पुस्तक प्रतिशोध सिद्धांत को माइक्रोस्कोप के नीचे रखती है क्योंकि अय्यूब और उसके दोस्त सभी प्रतिशोध सिद्धांत में बहुत दृढ़ता से विश्वास करते हैं। यह वास्तव में समस्या का हिस्सा है। वे प्रतिकार सिद्धांत देखते हैं; आप न केवल यह मानते हैं कि यदि कोई धर्मी है, तो वह समृद्ध होगा, और यदि कोई दुष्ट है, तो उसे कष्ट होगा, बल्कि आप इसे उलट भी देते हैं। यदि कोई पीड़ित है, तो वह अवश्य ही दुष्ट होगा। यदि कोई समृद्ध हो रहा है, तो उसने अवश्य ही कुछ सही किया होगा। और इसलिए, जब अय्यूब की परिस्थितियाँ इतनी नाटकीय रूप से, इतनी दुखद रूप से बदल जाती हैं, तो हम जानते हैं कि हर कोई क्या निष्कर्ष निकालेगा। वे निर्णय लेंगे कि उसने इस तरह की आपदा लाने के लिए, ऊंचाइयों से गहराई तक जाने के लिए वास्तव में कुछ बहुत बुरा किया होगा। यह उन चरम सीमाओं पर वापस जाता है जिनके बारे में हमने पहले बात की थी। अय्यूब मानवता की उच्चतम ऊंचाई पर है, और वह पीड़ा की सबसे निचली गहराइयों तक चला जाता है। वे चरम सीमाएँ महत्वपूर्ण हैं ताकि हम प्रतिशोध सिद्धांत के बारे में स्पष्ट दिमाग से सोच सकें।

चैलेंजर और प्रतिशोध सिद्धांत [4:06-5:53]

तो, अय्यूब की पुस्तक इस प्रतिशोध सिद्धांत को देखती है। आखिरकार, चुनौती देने वाले का प्रश्न याद रखें, क्या अय्यूब बिना कुछ लिए परमेश्वर की सेवा करता है? इस सब में प्रतिशोध का सिद्धांत कैसे काम करता है? प्रतिशोध सिद्धांत में, यह समझने का प्रयास है कि ईश्वर दुनिया में क्या कर रहा है, इसे स्पष्ट करना, इसे उचित ठहराना, इस तर्क को व्यवस्थित करना कि ईश्वर दुनिया में कैसे काम कर रहा है, कि ईश्वर एक न्याय प्रणाली पर काम कर रहा है। तुम अच्छा करते हो; तुम अच्छे

हो जाओ. तुम बुरा करते हो; बुरी चीजें होती हैं. इसलिए, प्रतिशोध सिद्धांत इस बात की समझ रखता है कि ईश्वर दुनिया में कैसे काम करता है। यह इसे परिमाणित करने या व्यवस्थित करने का एक प्रयास है।

चुनौती देने वाले का दावा है कि प्रतिशोध का सिद्धांत धर्मी लोगों को लाभ और समृद्धि प्रदान करता है, जो सच्ची धार्मिकता के विकास के लिए हानिकारक है क्योंकि यह इस गुप्त उद्देश्य, लाभ की प्रत्याशा, जो आप इससे प्राप्त करते हैं उसके लिए करना स्थापित करता है। इसलिए, चैलेंजर प्रतिशोध सिद्धांत पर ध्यान केंद्रित कर रहा है कि क्या यह वास्तव में भगवान की नीतियों का हिस्सा है। और अय्यूब का दावा, यदि प्रतिशोध सिद्धांत लागू नहीं किया जाता है, यदि धर्मी लोग पीड़ित होते हैं, तो, भगवान का न्याय संदिग्ध हो जाता है। तो, आप देख सकते हैं कि पुस्तक में हमने आरोप के जिन दो पहलुओं के बारे में बात की है, उनमें प्रतिशोध सिद्धांत बातचीत के केंद्र में है।

दावों का प्रतिशोध त्रिकोण [5:53-7:12]

अब हम इसे थोड़ा बेहतर समझ सकते हैं यदि आप एक त्रिभुज की कल्पना कर सकें। मैं इसे दावों का त्रिकोण कहता हूं. और त्रिभुज के एक निचले कोने पर, आपके पास प्रतिशोध सिद्धांत है; त्रिभुज के दूसरे निचले कोने पर, आपके पास अय्यूब की धार्मिकता है। और त्रिभुज के शीर्ष पर, तीसरे कोने पर, आपके पास भगवान का न्याय है।

अब, जब तक अय्यूब समृद्ध हो रहा है, वह त्रिकोण बहुत आसानी से, बहुत आराम से बना रहेगा। ईश्वर न्याय कर रहा है. नौकरी धर्मी है, प्रतिशोध सिद्धांत सत्य है, और सब कुछ खुश है। लेकिन जब अय्यूब को पीड़ा होने लगती है, तो हम उस त्रिकोण को देखते हैं, और कुछ तो होना ही है। आप तीनों कोनों पर टिके नहीं रह सकते: ईश्वर का न्याय करना, अय्यूब का धर्मी होना और प्रतिशोध का सिद्धांत। आप तीनों को पकड़कर नहीं रख सकते. कोई चीज़ होनी चाहिए। और जैसे-जैसे किताब सामने आती है, हमें पता चलता है कि कौन क्या त्यागने वाला है। यह वास्तव में पुस्तक के बारे में सोचने का एक दिलचस्प तरीका है।

अय्यूब के मित्र और दावों का प्रतिशोध त्रिकोण [7:12-8:24]

उदाहरण के लिए, अय्यूब के दोस्तों से शुरुआत करें। अय्यूब के मित्र, मैं उस कोने में उनका किला बनाने के विचार का उपयोग करूँगा। वे त्रिभुज के प्रतिशोध सिद्धांत कोने को चुनते हैं, और वे वहां अपना किला बनाते हैं। वे अपने भाषणों में बार-बार प्रतिशोध सिद्धांत की पुष्टि करते हैं। वे इसे स्थिति पर लागू करते हैं। वे इसे तर्क-वितर्क के भाग के रूप में उपयोग करते हैं। वे प्रतिशोध सिद्धांत के समर्थक हैं। तो, वे वहां अपना किला बनाते हैं। वे उसका बचाव करने जा रहे हैं। उस सुविधाजनक बिंदु से, वे त्रिभुज के अन्य दो कोनों की ओर देखते हैं; कौन सा जाने वाला है? क्या वे यह कहने जा रहे हैं, ठीक है, परमेश्वर वास्तव में न्याय के साथ काम नहीं कर रहा है, या क्या वे यह कहने जा रहे हैं कि अय्यूब वास्तव में धर्मी नहीं है?

खैर, हम जानते हैं कि वे कहाँ जाते हैं। उन्हें यह पुष्टि करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि ईश्वर न्यायपूर्वक कार्य कर रहा है। और इसलिए, प्रतिशोध का सिद्धांत सत्य है और ईश्वर जांच के दायरे में नहीं है, निस्संदेह, समस्या अय्यूब है। वह उतना धर्मी नहीं होगा जितना वह हमें दिखता था, उतना धर्मी भी नहीं होगा जितना वह बाहर से हर किसी को दिखता था। और निश्चित रूप से, वह उतना धर्मी नहीं है जितना वह सोचता है कि वह है। समस्या नौकरी है। इसलिए, वे प्रतिशोध सिद्धांत कोने में अपना किला बनाते हैं, और वे अय्यूब के कोने को छोड़ देते हैं। उसी को जाना है।

नौकरी और प्रतिशोध के दावों का त्रिकोण [8:24-9:57]

जब हम अय्यूब और उसके दृष्टिकोण के बारे में सोचते हैं, तो निस्संदेह, यह बहुत अलग होता है। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वह अपना किला कहां बनाता है। वह अपने ही कोने में अपना किला बनाता है। उसकी धार्मिकता उसके मन में अप्राप्य है। लेकिन, निश्चित रूप से, इससे थोड़ी अजीबता पैदा होती है क्योंकि अब उसे बाहर देखना होगा और आप किसे छोड़ने जा रहे हैं? क्या वह प्रतिशोध सिद्धांत को त्यागने जा रहा है, या क्या वह इस विचार को त्यागने जा रहा है कि ईश्वर न्यायपूर्वक कार्य करता है?

यह गरीब अय्यूब के लिए एक पहेली है। लेकिन जो हम पाते हैं वह बार-बार प्रतिशोध सिद्धांत की पुष्टि करता है। वह इसमें कमजोरी ढूंढने की कोशिश करता है, लेकिन वास्तव में वह ऐसा नहीं कर पाता। और इसलिए वह अपनी आँखें भगवान की ओर मोड़ लेता है। और जैसे-जैसे अय्यूब के

भाषण पुस्तक में आगे बढ़ते जाते हैं, यह परमेश्वर पर और अधिक दोषारोपण करता जाता है; यह और अधिक संदिग्ध हो जाता है, ईश्वर के बारे में संदेह करने लगता है और यह भी कि वह न्याय करता है या नहीं। इसलिए, अय्यूब अपने किले को अपने ही कोने में बनाता है, और वह प्रतिशोध सिद्धांत पर कायम रहते हुए भगवान के कोने को छोड़ रहा है।

एलीहू और दावों का प्रतिशोध त्रिकोण [9:57-14:59]

अब, संवाद अनुभाग में आने वाले तीन दोस्तों, एलीपहाज़, बिलदाद और ज़ोफर के अलावा, हमारे पास एक चौथा चरित्र है, एलीहू। यह पुस्तक के अंत में दूसरे प्रवचन तक नहीं आता है। लेकिन एलीहू अभी भी त्रिकोण में लगा हुआ है। एलीहू ने अपना किला परमेश्वर के न्याय के त्रिकोण के शीर्ष पर बनाया है। अब, उस बिंदु पर, आप कहते हैं, ठीक है, तो एलीहू क्या त्याग करेगा? क्या वह प्रतिशोध सिद्धांत को त्यागने जा रहा है, या, अय्यूब के अन्य मित्रों की तरह, क्या वह अय्यूब की धार्मिकता पर प्रश्नचिह्न लगाने जा रहा है?

कुछ लोगों ने किताब पढ़ी है और सोचा है कि एलीहू वास्तव में अन्य दोस्तों से बहुत अलग नहीं है। लेकिन मैं इससे पूरी तरह असहमत हूँ। एलीहू खुद को त्रिकोण पर अलग तरह से रखता है और इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि दोस्त उसके करीब भी नहीं हैं।

तो, जब हम प्रश्न पूछते हैं, एलीहू अन्य दो कोनों में से कौन सा छोड़ देता है? हमने पाया कि, ठीक है, वह धोखा देता है; वह चतुर है। वह जो करता है वह प्रतिशोध सिद्धांत को देखता है, और वह कहता है कि प्रतिशोध सिद्धांत सत्य है, लेकिन मुझे लगता है कि हमने इसे गलत समझा है। हमें इसका त्याग कर इसका विस्तार करना है। देखिए, अधिकांश लोगों ने प्रतिशोध सिद्धांत के बारे में सोचा क्योंकि आपने अतीत में बुरे काम किए हैं, इसलिए अब आपके साथ बुरे काम हो रहे हैं। तो, आपकी परिस्थितियाँ पिछले व्यवहार की प्रतिक्रिया हैं। एलीहू आता है और कहता है, शायद यह उससे भी अधिक जटिल है। प्रतिशोध सिद्धांत को देखने का यह तरीका इसे सुधारात्मक, ठीक करने, संबोधित करने और जो गलत हुआ है उसका जवाब देने में सक्षम बनाता है।

क्या होगा अगर हम प्रतिशोध सिद्धांत को अधिक निवारक मानें। यहां बताया गया है कि यह कैसा दिखेगा। यह ऐसा कुछ नहीं है जो आपने अतीत में किया है जिसके कारण नकारात्मक परिणाम हो

रहे हैं, यह कुछ ऐसा है जिसमें आप शामिल होने के लिए तैयार हैं और आप इस तरह के व्यवहार के कगार पर हैं कि यह आपको इससे दूर कर देगा। और इसलिए, प्रतिशोध सिद्धांत अतीत की चीज़ों के बजाय वर्तमान विकासशील चीज़ों की प्रतिक्रिया हो सकता है।

अब, वह क्या करता है, इसका मतलब यह है कि, दोस्तों के विपरीत, उसे अय्यूब के अतीत में अधार्मिकता खोजने की ज़रूरत नहीं है। इसके बजाय, अब वह अय्यूब को अलग ढंग से देखता है। और वह कहता है, "तो यहाँ समस्या है अय्यूब। यहाँ आपके दुख का कारण क्या है? अपनी आत्म-धार्मिकता को देखो, भगवान की कीमत पर खुद को सही ठहराने, खुद को सही ठहराने की आपकी इच्छा।" वह कहते हैं, "समस्या यह नहीं है कि आपने पीड़ा शुरू होने से पहले क्या किया था। समस्या इस बात से स्पष्ट हो गई है कि पीड़ा शुरू होने के बाद आपने कैसे प्रतिक्रिया दी है। समस्या, फिर अय्यूब, बहुत स्पष्ट है, आपका आत्म-तुष्ट व्यवहार।"

इसलिए मैं कहता हूँ कि उसने धोखा दिया।" उन्होंने शर्तों को फिर से परिभाषित किया। और उन्हें पुनः परिभाषित करने में, इसने उसे एक विकल्प दिया जिसके बारे में अन्य दोस्तों ने कभी नहीं सोचा था, और अय्यूब स्वयं अपना बचाव करने की स्थिति में कम है। यहां तक कि जब वह अपनी धार्मिकता की पुष्टि करना जारी रखता है, तो उसकी आत्म-धार्मिकता और भगवान पर आरोप लगाने की उसकी इच्छा बहुत स्पष्ट हो जाती है।

इसलिए, एलीहू ने न्यायपूर्वक कार्य करते हुए अपना किला परमेश्वर पर बनाया है। और इस प्रक्रिया में, वह प्रतिशोध सिद्धांत पर कायम है, हालांकि उसने इसे फिर से परिभाषित किया है। और इसने उसे अय्यूब की धार्मिकता के विरुद्ध एक अलग प्रकार का हमला दिया है। एलीहू किताब के किसी भी अन्य मानवीय पात्र की तुलना में अधिक सही है। वह निकटतम हो जाता है। वह दोस्तों की सोच से परे है, और वह वास्तव में अय्यूब को अधिक यथार्थवादी, अधिक उचित रूप से देखता है।

एलीहू के साथ समस्या यह है कि भले ही वह किसी और की तुलना में सच्चाई के करीब है, लेकिन उसकी अपनी समस्याएं हैं। और, अंत में, वह अभी भी प्रतिशोध सिद्धांत को यह समझने का आधार बना रहा है कि चीज़ें कैसे काम करती हैं। वह बस इसे फिर से परिभाषित करता है। और जैसे-जैसे हम किताब पढ़ते हैं, हम एलीहू के हिस्से तक पहुंचते हैं, और हम उसका अधिक बारीकी से

मूल्यांकन करेंगे।

दावों का प्रतिकार त्रिकोण, समाधान का प्रयास [14:59-15:18]

तो, हमें अपना त्रिकोण मिल गया है, दावों का त्रिकोण, विभिन्न पार्टियां अलग-अलग स्थिति कैसे चुनती हैं, और उन विभिन्न स्थितियों से पुस्तक के परिदृश्य को कैसे देखें। अब हम इनमें से कुछ तनावों को सुलझाने का प्रयास करेंगे। लोगों ने प्रतिशोध सिद्धांत के तनाव को कैसे हल किया? आखिरकार, अधिकांश लोग, किसी न किसी समय, जीवन का अनुभव इस तरह से करने लगते हैं कि प्रतिशोध सिद्धांत उन्हें संदिग्ध लगने लगता है। तो फिर उन तनावों का समाधान कैसे किया जाता है?

एक तरीका यह है कि ईश्वर की प्रकृति के संबंध में कुछ योग्यताएँ प्राप्त की जाएँ। यह निश्चित रूप से वही है जो उन्होंने प्राचीन निकट पूर्व में किया था। उन्हें इस बात पर कोई भरोसा नहीं था कि ईश्वर न्यायपूर्वक कार्य कर रहा है। वे प्रतिशोध सिद्धांत पर विश्वास करते थे, लेकिन वास्तव में उनके पास एक साथ मजबूती से जुड़ा हुआ कोई त्रिकोण नहीं था। उन्होंने बस भगवान की प्रकृति से समझौता कर लिया था।

अन्य समय में लोग कष्ट के उद्देश्य के संबंध में समझौता कर सकते हैं या योग्य हो सकते हैं। कुछ लोग पीड़ा को शैक्षिक-चरित्र निर्माण के रूप में बात करते हैं। शायद इसके बारे में ईसा मसीह के कष्टों में भागीदारी के रूप में भी बात करना। और इस प्रकार, वे अंततः पीड़ा के उद्देश्य को पूरा कर लेते हैं। इस प्रकार प्रतिशोध सिद्धांत में कुछ तनावों का समाधान हो जाता है।

बाइबिल में अन्यत्र दावों का प्रतिशोध त्रिकोण: समय [15:18-18:02]

बाइबिल ग्रंथों में, कुछ लोग तनाव का समाधान करेंगे; उदाहरण के लिए, भजनहार कभी-कभी समय के बारे में सोचकर तनाव का समाधान करता है।

भजनकार कहता है, आप जानते हैं, विलाप भजन में, अधिकांश समय, वे प्रतिशोध सिद्धांत के संदर्भ में विलाप कर रहे हैं। उनके शत्रु उन पर विजय प्राप्त कर रहे हैं। और ऐसा क्यों होना चाहिए?

दुश्मन बुरा आदमी है। मैं अच्छा लड़का हूँ। ऐसा क्यों हो रहा है? और इसलिए प्रतिशोध सिद्धांत के बारे में यह प्रश्न कई विलाप भजनों में अंतर्निहित है। और कई बार, एक स्तोत्र का व्यवहार समय के संदर्भ में किया जाता है। आखिरकार, चीजें सुचारू होने जा रही हैं। आप जानते हैं, ईश्वर अपने उचित समय पर शत्रु के विरुद्ध कार्रवाई करेगा और भजनहार को पुनर्स्थापित करेगा।

इसलिए, कभी-कभी, निश्चित रूप से, ईसाई धर्मशास्त्र यहां तक कहता है कि शायद चीजें अभी खराब हैं, लेकिन हमें अनंत काल मिल गया है। हमें ईश्वर के साथ अनंत काल मिला है, स्वर्ग में अनंत काल। और इसलिए, चीजें ठीक हो जाएंगी। और अनंत काल के पैमाने पर, अब हम जो छोटी-छोटी चीजें झेल रहे हैं, वे मामूली हैं। इसलिए, कुछ लोग विस्तारित समय अवधारणा के साथ प्रतिशोध सिद्धांत को अर्हता प्राप्त करते हैं।

न्याय और विश्व एक समाधान के रूप में [18:02-19:07]

कुछ लोग दुनिया में न्याय की भूमिका के संबंध में प्रतिशोध सिद्धांत को अर्हता प्राप्त करते हैं। आप दुनिया के न्यायपूर्ण न होने के बारे में बात कर सकते हैं, भले ही आप अभी भी ईश्वर के न्यायपूर्ण कार्य करने के बारे में बात करते हों। वह यह कि इस संसार में अ-व्यवस्था चलती रहती है। हम इस विचार को देखते हैं कि न्याय इस बात का एकमात्र आधार नहीं है कि ईश्वर दुनिया में कैसे काम करता है। वह उससे समझौता नहीं करता। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या उसने संसार को अपने न्याय के अनुरूप बनाया है? और हम जानते हैं कि उसने ऐसा नहीं किया क्योंकि हम पापी लोग हैं, और फिर भी हमारा अस्तित्व अभी भी है। यदि दुनिया पूरी तरह से ईश्वर के न्याय के अनुरूप होती, तो यह ऐसी दुनिया नहीं होती जिसमें हम रह सकते। और इसलिए, एक पतित दुनिया को देखते हुए, पूर्ण न्याय प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

ईश्वर के गुणों का परिसर [19:07-20:47]

दुनिया में ईश्वर के संचालन का आधार उसका संपूर्ण चरित्र, उसके गुणों की संपूर्ण श्रृंखला है, न कि केवल एक या दूसरा गुण। आप कह सकते हैं कि ईश्वर प्रेम है, और वह सब कुछ ढक लेता है। नहीं, ऐसा नहीं है। उसके पास और भी बहुत सी चीजें हैं। इसलिए, किसी भी तरह से ईश्वर के चरित्र के

लिए हानिकारक हुए बिना प्रतिशोध सिद्धांत को योग्य बनाने का एक तरीका यह समझना है कि ईश्वर और उसकी दुनिया अलग-अलग हैं और उन्होंने उस पर न्याय नहीं थोपा है।

भगवान, अपनी बुद्धि में, न्याय से चिंतित हैं। लेकिन यह सब एक अपूर्ण दुनिया, एक गिरी हुई दुनिया और यहां तक कि अभी तक पूरी तरह से व्यवस्थित नहीं हुई दुनिया के मापदंडों को देखते हुए दिया गया है; ईश्वर ने गैर-व्यवस्था की दुनिया में व्यवस्था ला दी है, और अव्यवस्था, पाप भी सामने आ गया है। लेकिन हम एक पूर्णतः व्यवस्थित दुनिया में नहीं रह रहे हैं। और इसलिए, यह ऐसा नहीं है जो संपूर्ण रूप से परमेश्वर के गुणों को प्रतिबिंबित करता हो।

ऐसी पुष्टि हैं जो हमें प्रतिशोध सिद्धांत के बारे में मिलती हैं। और हम उन्हें भजनों में पाते हैं, विशेषकर ज्ञान भजनों में। इन्हें हम नीतिवचनों में पाते हैं। इन पुष्टियों का उद्देश्य इस बात का पूर्ण धार्मिक विवरण देना नहीं है कि दुनिया ईश्वर के गुणों और उसके न्याय करने के अनुसार कैसे काम करती है। वे स्वभावतः लौकिक हैं।

प्रतिशोध सिद्धांत कोई धर्मशास्त्र समाधान नहीं है [20:47-23:08]

प्रतिशोध सिद्धांत को हमें लौकिक प्रकृति के रूप में समझने की आवश्यकता है। इसका मतलब है कि चीजें अक्सर इसी तरह काम करती हैं लेकिन यह नहीं कि चीजें हमेशा कैसे काम करती हैं। यह कोई गारंटी नहीं है। यह कोई वादा नहीं है। प्रतिशोध सिद्धांत दुनिया में पीड़ा और बुराई की व्याख्या करने में अच्छी तरह से काम नहीं करता है। इसके लिए तकनीकी शब्द थियोडिसी है जो बताता है कि दुनिया में दुख और बुराई क्यों है। प्रतिशोध सिद्धांत थियोडिसी की पेशकश नहीं करता है। प्रतिशोध सिद्धांत इस बात की व्याख्या नहीं है कि ईश्वर दुनिया में सभी स्थानों पर हर समय कैसे कार्य करता है।

यह आंशिक रूप से इस बात की पुष्टि है कि ईश्वर कौन है। अर्थात्, परमेश्वर अपने वफ़ादार सेवकों के लिए अच्छी चीजें लाने में प्रसन्न होता है। और भगवान दुष्ट लोगों को दंडित करने को गंभीरता से लेते हैं, लेकिन वह उन चीजों को पूरा नहीं करते हैं क्योंकि, फिर से, यह एक गिरी हुई दुनिया है, और हममें से कोई भी इसके माध्यम से जीवित नहीं रह सकता है। हालाँकि, यह हमें ईश्वर की पहचान, ईश्वर के हृदय के बारे में बताता है। और उसकी पहचान और उसके चरित्र का दुनिया पर

प्रभाव पड़ना तय है - लहरदार प्रभाव। और इसीलिए कभी-कभी हमें ऐसा लगता है कि प्रतिशोध का सिद्धांत कभी-कभी काम कर रहा है। वास्तव में यह है। लेकिन हमें यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि यह हर परिस्थिति में हर समय काम करेगा। तो, हमारे पास धर्मशास्त्र है; यह वही है जो ईश्वर थियोडिसी के विरुद्ध खड़ा है; यह जीवन को उस रूप में समझाता है जैसा हम अनुभव करते हैं। वे विरोधाभासी स्थितियाँ हैं। और जॉब की किताब उन दोनों को अलग करने के लिए कुछ मौलिक सर्जरी करती है ताकि हम यह सोचने की गलती न करें कि धर्मशास्त्र थियोडिसी की ओर ले जाता है।

ईश्वर को किसी बचाव की आवश्यकता नहीं है [23:08-24:18]

यहोवा के न्याय को हमारे अनुभवों के पल-पल के विश्लेषण पर दार्शनिक रूप से काम करने के बजाय विश्वास पर लिया जाना चाहिए। उसका बचाव करने की जरूरत नहीं है। एक अर्थ में, थियोडिसी, थियोडिसी पर हमारे प्रयास, ईश्वर का थोड़ा अपमान हैं। उसे हमारे बचाव की जरूरत नहीं है, और हम वास्तव में बहुत कुशलता से उसका बचाव करने की स्थिति में नहीं हैं। उसका बचाव करने की जरूरत नहीं है। वह भरोसा करना चाहता है। ईश्वर के गुणों का संपूर्ण समूह एक जटिल, समन्वित तरीके से कार्य कर रहा है। हम कभी नहीं बता सकते कि ईश्वर कब न्याय को चुनेगा या कब दया को चुनेगा। हम यह कभी नहीं बता सकते कि उसकी करुणा किस चीज़ पर हावी हो सकती है जो उसे करना चाहिए। न्याय उस नक्षत्र का एक हिस्सा है, लेकिन यह ईश्वर के अन्य सभी गुणों पर हावी नहीं होता है।

यीशु कारण से प्रयोजन, थियोडिसी से धर्मशास्त्र की ओर स्थानांतरित हो रहा है [24:18-27:59]

यहां एक तरीका है जो हमें इसे सुलझाने में मदद कर सकता है। नए नियम में, यीशु को प्रतिशोध सिद्धांत के प्रश्नों का सामना और चुनौती दी गई है। यूहन्ना 9 में, वह व्यक्ति जो जन्म से अंधा था, शिष्यों को एक महान अवसर दिखाई देता है। यहाँ यह आदमी है जो जन्म से अंधा था। और जो प्रश्न उन्होंने यीशु से पूछा वह प्रतिशोध सिद्धांत प्रश्न है। "किसने पाप किया, इस आदमी ने या उसके माता-पिता ने।" देखिए, यह एक बड़ी पहेली है क्योंकि अगर ऐसा है, तो वह आदमी कैसे पाप कर

सकता है क्योंकि वह इस तरह पैदा हुआ था? और यदि ये उसके माता-पिता थे, तो मनुष्य को इसके लिए कष्ट कैसे सहना पड़ा? और इसलिए, यह सिर्फ मुख्य बिंदु है। और आप जानते हैं, शायद वे वास्तव में उत्साहित थे क्योंकि अब उन्हें युगों के प्रश्न का उत्तर मिलने वाला है क्योंकि यीशु उनके सामने खड़े हैं। और इसलिए, वे कहते हैं, "किसने पाप किया, इस आदमी ने या उसके माता-पिता ने?" अब आप देख सकते हैं कि उनका प्रश्न एक थियोडिसी प्रश्न है। इस आदमी की पीड़ा के लिए क्या स्पष्टीकरण दिया जाएगा? इसलिए, जब वे कारण का प्रश्न पूछते हैं, तो यह एक थियोडिसी प्रश्न है और एक विस्तारित धर्मशास्त्र की ओर बढ़ता है, जो कि यीशु करता है। यीशु उन्हें थियोडिसी से धर्मशास्त्र की ओर मोड़ देते हैं। क्या यह दिलचस्प नहीं है कि वह कहते हैं, "न तो यह आदमी और न ही इसके माता-पिता," उस समय तक, शिष्यों ने उत्साहपूर्वक रुकना बंद कर दिया था। और अब वे कह रहे हैं, "अरे नहीं, वह इसे फिर से कर रहा है।" वह इसे फिर से कर रहा है; वह हमारे द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर नहीं देगा; वह उस प्रश्न का उत्तर देने जा रहा है जो हमें पूछना चाहिए था। वह कहता है, "यह न तो यह मनुष्य था और न ही इसके माता-पिता, परन्तु इसलिये कि परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।"

अब यह वास्तव में एक दिलचस्प सवाल है क्योंकि वह जो करता है वह मूल रूप से कहता है, अतीत को मत देखो और कारण के बारे में सवाल मत पूछो; आपको वह उत्तर नहीं मिल रहा है। इसके बजाय, यीशु जो उत्तर देते हैं, यीशु उन्हें कोई कारण नहीं देते हैं। वह उसे अतीत का स्पष्टीकरण नहीं देता। लेकिन वह कहते हैं कि आपको अपना ध्यान भविष्य की ओर लगाना चाहिए और उद्देश्य की तलाश करनी चाहिए। ईश्वर की महिमा एक उद्देश्य है। यह कोई कारण नहीं है। यह कोई कारण नहीं है। और इसलिए, यीशु उनका ध्यान अतीत से और कारण से हटाकर प्रयोजन पर केंद्रित कर देते हैं। पीड़ा का कोई स्पष्टीकरण सामने नहीं आ रहा है। कुछ भी संभव नहीं है; कोई भी आवश्यक नहीं है।

हमें परमेश्वर की बुद्धि पर भरोसा करना होगा और उसके उद्देश्य की तलाश करनी होगी। तो, यीशु उसी प्रकार का उत्तर देते हैं। और यह वही उत्तर है जो अंततः अय्यूब को मिलता है। ईश्वर की बुद्धि

पर भरोसा रखें और उसके उद्देश्य की तलाश करें। कारण का स्पष्टीकरण पाने की अपेक्षा न करें। यह कारणों के बारे में नहीं है।

यीशु और ल्यूक 13 गिरती मीनार [उद्देश्य परिवर्तन का कारण] [27:59-29:52]

ल्यूक अध्याय 13, श्लोक एक से पाँच तक में यीशु को फिर से इसका सामना करना पड़ता है। यहाँ उनसे पूछा गया कि इस टावर के बारे में क्या कहना जो लोगों पर उस समय गिर गया जब वे एक उत्सव के लिए वहाँ गए थे? आप इस प्रकार की बेतरतीब दिखने वाली आपदा की व्याख्या कैसे करते हैं? और फिर, यीशु उनका ध्यान इस कारण से हटा देते हैं। इसका इससे कोई लेना-देना नहीं है कि कौन धर्मी था और कौन दुष्ट। उनका कहना है कि पाप और दंड के बीच एक-से-एक पत्राचार नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि वह उन्हें इस घटना को एक चेतावनी के रूप में देखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वह कारण के प्रश्न को शामिल करने से इनकार करते हैं और अपने दर्शकों का ध्यान ऐसी घटनाओं के उद्देश्य की ओर निर्देशित करते हैं, हमें चेतावनी दें।

वे हमें अलग-अलग शब्दों में सोचने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, यह सोचने के लिए कि जीवन इतनी जल्दी कैसे समाप्त हो सकता है, यह सोचने के लिए कि दुख कैसे आ सकते हैं। यह एक-से-एक पत्राचार के बारे में नहीं है।

इसलिए, हम देखते हैं कि जब यीशु प्रतिशोध सिद्धांत के उन मुद्दों को संबोधित करते हैं जिनसे उनका सामना हुआ है, तो वह लगातार कारण या कारण के लिए स्पष्टीकरण देने से दूर हो जाते हैं। और जब हम दुनिया में अपने स्वयं के अनुभवों के बारे में सोचते हैं तो हम अपनी अपेक्षाओं को समायोजित करना शुरू करते हैं तो जॉब की पुस्तक क्या करने जा रही है इसका यह एक बड़ा हिस्सा है।

अब हम नौकरी की पुस्तक में अनुभाग दर अनुभाग शामिल होने के लिए तैयार हैं। और हम इसे अगले भाग में शुरू करेंगे।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 7 है, नौकरी की पुस्तक का थियोलॉजिकल फाउंडेशन, प्रतिशोध सिद्धांत त्रिभुज। [29:52]

नौकरी की किताब
सत्र 8: पृथ्वी पर दृश्य
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 8, पृथ्वी पर दृश्य है।

परिचय: अय्यूब 1:1-5, उज़ की भूमि [00:22-1:26]

तो, अब हम नौकरी की वास्तविक पुस्तक में शामिल होने के लिए तैयार हैं। हमने इसके बारे में सब बात की है। हमने इसके कई पहलुओं के बारे में बात की है, और अब हम पुस्तक की सामग्री के बारे में बात करने के लिए तैयार हैं। इस खंड में, हम केवल पृथ्वी के दृश्य, पुस्तक के पहले पाँच छंदों से निपटेंगे। और इसलिए, हमें अय्यूब से उज़ देश के एक व्यक्ति के रूप में परिचित कराया गया। इसका मतलब है कि वह एक विदेशी है और वह किसी अज्ञात, रहस्यमय जगह से है, जो प्राचीन इज़राइली दर्शकों के लिए ज्ञात दुनिया की परिधि पर है। तो, वह इस रहस्यमय रेगिस्तानी क्षेत्र से है, सीरियाई रेगिस्तान का एक क्षेत्र, जो शायद एदोम से जुड़ा हुआ है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जो अपनी बुद्धिमत्ता के लिए जाना जाता है।

उनके दोस्त भी उसी क्षेत्र से हैं। तो, उदाहरण के लिए, हमारे पास एक टेमनाइट है। तो, वह तेमान से है। तो, यह वह क्षेत्र है जो इज़राइल की भूमि के दक्षिण और पूर्व में है।

उत्पत्ति 36 उज़ को एसाव से जोड़ता है, और फिर से उस क्षेत्र में चीजों को रखता है। अय्यूब की पुस्तक की सबसे प्रारंभिक व्याख्या, जो सेप्टुआजेंट में पाई जाती है, उज़ को इडुमिया और अरब के बीच स्थित करती है। तो फिर, मूलतः, वह क्षेत्र। इसलिए, जैसा कि हमने उल्लेख किया है, अय्यूब एक इस्राएली नहीं है; वह इस संबंध में एक बाहरी व्यक्ति है, भले ही पुस्तक इजरायली मुद्दों से संबंधित है और इजरायली दर्शकों को संबोधित है।

चरम में अय्यूब का चरित्र और कार्य [1:26-3:58]

हम स्वयं अय्यूब के वर्णन में पाते हैं कि हर चीज को चरम सीमा में चित्रित किया गया है। तो, अय्यूब निर्दोष है। हिब्रू शब्द *तम है*, और वह सीधा है, *यशार*। ये क्रमशः उनके चरित्र और उनके कार्यों का उल्लेख करते हैं। और इसलिए, यहाँ वह व्यक्ति है जो हर तरह से वफादार है। वह एक ईमानदार

व्यक्ति हैं। उनके साथ कोई दोष या अपराधबोध नहीं जुड़ा है। वह ऐसा व्यक्ति है जो परमेश्वर की अपेक्षाओं के अनुसार व्यवहार करता है और परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लेता है। यदि हम अय्यूब का वर्णन करने के लिए विपरीत शब्दों की तलाश करते हैं, तो हम ऐसे शब्दों की तलाश करेंगे जैसे कोई व्यक्ति जिसे दोषी घोषित किया गया हो या जिसे दुष्ट माना गया हो, जो निंदा के अधीन है। नौकरी वो चीजें नहीं है। जो शब्द उसका वर्णन करते हैं वे उसके विपरीत हैं। साथ ही, ये पाप रहित पूर्णता के शब्द नहीं हैं। अय्यूब अपने व्यवहार के मामले में दैवीय क्षेत्र में नहीं है, लेकिन यह सबसे अच्छा है जो एक व्यक्ति हो सकता है, सबसे अच्छा जो एक इंसान हो सकता है।

वह ईश्वर से डरता है, यहां ईश्वर के लिए शब्द एलोहीम है, याहवे नहीं। इसलिए, वह एलोहीम से डरता है। इसका मतलब है कि उसके बारे में जो कुछ पता है, उसके आधार पर वह उसे गंभीरता से लेता है। हमारे पास इसराइल के बाहर के अन्य लोगों का भी इसी तरह वर्णन किया गया है। उदाहरण के लिए, योना की पुस्तक में नाविकों को ईश्वर से डरने वाले के रूप में वर्णित किया गया है। और यह इस पर आधारित है कि वे उसके बारे में कितना कम जानते हैं। यहां तक कि उत्पत्ति की पुस्तक में भी, अबीमेलोक को इब्राहीम के विपरीत वर्णित किया गया है, जिसका यहोवा के साथ व्यक्तिगत संबंध है। इसलिए, इन सभी शब्दों ने अय्यूब को उच्चतम संभव स्थिति में चित्रित किया। और फिर, हमने चीजों का वर्णन करने के लिए चरम सीमाओं के उपयोग का उल्लेख किया है।

चरम में अय्यूब की संपत्ति [3:58-4:46]

अब उसकी संपत्ति और उसका रुतबा भी आदर्श दायरे में है। जरूरी नहीं कि वे काल्पनिक हों, लेकिन हर चीज विशाल है। तो, ये रूढ़ियाँ हैं कि कितने मवेशी, कितने ऊँट, कितनी भेड़-बकरियाँ, हर चीज़ को आदर्श रूप में चित्रित किया गया है। उन्होंने उच्चतम संभव मानकों द्वारा सफलता और समृद्धि हासिल की है। और इसलिए, फिर से, उस तरह से, हमने चरम सीमाओं को चित्रित किया है। सिर्फ इसलिए कि वे अतिवादी हैं इसका मतलब यह नहीं है कि वे सच या सटीक नहीं हैं। लेकिन हमें ध्यान देना होगा कि चरम सीमाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं ताकि वे उन आसान उत्तरों को तालिका से बाहर कर दें। तो, यहाँ हमारे पास अय्यूब का विवरण है।

अय्यूब की धर्मपरायणता: अनुष्ठान अभ्यास [4:46-6:24]

अब, यकीनन इन मुद्दों में सबसे पेचीदा बात उसकी धर्मपरायणता का सवाल है। श्लोक चार और पाँच में, हमारे लिए एक दृश्य का वर्णन किया गया है जब उसके बेटे और बेटियाँ, जाहिर तौर पर, जन्मदिन की पार्टियों, या किसी प्रकार के भोज के लिए इकट्ठा होते थे। अय्यूब के पास यह अनुष्ठान होगा जिसे उसने बाद में किया। यह एक ऐसी सेटिंग है जो बताती है कि केवल बाहरी संभावना है कि कोई अपराध किया गया है। यदि हम छंद पढ़ते हैं, तो यह कहता है, "उसके बेटे अपने जन्मदिन पर अपने घरों में दावतें आयोजित करते थे। और वे अपनी तीन बहनों को अपने साथ खाने और पीने के लिए आमंत्रित करते थे। जब दावतों का दौर पूरा हो जाता था, तो अय्यूब ऐसा करता था।" उन्हें शुद्ध करने की व्यवस्था। सुबह-सुबह, वह उनमें से प्रत्येक के लिए एक होमबलि चढ़ाता था, यह सोचकर, 'शायद मेरे बच्चों ने पाप किया है और अपने दिल में भगवान को शाप दिया है।' यह अय्यूब की नियमित रीति थी।" तो, हमें यह प्रथा मिलती है। यह भोज सेटिंग में भी है कि अध्याय एक, छंद 18 और 19 में अंततः उनकी मृत्यु हो जाती है। वे वास्तव में भोज कर रहे होते हैं जब घर उनके ऊपर गिर जाता है और आग लग जाती है, और वे अपनी जान गंवा देते हैं। अय्यूब को चिंता हुई कि शायद उन्होंने अपने मन में परमेश्वर को शाप दिया हो।

बच्चे "अपने दिलों में" कोस रहे हैं [6:24-7:07]

अब यह "उनके दिलों में" विचार, जब आप इसे किसी व्यक्ति पर लागू करने के लिए उपयोग करते हैं, तो यह निजी विचारों को संदर्भित करता है, लेकिन यह व्यक्तिगत रूप से उनके बारे में नहीं है। यह उनके कॉर्पोरेट मिलन समारोहों, उनके भोज के बारे में है। जब लोगों का एक समूह दृश्य का हिस्सा होता है, तो यह कॉर्पोरेट सोच को संदर्भित कर सकता है या गोपनीय रूप से साझा किया जा सकता है। और हमें व्यवस्थाविवरण 8:17, 18:21 और इसी तरह, भजन 78:18 जैसी जगहें मिलती हैं, जहां "उनके दिलों में" का विचार एक कॉर्पोरेट बातचीत हो रही है।

भगवान को श्राप/आशीर्वाद दें [7:07-10:59]

इसके अलावा, जब यह कहता है, "उन्होंने अपने हृदयों में परमेश्वर को शाप दिया," तो यह "अभिशाप" के लिए हिब्रू शब्द का उपयोग नहीं करता है। यह "आशीर्वाद" के लिए हिब्रू शब्द का

उपयोग करता है। और इसलिए, यह "आशीर्वाद" का व्यंजनापूर्ण उपयोग है। "अभिशाप" और भगवान शब्द को एक दूसरे के बगल में रखना बुरा माना जाता था। और इसलिए, उन्होंने धन्य परमेश्वर का उपयोग किया। तो, यह वास्तव में कहता है कि शायद "उन्होंने अपने दिलों में भगवान को आशीर्वाद दिया है।" अब यह अय्यूब के इन शुरुआती अध्यायों में आशीर्वाद और शाप के बीच एक अच्छी बातचीत का पहला भाग है। तो, 1.11 में, 2.5 में भी चैलेंजर का सुझाव दिया गया है कि अय्यूब आशीर्वाद देगा, यानी, उसके चेहरे पर भगवान को श्राप देगा, अय्यूब के डर के विपरीत, कि उसके बच्चे अपने दिल में भगवान को आशीर्वाद दे सकते हैं या शाप दे सकते हैं। इसके बजाय, अय्यूब वास्तव में भगवान को आशीर्वाद देता है, न कि भगवान को श्राप देता है, हालांकि यह वही क्रिया है जिसे चुनौती देने वाले ने सुझाया था। अय्यूब की पत्नी ने उससे परमेश्वर को शाप देने का आग्रह किया; फिर, अध्याय दो, श्लोक नौ में क्रिया ईश्वर को स्पष्ट रूप से आशीर्वाद देना/शाप देना और मरना है। अय्यूब उस दूसरे दौर के बाद ईश्वर को आशीर्वाद देने के साथ प्रतिक्रिया नहीं करता है, लेकिन न ही वह ईश्वर को कोसता है। इसके बजाय, वह अपने जन्म के दिन को कोसता है। हम इसे अध्याय तीन में पाते हैं। साहित्यिक रूपांकन को स्थापित करने में शब्दों के इस विशिष्ट उपयोग से परे, अंतर्निहित कथा ढांचे पर भी विचार किया जाना चाहिए क्योंकि हम सोचते हैं कि ये शब्द कैसे काम करते हैं। कथा में, याद रखें कि अध्याय एक, श्लोक 10 में भगवान ने अय्यूब को बच्चों और संपत्ति के साथ आशीर्वाद दिया था। इतना ही नहीं, बल्कि भगवान ने चुनौती देने वाले की प्रशंसा करके अय्यूब को मौखिक रूप से आशीर्वाद दिया था। कभी-कभी कोई आशीर्वाद प्रशंसा से पूरा होता है। उस मौखिक आशीर्वाद की प्रकृति, चुनौती देने वाले के सामने ईश्वर द्वारा अय्यूब को आशीर्वाद देना, एक अर्थ में अभिशाप बन जाता है क्योंकि इसे चुनौती का आधार बना दिया गया था जिससे अय्यूब की भौतिक समृद्धि का नुकसान हुआ।

अंततः, निःसंदेह, पुस्तक के अंत में हमें जो भौतिक आशीर्वाद मिलता है, ईश्वर उसे पुनः बहाल कर देता है। तो, शाप-आशीर्वाद विरोधाभास पुस्तक में एक मूल भाव के एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में खड़ा है। अब, परमेश्वर को कोसने का वास्तव में क्या मतलब होगा? वो कैसा लगता है? भगवान को कोसने के बारे में कई तरह से सोचा जा सकता है। भगवान का नाम लेना और तुच्छ शपथ लेना

एक तरीका होगा। शक्ति के शब्दों के साथ-साथ भगवान के नाम का उपयोग करना। तो, एक हेक्स या उस तरह का कुछ। किसी जादू-मंत्र की तरह किसी ईश्वर के विरुद्ध शक्तिपूर्ण शब्दों का प्रयोग करना। यहाँ तक कि ईश्वर के बारे में अपमानजनक, तिरस्कारपूर्ण या निंदनीय तरीके से बोलना, मूल रूप से ईश्वर का अपमान करना है। परोक्ष या स्पष्ट रूप से यह कहकर ईश्वर की अवमानना करना कि ईश्वर कार्य करने में शक्तिहीन है, या कि ईश्वर अपने कार्यों या उद्देश्यों में भ्रष्ट है, कि ईश्वर की आवश्यकताएं हैं, या कि ईश्वर को ईश्वर से कमतर बनाकर हेरफेर किया जा सकता है। अब, अय्यूब यकीनन भगवान के खिलाफ अपने आरोपों में इनमें से कुछ करता है, लेकिन वह क्रोध व्यक्त कर रहा है, अवमानना नहीं। और वह अभी भी सत्यनिष्ठा बनाए रखता है, जैसा कि हम बाद में बात करेंगे। शायद यह सोचना सर्वोत्तम होगा कि ईश्वर को कोसने में तिरस्कारपूर्ण त्याग, अनादर, उचित सम्मान की उपेक्षा शामिल है। और, निस्संदेह, अय्यूब ने ऐसा नहीं किया।

अय्यूब का अनुष्ठान व्यवहार, ईश्वर क्षुद्र के रूप में [10:59-14:52]

इस पूरे दृश्य में सबसे महत्वपूर्ण है अय्यूब के अनुष्ठानिक व्यवहार को समझने का प्रयास करना। अय्यूब जो करता है वह इस बात का संकेत नहीं है कि वह अपने बच्चों के बारे में क्या सोचता है, बल्कि यह दर्शाता है कि वह ईश्वर के बारे में क्या सोचता है। पद एक से पाँच तक का यह दृश्य हमें क्या बताता है कि अय्यूब परमेश्वर के बारे में क्या सोचता था? अय्यूब इस संभावना पर विचार कर रहा है कि भोज के संदर्भ में उसके बेटे और बेटियों द्वारा बिना सोचे-समझे बयान दिए जा सकते हैं और भगवान ऐसे बिना सोचे-समझे, बहुत प्रशंसात्मक बयानों पर नाराज होंगे। शायद वक्ता के निर्दोष इरादों के बावजूद, हम जानते हैं कि प्राचीन दुनिया में इसे एक वास्तविक संभावना माना जाता था। हमारे पास एक असीरियन टुकड़ा है जिसे हर भगवान के लिए प्रार्थना कहा जाता है। और इसमें, उपासक बहुत चिंतित है कि वह स्पष्ट रूप से कुछ नकारात्मक अनुभवों से पीड़ित है। यह प्रार्थना समाधान की दिशा में काम करने का प्रयास कर रही है। वह कहते हैं, "अगर मैंने अनजाने में किसी ऐसे स्थान पर कदम रख दिया है जो मेरे भगवान या मेरी देवी या किसी ऐसे देवता के लिए पवित्र है जिसे मैं नहीं जानता, या किसी देवी के लिए जिसे मैं नहीं जानता।

अगर मैंने शायद कोई उच्चारण किया हो वह शब्द जो मेरे ईश्वर या मेरी देवी या सच्चे ईश्वर के लिए अपमानजनक है जिसे मैं नहीं जानता, या किसी देवी के लिए जिसे मैं नहीं जानता।" और वह उन चीजों की इस पूरी जाँच सूची को देखता है जो उसने अनजाने में की होगी जिससे उसके भगवान या उसकी देवी या वह देवता जिसे वह नहीं जानता या वह देवी जिसे वह नहीं जानता, नाराज हो सकती है।

हम देख सकते हैं कि इस तरह की प्रार्थना इस विचार की अभिव्यक्ति है कि देवता बहुत छोटे हो सकते हैं। वे ऐसी चीजों की मांग कर सकते हैं जिनके बारे में इंसानों के पास जानने का कोई तरीका नहीं होगा। अय्यूब का चरित्र और व्यवहार निंदा से परे है। लेकिन मेरी समझ में, अय्यूब की धार्मिकता के बारे में ये दो छंद सुझाव देते हैं कि ईश्वर के प्रति उसका दृष्टिकोण त्रुटिपूर्ण हो सकता है। इससे पता चलता है कि वह ईश्वर को तुच्छ समझता होगा।

यह उस तरह की अभिव्यक्ति है जो चैलेंजर द्वारा उसके खिलाफ चुनौती का रास्ता खोलती है। यदि अय्यूब ईश्वर को तुच्छ समझता है, तो वह यह सोचने के लिए तैयार हो सकता है कि, यह वास्तव में लाभ के बारे में है और यह धार्मिकता के बारे में नहीं है। यह आसानी से नाराज हो जाने वाले भगवान को खुश करने की कोशिश के बारे में है।

इसलिए, मेरा मानना है कि अध्याय एक में छंद चार और पांच वास्तव में अय्यूब के सकारात्मक चरित्र-चित्रण का हिस्सा नहीं हैं। यह वास्तव में दिखाता है कि उसके कवच में कमजोरी कहां हो सकती है कि वह पहले से ही भगवान के बारे में क्षुद्र सोच रहा है। और तथ्य यह है कि, उनके भाषणों में, वह वापस आने वाला है, और वह उन चीजों को और अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त करने जा रहे हैं।

अय्यूब 1:1-5 का सारांश [14:52-15:19]

तो, श्लोक एक से चार तक, हमारे पास कथा को जारी रखने के लिए एक सेटअप है। हमने अय्यूब के बारे में सीखा है कि वह निंदा से परे है। हमने यह भी जान लिया है कि उसके कवच में कुछ कमी है और इसका फायदा उठाया जा सकता है। जब स्वर्ग का दृश्य खुलेगा तो हमें इसके बारे में और अधिक पता चलेगा।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 8, पृथ्वी पर दृश्य है।

[15:19]

नौकरी की किताब
सत्र 9: स्वर्ग में दृश्य, भाग 1
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 9, स्वर्ग में दृश्य है। भाग ---
 - पहला।

स्वर्गीय परिषद [00:23-1:36]

अब अय्यूब की पुस्तक का दृश्य स्वर्गीय दरबार में बदल जाता है। यह दर्शकों का दिन है। यहोवा सभा कर रहा है, और उसकी दिव्य परिषद इकट्ठी हो रही है। परमेश्वर के पुत्र, जो परिषद के सदस्य हैं, अपनी रिपोर्ट देने के लिए उसके सामने आते हैं। जब परिषद के सदस्य रिपोर्ट बनाते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि ईश्वर सर्वज्ञ से कम है; यह सिर्फ इतना है कि भगवान ने परिषद के साथ काम करना चुना है। हमें वह चित्र बाइबल में कई स्थानों पर मिलता है 1 राजा 22, यहाँ अय्यूब, यशायाह 6 में, "मैं किसे भेजूँ, हमारे लिए कौन जाएगा?" भजन 82, और कई अन्य स्थान। यह वह तरीका है जिससे यह परमेश्वर के कार्यकलापों को प्रस्तुत करता है।

ये अन्य देवता नहीं हैं, जैसे वे कुछ अन्य प्राचीन संस्कृतियों में हैं, क्योंकि वे एक दिव्य परिषद के बारे में सोचते हैं, फिर भी भगवान ने एक परिषद के माध्यम से काम करना चुना है। ईश्वर को अन्य प्राणियों की आवश्यकता नहीं है। उसे सलाह देने के लिए किसी की ज़रूरत नहीं है, लेकिन अगर वह इस तरह से काम करना चुनता है, तो यह उसका व्यवसाय है।

हसनतन का चरित्र [1:36-5:23]

तो, परमेश्वर के पुत्र इकट्ठे हुए हैं, और शैतान उनके बीच में है। अब, अगर हमने ऐसा कहा है, तो यह हमें थोड़ा भ्रमित करता है क्योंकि हम शैतान को बुरा आदमी, शैतान के रूप में सोचने के आदी हैं; जो स्वर्ग में भी नहीं है, परमेश्वर के पुत्रों में तो दूर की बात है। तो, आइए यहां सावधान रहें। ये किरदार आता है। कौन है ये? यह पाठ उसके बारे में शैतान के रूप में बात करने से एक कदम दूर है।

मैं जानता हूँ कि अधिकांश अनुवाद शैतान को बड़े अक्षर एस के साथ प्रस्तुत करते हैं और तुरंत हमें शैतान से जुड़े एक व्यक्तिगत नाम के बारे में सोचने पर मजबूर कर देते हैं। लेकिन यहां हिब्रू पाठ को व्यक्तिगत नाम के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है। यह उस पर एक निश्चित लेख डालता है। हिब्रू में, वह "हा" है। तो, यह हसातन है। शैतान एक हिब्रू शब्द है। आप नहीं जानते थे, और आप कुछ हिब्रू जानते थे। तो, यह हसातन, शैतान है। अब इसका मतलब यह है कि यह कोई व्यक्तिगत नाम नहीं है। और इसका वास्तव में मतलब यह है कि हमें निष्पक्ष रूप से इसका फायदा नहीं उठाना चाहिए। मेरा मतलब है, हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। बल्कि यह एक भूमिका का वर्णन करता है। शैतान, जैसा कि मैंने बताया, एक हिब्रू शब्द है। और यह एक ऐसा शब्द है जो क्रिया के साथ-साथ संज्ञा के रूप में भी कार्य कर सकता है। और हमें यह देखने की जरूरत है कि वह शब्द कैसे काम करता है।

जब यह एक क्रिया है, तो यह सुझाव देता है कि इसमें कुछ विरोध करना, विरोधी होना, किसी को चुनौती देना, इस तरह की सभी चीजें हैं। इसे इंसानों द्वारा किया जा सकता है, यानी, उदाहरण के लिए, सुलैमान को चुनौती देने वाले अन्य राजाओं द्वारा। यह अदालत में मौजूद लोगों, अभियोजन वकील द्वारा किया जा सकता है। यह प्रभु के दूत द्वारा भी किया जा सकता है जो संख्याओं में बालाम के आंदोलन को चुनौती देता है। 22, शैतान के रूप में उसके रास्ते में खड़ा है। इसलिए, इस भूमिका में आंतरिक रूप से कुछ भी बुरा नहीं है। हम मनुष्य को इस भूमिका में पाते हैं। हम ईश्वर के दूत जैसे गैर-मानव प्राणियों को भी पाते हैं जिनका मैंने उल्लेख किया है, जो उस विशेष मार्ग में इस कार्य को करते हैं।

और, निःसंदेह, यहाँ अय्यूब में यह विशेष चरित्र है। लेकिन यह चरित्र, यह चुनौती देने वाला, और यही वह शब्द है जिसे मैं पसंद करूंगा; यह चुनौती देने वाला परमेश्वर के पुत्रों में से है। वह दिव्य परिषद में है। उसे शैतान के रूप में चित्रित नहीं किया गया है।

वास्तव में, पुराने नियम में शैतान का प्रयोग शैतान का संकेत नहीं देता है। यह केवल गैर-मानव प्राणी पर लागू होता है, जैसे कि इस मामले में कुछ अन्य मामलों में। उनमें से एक जकर्याह अध्याय तीन में है, जिसमें वह विरोध करता है, वह महायाजक के बहाल होने के अधिकार को चुनौती देता

है। यह एक उचित चुनौती है। भगवान उसे डांटते हैं और अपना निर्देश देते हैं कि ऐसा क्यों हो सकता है। 1 इतिहास 21 में, यह शैतान को संदर्भित करता है, जो डेविड को जनगणना करने के लिए उकसाता है। और इसलिए, हमारे पास केवल ये दो घटनाएं हैं, जो प्रोफाइल बनाने के लिए मुश्किल से ही पर्याप्त हैं।

चैलेंजर [5:23-6:15]

लेकिन यहाँ वह स्वर्गीय सलाहकारों, परमेश्वर के पुत्रों में से एक है। यह विचार कि यह किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो चुनौती देता है, चाहे संदर्भ कोई भी हो, चाहे अच्छे या बुरे के लिए, चाहे मनुष्यों के बीच या स्वर्गीय मेज़बान के बीच, यह वह व्यक्ति है जो चुनौती देता है, जो प्रतिकूल स्थिति लेता है, जो हम पाते हैं उसकी प्रोफाइल में फिट बैठता है शब्द।

जब तक हम पुराने नियम के दौर से बाहर नहीं निकल जाते, यह शैतान का व्यक्तिगत नाम नहीं बन जाता। स्पूडेपिग्राफल साहित्य में, वह साहित्य जो वसीयतनामा और उससे आगे के बीच के दूसरे मंदिर काल का है, वह सिर्फ एक को नहीं, बल्कि कई शैतानों को संदर्भित करता है। यह शैतान का व्यक्तिगत नाम नहीं है।

भगवान के एजेंट के रूप में चुनौती देने वाला [6:15-8:36]

यहां अय्यूब में हसातन, चुनौती देने वाला, ईश्वर का एजेंट है। उसे एक कार्य के साथ बाहर भेजा गया है। वह रिपोर्ट करने के लिए वापस आ रहा है। वह भगवान की इच्छा और भगवान के आदेश पर काम कर रहा है। वह भगवान का एजेंट है।

अब, वह एक चुनौती देने वाला कैसे है? खैर, यहाँ हम पाते हैं कि वह ईश्वर की नीतियों को चुनौती देता है। हम पहले ही इस बारे में बात कर चुके हैं। वह ऐसा उचित ढंग से करता है। अर्थात्, यह सत्य है कि यदि धर्मी लोगों को लाभ मिलता रहेगा, तो यह उनकी धार्मिकता को नष्ट कर सकता है और उन्हें एक गुप्त उद्देश्य प्रदान कर सकता है। यह सच है। यह कोई झूठा प्रचारित आरोप नहीं है।

और इसलिए, हम पाते हैं कि भगवान का यह एजेंट वह काम कर रहा है जो भगवान ने उसे करने के लिए दिया है। नौकरी उसका लक्ष्य नहीं है। परमेश्वर ही है जिसने अय्यूब को पाला। उनकी चुनौती का लक्ष्य ईश्वर की नीतियाँ हैं। अय्यूब बस एक तार्किक परीक्षण मामला है क्योंकि वह परम ईमानदार व्यक्ति है। तो, उस अर्थ में, हमें चैलेंजर को शैतान प्रकार की भूमिका निभाने के बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं है। वह आकर्षक नहीं है। वह कब्ज़ा नहीं कर रहा है। वह झूठ नहीं बोल रहा है। जब वह अय्यूब को बर्बाद कर देता है तो कोई शैतानी हंसी नहीं आती। वास्तव में, वह केवल परमेश्वर की ओर से कार्य करता है। भगवान उसे हाथ की स्वतंत्रता देते हैं, और भगवान अय्यूब को बर्बाद करने की जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं। बाकी कहानी में किसी ने भी कभी कल्पना नहीं की कि अय्यूब की बर्बादी में कोई अन्य एजेंट भी शामिल है। यह भगवान ने ही किया है। अय्यूब द्वारा परमेश्वर को जवाबदेह ठहराया जा रहा है। ईश्वर को जिम्मेदार माना जाता है। परमेश्वर ने अय्यूब पर उतना ही प्रहार किया है जितना चुनौती देने वाले पर।

चुनौती देने वाले को दुष्ट के रूप में चित्रित नहीं किया गया [8:36-10:11]

और यह दिलचस्प है कि कभी-कभी हम सोचते हैं, जब हम चुनौती देने वाले को शैतान मानते हैं, तो हम उसके बारे में सोचते हैं कि वह बहुत आनंद ले रहा है और अय्यूब को बर्बाद कर रहा है। जबकि भगवान बड़े दुःख से इसका अनुभव करते हैं। पाठ इस बात में अंतर नहीं करता कि वे कैसे प्रतिक्रिया देते हैं। किसी भी पात्र में विशेष रूप से कोई कमी नहीं है या विशेष रूप से सहानुभूतिपूर्ण प्रतिक्रिया नहीं है। चुनौती देने वाला जो कुछ भी करता है, वह ईश्वर की शक्ति के माध्यम से करता है। और भगवान ऐसा कहते हैं, "आपने मुझे उसे बर्बाद करने के लिए उकसाया है," अध्याय 2। लेखक के चैलेंजर के चित्रण में आंतरिक रूप से कुछ भी बुरा नहीं उभरता है। वह एक तटस्थ चरित्र है जो वही कर रहा है जो उसका काम है। फिर, कोई प्रलोभन नहीं, कोई भ्रष्ट नहीं, कोई भ्रष्ट नहीं। यह कोई शैतान प्रोफ़ाइल नहीं है। यह एक स्वतंत्र प्रोफ़ाइल है जिसे हमें पाठ से ही प्राप्त करना है। तथ्य यह है कि भगवान का दूत स्वयं शैतान की भूमिका निभा सकता है, यह बताता है कि यह आंतरिक रूप से बुरा नहीं है।

एक साहित्यिक रचना के रूप में चैलेंजर [10:11-11:27]

चैलेंजर एक ऐसा चरित्र है जिसका उपयोग लेखक ने उन तरीकों से किया है जो इज़राइली दर्शकों द्वारा ज्ञात जानकारी के अनुरूप हैं। याद रखें, हमने इसके साहित्यिक निर्माण के बारे में बात की है, और इसलिए सभी पात्र बस ऐसे ही हैं, वे साहित्यिक पात्र हैं, एक भूमिका निभा रहे हैं, भले ही यह वास्तव में वह अस्तित्व है जिसे नया नियम शैतान के रूप में नामित करता है। अय्यूब की पुस्तक की व्याख्या उस प्रोफ़ाइल के आधार पर की जानी चाहिए जो लक्षित दर्शकों के लिए इज़राइलियों के रूप में उपलब्ध थी, न कि बाद के ग्रीको-रोमन दर्शकों के लिए - न्यू टेस्टामेंट।

वास्तव में, चैलेंजर का पुस्तक में बहुत कम धार्मिक महत्व है। वह सिर्फ़ परिदृश्य तैयार करने में मदद करता है क्योंकि वह अय्यूब के इरादों पर सवाल उठाता है और भगवान की नीतियों को चुनौती देता है। उसे ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है जिसे अय्यूब की पीड़ा के लिए दोषी ठहराया जा सके। पुस्तक निश्चित रूप से यह सुझाव नहीं दे रही है कि जब हम पीड़ित हों तो हमें शैतान में दोष ढूँढ़ना चाहिए; वह किताब की शिक्षा नहीं है।

पुस्तक में लघु पात्र के रूप में चैलेंजर [11:27-12:30]

उनकी भूमिका हमारे अनुभवों या दुनिया में पीड़ा या बुराई के लिए स्पष्टीकरण प्रदान नहीं करती है। वह एक छोटा पात्र है जो सामने आने वाले नाटक में एक छोटी सी भूमिका निभा रहा है। और हम अपने जोखिम पर उस पर बहुत अधिक ध्यान देते हैं क्योंकि यह पुस्तक के संदेश को विकृत करता है। यह एक स्वर्गीय पदाधिकारी है जो ईश्वर के दरबार में चुनौती लाने के लिए अपनी निर्धारित भूमिका निभा रहा है। वह यही कर रहा है। वह इसे अच्छे से करता है। यह पुस्तक के लिए एक दृश्य तैयार करता है।

और इसलिए, हम यह पता लगाने के लिए आगे बढ़ते हैं कि क्या अय्यूब की धार्मिकता परीक्षा में खरी उतरेगी। याद रखें, अय्यूब की धार्मिकता की क्षमता को परखने का एकमात्र तरीका कष्ट उठाना है। और इसलिए, पीड़ा एक ऐसा रास्ता है जिस पर किताब चलने जा रही है।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 9, स्वर्ग में दृश्य, भाग 1 है।
[12:30]

नौकरी की किताब
सत्र 10: ईश्वर और शैतान के पुत्र
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 10 है, ईश्वर और शैतान के पुत्र।

चैलेंजर की रिपोर्ट [00:23-1:03]

तो, प्रसिद्ध दृश्य स्वर्गीय दरबार में सामने आता है। भगवान चुनौती देने वाले को अपनी रिपोर्ट बनाने के लिए बुलाते हैं। तुमने क्या पाया? फिर, यह केवल वह बातचीत है जो हमारे लिए स्थिति खोलती है। यह किसी तरह ईश्वर की अभिव्यक्ति नहीं है जो नहीं जानता कि क्या हो रहा है। उन्होंने चैलेंजर को काम सौंपा है कि वह जाकर चीजें खोजें और उन्हें लेकर आएँ। और इसलिए, चुनौती देने वाला अपनी निर्धारित भूमिका निभा रहा है, और भगवान जानकारी एकत्र कर रहा है। कोई भी अच्छा राजा यही करेगा। तो, यह इस स्थिति को उन शब्दों में चित्रित कर रहा है।

निष्काम धर्म प्रश्न [1:03-2:27]

जैसा कि हमने पहले नोट किया है, चैलेंजर मामले को सामने लाता है। बढ़िया, देखिए आपने अय्यूब के लिए क्या किया है। आपने उसे यह सब दिया है। और वह कहता है, कि तू ने उसके और उसके घराने के चारों ओर, अर्थात् जो कुछ उसका है, उसके चारों ओर बाड़ लगा दी है। तू ने उसके हाथ के काम पर आशीष दी है, कि उसकी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल सारे देश में फैल गए हैं। लेकिन हाँ, आपने उसके लिए इसे बहुत आसान बना दिया है; परन्तु क्या अय्यूब बिना कुछ लिये परमेश्वर की सेवा करता है? हमने इसे पहले ही उठाया है। यह निष्काम धार्मिकता का मामला है, अर्थात् स्वार्थ रहित धार्मिकता। क्या अय्यूब बिना कुछ लिये परमेश्वर की सेवा करता है? यह चुनौती सीधे प्रतिशोध सिद्धांत और महान सहजीवन, उन शर्तों, जिनके बारे में हमने बात की है, के केंद्र पर हमला करती है। और यह पुस्तक अंततः इन सबके लिए सुधारात्मक सिद्ध होगी।

क्या अय्यूब भगवान को "शाप" देगा [बराक]? [2:27-3:52]

तो, हमारे सामने यह चुनौती है: अय्यूब पीड़ा पर कैसे प्रतिक्रिया देगा? याद रखें कि हमने अय्यूब के बारे में तब बचाव के मुख्य गवाह के रूप में, ईश्वर की नीतियों के बचाव के बारे में बात की थी। वह कैसे प्रतिक्रिया देता है यह निर्धारित करने के लिए महत्वपूर्ण होगा कि धर्मी लोगों को आशीर्वाद देना एक स्वीकार्य नीति है या नहीं।

अब, चुनौती देने वाले का सुझाव है कि अय्यूब उसके मुँह पर परमेश्वर को शाप देगा। हमने अय्यूब 1 और 2 में हर जगह आशीर्वाद और शाप देने से पहले इस शब्दावली के बारे में बात की है, जहां पाठ अनुवाद में भगवान को शाप देने के बारे में बात करता है; जिस हिब्रू शब्द का प्रयोग किया गया है वह हिब्रू क्रिया "बराक" है, जिसका अर्थ है आशीर्वाद देना। तो फिर, इन संदर्भों में, अध्याय एक, श्लोक 5, श्लोक 11, अध्याय दो, श्लोक 5 और 9 में उन संदर्भों में बराक, जिसका अर्थ है धन्य, का उपयोग अभिशाप को संदर्भित करने के लिए व्यंजनात्मक रूप से किया जा रहा है। और इसका अनुवाद अध्याय एक, श्लोक 10 और श्लोक 21 में "धन्य" के रूप में किया गया है। व्यंजना का यह प्रयोग एक अजीब तुलना उत्पन्न करता है क्योंकि चैलेंजर का दावा है कि अय्यूब भगवान को उसके चेहरे पर डांटेगा, जिसका अर्थ है श्राप, फिर भी इसके विपरीत, अय्यूब भगवान को डांटता है, 1.21 में अर्थ आशीर्वाद। और इसलिए, जब हम परिच्छेद पर काम करते हैं तो यह शब्दों पर एक बहुत ही दिलचस्प प्रकार का खेल बनाता है। और यह निर्णय कि क्या बराक एक व्यंजना है या क्या इसका वास्तव में अर्थ "धन्य" है, वाक्य के संदर्भ पर निर्भर करता है।

चरम आपदाएँ 3:52-4:35]

अब, निःसंदेह, एक बार जब चैलेंजर को खुली छूट दे दी गई, तो परिणामी त्रासदी होगी। मानव शत्रु हैं। स्वर्ग से दिव्य न्याय आता है। वहाँ कुछ ऐसा है जिसे प्राकृतिक आपदा कहा जा सकता है, सब कुछ तेजी से हो रहा है। फिर, तथ्य यह है कि सभी क्षेत्रों को कवर किया गया है और वे सभी पूर्ण आपदा लाते हैं। "केवल, मैं बच गया हूँ" कि वे तेजी से एक के बाद एक आते हैं, यह सब चरम तस्वीर का हिस्सा है। पुस्तक की संपूर्ण तस्वीर को साकार करने के लिए सब कुछ अचानक और समग्र होना चाहिए।

अय्यूब की प्रतिक्रिया [4:35-5:50]

इसके विपरीत, हम अय्यूब की प्रतिक्रियाओं को देखते हैं। सबसे पहले, वह शोक के सामान्य कार्यों में संलग्न होता है। और इसलिए हमारे पास इसका वर्णन हमारे लिए है। साष्टांग प्रणाम ईश्वर द्वारा की गई किसी उल्लेखनीय चीज़ की प्रतिक्रिया है और स्वीकारोक्ति और स्वीकृति का प्रतिनिधित्व करता है। और इसलिए, अय्यूब परमेश्वर के सामने दंडवत हो गया। पुनः ध्यान दें तो वह इसे ईश्वर का कार्य मानता है, किसी दुष्ट एजेंट का स्वतंत्र कार्य नहीं। उन्होंने अपना भाषण भगवान के नाम पर आशीर्वाद के आह्वान के साथ समाप्त किया। "नंगा, मैं अपनी मां के पेट से आया, नग्न, मैं चला जाऊंगा। यहोवा ने दिया है, यहोवा ने ही लिया है। यहोवा के नाम की स्तुति की जाए।"

यह दिलचस्प है कि यहां अय्यूब के मुंह में यहोवा के नाम का उपयोग किया गया है, फिर भी सभी भाषणों और सभी प्रवचनों के माध्यम से, यहोवा का उपयोग कभी नहीं किया जाता है जब तक कि हम अध्याय 38 में यहोवा के भाषणों तक नहीं पहुंच जाते। अय्यूब हमेशा ईश्वर को एल या एलोहिम या एल शादाई के रूप में संदर्भित करता है। , कभी यहोवा नहीं, सिवाय यहाँ प्रस्तावना में और फिर यहोवा के भाषणों में।

बराक शब्द पर आशीर्वाद/अभिशाप खेलें [5:50-7:20]

चुनौती देने वाले ने कहा कि वह भगवान के नाम को शाप देगा। अय्यूब का भाषण परमेश्वर के नाम के आशीर्वाद के साथ समाप्त होता है। लेकिन यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा चैलेंजर ने कहा था कि वह ऐसा करेगा और फिर भी बिल्कुल विपरीत है। चुनौती यह है कि वह बराक होगा, और वह बराक होगा। तो यह वैसा ही है जैसा चैलेंजर ने कहा था, लेकिन यह विपरीत है। ठीक है? क्योंकि चुनौती देने वाला इसे एक व्यंजना के रूप में उपयोग कर रहा था, अय्यूब अपने चेहरे पर भगवान को आशीर्वाद देता है, लेकिन बिना किसी व्यंजनापूर्ण अर्थ के। अय्यूब ईश्वर को जवाबदेही के लिए नहीं बुला रहा है। ईश्वर चाहे दे या ले, उसकी स्तुति करनी चाहिए। भगवान का हम पर कुछ भी बकाया नहीं है।

अब ये सराहनीय और प्रशंसनीय प्रतिक्रिया है. निःसंदेह, हम पाएंगे कि अय्यूब पूरी किताब में इस प्रकार की शुद्ध प्रतिक्रिया को बनाए रखने में सफल नहीं हुआ है। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है शुरुआत में यह आसान हो जाता है। मुझे लगता है कि हममें से कई लोग इसे इसी तरह से पाते हैं।

जब हम लंबे समय तक कठिन परिस्थितियों का सामना करते हैं, तो शुरुआत में मजबूत होना थोड़ा आसान होता है, लेकिन समय बीतने के साथ चीजें बिगड़ती जाती हैं। किताब हमें बताती है "कि इस सब में अय्यूब ने परमेश्वर पर गलत काम करने का आरोप लगाकर पाप नहीं किया।" फिर भी वह ईश्वर को ही मानता था जिसने इसे किया था, लेकिन वह ईश्वर को जवाबदेह ठहराने की कोशिश नहीं कर रहा है।

छिपी हुई जानकारी: स्वर्गीय दृश्य [7:20-9:39]

अब पुस्तक की अलंकारिक रणनीति में, स्वर्ग में यह पहला दृश्य कैसे काम करता है? खैर, सबसे पहले, यह हमें संकेत देता है कि अय्यूब वास्तव में गलत काम करने में निर्दोष है। यह प्राचीन निकट पूर्व के सामान्य उत्तरों को समाप्त कर देता है, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है। यह स्थिति के बारे में अलग ढंग से सोचने के लिए कुछ नए समाधानों के लिए जगह बनाता है। फिर, सभी चरम सीमाएं विचार के लिए जगह बनाती हैं। फिर, यह हमें दिखाता है कि नौकरी परीक्षण पर नहीं है। स्वर्ग का दृश्य भगवान की नीतियों को लक्षित करता है। नौकरी सिर्फ परीक्षण का मामला है। हम यह भी पाते हैं कि स्वर्ग का दृश्य छिपी हुई जानकारी की अवधारणा का परिचय देता है। याद रखें कि न तो अय्यूब, न ही उसके दोस्त, स्वर्ग के इस दृश्य के बारे में कभी जान पाएंगे। उन्हें कभी नहीं बताया जाएगा कि क्या हुआ था। उनके पास इस बात का कभी कोई स्पष्टीकरण नहीं होगा कि यह सब किस कारण से शुरू हुआ। उन्हें कभी पता नहीं चलेगा। और इसलिए, उस स्थिति में, अय्यूब को किसी भी प्रकार का कारण या उत्तर या स्पष्टीकरण नहीं दिया जाता है। और इसलिए, हम पहले ही देख चुके हैं कि किताब में छिपी हुई जानकारी कैसे काम आएगी। हम ध्यान देते हैं कि ईश्वर ने बातचीत शुरू की और कार्रवाई को मंजूरी दी। वह इसकी जिम्मेदारी लेते हैं। और इसलिए, फिर से, हम पाते हैं कि चैलेंजर सीधे तौर पर सामने आने वाली परिस्थितियों के इस विशेष सेट के लिए एक उत्प्रेरक है।

अय्यूब के ज्ञान से स्वर्ग का दृश्य ही हटा दिया गया है। और इसलिए, क्या यह हमें पाठकों के रूप में पर्दे के पीछे का कोई कारण देने के लिए नहीं है जिसके द्वारा हम स्वयं ईश्वर को जवाबदेह ठहरा

सकें या उसका मूल्यांकन कर सकें। बल्कि, यह उन सभी चीज़ों को तस्वीर से बाहर निकालना है ताकि हम इस पूरे विचार पर चर्चा कर सकें कि हम ईश्वर के बारे में कैसे सोचते हैं।

ईश्वर की नीतियों को एक समीकरण तक सीमित नहीं किया जा सकता [9:39-10:16]

अय्यूब ने प्रतिशोध सिद्धांत के संदर्भ में सोचा। उसने सोचा कि भगवान के कार्यों को एक साधारण समीकरण में घटाया जा सकता है। आज बहुत से लोग यही सोचते हैं। यह हमेशा एक गलती है। तो, स्वर्ग के दृश्य ने, इस पहले दृश्य ने, परिदृश्य को खोल दिया है, लेकिन यह अभी तक पूरा नहीं हुआ है। स्वर्ग में दूसरा दृश्य है, और हम अगले खंड में उसके बारे में बात करेंगे।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 10 है, ईश्वर और शैतान के पुत्र [10:16]

नौकरी की किताब
सत्र 11: स्वर्ग में दृश्य, भाग 2
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 11, स्वर्ग में दृश्य, भाग 2 है।

स्वर्ग में दूसरे दृश्य का परिचय [00:23-1:21]

तो अब हम स्वर्ग के दूसरे दृश्य की ओर बढ़ते हैं। अय्यूब ने अपनी सारी संपत्ति, अपनी भेड़-बकरी, गाय-बैल, अपने ऊँट, अपने बैल, अपने बेटे-बेटियाँ खो दी हैं। उसके पास जो कुछ भी था वह सब खो गया। और इसलिए फिर से, यहोवा और चुनौती देने वाले के बीच हमारी बातचीत होती है। वहाँ अध्याय 2, श्लोक पाँच में। नहीं, मुझे क्षमा करें, श्लोक तीन। "तब यहोवा ने चुनौती देनेवाले से कहा, 'क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? पृथ्वी पर उसके तुल्य कोई नहीं है; वह खरा और सीधा है,' उसी प्रकार की बातें उसने पहली बार कही थीं। "और वह अभी भी अपनी ईमानदारी बनाए रखता है, भले ही आपने बिना किसी कारण के उसे बर्बाद करने के लिए मुझे उसके खिलाफ उकसाया हो।" ठीक है।

उकसाना [1:21-4:31]

अब मैं उस वाक्यांश पर थोड़ा गौर करना चाहता हूँ। हम हिब्रू में "उकसाना" इस क्रिया के उपयोग को देखना चाहते हैं। यह मूल "सुत" है। और आपमें से जिनके पास थोड़ी हिब्रू है, उनके लिए यह हिफिल रूप है, जो कभी-कभी कारक होता है। लेकिन यहाँ, कभी-कभी, यह किसी अप्रत्यक्ष वस्तु के साथ होता है और कभी-कभी बिना किसी वस्तु के। यहां विषय चैलेंजर है। निःसंदेह क्रिया "उकसाना" है। प्रत्यक्ष उद्देश्य यहोवा है "तूने मुझे उकसाया है," और अप्रत्यक्ष उद्देश्य अय्यूब है "उसे नष्ट करने के लिए उसके विरुद्ध।" तो, हमारे पास वाक्य में तीन पक्ष शामिल हैं, चैलेंजर और यहोवा, और अय्यूब

पुराने नियम में तीन अन्य स्थान हैं जो इस तरह के संदर्भ में क्रिया का उपयोग करते हैं। उनमें से एक 1 शमूएल 26:19 में है। वहां विषय यहोवा है; वस्तु शाऊल है; अर्थात् दाऊद शाऊल से बातें करके कहता है, यदि यहोवा ने तुझे मेरे विरुद्ध भड़काया है। तो, डेविड अप्रत्यक्ष वस्तु है।

2 शमूएल 24:1 में, यह यहोवा या उसका क्रोध है जो दाऊद को जनगणना कराने के लिए उकसाता है। ठीक है। वह दाऊद को इस्राएल के विरुद्ध भड़का रहा है। तो वहाँ, यहोवा विषय है; डेविड एक प्रत्यक्ष वस्तु है, और इज़राइल एक अप्रत्यक्ष वस्तु है। यिर्मयाह 43 :3 में, बारूक वह विषय है जो यिर्मयाह को भड़काता है, जो इज़राइल के खिलाफ प्रत्यक्ष वस्तु है। मुझे खेद है, यिर्मयाह एक प्रत्यक्ष वस्तु है; इज़राइल अप्रत्यक्ष वस्तु है। तो, हमारे पास अय्यूब 2:3 के अलावा तीन अन्य स्थान हैं, जो इस क्रिया का उपयोग करते हैं और जिसमें यह सेटअप है जिसमें एक विषय और एक प्रत्यक्ष वस्तु और एक अप्रत्यक्ष वस्तु है।

अब, यदि हम उनकी जांच करें, तो हम उपयोग और यह कैसे काम करता है, इसके बारे में कुछ सीख सकते हैं। अप्रत्यक्ष वस्तु के लिए उकसाई गई कार्रवाई हमेशा नकारात्मक होती है। ठीक है? उकसाया गया कार्य हमेशा अप्रत्यक्ष वस्तु के लिए नकारात्मक होता है, हालांकि यह आंतरिक रूप से कोई पापपूर्ण या बुरा कार्य नहीं होता है। आखिरकार, कभी-कभी यहोवा ही भड़काने वाला होता है। तो, यह आंतरिक रूप से पापपूर्ण या बुरा नहीं है। अय्यूब में, एक प्रत्यक्ष वस्तु के रूप में, यहोवा अय्यूब के विरुद्ध कार्रवाई के लिए जवाबदेह है, हालांकि चुनौती देने वाले ने, विषय के रूप में, उसके निर्णय को प्रभावित किया है। एक अप्रत्यक्ष वस्तु के रूप में जॉब को विषय के रूप में चैलेंजर की भूमिका का कोई ज्ञान नहीं है। वह केवल यहोवा की भूमिका को समझता है। वह प्रत्यक्ष वस्तु है। चुनौती देने वाले ने यहोवा को दाऊद के विरुद्ध भड़काया; मुझे क्षमा करें, अय्यूब।

बिना किसी कारण के [हित्रम] [4:31-6:24]

तो, इसका उपयोग 1:9 में किया गया है, जब चैलेंजर ने यह सवाल उठाया कि क्या अय्यूब ने बिना किसी कारण के भगवान की सेवा की, यह *हित्रम शब्द है* "बिना किसी कारण के।" तो, उसने बिना किसी कारण के उसे उकसाया है। तो इसका उपयोग 2:3 में किया जाता है। इसका उपयोग 1:9 में इस बारे में भी किया गया था कि क्या अय्यूब ने बिना किसी कारण के परमेश्वर की सेवा की थी। तो,

क्या अय्यूब बिना किसी कारण के परमेश्वर की सेवा करता है; अब, चुनौती देने वाले ने अकारण ही यहोवा को अय्यूब के विरुद्ध भड़काया है। यह वही हिब्रू शब्द है *हित्रम*।

इसका तात्पर्य व्यर्थ में किये गये किसी कार्य से हो सकता है। उदाहरण के लिए, यहजेकेल 6:10 में, या 1 शमूएल 25:31 में अनावश्यक रूप से किया गया कुछ, या यहां तक कि मुआवजे के बिना किया गया कुछ, यिर्मयाह 29:15। और निःसंदेह, अय्यूब 1:9 में यही अर्थ है कि यह बिना मुआवजे के किया गया है। ज्यादातर मामलों में, यह बिना किसी कारण के किए गए किसी कार्य को संदर्भित करता है, अर्थात् अवांछनीय उपचार। और यहां 1 शमूएल 19:5 या 1 राजा 2:31 जैसे अंश होंगे। तो, हमने अपने लिए वह दृश्य तैयार कर लिया है जहां यहोवा द्वारा यह कथन दिया गया है। “तुमने बिना वजह मुझे उसके खिलाफ़ भड़काया है।” अब, वहां हमें पता चलता है कि ईश्वर चुनौती देने वाले पर जिम्मेदारी या दोष नहीं थोप रहा है। चैलेंजर ने उकसाया है, लेकिन यह कोई आंतरिक रूप से बुरी बात नहीं है। लेकिन वही हुआ है। और फिर, अय्यूब को चैलेंजर की भूमिका के बारे में कुछ भी नहीं पता होगा, कुछ भी नहीं। यह बात उसे कभी नहीं बताई गई।

पहले और दूसरे स्वर्गीय दृश्यों के बीच अंतर [6:24-7:18]

तो, इस दूसरे दौर का परिणाम क्या है? इस दूसरे दौर में, हमारे बीच थोड़ा अंतर है। पहले दौर ने सारी सकारात्मक चीजें, समृद्धि छीन लीं। दूसरा दौर एक नकारात्मक जोड़ता है। यहां हमें शारीरिक कष्ट मिलता है। तो, विचार, और यह चैलेंजर द्वारा प्रस्तुत किया गया है, विचार यह है कि, कोई भी तब खड़ा हो सकता है जब वे अपना सारा सामान खो देते हैं, लेकिन जब आप उन्हें दर्द में डालना शुरू करते हैं, तो अब यह दिखाई देने वाला है। और इसलिए, भगवान इसकी भी अनुमति देते हैं। इसलिए, यह दूसरा दौर अलग है क्योंकि इसमें शारीरिक पीड़ा शामिल है। पहला दौर नुकसान और दुःख से जुड़ी मानसिक पीड़ा लेकर आया और दूसरा दौर दर्द से जुड़ी शारीरिक समस्याएं लेकर आया।

सिटी डंप: निष्कासित और बहिष्कृत [7:18-8:18]

अय्यूब को जो त्वचा रोग था, उसके कारण उसे शहर से निकाल दिया गया और बहिष्कृत कर दिया गया। हम वास्तव में इसका चिकित्सीय निदान नहीं दे सकते, लेकिन प्राचीन दुनिया में त्वचा रोग का

इलाज इसी तरह किया जाता था; यह बहिष्कृत होने का कारण है। और इसलिए, उसे शहर से निष्कासित कर दिया गया, और वह उस स्थान पर पहुँच गया जिसे पाठ में राख के ढेर के रूप में संदर्भित किया गया है। यह शहर के कूड़ेदान की तरह है। यह केवल कूड़ा-कचरा नहीं है जो वहाँ फेंका गया था; यह गोबर है जिसे वहाँ फेंक दिया जाता है। नौकरी का अंत शहर के कूड़ेदान में बैठकर होता है। इससे पता चलता है कि वह कितना नीचे गिर गया है।' उसे यहाँ तक कम कर दिया गया है. तो, यह केवल राख ही नहीं है जो इसे खराब बनाती है; वह जिस स्थिति में है उसका वर्णन करने के लिए यह उतना भी बुरा नहीं है।

बयानबाजी की रणनीति [8:18-9:19]

तो, स्वर्ग के इस दूसरे दृश्य की अलंकारिक रणनीति क्या है? यह आश्चर्य करता है कि यदि अय्यूब की वफ़ादारी का एकमात्र उद्देश्य लाभ प्राप्त करना है तो उसके पास ईश्वर को त्यागने का हर अवसर है। फिर, अब उन्हें न सिर्फ़ नुकसान उठाना पड़ा है. उसे दर्द हो रहा है. यह सुनिश्चित करता है कि उसके पास ईश्वर को त्यागने का, यह पता लगाने का हर मौका है कि उसके इरादे वास्तव में क्या हैं। दर्द सहना नुकसान सहने से अलग है। इसलिए, यह दृश्य और बढ़ गया, और अय्यूब की स्थिति और भी बदतर हो गई।

तो, इसी संदर्भ में उसका सामना अपनी पत्नी और अपने तीन दोस्तों से होता है। और हम अगले खंड में उनमें से प्रत्येक की भूमिका और उनके प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं से निपटने जा रहे हैं।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 11, स्वर्ग में दृश्य, भाग 2 है। [9:19]

नौकरी की किताब
सत्र 12: पत्नी और दोस्तों की भूमिका
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 12 है, पत्नी और दोस्तों की भूमिका।

परिचय [00:23-00:42]

आइए कुछ मिनट लें और अय्यूब और उसकी पत्नी के दोस्तों पर नज़र डालें और उनकी भूमिकाओं के बारे में बात करें। निस्संदेह, वे यहां अध्याय दो के अंत में दिखाई देते हैं। और इसलिए, हमें कथानक में उनसे परिचित कराया गया है। आइए देखें कि यह सब कैसे चल रहा है।

व्यक्तिगत भूमिका वाले मित्र [00:42-2:55]

चलिए दोस्तों से शुरू करते हैं। सबसे पहले, हम मित्रों के बारे में व्यक्तिगत रूप से सोच सकते हैं। यदि प्रत्येक की कोई भूमिका न हो तो पुस्तक वास्तव में तीन मित्रों का उपयोग नहीं करेगी। फिर, हमें उनके बारे में व्यक्तिगत प्रोफ़ाइल के रूप में सोचना होगा। पुनः, जैसा कि आपको याद होगा, मैं इसे एक साहित्यिक रचना के रूप में मान रहा हूँ। तो, तीन दोस्त, बहुत जानबूझकर, तीन भूमिकाएँ निभाते हैं। लेखक उनके साथ यही करना चाहता है। इस प्रकार उनके पात्रों का उपयोग किया जाता है। और इसलिए पाठकों के रूप में, हमें उन सभी को एक साथ रखकर उन्हें एक कॉर्पोरेट समूह के रूप में नहीं सोचना चाहिए। बल्कि यह देखने का प्रयास करें कि प्रत्येक व्यक्ति क्या भूमिका निभाता है।

एलीपज़, जब वह अपना स्पष्टीकरण देता है, तो अय्यूब के प्रति उसकी टिप्पणियाँ व्यक्तिगत अनुभवों के महत्व पर केंद्रित होती हैं। हम ऐसे लोगों को जानते हैं। वे हमसे अपने जीवन और अपनी कहानियों के बारे में बात करेंगे और उन्होंने क्या देखा या अनुभव किया या निष्कर्ष निकाला। उनकी बातचीत उन व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित है जो उनके पास हैं।

बिलदाद युगों के ज्ञान के बारे में बात करने के लिए अधिक इच्छुक हैं। वह समूह के बीच दार्शनिक है। आइए सोचें कि लोग हमेशा इन चीजों के बारे में कैसे सोचते हैं। तो चलिए मैं इसे किसी शिक्षित व्यक्ति से आप तक पहुंचाता हूं। यहाँ युगों का ज्ञान है।

ज़ोफ़र सोच की प्रणाली में समझ खोजने के लिए सबसे अधिक इच्छुक है। आइए चीजों को व्यवस्थित करें। यदि हम इसे सही ढंग से व्यवस्थित करें तो हर चीज़ काली और सफ़ेद है। और इसलिए, हमें ये तीन व्यक्तित्व, ये तीन चरित्र मिले हैं: अनुभव, युगों का ज्ञान, और व्यवस्थापन। और इसलिए, उनमें से प्रत्येक की अपनी-अपनी भूमिका है।

एक समूह के रूप में मित्र की भूमिका [2:55-4:30]

साथ ही, निस्संदेह, वे एक समूह के रूप में कार्य कर रहे हैं, साथ ही, कुछ चीजें हैं जो उन सभी में समान हैं। तो, मित्र सामूहिक रूप से प्राचीन विश्व के ऋषियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये आसपास के सबसे बुद्धिमान लोग माने जाते हैं। यदि किसी के पास उत्तर है, यदि कोई स्पष्टीकरण मौजूद है, तो ये लोग हैं; ये विशेषज्ञ हैं। आपको यहीं दुनिया का सर्वश्रेष्ठ स्थान मिला है, एक, दो और तीन स्थान पर। मैं नहीं जानता कि कौन सा है, लेकिन वे यहां हैं। तो, वे प्राचीन दुनिया में ज्ञान की ऊंचाई प्रस्तुत करने के लिए मौजूद हैं।

लेकिन पुस्तक में, जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है, वे विषमताएँ हैं। किताब उन्हें बजा रही है। क्योंकि भले ही उनके पास बुद्धिमानों में सबसे बुद्धिमान होने की प्रतिष्ठा है, अंत में, वे मूर्ख हैं। यह पुस्तक उनके द्वारा पेश किए गए ज्ञान को सतही, अपर्याप्त और कमजोर धारणाओं पर निर्मित त्रुटिपूर्ण तर्क के रूप में खारिज करती है। यहां वे ज्ञान के प्रतिनिधि के रूप में आते हैं, और इसके बजाय, उन्हें गुमराह मूर्ख कहकर खारिज कर दिया जाता है। यह किताब के लिए एक दिलचस्प रणनीति है कि वह दुनिया द्वारा पेश किए गए सर्वश्रेष्ठ को ले ले और उसे ध्यान से देखे और सरसरी तौर पर खारिज कर दे।

चुनौती देने वाले के प्रतिनिधि के रूप में मित्र [4:30-7:28]

मित्र सामूहिक रूप से चैलेंजर के दार्शनिक प्रतिनिधियों की भूमिका निभाते हैं। मुझे वह समझाने दीजिए। याद रखें, चुनौती देने वाले ने कहा है, "क्या अय्यूब बिना कुछ लिए भगवान की सेवा करता

है?" मित्र प्रतिशोध सिद्धांत सोच का प्रतिनिधित्व करते हैं; याद रखें, यहीं वे अपना किला बनाते हैं। इसका मतलब है कि वे प्रतिशोध के सिद्धांत पर काम कर रहे हैं और इसलिए इस धारणा पर काम कर रहे हैं कि लोगों को वही मिलेगा जिसके वे हकदार हैं।

इसलिए, जब अय्यूब कष्ट सहता है, तो वे आसानी से यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि उसे कष्ट हो रहा होगा क्योंकि उसने कोई बड़ी बुराई की है। वे नहीं जानते कि उसने क्या बुरा काम किया है। वे अपने पूरे भाषणों में बेतरतीब बेतुके अनुमान लगाते हैं, लेकिन उन्हें पता नहीं चलता। उनके पास कोई सबूत नहीं है। उन्होंने इसमें से कुछ भी अपनी आँखों से नहीं देखा है, लेकिन उनका मानना है कि यह सच होगा। और इसलिए वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि अय्यूब के पास निपटने के लिए कुछ गंभीर मुद्दे हैं और उसे ऐसा करने की आवश्यकता है। उन पापों को स्वीकार करें, चाहे वे कुछ भी हों। अपना सामान वापस पाने के लिए जो भी करना पड़े वह करें। दोस्त सब सामान के बारे में हैं। चूँकि चुनौती देने वाले ने कहा था कि यदि अय्यूब अपना सामान खो देता है, तो वह अपनी धार्मिकता छोड़ देगा, हम देख सकते हैं कि मित्र उसी तर्क-वितर्क पर काम कर रहे हैं। वे उन्हें मनाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। यह वास्तव में सामान के बारे में है। आपकी प्रतिक्रिया अपना सामान वापस पाने के लिए होनी चाहिए। यदि अय्यूब उन पर विश्वास करता है, यदि अय्यूब उस पंक्ति में प्रतिक्रिया करता है, कि यह वास्तव में सामान के बारे में है, और मुझे बस अपना सामान वापस लाने की आवश्यकता है। इससे पता चलेगा कि चुनौती देने वाला सही था, अय्यूब की धार्मिकता वास्तव में, अंत में, सब कुछ के बारे में है। और इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि मित्र, अनजाने में, चैलेंजर द्वारा उठाए गए बिंदु के लिए अनजाने में एजेंडे पर दबाव डाल रहे हैं। क्या यह सामान के बारे में है, या यह धार्मिकता के बारे में है? चैलेंजर को संदेह था कि यह सामान के बारे में था। ऐसा लगता है कि वह इंसानों को बहुत अच्छी तरह से जानता है। दोस्तों ने अय्यूब को चीज़ों के बारे में सोचने में मदद करने की कोशिश की, लेकिन उसे मनाना इतना आसान नहीं था।

दोस्तों के बारे में गलत धारणाएँ [7:28-9:03]

अब, जब हम दोस्तों की इस भूमिका को समझते हैं, तो हम उम्मीद करते हैं कि दोस्तों की भूमिका के बारे में कुछ अन्य गलतफहमियों को दूर कर सकते हैं। मित्रों की भूमिका इतनी नहीं है कि

पाठकों को यह निर्देश दिया जा सके कि सलाह और सांत्वना कैसे नहीं देनी है। कई बार, लोग अय्यूब की किताब में दोस्तों को यह कहकर जवाब देते हैं कि वे कितना कम आराम देते हैं और अय्यूब के साथ सहानुभूति रखने और उसे आराम दिलाने की कोशिश में वे कितने असंतुष्ट हैं। वे उसके प्रति बहुत कठोर हैं। लेकिन इसलिए पाठक को यह नहीं कहना चाहिए, "ठीक है, अब मुझे पता है कि मुझे किसी पीड़ित व्यक्ति को सांत्वना देने की कोशिश कैसे नहीं करनी चाहिए।" मित्र इसीलिए नहीं हैं। वैसे, ऐसा मत करो, लेकिन दोस्त उसके लिए नहीं हैं। वे रोल मॉडल नहीं हैं, उस मामले में, नकारात्मक रोल मॉडल हैं, लेकिन वे किसी भी प्रकार के रोल मॉडल नहीं हैं। वे भूमिका निभाने वाले खिलाड़ी हैं। वे पुस्तक में एक महत्वपूर्ण साहित्यिक, धार्मिक, दार्शनिक और अलंकारिक भूमिका निभाते हैं। जब हम किताब को समझने की कोशिश कर रहे हैं, तो हमें उनकी भूमिका को समझने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि किताब में उनका उपयोग इसी तरह किया जा रहा है। और इस तरह से शिक्षण उनके उचित स्थान पर पुस्तक से निकलेगा।

अय्यूब की पत्नी की भूमिका [9:03-9:56]

दोस्तों के लिए बहुत कुछ; हम बाद में उनके विशिष्ट भाषणों का विवरण देंगे। आइये अपना ध्यान पत्नी की ओर केन्द्रित करें। अब, जब वह बोलती है, तो अय्यूब को पहले ही काफी कष्ट सहना पड़ा है। वह दोनों चरण हार गया है। उसने अपनी समृद्धि खो दी है। उन्होंने अपना स्वास्थ्य खो दिया है। यह दिलचस्प है कि पत्नी को बातचीत के साथी के रूप में नहीं लाया गया है, जो अपने खोए हुए बच्चों पर रो रही है। वास्तव में उसे वैसा व्यक्तित्व नहीं दिया गया है। फिर, वह एक भूमिका निभाने वाली खिलाड़ी है। दोस्तों की तरह, वह भी जॉब को एक विशेष दिशा में धकेलने की कोशिश करने के लिए चैलेंजर के पक्ष में खड़ी है।

चुनौती देने वाले के लिए त्वरित समाधान के रूप में पत्नी [9:56-10:26]

एक अर्थ में, हम कह सकते हैं कि पत्नी के शब्दों के साथ, "भगवान को शाप दो और मर जाओ," वह चुनौती देने वाले के दृष्टिकोण से त्वरित और आसान समाधान का प्रतिनिधित्व करती है। मेरा मतलब है, यदि अय्यूब को पहले ही कगार पर धकेल दिया गया है, आप जानते हैं, उसने धार्मिकता या ईश्वर के प्रति वफादारी की सारी भावना खो दी है, तो वह उसे किनारे पर धकेल देगी। "भगवान

को श्राप दो और मर जाओ।" और वह कहेगा, "हाँ, यह सब भूल जाओ, इसे छोड़ दो।" तो, यह त्वरित और आसान है।

दोस्त और पत्नी मिलकर एक दूसरे को धक्का दे रहे हैं [10:26-13:37]

मित्र पत्नी के लिए इसी प्रकार का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह सब आपके खोए हुए सामान के बारे में है। दोस्तों, उस सामान को वापस पाने का प्रयास करें। इसलिए, वह वास्तव में दोस्तों के साथ मिलकर और चैलेंजर के साथ मिलकर उस एजेंडे को आगे बढ़ा रही है। यह पता लगाने के लिए कि उसकी धार्मिकता उसके सामान से अधिक महत्वपूर्ण है या नहीं, इसे केवल अय्यूब की अपनी मानसिक कार्यप्रणाली पर नहीं छोड़ा जाएगा। उसे धक्का दिया जा रहा है, उसकी पत्नी द्वारा धक्का दिया जा रहा है, उसके दोस्तों द्वारा धक्का दिया जा रहा है। उसे सुझाव दिया जा रहा है, "भगवान को श्राप दो और मर जाओ।" इसे सामान के बारे में बनाएं, अपना सामान वापस पाने के लिए जो करना है वह करें। तो, यही वह भूमिका है जो वह फिर से निभाती है, न कि वह जीवन साथी जो आपके साथ शोक मनाता है। इसे पुस्तक के लेखक द्वारा महिलाओं पर कोई आलोचनात्मक प्रहार नहीं माना जाता है। इसका उससे कोई लेना देना नहीं है। यह बस उस समय की रणनीति है कि वह कैसे प्रतिक्रिया देगा। बेशक, अय्यूब उसे एक मूर्ख महिला के रूप में जवाब देता है। उनका कहना है कि "क्या हमें ईश्वर से अच्छाई स्वीकार करनी चाहिए, परेशानी नहीं?" फिर से, ईश्वर के बारे में एक बहुत ही सकारात्मक प्रतिक्रिया और हम ईश्वर को जवाबदेह न ठहराने के बारे में कैसे प्रतिक्रिया देते हैं। और इसलिए, उसकी पत्नी दोस्तों की तरह ही चैलेंजर की उम्मीदों को पूरा करने के साधन के रूप में कार्य करती है। एक बार फिर, चैलेंजर सही साबित होगा यदि जॉब ने अपनी पत्नी की सलाह का पालन किया, जैसे चैलेंजर सही साबित होगा यदि जॉब ने अपने दोस्त की सलाह का पालन किया।

आखिरकार, पत्नी की आलंकारिक भूमिका एकबारगी ही होती है। वह एक बयान देती है। फिर वह तस्वीर से बाहर है। सबसे पहले, यह चैलेंजर की त्वरित जीत से बचाता है। यह आसान नहीं होने वाला है। दूसरा, यह अय्यूब को फिर से अपनी वफ़ादारी व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। न केवल भगवान ने जो दिया है, वह छीन भी सकता है। वह दर्द और बीमारी से ग्रसित हो सकता है।

अय्यूब वफादार रहता है। तीसरा, यह दोस्तों के लिए एक प्रस्तावना और परिवर्तन के रूप में कार्य करता है क्योंकि, निस्संदेह, वह दोस्तों के आने से पहले ही घटनास्थल पर आ जाती है। चौथा, यह उस दिशा के विपरीत समाधान प्रस्तावित करता है जिस दिशा में मित्र जाएंगे। मित्र अय्यूब को बताना चाहते हैं कि नवीनीकृत लाभों के साथ कैसे जीना है। वह उससे कहती है कि जीवन जीने लायक नहीं है और उसे बताती है कि कैसे मरना है। पांचवां, पत्नी और दोस्त दोनों मानते हैं कि समीकरण के लिए लाभ आवश्यक हैं, जो जॉब को उस दिशा में खींच रहा है जिस दिशा में चैलेंजर ने सुझाव दिया है कि वह जाएगा।

चैलेंजर के मित्र और पत्नी अनजाने एजेंट [13:37-14:37]

इसलिए, वे सभी, दोस्त और अय्यूब की पत्नी, चैलेंजर की अपेक्षाओं के लिए अनजाने एजेंट के रूप में काम करते हैं। तो, दृश्य तैयार है। स्वर्ग का दृश्य समाप्त हो गया। संवाद शुरू होने वाले हैं। हम अब सांसारिक क्षेत्र में वापस आ गए हैं जहां हम रहेंगे क्योंकि यहोवा भी जब बोलते हैं, तो बोलने के लिए सांसारिक क्षेत्र में आते हैं। चुनौती देने वाले की आगे कोई भूमिका नहीं होगी। केवल उसके सरोगेट मित्र ही खड़े होते हैं और मामला बनाते हैं। इसलिए उनकी आगे कोई भूमिका नहीं होगी। अब, जब हम अध्याय तीन में अय्यूब के विलाप और संवाद खंड में संवादों की पहली श्रृंखला की ओर बढ़ते हैं तो हम संवाद को प्रकट होने देते हैं।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 12 है, पत्नी और दोस्तों की भूमिका। [14:37]

नौकरी की किताब

सत्र 13: संवाद शृंखला 1, कार्य 3-14

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 13, संवाद शृंखला 1, कार्य 3-14 है।

अय्यूब का विलाप (अय्यूब 3) [00:27-6:10]

अध्याय चार में संवाद गंभीरता से शुरू होते हैं। अध्याय तीन में अय्यूब का विलाप है, जो इस पूरे खंड का शुभारंभ करता है। पुस्तक की संरचना में, अय्यूब के विलाप को पुस्तक के अंत में भगवान के भाषणों के प्रति उसकी दो प्रतिक्रियाओं के समानान्तर किया जा सकता है। फिर, वे अलग हो गए हैं, और वे इतने लंबे समय के करीब नहीं हैं, लेकिन वे पुस्तक में एक समान संतुलन भूमिका निभाते हैं। लेकिन यहां अय्यूब का विलाप संवाद खोल रहा है।

अय्यूब अपने जन्म के दिन को कोसते हुए विलाप का पहला भाग शुरू करता है। अब, फिर से, हमें यहाँ "अभिशाप" शब्द मिलता है, लेकिन यह एक अलग शब्द है। यह " *बराक* " शब्द नहीं है, भला हो कि यह व्यंजनात्मक ढंग से काम कर रहा है। इस्तेमाल किया जाने वाला हिब्रू शब्द *क्रलाल* है, जिसमें शक्ति के शब्द के साथ जादू शामिल है। इसलिए, वह अपने जन्म के दिन के विरुद्ध एक मंत्र का उपयोग कर रहा है। वह 3.8 में उस दिन को शाप देने के लिए कहता है; वह एक अलग शब्द है. तो, "अभिशाप" के लिए तीन अलग-अलग शब्द। व्यंजना में *बराक*, *क्रलाल* शक्ति के शब्दों के साथ एक मंत्र है, लेकिन फिर दिन को शाप देता है '*अरार*', और इसका तात्पर्य भगवान की सुरक्षा से कुछ हटाने, व्यवस्था में व्यवधान है। वह '*अरार*' है। तो, ये तीन शब्द, भले ही इन सभी का अनुवाद "अभिशाप" किया गया हो, उनकी अलग-अलग बारीकियाँ हैं, और वे अलग-अलग तरीके से काम करते हैं।

वह लेविथान को जगाने के बारे में भी बात करते हैं। यह दैवीय विशेषज्ञों द्वारा किया गया कुछ काम होगा जो ऐसी चीजों में हाथ आजमाएंगे। लेविथान, फिर से, गैर-व्यवस्था की दुनिया, अराजकता की

दुनिया का प्रतिनिधित्व करता है। चूँकि अय्यूब अराजकता का अनुभव कर रहा है, इसलिए वह लेविथान को उसके जन्म के दिन के प्रति जागृत करने के विचार का आह्वान करता है।

अपने विलाप के दूसरे भाग में वह इच्छा व्यक्त करता है कि उसका कभी जन्म ही न हुआ हो। उसकी इच्छा होती है कि वह गर्भ से सीधे पाताल लोक में चला जाता, या मृत बच्चे की तरह होता, या गर्भपात हो जाता। इसलिए, वह चाहता है कि पाठ के प्रकटीकरण में उसके पास जो कुछ है उसका अनुभव करने के बजाय वह स्वयं ऐसा करे। और अंत में, इस विलाप के अंतिम भाग में, वह अपने वर्तमान जीवन के दुख की ओर मुड़ता है, वह अब क्या अनुभव कर रहा है, और यह उसके लिए कितना कठिन है।

निःसंदेह, यह विलाप अय्यूब के लिए जैसा वह इसे देता है और हमारे लिए जैसे हम इसे सुनते हैं, आत्मा को पीड़ा देने वाला है। पाठक कभी-कभी इसका वास्तविक संबंध पा सकते हैं कि अय्यूब कैसा महसूस करता है कि उसका जीवन कितना भयानक हो गया है। अलंकारिक दृष्टिकोण से, यह शैली में बदलाव के माध्यम से प्रस्तावना और भाषणों के बीच संक्रमण का निर्माण करता है, कथा और प्रस्तावना से भाषणों में प्रत्यक्ष प्रवचन तक। यह धर्मशास्त्रीय जोर भी देता है क्योंकि यह इस बात पर विचार करता है कि ईश्वर क्या कर रहा है और दुनिया कैसी है। विलाप में, हम प्रस्तावना खंड में अपने उत्तरों में आत्मविश्वास से भरे अय्यूब से अब व्याकुल, प्रश्न करने वाले अय्यूब तक के विकास को देखते हैं।

इसलिए, अय्यूब अपने दुःख में आगे बढ़ रहा है और चीजों को अलग ढंग से व्यक्त कर रहा है। वह आश्वस्त है. भरोसा खत्म हो रहा है. उसे कोई उम्मीद नहीं है कि मृत्यु अनंत काल तक ले जाएगी जहां सब कुछ ठीक किया जा सकता है। इज़राइल में, बाइबिल काल में, उन्होंने अनंत काल की कोई आशा नहीं विकसित की थी, कोई इनाम और सज़ा नहीं थी। और अय्यूब एक गैर-इस्राएली होने के कारण और भी कम इच्छुक है। इसलिए, उसे कोई उम्मीद नहीं है कि मरने के बाद किसी तरह इस सबका कोई समाधान निकलेगा। वह मृत्यु की कामना करता है, समाधान के लिए नहीं बल्कि बचने के लिए। इस बिंदु पर, न तो जीवन और न ही मृत्यु, उसे कोई आशा प्रदान करती है, हालाँकि, उसके लिए, जीवन की तुलना में मृत्यु बेहतर होगी।

हम देखते हैं कि उन्होंने वह शुरू कर दिया है जो हम सभी की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि हम क्यों पूछते हैं। श्लोक 11, 12, 16, 20, 23, क्यों? क्यों? क्यों? यह वह शब्द है जो हर पीड़ित व्यक्ति की जुबान पर है। क्यों? और यही कारण है कि नौकरी की पुस्तक हमें कुछ मूल्यवान चीजें प्रदान करती है। इसलिए नहीं कि यह प्रश्न का उत्तर देता है, बल्कि इसलिए कि यह हमें यह एहसास दिलाने में मदद करता है कि यह गलत प्रश्न है।

साथ ही, अय्यूब का विलाप इस बात का संकेत नहीं देता कि वह वास्तव में मानता है कि उसे जो मिला है वह उसका हकदार है। वह उस तक नहीं आया है। वह यह कहने को तैयार नहीं है कि उसने यह सब करने लायक कुछ किया है। और इसी तरह, इस तथ्य के बावजूद कि उसने क्यों प्रश्न पूछना शुरू कर दिया है और उसका विश्वास बिगड़ रहा है, वह अभी भी अपनी ईमानदारी बनाए हुए है।

अय्यूब की सत्यनिष्ठा [6:10-8:00]

अब, अय्यूब द्वारा कायम रखी गई इस सत्यनिष्ठा को समझने की आवश्यकता है। सत्यनिष्ठा अध्याय एक और दो में उनके सभी सकारात्मक वर्णनकर्ताओं के समान नहीं है। उनकी सत्यनिष्ठा को विशेष रूप से उनके इस आग्रह के रूप में परिभाषित किया गया है कि उनकी धार्मिकता अपने आप पर कायम है। वह यह है कि वह केवल लाभ का पीछा नहीं कर रहा है। उसकी धार्मिकता धार्मिकता के लिए है, न कि इससे उसे क्या प्राप्त होता है। वह अखंडता है। यही एकमात्र चीज़ है जिसे उसे बनाए रखना है। हम यह पता लगाने जा रहे हैं कि अय्यूब कुछ बहुत ही अंधेरी जगहों पर जाता है कि वह ईश्वर के बारे में कैसे सोचता है। भगवान के खिलाफ उनके आरोप स्पष्ट और गलत हैं। तो, ऐसा नहीं है कि अय्यूब की प्रतिक्रिया किसी तरह से दोषरहित है। उसने जिस तरह से परमेश्वर को जवाब दिया है, उसके लिए परमेश्वर उस पर गलत कार्य करने का आरोप लगाने जा रहा है। कोई फर्क नहीं पड़ता कि। मेज पर जो प्रश्न है वह महत्वपूर्ण है: क्या अय्यूब की धार्मिकता, एक निःस्वार्थ धार्मिकता है, और उस स्थिति को बनाए रखना अय्यूब की ईमानदारी है। किताब को

आगे बढ़ाने के लिए उसे बस इतना ही करना है। भगवान की नीतियों के लिए, यह महत्वपूर्ण बिंदु है।

प्रथम संवाद चक्र का परिचय [8:00-8:20]

अब वे कौन से मुद्दे हैं जिनका सामना हमें बातचीत के पहले चक्र में करना पड़ता है ? यह हमें अध्याय 4 से 14 तक ले जाता है। यह पहला चक्र है। तो, एलीपज बोलता है. अय्यूब जवाब देता है. बिलदाद बोलता है. अय्यूब जवाब देता है. ज़ोफर बोलता है. अय्यूब पहले चक्र में प्रतिक्रिया देता है, अध्याय 4 से 14।

पहले संवाद में महत्वपूर्ण वक्तव्य: 4:6 [8:20-10:15]

इस चक्र में कुछ महत्वपूर्ण कथन हैं। वे पुस्तक के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो संदेश दिया जा रहा है उसके लिए महत्वपूर्ण हैं, और प्रसिद्ध हैं, लेकिन हमें यह सुनिश्चित करने के लिए ध्यान से देखना होगा कि हम उन्हें समझते हैं।

पहला अध्याय 4:6 में अध्याय चार, श्लोक छह में है, एलीपज बोल रहा है, और वह कहता है, "क्या तेरी धर्मपरायणता, तेरा भरोसा और तेरा निर्दोष चालचलन तेरी आशा न हो?" वह सवाल उठा रहा है कि अय्यूब को किस प्रकार प्रतिक्रिया देनी चाहिए। "क्या आपकी धर्मपरायणता आपका आत्मविश्वास होनी चाहिए और आपके निर्दोष तरीके आपकी आशा होनी चाहिए?" मैं इसे केवल समझ को थोड़ा विस्तारित करने के लिए प्रस्तुत करूंगा: "क्या आपकी स्व-घोषित धर्मपरायणता इस अतार्किक आत्मविश्वास का आधार नहीं है?" एलीपहाज़ का मानना है कि अय्यूब की धर्मपरायणता केवल स्व-घोषित है, और उसका विश्वास तर्कहीन और प्रमाणित नहीं है। वह सवाल पूछ रहा है: क्या आपकी एकमात्र आशा वास्तव में आपके तरीकों की कथित दोषहीनता में है? आपको मुझे और अधिक काम देना होगा; वह पर्याप्त नहीं है। तो, यह कमज़ोर नहीं है; यह पुस्तक अय्यूब की धर्मपरायणता या उसकी दोषहीनता को कम नहीं आंक रही है। एलीपज इस बात को कमज़ोर कर रहा है कि जिस तरह से अय्यूब उनके बारे में सोचता है वह पर्याप्त होगा या नहीं। यह जॉब की पुस्तक में बहुत कठिन हिब्रू का अनुवाद करने की कोशिश की कुछ जटिलताओं का एक उदाहरण मात्र है।

पहले संवाद में महत्वपूर्ण वक्तव्य: 4:17 [10:15-14:21]

इसके अलावा, एलीपज़ के भाषण में, हमें उसके रहस्यमय अनुभव का विवरण मिलता है। यह श्लोक 12 से 21 तक है, और मैं इसे नहीं पढ़ूँगा, लेकिन आप इस पर एक नज़र डाल सकते हैं। अब यह एक दर्शन में घटित होता है कि वह इस दर्शन में रिपोर्ट करता है; वह रहस्योद्घाटन का दावा कर रहा है। वह इस आध्यात्मिक अनुभव के पूरे परिदृश्य को इस बात पर प्रकाश डालने के लिए स्थापित करता है कि वह एक महान अंतर्दृष्टि, गहरे सत्य का रहस्योद्घाटन मानता है। और वह इसे अध्याय चार के श्लोक 17 में व्यक्त करता है। एनआईवी में इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है; बस एक आधार के रूप में, इस पर एक नज़र डालें। यह कहता है, "क्या एक नश्वर व्यक्ति ईश्वर से अधिक धर्मी हो सकता है? क्या एक शक्तिशाली व्यक्ति भी अपने निर्माता के प्रति अधिक पवित्र हो सकता है? अब एक पल के लिए इसके बारे में सोचें। "क्या एक नश्वर व्यक्ति ईश्वर से अधिक धर्मी हो सकता है?" यह किस प्रकार की महान अंतर्दृष्टि है वह? क्या हर कोई यह नहीं जानता? मेरा मतलब है, इस रहस्यमय अनुभव की लंबी व्यवस्था केवल कुछ ऐसा कहने के लिए क्यों है जिसे दुनिया में हर कोई जानता है? कि एक नश्वर व्यक्ति भगवान से अधिक धर्मी नहीं हो सकता। यह एक मूर्खतापूर्ण बात लगती है कहो। अब, शायद वह यह विचार व्यक्त करने की कोशिश कर रहा है कि अय्यूब सोचता है कि वह ईश्वर से अधिक धर्मी है। यह एक संभावना हो सकती है, लेकिन हमें इस पर थोड़ा गौर करना चाहिए, सुनिश्चित करें कि हम सही हैं रास्ता। श्लोक के दूसरे भाग में यह पूछना है, "क्या कोई अपने निर्माता से अधिक शुद्ध हो सकता है"। किसी इंसान की पवित्रता की तुलना ईश्वर से करना वास्तव में संभव नहीं है क्योंकि हिब्रू में "शुद्धता" *ताहर के रूप में अनुवादित इस शब्द का उपयोग कभी भी ईश्वर का वर्णन करने के लिए नहीं किया जाता है।* ईश्वर को शुद्ध या अशुद्ध नहीं कहा जा सकता। यह एक ऐसी श्रेणी है जो भगवान पर लागू नहीं होती है। और इसलिए, अगर ईश्वर को शुद्ध नहीं माना जा सकता तो वास्तव में यह नहीं कहा जा सकता कि आप ईश्वर से अधिक शुद्ध हो सकते हैं या नहीं। इसका तात्पर्य अस्वच्छ अवस्था से प्राप्त स्वच्छ अवस्था से है। चूँकि ईश्वर कभी भी अशुद्ध अवस्था में नहीं हो सकता, इसलिए, ईश्वर

अशुद्ध अवस्था से प्राप्त स्थिति, तहर भी नहीं हो सकता। भगवान अशुद्ध नहीं हो सकते. अतः उसे पाक साफ नहीं कहा जा सकता।

अलंकारिक रूप से। यदि हम पद्य के पारंपरिक प्रतिपादन का अनुसरण करें, तो ऐसा प्रतीत होता है कि एलीपज़ ने अपने मामले को ज़्यादा महत्व दिया है। यह बात स्पष्ट करने के लिए किसी रहस्यमय रहस्योद्घाटन की आवश्यकता नहीं होगी कि ईश्वर से अधिक धर्मी कोई नहीं है। और आप यह नहीं कह सकते कि कोई ईश्वर से शुद्ध या कम पवित्र है।

यहाँ मेरा वैकल्पिक वाचन है। "क्या कोई नश्वर व्यक्ति ईश्वर के दृष्टिकोण में धर्मी हो सकता है?" क्या आप परमेश्वर के परिप्रेक्ष्य में धार्मिकता प्राप्त कर सकते हैं? "क्या कोई मनुष्य अपने निर्माता के दृष्टिकोण में शुद्ध हो सकता है?" एलीपज़ यहाँ निरपेक्षता पर प्रश्न उठा रहा है। क्या हममें से कोई वास्तव में उस बिंदु तक पहुँच सकता है जहाँ हम ईश्वर के दृष्टिकोण में स्वच्छ या धर्मी हों?

अब उसका अनुसरण करते हुए, एलीपज़ उस चीज़ को प्रतिध्वनित कर रहा है जिसे हम प्राचीन निकट पूर्व से अच्छी तरह से जानते हैं - हर किसी में पाप की प्रवृत्ति होती है। और वास्तव में, निस्संदेह, हम इसे ईसाई शिक्षण में भी पा सकते हैं। लेकिन यहाँ, यह विचार नहीं है कि आप ईश्वर से अधिक धर्मी नहीं हो सकते।

अब, मेरे लिए उस रीडिंग को प्रदर्शित करना जो मैं प्रस्तुत करता हूँ, विस्तृत हिब्रू कार्य की आवश्यकता है, और मुझे यह मेरी टिप्पणी में मिला है जिसे मैंने प्रकाशित किया है यदि लोग इसे समझ सकें, तो वे उपचार का पूरा विवरण देख सकते हैं।

पहले संवाद में महत्वपूर्ण वक्तव्य: 7:17 [14:21-18:44]

एक और कथन जो हमें मिलता है वह कुछ प्रश्न लाता है आइए अध्याय सात के बारे में एक मिनट के लिए सोचें। हम अय्यूब के भाषण में हैं। अब, एलीपज़ को अय्यूब की प्रतिक्रिया। और अध्याय सात में, छंद 7 से 21 सबसे मार्मिक हैं जो अय्यूब ने पेश किए हैं। जब वह जीवन की क्षणभंगुरता के बारे में बात करते हैं तो वह हमें कुछ सभोपदेशक की याद दिलाते हैं।

तो, हम पढ़ते हैं, "याद रखें, हे भगवान, कि मेरा जीवन बस एक सांस है। मेरी आंखें फिर कभी खुशी नहीं देख पाएंगी।" वह उस बारे में बात करना जारी रखता है। और वह कहते हैं, "मैं चुप नहीं

रहूंगा." इसलिए, श्लोक 11 में, "मैं अपनी आत्मा की पीड़ा में बोलूंगा। मैं अपनी आत्मा की कड़वाहट में शिकायत करूंगा। क्या मैं समुद्री राक्षस हूँ?" क्या मैं दुश्मन हूँ? वह यही तो पूछ रहा है. "तुम्हें मुझ पर पहरा देना होगा। जब मैं सोचता था कि मेरा बिस्तर मुझे आराम देगा और मेरा सोफ़ा मेरी शिकायत को कम कर देगा, तब भी तुमने मुझे सपनों से डरा दिया ताकि मैं गला घोटना और मौत पसंद करूँ। मैं अपने जीवन से घृणा करता हूँ। मुझे अकेला रहने दो .मेरे दिनों का कोई मतलब नहीं है।"

तब बाइबल से परिचित पाठक श्लोक 17 तक पहुँचेंगे और एक बहुत ही रोचक, परिचित पंक्ति देखेंगे। "मानवजाति क्या है जो तुम उन्हें इतना बनाते हो?" धर्मग्रंथ का चौकस पाठक भजन 8 की पंक्ति को तुरंत पहचान लेगा, जहां यह बहुत सकारात्मक बात है। देखो तुमने क्या किया है. आपने हमें स्वर्गदूतों से थोड़ा ही नीचे बना दिया है। हम क्या हैं कि आपने हमें इतना बड़ा बना दिया है? लेकिन अय्यूब ने इसे उल्टा कर दिया। और वह कहता है, "आप हम पर इतना ध्यान क्यों देते हैं? पूरे सम्मान के साथ, कृपया मुझे अकेला छोड़ दें।"

तो, वह कहते हैं, मानव जाति क्या है कि आप उन्हें इतना बनाते हैं और उन पर इतना ध्यान देते हैं? और वह विस्तार से बताता चला जाता है। "आप हर सुबह उन्हें जांचते हैं, हर पल उनका परीक्षण करते हैं। क्या आप कृपया मुझसे नज़रें फेर लेंगे?" फिर, भजनहार से बहुत अलग, जो ईश्वर की दृष्टि को आमंत्रित करता है, जो ईश्वर को देखने और जांचने के लिए आमंत्रित करता है। अय्यूब के लिए, यह है, "कृपया दूसरी ओर देखें। मुझे अवकाश की आवश्यकता है। यदि मैंने पाप किया है," और निश्चित रूप से, अय्यूब यह सुझाव नहीं देता है कि उसने ऐसा किया है, लेकिन यदि ऐसा होता भी, "आपको इससे क्या? क्यों? क्या तुमने मुझे अपना लक्ष्य बना लिया है? मैं बोझ क्यों बन गया हूँ? इससे छुटकारा पाओ।"

तो, हम देख सकते हैं कि अय्यूब के भाषणों में यह सच है। वह वास्तव में दोस्तों को संबोधित करने के बजाय अपना ध्यान ईश्वर की ओर केंद्रित कर रहा है। यहां उन्होंने भगवान पर उनकी अपेक्षाओं के प्रति अत्यधिक चौकस और अवास्तविक होने का आरोप लगाया है। क्या इससे कोई घंटी बजेगी? अध्याय एक, श्लोक चार और पाँच याद रखें। परमेश्वर की अपेक्षाएँ क्या हैं? क्या ईश्वर अत्यधिक

ध्यानशील है? इसीलिए अय्यूब अपने बेटे-बेटियों के लिए यह सब अनुष्ठान करता है। और इसलिए यहाँ, यह सामने आ रहा है।

एक अराजक प्राणी के विपरीत, अय्यूब का दावा है कि वह व्यवस्था के लिए कोई खतरा नहीं है। वह निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं रखता। वह ईश्वर को "मनुष्यों का देखने वाला" कहता है। वह एक ऐसे शब्द का उपयोग करता है जिसका अक्सर सकारात्मक अर्थ होता है जो देखभाल और सुरक्षा का संकेत देता है। लेकिन फिर, वह इसे उल्टा कर देता है। अय्यूब अपने आप को पहले से ही मुक़दमे के दौर से गुजर रहा है, पहले से ही सज़ा भुगत रहा है। वह संघर्ष विराम के आदेश का अनुरोध करता है कि भगवान उसे अकेला छोड़ दें। उनका मानना है कि, किसी तरह मुक़दमा पहले ही हो चुका है और दोषी फैसला सुनाया जा चुका है।

पहले संवाद में महत्वपूर्ण वक्तव्य: 7:20 [18:44-19:31]

पद 20 में। यह कहने के बजाय, "यदि मैंने पाप किया है," मुझे नहीं लगता कि हमें इसे इस तरह पढ़ना चाहिए। नौकरी उस संभावना को टिकने ही नहीं दे रही है। मैं इसे पढ़ूँगा, "मैंने पाप किया है।" परन्तु उसका अभिप्राय केवल इतना ही है कि मैं किसी प्रकार आपके पक्ष से बाहर हो गया हूँ, इसलिए आपने मेरे विरुद्ध कार्य किया है। मैंने आपके साथ जो कुछ भी किया होगा, आपने जो कुछ भी किया है और जिसे आपने दोषारोपण योग्य माना है, उसे आप क्षमा क्यों नहीं करेंगे? आपने मुझ पर जो भी अपराध किया है, जिसका दंड आप मुझे दे रहे हैं, मुझे क्षमा करें। उस काल्पनिक क्षेत्र में अय्यूब की बातचीत इस बात से संबंधित है कि ईश्वर उसके साथ कैसा व्यवहार कर रहा है।

पहले संवाद में महत्वपूर्ण वक्तव्य: 13:15 [19:31-22:31]

एक और श्लोक. मैं देखना चाहता हूँ; इसे कुछ विस्तार से; यह अध्याय 13 में है। यह अय्यूब की पुस्तक का एक प्रसिद्ध पद है। और फिर, यह अय्यूब बोल रहा है। और पारंपरिक अनुवाद है "यद्यपि वह मुझे मार डालता है, मैं उस पर आशा रखूँगा।" जब हम देखते हैं कि अनुवादों और टिप्पणियों ने इसके साथ कैसा व्यवहार किया है, तो हमें अनुवाद में व्यापक विविधता दिखाई देती है। उनमें से एक में लिखा है, "देखो। वह मुझे मार डालेगा। मुझे कोई उम्मीद नहीं है।" बहुत खूब। यह "हालाँकि वह मुझे मार डालता है, फिर भी मैं उस पर आशा रखूँगा" से बहुत अलग है। यह एक

वैकल्पिक हिब्रू पढ़ने का प्रतिनिधित्व करता है। वह केटिव जिसमें "उसमें" के स्थान पर निषेध है। वे दोनों एक जैसे लगते हैं लो(उसे) और लो(नहीं)। और इसलिए, मैं "उससे" आशा करूँगा या "मुझे कोई आशा नहीं है।" फिर, यह पूरी चीज़ को पलट देता है।

एक अन्य टिप्पणी में लिखा है. "अगर वह मुझे मार डाले, तो मुझे कोई उम्मीद नहीं रहेगी।" "यदि तुम मुझे मार डालो," अन्य दो को याद रखें, "देखो, वह मुझे मार डालेगा" या "यद्यपि उसने मुझे मार डाला।" तो, आप देख सकते हैं कि हम उस हिब्रू कण के साथ काम कर रहे हैं और वास्तव में इसका क्या मतलब है। "अगर वह मुझे मार डालता, तो मुझे कोई उम्मीद नहीं होती," यह सुझाव देते हुए कि उसने अभी तक ऐसा नहीं किया है। तो, आशा का कारण अभी भी है।

यहां हम पूरा प्रश्न देख सकते हैं। क्या उसे आशा है, या नहीं? तीन अन्य टिप्पणीकार हैं जो पढ़ने पर सहमत हैं। "हाँ," "यदि," "देखो," या "यद्यपि" नहीं। "हाँ, हालाँकि वह मुझे मार डालता है। मैं चुपचाप इंतज़ार नहीं करूँगा।" आह, यह उस शब्द की एक अलग समझ है जिसका अनुवाद "आशा" है। वे हिब्रू में "आशा" और "प्रतीक्षा" बहुत करीब लगते हैं। और इसलिए, वे इसे अलग तरह से पढ़ रहे हैं। "मैं प्रतीक्षा नहीं करूँगा," अर्थात्, "मैं चुपचाप प्रतीक्षा नहीं करूँगा।"

ठीक है। मैं थोड़ा अलग तरीका अपनाऊँगा। मैं उसके पिछले हिस्से से सहमत होऊँगा, लेकिन मैं इसका अनुवाद करूँगा, "भले ही वह मुझे मार डाले। मैं चुपचाप इंतज़ार नहीं करूँगा।" मैं इसे अय्यूब द्वारा ईश्वर के विरुद्ध बहस करने के अपने इरादे को व्यक्त करने के रूप में देखता हूँ। एलीपज ने उस से कहा, तू जानता है, तू वहां नहीं जाना चाहता। तुम अंदर जाओ और भगवान से बहस करना शुरू करो। इससे कुछ भी अच्छा नहीं हो सकता. आप ऐसा नहीं करना चाहते. अय्यूब एक तरह से खुद को साहस से लैस कर रहा है और कह रहा है, "भले ही वह मुझे इसके लिए मार डाले, मैं यह करने जा रहा हूँ। मैं चुपचाप इंतज़ार नहीं करूँगा। मैं अपना दावा करने जा रहा हूँ।" तो इस तरह मैं इसे पढ़ूँगा। फिर, एक बहुत ही कठिन कविता, और इसमें क्या कहा गया है इसके बारे में विभिन्न टिप्पणीकारों और अनुवादकों के अलग-अलग विचार हैं।

प्रथम संवाद चक्र का सारांश [22:31-23:00]

आइए पहले चक्र में दिए गए तर्कों को संक्षेप में प्रस्तुत करें। जब हम पुस्तक की अलंकारिक रणनीति पर पहुंचते हैं, तो हम जो पूछना चाहते हैं वह यह है: प्रत्येक भाषण बातचीत में क्या योगदान देता है? फिर, हम यह मान रहे हैं कि ये यहाँ केवल पुष्पमय, काव्यात्मक अभिव्यक्तियों के लिए नहीं हैं। जैसे-जैसे किताब का मामला आगे बढ़ रहा है, वे कुछ हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं। तो, आइए प्रत्येक को संक्षेप में प्रस्तुत करें, और आप देख पाएंगे कि वे कैसे काम करते हैं।

एलीपज का भाषण और अय्यूब की प्रतिक्रिया [23:00-24:40]

तो, चक्र एक में एलीपज का भाषण: मैं इसे इस तरह संक्षेप में प्रस्तुत करूंगा। आपने कई लोगों को सलाह दी है जो उसी तरह की परिस्थितियों में हैं जैसे आप अभी हैं। आपको अपनी सलाह खुद लेनी चाहिए। अपनी धर्मपरायणता पर भरोसा रखें। प्रतिशोध सिद्धांत कायम रहेगा। यह दुष्ट ही हैं जो नष्ट हो जाते हैं फिर भी ईश्वर के दृष्टिकोण से, कोई भी नश्वर व्यक्ति धर्मी नहीं है। ईश्वर से अपील करें, उसके अनुशासन को छोड़कर। वह एलीपज का पहला भाषण है।

अय्यूब की प्रतिक्रिया को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। मेरे दुख की सीमा मेरे आक्रोश को उचित ठहराती है। काश वह मुझे मौत की सज़ा दे देता। तब मैं इस तसल्ली के साथ मर जाऊंगा कि कम से कम मैंने स्थिति का वास्तविक आकलन तो कर लिया। मैं बहुत असहाय महसूस करता हूं। मुझे यकीन नहीं है कि मैं जारी रख सकता हूं, और मेरे दोस्त कोई मदद नहीं कर रहे हैं। मुझे खुशी होगी अगर भगवान मुझे कुछ दिखाएंगे कि मैंने क्या गलत किया है। मेरे दुख भरे दिन जल्द ही खत्म हो जायेंगे। तो, मैं भी अपने मन की बात कह सकता हूं। हे भगवान, आपने मुझे इतना ध्यान क्यों दिया? कोई भी इस तरह की जांच बर्दाश्त नहीं कर सकता। इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, क्या आप कुछ सहनशीलता नहीं दिखा सकते? यह अय्यूब का पहला भाषण है जिसका सारांश सामान्य रूप से दिया गया है।

तब एलीपज की सलाह यह थी कि परमेश्वर से प्रार्थना करो और अपना अपराध स्वीकार करो।

अय्यूब का उत्तर: झूठी विनम्रता और मनगढ़ंत अपराधों के साथ ईश्वर से अपील करने के बजाय मुझे

दोषी मानना बंद करो; मैं प्रतिशोध की मांग के साथ उसका सामना करूंगा। और इस प्रकार, अय्यूब अपने रास्ते पर चल पड़ता है।

बिलदाद का भाषण और अय्यूब की प्रतिक्रिया [24:40-26:23]

चक्र एक में, बिलदाद के दूसरे भाषण को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है। आपकी यह कहने की हिम्मत कैसे हुई कि ईश्वर न्याय को विकृत कर देता है। याद रखें, बिलदाद युगों के ज्ञान का प्रवक्ता है। आपकी यह कहने की हिम्मत कैसे हुई कि ईश्वर न्याय को विकृत करता है? आपके बच्चों ने निःसंदेह पाप किया है। मेरा मतलब है, यह एक दिया हुआ है। यदि वे सभी इस तरह से मरे, तो निस्संदेह, उन्होंने पाप किया। तथ्यों का सामना करें, स्पष्ट होकर सामने आएं, फिर यह आपके लिए आसानी से हो जाएगा। पारंपरिक ज्ञान आपको वह सारी जानकारी देता है जिसकी आपको आवश्यकता है - प्रतिशोध सिद्धांत: दुष्ट नष्ट हो जाते हैं, लेकिन भगवान किसी धर्मी व्यक्ति को अस्वीकार नहीं करते हैं। वापस आओ, अय्यूब, अपना सामान वापस ले आओ।

बिल्डैड के प्रति अय्यूब की प्रतिक्रिया को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है। कोई भी कभी भी परमेश्वर के सामने अपनी धार्मिकता कैसे स्थापित कर सकता है? आप उससे बहस नहीं कर सकते और जीतने की उम्मीद नहीं कर सकते। उसे चुनौती देना सचमुच विनाशकारी होगा। वह इतना ताकतवर है कि उस पर काबू पाना संभव नहीं है। और वह हिसाब माँगने से परे है। मेरे पास जीने के लिए कुछ भी नहीं बचा है। तो, मैं इसे सीधे तौर पर भी कह सकता हूँ। वह बस नहीं है। निर्दोष और दुष्ट दोनों नष्ट हो जाते हैं। काश मेरी ओर से बोलने के लिए कोई वकील होता। मान लीजिए कि कोई केवल मेरी ओर से बोल सकता है। किसी का भी कुछ मतलब नहीं। मैं जीत नहीं सकता। काश भगवान मुझे मरने ही देते। यह अय्यूब की प्रतिक्रिया का सारांश है।

इसलिए बिलदाद की सलाह थी कि पारंपरिक दृष्टिकोण अपनाया जाए। प्रतिशोध सिद्धांत अपरिहार्य निष्कर्ष को गंभीरता से पहचानता है। अय्यूब का उत्तर: मैं जानता हूँ कि परंपराएं सत्य हैं, लेकिन मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूँ कि निष्कर्ष अपरिहार्य हैं। फिर भी मैं बिना किसी सहारे के हूँ।

ज़ोफ़र का भाषण और अय्यूब की प्रतिक्रिया [26:23-28:00]

हम ज़ोफ़र पहुँचते हैं। ज़ोफ़र, याद रखें वह काला और सफ़ेद है। कैसा अहंकार? क्या तुम्हें लगता है कि तुम इतने पवित्र हो? ठीक है, आपको अभी तक वह मिलना शुरू भी नहीं हुआ है जिसके आप वास्तव में हकदार हैं। आपकी समझ ईश्वर की तुलना में बहुत छोटी है। हार मान लेना। अपने पाप का पश्चाताप करें ताकि आपके लिए सब कुछ अच्छा हो सके। ज़ोफ़र चीज़ों को बहुत काले और सफ़ेद रूप में देखता है।

ज़ोफ़र को अय्यूब की प्रतिक्रिया। "तुम, मेरे दोस्तों, मेरा मज़ाक उड़ाते हो। काश तुम चुप रहकर अपनी बुद्धिमत्ता दिखाते। तुम कोई सांत्वना देने वाली सलाह नहीं देते और परमेश्वर की ओर से अभिमानपूर्वक और अज्ञानतापूर्वक बोलते हो। मैं कष्ट उठाता हूँ जबकि दुष्ट बच निकलते हैं। परमेश्वर ही सबका स्रोत है बुद्धि और शक्ति। अगर मैं अपना मामला उनके सामने ला पाता, तो मुझे लगता है कि मेरे पास एक पुख्ता बचाव होता। हालांकि, मैं अनुरोध करूँगा कि वह मामले का निपटारा होने तक पीड़ा और भय से दूर रहें। ऐसी रोक दी गई है, मैं अपने मामले पर ध्यान केंद्रित कर सकता हूँ। मुझे अपने गलत काम का सबूत दिखाओ। मेरे पास यही जीवन है। इसलिए, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, मैं इसे निपटाना चाहता हूँ।

तो, ज़ोफ़र की सलाह, संक्षेप में, अपना हृदय ईश्वर को समर्पित करो, पाप को दूर करो। अय्यूब का उत्तर. आप भगवान और मुझे दोनों को बुरी तरह से गलत तरीके से प्रस्तुत कर रहे हैं। मुझे आशा है कि मरने से पहले मैं अपनी सुनवाई प्राप्त कर सकूँगा और ईश्वर के साथ अपना रिश्ता बहाल कर सकूँगा।

प्रथम संवाद चक्र का समापन [28:00-28:50]

तो, निष्कर्षतः, यह चक्र एक का हमारा सारांश है। इस पहली श्रृंखला में, प्रत्येक मित्र का भाषण धार्मिकता के लाभों की एक गुलाबी तस्वीर चित्रित करने के साथ समाप्त होता है। इस श्रृंखला का मुख्य फोकस यह है कि मित्र अय्यूब से अपने लाभ वापस पाने के बारे में सोचने और उसे पूरा करने के लिए जो भी आवश्यक हो वह करने की अपील करते हैं। यह सब सामान के बारे में है। श्रृंखला तब समाप्त होती है जब अय्यूब यह स्पष्ट कर देता है कि उसे पुनर्स्थापना की कोई उम्मीद नहीं है

और वह उस इच्छा से प्रेरित नहीं है जिसे उसके दोस्तों ने सर्वोच्च मूल्य के रूप में रखा है। और वह हमें चक्र दो में ले जाता है।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 13, संवाद शृंखला 1, कार्य 3-14 है। [28:50]

नौकरी की किताब

सत्र 14: संवाद शृंखला 2, अय्यूब 15-21

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 14, संवाद शृंखला 2, कार्य 15-21 है।

परिचय [00:26-00:58]

जैसे ही हम संवाद अनुभाग में चक्र दो में आते हैं, फिर से, एलीपज, बिलदाद और सोफर प्रत्येक बोलेंगे, और अय्यूब उनमें से प्रत्येक को जवाब देगा। हम इस खंड में किसी भी विशिष्ट छंद को लक्षित नहीं करने जा रहे हैं। और इसलिए, मैं उनकी अलंकारिक रणनीति को खोलने में कुछ समय बिताऊंगा जैसा कि मैंने चक्र एक के साथ किया था। इसलिए, हम प्रत्येक भाषण का सारांश देंगे और फिर प्रत्येक आदान-प्रदान के लिए संक्षेप देंगे, और वह हमें यहां कवर करेगा।

चक्र 2: एलीपहाज़ और अय्यूब की प्रतिक्रिया [00:59-2:35]

तो, हम एलीपहाज़ से फिर से शुरू करते हैं, जो अब उनका दूसरा भाषण है। यह इस बारे में है कि यह कैसे चलता है। अय्यूब, तेरी झुंझलाहट अपमानजनक है। आप केवल अपने लिए एक गहरा गड्ढा खोद रहे हैं। आपको क्या लगता है कि आप बाकी सभी से इतने बेहतर हैं? जो परिस्थितियाँ आप पर आ पड़ी हैं, उन्हें छोड़कर अपनी परिस्थितियों का विरोध करना बंद करें। यह समस्त मानवता द्वारा साझा किये गये भ्रष्टाचार का परिणाम है। चूँकि दुष्ट लोगों को खदेड़ दिया जाता है, इसलिए तुम्हें इस बात पर विचार करना चाहिए कि तुम्हारे और उनके बीच कितनी समानता है। अय्यूब की प्रतिक्रिया: बात करना आसान है, एलीपहाज़, लेकिन अगर मैं आपकी जगह होता तो मुझे और अधिक प्रोत्साहन मिलता। इस बीच, भगवान, आप मुझ पर हमला क्यों कर रहे हैं? आपने मुझे शत्रुओं द्वारा सताया जाने के लिए छोड़ दिया है, और फिर आप दयापूर्वक अपने आप में शामिल हो गए हैं। यदि आप मेरे दुख का जवाब नहीं दे सकते, तो मुझे मेरे लिए खड़े होने के लिए किसी की जरूरत है। जहां तक मेरी बात है, मैं धार्मिकता के रास्ते पर बने रहने के लिए दृढ़ हूँ, हालांकि मुझे बस मौत का ही इंतजार है।

इसलिए, हम इस प्रतिक्रिया को संश्लेषित करेंगे, और इसे संक्षेप में कहें तो एलीपज़ की सलाह, ईश्वर दुष्टों के साथ कैसा व्यवहार करता है और वह आपके साथ कैसा व्यवहार कर रहा है, इसकी तुलना करके अपने अपराध को पहचानें। आपने धर्मपरायणता को निरस्त कर दिया है। अय्यूब का उत्तर: मुझे भगवान के हमलों से सुरक्षा की आवश्यकता है और मैं अपना मामला उठाने के लिए एक वकील को बुलाता हूँ। मुझे कुछ मदद की ज़रूरत है।

चक्र 2: बिलदाद और अय्यूब की प्रतिक्रिया [2:35-3:36]

यह हमें बिलदाद की बात की ओर ले जाता है। बिलदाद अब संक्षिप्त होता जा रहा है। दुष्टों के प्रति परमेश्वर का न्याय कठोर है, और जो लोग इसके अधीन हैं, जिनमें आप भी शामिल हैं, वैसे, अय्यूब, को ऐसे लोगों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है जो वास्तव में परमेश्वर को नहीं जानते हैं। अय्यूब उत्तर देता है, आपके आरोपों के बावजूद, मैंने कुछ नहीं किया है, फिर भी भगवान और उसके अकथनीय क्रोध ने मेरे जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है। मैं एक बहिष्कृत व्यक्ति हूँ जिसका सभी लोग तिरस्कार करते हैं। मुझे विश्वास है कि कोई आएगा और मदद करेगा और जब लगेगा कि सब कुछ खत्म हो गया है, तो मैं निर्दोष साबित हो जाऊँगा। आप, कथित मित्र, मुझसे अधिक खतरे में हैं।

तो बिलदाद की सामान्य सलाह, दिखावा छोड़ दो; दुष्ट लोग नष्ट हो जाते हैं। आप उनमें से हैं। आप भगवान को नहीं जानते. अय्यूब का उत्तर, यह ईश्वर है जिसने मेरा जीवन बिगाड़ा है, मैंने नहीं। एक रक्षक उठेगा और मुझे तुम्हारे आक्षेपों से बचाएगा।

चक्र 2: ज़ोफ़र और अय्यूब की प्रतिक्रिया [3:36-4:58]

फिर हम ज़ोफ़र की ओर बढ़ते हैं। ज़ोफ़र कहते हैं, बेशक, हमेशा की तरह तुम मुझे ठेस पहुँचाते हो। आप जानते हैं कि नियम कैसे काम करते हैं; तुम्हारा स्वधर्म तुम्हें धोखा देता है, क्योंकि सब जानते हैं कि ऐसा घमण्ड दुष्टों का, हे सोपर का, लक्षण होता है।

अय्यूब की प्रतिक्रिया: मुझे एहसास हुआ कि मैं भगवान के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करके बहुत जोखिम उठा रहा हूँ। ध्यान दें कि वह भगवान के खिलाफ कानूनी कार्रवाई का दबाव डालकर ज़ोफ़र को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर रहा है। तुम्हें एहसास है कि कितने दुष्ट लोग परमेश्वर के

विरुद्ध अहंकार के बावजूद सफल होते हैं। इससे मुझे लगता है कि वह इस बारे में कुछ नहीं करता है। ऐसी दुनिया में, ईश्वर को जवाबदेह ठहराने की कोशिश करना एक जटिल और डरावनी बात है। यदि ईश्वर दुष्टों को लगातार दंड नहीं देता है, तो क्या हम यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि वह धर्मियों की लगातार रक्षा और समृद्धि नहीं करता है? मैं आश्चर्यचकित हूँ। यह वास्तव में जॉब प्रतिशोध सिद्धांत को नकारने के सबसे करीब है। मुझे आश्चर्य है, क्या ऐसा नहीं हो सकता? तो, ज़ोफर के आकलन में, आपका पाप आपका गौरव है; परमेश्वर ने निर्णय कर दिया है कि कौन दुष्ट है। बहुत हो गया, अब कोई बातचीत नहीं। अय्यूब का उत्तर, सिस्टम खराब हो गया है।

चक्र 2 का सारांश [4:58-5:54]

तो, चक्र दो का हमारा सारांश: समग्र रूप से दूसरा चक्र, प्रतिशोध सिद्धांत के आधार पर केंद्रित है कि भगवान दुष्टों का न्याय करता है। संबंधित निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि जो लोग स्पष्ट रूप से न्याय के अधीन हैं वे वास्तव में दुष्ट होंगे। अय्यूब का अंतिम भाषण प्रतिशोध सिद्धांत को अस्वीकार करने के पहले जैसा ही है। उसके दोस्तों ने अय्यूब पर अपना विश्वास खो दिया है, और अय्यूब का ईश्वर के प्रति दृष्टिकोण लगातार बिगड़ता जा रहा है, हालाँकि वह अपनी धार्मिकता पर अटल रूप से जोर देता है। यह अय्यूब का अपने कोने में अपना किला बनाने और ईश्वर से प्रश्न करने के इच्छुक होने का वह हिस्सा है। कानूनी समाधान की उसकी इच्छा बढ़ने पर वह दोस्तों द्वारा प्रस्तावित स्वीकारोक्ति और तुष्टीकरण प्रस्तावों को अस्वीकार कर देता है।

पुष्टि (नौकरी) बनाम बहाली (मित्र) [5:54-7:34]

अय्यूब बहाली के बजाय प्रतिशोध पर जोर देता रहता है। देखिए, धार्मिकता और सामान के बीच यही अंतर है। प्रमाण यह है: आप धर्मी हैं। पुनरुद्धार का अर्थ है: मुझे मेरा सामान वापस दे दो। मित्र पुनर्स्थापना की ओर जोर दे रहे हैं। अय्यूब दोषसिद्धि के लिए दबाव डाल रहा है। यह पुस्तक में वास्तव में एक महत्वपूर्ण अंतर है। याद रखें, यही वह चीज़ है जो अय्यूब की सत्यनिष्ठा को परिभाषित करती है। इसलिए, अय्यूब पुनर्स्थापना के बजाय प्रतिशोध पर जोर देता है।

उनके मित्र प्रतिशोध को एक अवास्तविक और व्यर्थ अपेक्षा मानते हैं। उनके विचार में, अय्यूब को दुष्टों के साथ पहचान बनाने की आवश्यकता है क्योंकि उसके अनुभव निर्विवाद रूप से उसे उसी श्रेणी में रखते हैं। इसे स्वीकार भी कर सकते हैं, अय्यूब; यह वह समूह है जिसमें आप हैं।

तो, हम पाते हैं कि इस चक्र के बाद, चीजें बेहतर नहीं हो रही हैं। अय्यूब को उसके दोस्तों द्वारा तेजी से दुष्टों के बीच रखा जा रहा है। और फिर भी वह परमेश्वर के विरुद्ध अपना मामला आगे बढ़ाता रहता है।

अब अगले खंड में, हम प्रसिद्ध छंदों के छोटे खंडों में से एक पर ध्यान देने जा रहे हैं जो चक्र दो में हैं। और इसलिए, हम इससे विशेष रूप से निपटेंगे और इसे और चक्र दो में इसकी भूमिका को समझने की कोशिश करेंगे, जिसे हमने अभी संक्षेप में प्रस्तुत किया है।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 14, संवाद शृंखला 2, कार्य 15 - 21 है। [7:34]

नौकरी की किताब

सत्र 15: अय्यूब 19:25--मैं जानता हूँ कि मेरा मुक्तिदाता जीवित है

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 15, नौकरी 19.25 है

परिचय: नौकरी 19.25 [00:23-2:02]

अध्याय 19 के मध्य में, अय्यूब के भाषण में, बिलदाद का जवाब देते हुए अय्यूब की पुस्तक में सबसे परिचित छंदों में से एक आता है। जैसा कि एनआईवी में अनुवादित है, यह कहता है, "मुझे पता है कि मेरा उद्धारकर्ता जीवित है और अंत में, वह पृथ्वी पर खड़ा होगा। और मेरी त्वचा नष्ट हो जाने के बाद भी, मेरे शरीर में, मैं भगवान को देखूंगा; मैं स्वयं देखूंगा उसे अपनी आंखों से देखो--मैं, किसी और को नहीं। मेरा दिल मेरे भीतर कितना तड़प रहा है।" तो, यहाँ क्या हो रहा है? और, निःसंदेह, ये छंद हैंडेल के मसीहा और उस अद्भुत गीत, "आई नो माई रिडीमर लाइव्स" के कारण बहुत परिचित हैं। तो, हमें इस श्लोक की व्याख्या कैसे करनी चाहिए? खैर, चलिए इसके माध्यम से काम करते हैं।

सबसे पहले, इसे अय्यूब के कई संदर्भों के संबंध में समझने की आवश्यकता है जो पहले ही सामने आ चुके हैं जहां वह अपने कानूनी मामले से संबंधित एक वकील को संदर्भित करता है। वह किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश कर रहा है जो ईश्वर के समक्ष उसका प्रतिनिधित्व कर सके, कोई ऐसा व्यक्ति जो उसका मामला उठाए, उसकी भूमिका निभाए और उसकी वकालत करे। यह एक और शब्द है जो यह सुझाव देता है। ऐसे कई शब्द हैं जिनका उपयोग अय्यूब इस स्थिति को संदर्भित करने के लिए करता है। और, निःसंदेह, यह उनमें से सिर्फ एक है। पुस्तक में कई अन्य भी हैं। वास्तव में, वे सभी किसी ऐसे व्यक्ति की एक ही तरह की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो अय्यूब की भूमिका निभाएगा।

अधिवक्ता = अय्यूब के रौने का मानवीकरण देखें [2:02-2:44]

अब, हमें यह प्रश्न पूछना होगा कि अय्यूब किस प्रकार के वकील की तलाश करता है, और वह उस भूमिका को भरने की अपेक्षा किससे करता है? उन्हें यह वकालत कहां से मिलने की उम्मीद है?

डीजे क्लाइन की टिप्पणी, एक उत्कृष्ट टिप्पणी, वकील को अवैयक्तिक रूप से अय्यूब की बेगुनाही की पुकार के मूर्त रूप के रूप में समझने की कोशिश करती है। वह सोचता है कि वह रोना अपने आप में खड़ा रहेगा, उस आवाज़ के बिना जिसने उसे आवाज़ दी थी, और जब वह चला जाएगा तो वही उसका वकील होगा।

वकील [गोयल] = ईश्वर या मानव सापेक्ष दृष्टिकोण [2:44-3:49]

एक दूसरा दृष्टिकोण, और एक अधिक पारंपरिक दृष्टिकोण, एक बहुत ही सामान्य दृष्टिकोण, यह है कि ईश्वर वकील है, लेकिन निस्संदेह, यह काफी समस्याग्रस्त है। मध्यस्थ किसी भी पक्ष में से एक नहीं हो सकता, विशेषकर अन्याय का आरोपी। जब उस पर ही आरोप लगाया जा रहा हो तो उसके लिए अपने खिलाफ वकील बनना कोई मायने नहीं रखता।

दूसरों ने सुझाव दिया है कि वकील की भूमिका एक मानवीय रिश्तेदार द्वारा निभाई जाएगी।

"उद्धारक" के रूप में अनुवादित हिब्रू शब्द *गोयल* है, और हिब्रू समाज के कुलों के भीतर *गोयल का एक विशेष कानूनी कार्य था*। वे ही थे जो परिवार के अधिकारों के लिए खड़े हुए थे। तो, यह विचार कि यह एक मानव रिश्तेदार होगा, उस शब्द का कुछ अर्थ देगा जिसका उपयोग किया जा रहा है, लेकिन हमें एक समस्या है। उसके सभी रिश्तेदारों ने उसे छोड़ दिया है। इसलिए, यह सोचना बहुत मुश्किल है कि वह उन रैंकों से किसी वकील की उम्मीद करेगा।

वकील [गोयल] = एलीहू दृश्य [3:49-4:14]

जब हम बाद में एलीहू के भाषण पर पहुंचते हैं, तो एलीहू खुद को वकील के रूप में पेश करता है। जैसा कि हम सीखेंगे, उसे ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिसके पास खुद के बारे में उच्च राय है, लेकिन वह खुद को प्रोजेक्ट करता है, लेकिन उसके दिमाग में अय्यूब की तुलना में एक अलग तरह का परिणाम होता है। एलीहू पुष्टि को उस परिणाम के अंत के रूप में नहीं देखता है। तो, यह उस प्रकार का *लक्ष्य नहीं है* जिसकी अय्यूब तलाश कर रहा है।

अधिवक्ता [गोयल] = दैवीय परिषद के सदस्य [4:14-6:49]

मेरे विचार में, सबसे संभावित विकल्प यह है कि अय्यूब दैवीय परिषद की सदस्यता से एक वकील की तलाश कर रहा है। वह किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश कर रहा है जो खड़ा हो और स्वर्गीय क्षेत्र में अपना हिस्सा ले सके जहां निर्णय लिए जा रहे हैं। यह एलीहू द्वारा अय्यूब 33, छंद 23 और 24 में संदर्भित एक विकल्प है। यह एक ऐसा विकल्प भी है जिसे एलीपज ने 5:1 में और 22:2 और 3 में जल्दी ही खारिज कर दिया था, जहां एलीपज ने मूल रूप से कहा था, "गिनती मत करो उस पर। यह आपके लिए कारगर नहीं होगा।" और इससे पता चलता है कि यह एक सैद्धांतिक संभावना होगी।

22:2 और 3 के साथ, मेरे पास उसका पुनः अनुवाद है। फिर से, कुछ बहुत ही कठिन छंद, और मैं इसका अनुवाद करूंगा; फिर मैं यहां इसका बचाव नहीं कर सकता; आप इसे मेरी टिप्पणी में पाएंगे। "क्या एक बुद्धिमान मध्यस्थ ईश्वर की ओर से सेवा करने वाले मनुष्य के लिए कोई अच्छा काम कर सकता है? क्या ऐसा मध्यस्थ किसी मनुष्य को कोई लाभ पहुंचा सकता है? क्या ईश्वर अनुकूल प्रतिक्रिया देगा? जब आप स्वयं को उचित ठहराते हैं, तो क्या जब आप पूरा हिसाब देंगे तो कोई लाभ होगा आपके तरीके।" यह एलीपज का मामला है "वास्तव में यह आपको कहीं नहीं ले जाएगा।" यह वास्तव में है, और आप जानते हैं, उसे यहाँ एक मुद्दा मिल गया है। ईश्वर को गलत साबित करना प्रतिकूल है। आप जानते हैं, अंत में यह कुछ ऐसा है जो उस पूरे विकल्प के बारे में असंतोषजनक होगा।

तब हम पाते हैं कि अय्यूब बहुत गहराई से चाहता है कि कोई वकील या मध्यस्थ उसकी सहायता के लिए आए। यह बल्कि विडम्बना है कि वह स्वर्ग के उस दृश्य के बारे में नहीं जानता जब यह वास्तव में स्वर्गीय अदालत का एक सदस्य था जो भगवान के सामने आया था जिसने इस पूरी प्रक्रिया को शुरू किया था। एक वकील पहले ही शामिल हो चुका है, चैलेंजर, लेकिन वह भगवान की नीतियों को चुनौती दे रहा था, और इसने अय्यूब को इस समस्या में डाल दिया। नौकरी से दूसरी नौकरी मिलने की संभावना नहीं है। अगर जीत भी पाया तो जीत नहीं सका. यदि किसी संयोग से वह जीत भी गया, तो परिणाम विनाशकारी होगा क्योंकि यदि अय्यूब ईश्वर के बारे में सही है और एक मध्यस्थ की मदद से, वह ईश्वर को गलत स्वीकार करने के लिए मजबूर करता है, तो ईश्वर पूजा के योग्य नहीं

रह जाता है। यदि अय्यूब इस रणनीति का उपयोग करता है और जीतता है, तो भगवान हार जाता है।

मुक्तिदाता [गोयल] यीशु नहीं है [6:49-8:01]

तो, अय्यूब 19.25 से 27 में हमारे पास क्या है? बहुत से लोगों ने "उद्धारक" शब्द सुना है। और विशेषकर जब वे इसे कुछ अनुवादों में बड़े अक्षरों में देखते हैं, तो वे मान लेते हैं कि मुक्तिदाता यीशु हैं। क्योंकि, आखिरकार, हम यीशु को हमारे मुक्तिदाता के रूप में जानते हैं। हिब्रू में बड़े अक्षर नहीं हैं। तो, पूंजीकरण व्याख्या है। और हैंडेल का मसीहा, जितना सुंदर संगीतमय काम है, व्याख्या के लिए हमारा मार्गदर्शक नहीं है।

क्या अय्यूब यीशु जैसे किसी व्यक्ति की आवश्यकता व्यक्त करता है? क्या वह उस तरह का वकील चाहता है? नए नियम का कोई भी लेखक अध्याय 19 में यीशु और अय्यूब के बीच संबंध नहीं बताता है। इसलिए, हमें वास्तव में अय्यूब के संदर्भ में ही काम करने की आवश्यकता है। नए नियम का कोई भी अनुच्छेद या लेखक हमें विस्तृत पूरक व्याख्या नहीं देगा।

गोयल की भूमिका क्षमा नहीं बल्कि प्रतिशोध है [वकील/उद्धारक] [8:01-10:34]

एक *गोयल*, फिर से, इस शब्द का अनुवाद मुक्तिदाता है, एक *गोयल* वह है जो दूसरे की ओर से कानूनी स्थिति में प्रवेश करता है। *गोयल* यही करता है। यदि कोई गलती शामिल है, तो *गोयल* उस व्यक्ति द्वारा किए गए गलत को सही करने के लिए अपनी ओर से शामिल होने के बजाय उस व्यक्ति के साथ किए गए गलत पर अधिकार करता है। एक *गोयल* किसी व्यक्ति के साथ हुए गलत को सही करने का प्रयास कर रहा है। निःसंदेह, यही स्थिति अय्यूब की है। उसे ऐसा लगता है जैसे उसके साथ गलत हुआ है।

कोई भी *व्यक्ति* किसी व्यक्ति द्वारा की गई गलती को सही करने के लिए काम नहीं करता है। यीशु ने यही किया, लेकिन वास्तव में वह वह भूमिका नहीं है जो हम पाते हैं। अय्यूब यहां एक वकील, एक *गोयल* और मुक्तिदाता चाहता है, जो प्रदर्शित करेगा कि वह निर्दोष है। वह अपने द्वारा किए गए अपराधों से बचाने के लिए किसी की तलाश नहीं कर रहा है। वह इस बात से सहमत है कि

उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया है जो उसे मिले व्यवहार के लायक हो। वह अपराधों से बचाने के लिए किसी की तलाश नहीं कर रहा है। यदि वह अपराध स्वीकार कर लेता है, तो खेल हार जाता है। वह यह रिकार्ड करना चाहता है कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया जिससे उसे कष्ट सहना पड़े; यह मुक्तिदाता की भूमिका नहीं है जो यीशु निभाते हैं। वास्तव में, यह विपरीत है। अय्यूब आश्चर्य है कि उसका *गोयल* जीवित है। "मुझे पता है कि मेरा *गोयल* जीवित है।"

यह यीशु के पुनरुत्थान के बारे में कुछ नहीं है। वह अभी अय्यूब के लिए जीता है। अय्यूब को इसी बात का यकीन है। और वह *गोयल* स्टैंड लेगा। इस क्रिया का प्रयोग साहित्यिक अर्थ में किसी की गवाही देने के लिए किया जाता है। वह मेरी ओर से गवाही देगा। उसे उम्मीद है कि *गोयल* उसके गोबर के ढेर पर पहुंचेगा। यह वह धूल है जिसका यहाँ उल्लेख है। इसलिए उन्हें उम्मीद है कि वकील यहां आएंगे।

फिर भी मेरे शरीर में [10:34-12:27]

तो, इस विचार की तीन व्याख्याएँ कि "मेरी त्वचा नष्ट हो जाने के बाद भी मैं अपने शरीर में ईश्वर को देखूँगा।" कुछ लोग सोचते हैं कि अय्यूब पुनरुत्थान की आशा करता है। पुराने नियम में कहीं भी ऐसा कुछ नहीं है जो इस प्रकार की अपेक्षा का समर्थन करता हो। कुछ लोग सोचते हैं कि अय्यूब मरणोपरांत पुष्टि की अपेक्षा करता है। मेरे जाने के बाद भी, किसी भी तरह, मुझे दोषमुक्त किया जाएगा। अन्य लोग सोचते हैं कि अय्यूब को अंतिम समय में राहत मिलने की उम्मीद है। मैं अपनी व्याख्या में इसी दिशा में जाता हूँ। जब वह "मेरी त्वचा नष्ट हो जाने के बाद" के बारे में बात करता है, तो मुझे लगता है कि वह अपनी त्वचा के उधड़ने की बात कर रहा है, जैसा कि वह बर्तन के टुकड़े से अपनी त्वचा को खुरचने के लिए करता है।

इसलिए, यह सब खत्म हो जाने के बाद भी, अगर मैं यहां बैठूँ, अपने आप को सहलाता रहूँ, जब तक कि "मेरे शरीर में" सब कुछ खत्म न हो जाए, मैं भगवान को देखूँगा। इसका मतलब है कि मैं परमेश्वर के अनुग्रह में पुनः स्थापित हो जाऊँगा। ईश्वर को देखने का अर्थ है उसके अनुग्रह को पुनः प्राप्त करना। हालाँकि उसकी त्वचा चली गई है, यह अतिशयोक्ति है; वह इसे कुरेद रहा है, वह देह में परमेश्वर की पुनर्स्थापना देखेगा। मरने से पहले त्वचा/मांस को बहुत अच्छे से तैयार किया गया।

अय्यूब को स्वर्ग की कोई आशा नहीं है। ईश्वर को देखने का तात्पर्य अनुग्रह पुनः प्राप्त होने से है और वह अब अजनबी, बाहरी व्यक्ति, अनुग्रह से बाहर नहीं रहेगा।

सारांश व्याख्या [12:27-13:08]

तो, मैं इसे इस तरह से समझाऊंगा। मेरा दृढ़ विश्वास है कि कोई है, शायद दैवीय परिषद से, लेकिन अनिर्दिष्ट, कोई है जो आएगा और इस सब के अंत में यहीं मेरे गोबर के ढेर पर मेरी ओर से गवाही देगा। मेरी छिलती त्वचा के बावजूद, मैं उम्मीद करता हूँ कि मेरे शरीर में भगवान के सामने आने के लिए काफी कुछ बचा हुआ है। मैं उसके अनुग्रह में पुनः स्थापित हो जाऊँगा और अब मेरे साथ अजनबी जैसा व्यवहार नहीं किया जाएगा। यह मेरी गहरी इच्छा है; वैसे समृद्धि का इससे कोई लेना-देना नहीं है।

अय्यूब की पुष्टि: प्रतिशोध, क्षमा नहीं [13:08-14:03]

यह अय्यूब की ओर से एक महत्वपूर्ण पुष्टि है। जब हम मुक्तिदाता को यीशु बनाने का प्रयास करते हैं तो हम इसे पूरी तरह से चूक जाते हैं। यीशु हमारा मुक्तिदाता है, लेकिन वह उस तरह का मुक्तिदाता नहीं है जिसे अय्यूब यहां तलाश रहा है। इसलिए, अय्यूब किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में नहीं है जो उसके अपराधों की सज़ा उठाए और उसे सही ठहराए। वह औचित्य की नहीं, बल्कि पुष्टि की तलाश में है। वह नहीं सोचता कि वह किसी ऐसी सजा का हकदार है जो कोई और उन्हें दे। दृढ़तापूर्वक पुष्टि कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो यीशु प्रदान करता है। अय्यूब किसी ऐसे व्यक्ति से ऐसी भूमिका निभाने की उम्मीद कर रहा है जो यीशु द्वारा निभाई गई भूमिका के बिल्कुल विपरीत हो।

यीशु अय्यूब का गोयल नहीं है [14:03-14:58]

अय्यूब में यीशु को गोयल के रूप में देखना पुस्तक की व्याख्या में एक विकृत कारक है और अय्यूब की आशा और इच्छा के विरुद्ध है। यीशु अय्यूब की पुस्तक में प्रस्तुत समस्याओं का उत्तर नहीं है, हालाँकि वह पाप और दुनिया की टूटन की बड़ी समस्या का उत्तर है। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान हमारे पापों के लिए मध्यस्थता करते हैं लेकिन इस बात का उत्तर नहीं देते हैं कि दुनिया में पीड़ा क्यों है या जीवन में गलतियाँ होने पर हमें ईश्वर के बारे में कैसे सोचना चाहिए। अय्यूब की

पुस्तक यही करती है, और हमें पुस्तक के साथ इस तरह व्यवहार करना होगा कि हम उसके पन्नों में मौजूद संदेश को समझ सकें।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 15 है। कार्य 19.25।

[14:58]

नौकरी की किताब

सत्र 16: संवाद चक्र 3, कार्य 22-27

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 16, संवाद चक्र 3, कार्य 22-27 है।

संवाद चक्र 3 का परिचय [00:26-00:46]

अब हम संवादों के चक्र 3 में जाने के लिए तैयार हैं। चक्र 3 बहुत संक्षिप्त है क्योंकि अधिकांश तर्क खत्म होते जा रहे हैं। इस चक्र में, ज़ोफ़र बिल्कुल भी नहीं बोलता है, और बिलदाद का भाषण बहुत छोटा होता है। इसलिए, हमारे पास संवाद में ही कम सामग्री है।

कठिन श्लोक: अय्यूब 22:2-3 [00:46-6:32]

हालाँकि, हमारे पास निपटने के लिए कुछ बहुत ही कठिन छंद हैं और इसलिए हम पहले तकनीकी चीजों पर काम करेंगे और सारांश पर आगे बढ़ने से पहले उन्हें हल करने का प्रयास करेंगे। पहला अध्याय 22, श्लोक 2 और 3 में है। यहां हम एलीपज के इस अंतिम भाषण की शुरुआत में हैं।

एनआईवी अनुवाद करता है, "क्या कोई व्यक्ति ईश्वर के लिए लाभकारी हो सकता है? क्या एक बुद्धिमान व्यक्ति भी उसे लाभ पहुंचा सकता है? यदि आप धर्मी होंगे तो इससे सर्वशक्तिमान को क्या खुशी होगी? यदि आपके तरीके निर्दोष होंगे तो उसे क्या लाभ होगा?"

मैं विभिन्न अनुवादों और टिप्पणीकारों को देखूंगा, जो अनुवाद में व्यापक अंतर दिखाते हैं। तो, कुछ उदाहरण, नॉर्मन हाबेल कहते हैं, "क्या एक नायक एल को खतरे में डाल सकता है? या एक ऋषि, प्राचीन को खतरे में डाल सकता है? यदि आप धर्मी हैं तो क्या यह शादाई का उपकार है, या यदि आप अपने तरीकों को सही करते हैं तो क्या यह उसका लाभ है? हार्टले अनुवाद करते हैं, "क्या किसी व्यक्ति से ईश्वर को लाभ हो सकता है कि एक बुद्धिमान व्यक्ति उसके साथ सद्भाव में रहे? शादाई के लिए यह कौन सी संपत्ति है कि आप निर्दोष हैं या इससे आपको क्या फायदा है कि आप दावा करते हैं कि आपके तरीके निर्दोष हैं? क्लाइन का अनुवाद। "क्या कोई इंसान भगवान के लिए

लाभदायक हो सकता है? क्या एक ऋषि भी उसे लाभ पहुंचा सकता है? यदि आप धर्मी हैं तो क्या यह सर्वशक्तिमान के लिए संपत्ति है? यदि आपका आचरण निर्दोष है तो क्या उसे लाभ होगा?" आप देख सकते हैं कि इनके बीच व्यापक भिन्नता है।

जॉब की पुस्तक में इसी तरह के वाक्यविन्यास के कुछ अन्य उदाहरणों के आधार पर। इन छंदों में बहुत जटिल वाक्य-विन्यास है। और अन्य छंदों के वाक्यविन्यास के आधार पर जो बिल्कुल उसी तरह से शुरू होते हैं और यह संरचना को उसी तरह से स्थापित करता है।

मुझे एक अलग सुझाव देना है। तीन पद जहां एक ही संरचना होती है: अय्यूब 13:7, अय्यूब 21:22, और यह अय्यूब 22:2, मैं इसे प्रस्तुत करूंगा: "क्या एक बुद्धिमान मध्यस्थ परमेश्वर की ओर से सेवा करने वाले मनुष्य के लिए कोई अच्छा काम कर सकता है? " वह परमेश्वर की ओर से सेवा करने वाला एक बुद्धिमान मध्यस्थ है। "क्या ऐसा मध्यस्थ किसी मनुष्य को कोई लाभ पहुंचा सकता है? जब आप अपने आप को सही ठहराएंगे तो क्या ईश्वर अनुकूल प्रतिक्रिया देगा? क्या जब आप अपने तरीकों का पूरा विवरण देंगे तो लाभ होगा?" तब आप देख सकते हैं कि यह थोड़ा अलग है। अय्यूब 34:9 से पता चलता है कि शब्द " *गेवर*", जिसे इनमें से अधिकांश का अनुवाद "आदमी" के रूप में किया गया है, हालांकि हाबेल ने इसका अनुवाद "हीरो" के रूप में किया है, अय्यूब 34:9 से पता चलता है कि यह विषय के बजाय वस्तु होनी चाहिए, और यह वास्तव में है मेरे प्रतिपादन और दूसरों के बीच मुख्य अंतरों में से एक। मैंने पहले वाक्य के विषय के रूप में "बुद्धिमान मध्यस्थ" रखा, हिब्रू शब्द *मास्किल* का अनुवाद, जो हिब्रू पाठ और अधिकांश अनुवादों दोनों में दूसरी पंक्ति में होता है। लेकिन फिर, ये अन्य छंद जिन्हें मैंने पहली पंक्ति के विषय के रूप में भी लागू करने का कारण दिखाने के लिए इंगित किया था। मैंने *सकान क्रिया का अनुवाद* "कोई भी अच्छा करो" किया है। "क्या इससे कोई फायदा हो सकता है?" और मैंने यह नहीं कहा कि ईश्वर कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष वस्तु है, जैसे कि ईश्वर के लिए लाभ। मैंने उसे व्याकरणिक रूप से उस कार्रवाई से एक कदम आगे हटा दिया है जो "भगवान की ओर से" है। और फिर, मेरे द्वारा उल्लिखित अन्य छंदों के आधार पर ऐसा करने का कारण है। अन्य दो घटनाओं पर आधारित निर्णय हमें इस कविता को उस

अनुरूप प्रस्तुत करने में मदद करता है जिस तरह हम नौकरी की पुस्तक में अन्य स्थानों पर वाक्यविन्यास स्थापित पाते हैं।

अन्य अनुवादों के विपरीत, जिन्होंने श्लोक 3 में पहली पंक्ति में क्रिया को "धर्मी बनो" या "निर्दोष बनो" के रूप में प्रस्तुत किया है, मैंने इसे अय्यूब 40 श्लोक 8 के साक्ष्य पर "अपने आप को सही ठहराने" का अनुवाद किया है, जहां अय्यूब था भगवान द्वारा खुद को सही ठहराने का आरोप लगाया गया। सदक *क्रिया* का कल रूप इसके अलावा अय्यूब की पुस्तक में पुष्टि के लिए कई बार उपयोग किया गया है। उदाहरण के लिए, 11.2 और 13.8. अंत में, 22.3 में अंतिम क्रिया, *तमम् की जड़ों का हिफिल रूप* काफी चुनौतीपूर्ण है। ऊपर दिए गए अनुवाद इसे भिन्न-भिन्न प्रकार से एक विशेषण के रूप में मानते हैं जिसे तथ्य के रूप में "निर्दोष होना" या "निर्दोषता का दावा" या यहां तक कि एक क्रिया के रूप में "अपने तरीकों को सही करना" के रूप में व्यक्त किया गया है। यह हिफिल में एक मौखिक रूप है जो केवल आठ बार होता है। "अपने तरीकों का पूरा लेखा-जोखा दें" का मेरा अनुवाद इस अवलोकन पर आधारित है कि कई अन्य संदर्भों में, यह मोटे तौर पर किसी चीज़ का भुगतान करने या उसका लेखा-जोखा देने से संबंधित है। ध्यान दें, विशेषकर 2 राजा 22:4। तो फिर, उन सभी व्याकरणिक और वाक्यात्मक स्थितियों के आधार पर, मैंने इसे प्रस्तुत किया है, "क्या एक बुद्धिमान मध्यस्थ कोई अच्छा कर सकता है।" मुझे फिर से ऐसा करने दीजिए, "क्या ईश्वर की ओर से सेवा करने वाला एक बुद्धिमान मध्यस्थ किसी इंसान का भला कर सकता है? क्या ऐसा मध्यस्थ कोई मानवीय लाभ पहुंचा सकता है? जब आप खुद को सही ठहराएंगे तो क्या ईश्वर अनुकूल प्रतिक्रिया देगा? जब आप देंगे तो क्या कोई लाभ होगा तुम्हारे तौर-तरीकों का पूरा लेखा-जोखा?" यह उन तर्कों के संदर्भ में बहुत मायने रखता है जो पुस्तक में दिए गए हैं और जिस तरह के वाक्यविन्यास और शब्दावली का उपयोग हम अन्य स्थानों पर देखते हैं।

कठिन श्लोक: अय्यूब 26:7 [6:32-13:36]

जिस पद पर मैं ध्यान देना चाहता हूं वह अय्यूब 26:7 है; एनआईवी इसका अनुवाद करता है, "वह उत्तरी आकाश को खाली जगह पर फैलाता है, वह पृथ्वी को शून्य पर लटकाता है।" इस पर ध्यान देना उचित है क्योंकि कुछ नेताओं ने उस अंतिम वाक्यांश को देखा है, "पृथ्वी को किसी भी चीज़ पर

लटकाना," और निष्कर्ष निकाला है कि नौकरी की किताब में किसी तरह, वे पृथ्वी के बारे में जानते हैं, बस एक तरह से कक्षा में लटकी हुई है। गुरुत्वाकर्षण और केन्द्राभिमुख बल और उन सभी चीजों से, जो मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही अनुचित विचार है कि पुस्तक ऐसा मानती है या उसका अनुमान लगाती है। यह वास्तव में शब्द के अनुरूप नहीं है। तो, आइए इस पर एक नज़र डालें।

पंक्ति के पहले भाग में, "वह उत्तरी आकाश में फैला हुआ है।" उत्तर के लिए शब्द *ज़ाफ़ोन* है। यह उत्तर के लिए काफी सामान्य हिब्रू शब्द है। लेकिन यह माउंट ज़ाफ़ोन, कनानी पर्वत को भी संदर्भित करता है जहां देवता निवास करते थे। इसलिए, इसका महत्व कम्पास के बिंदुओं के साथ इसके अभिविन्यास में नहीं है, बल्कि पवित्र पर्वत के संदर्भ के रूप में इसके उपयोग में है जो इज़राइल के बाहर के साहित्य में जाना जाता है। यहां तक कि इज़राइल में भी, कुछ भजन ऐसा ही करते हैं। तो, ज़ाफ़ोन यहाँ सिर्फ एक दिशा से कहीं अधिक है। यदि हम इसे ब्रह्मांडीय पर्वत के संदर्भ में समझें, तो ब्रह्मांडीय पर्वत की नींव पाताल में है और इसकी ऊंचाई स्वर्ग में है, और दिव्य परिषद इसकी ऊंचाइयों पर मिलती है। यह स्वर्ग और पृथ्वी का मिलन स्थल है और देवताओं की सभा के लिए सभा स्थल है और इस प्रकार उनका निवास स्थान है - स्वर्ग। तो, मैं उस प्रकार के संदर्भ के रूप में ज़ाफ़ोन को ले रहा हूँ। क्रिया "वह ज़ाफ़ोन को फैलाता है।" "फैलता है" *नोटेह* है, एक हिब्रू शब्द जो बताता है कि वह स्वर्ग के बारे में बात कर रहा है क्योंकि यह क्रिया आमतौर पर बाइबिल के ब्रह्मांड विज्ञान ग्रंथों में स्वर्ग को अपनी वस्तु के रूप में लेती है।

अब, वह खाली जगह पर, ज़ाफ़ोन, कुछ स्वर्गीय चीज़ फैला रहा है। "रिक्त स्थान" शब्द *तोहू* है। इसे उत्पत्ति 1:2 *तोहू वाबोहु* "निराकार और शून्य" से जाना जाता है, और उत्पत्ति 2 और अन्य 30 से अधिक घटनाओं में जो हमें यह शब्द मिलता है, यह उस चीज़ को संदर्भित करता है जो इस अर्थ में अस्तित्वहीन है कि यह गैर है -गैर-कार्यात्मक आदेश दिया गया। और इसलिए, यह अव्यवस्थित दुनिया है। तो, यह विचार कि ईश्वर स्वर्गीय ज़ाफ़ोन को *तोहू* के ऊपर फैलाता है, उस चीज़ के ऊपर जो अस्तित्वहीन है। जिसे आमतौर पर अस्तित्वहीन कहा जाता है वह है ब्रह्मांडीय जल। मैं जानता हूँ कि हम सोचते हैं कि अस्तित्व का संबंध भौतिक से है, लेकिन प्राचीन दुनिया में ऐसा नहीं

था। उनका मानना था कि अस्तित्व का संबंध कार्य और व्यवस्था से है। तो, जिस चीज़ को हम भौतिक मानते हैं वह अस्तित्वहीन भी हो सकती है। वे महासागरों को अस्तित्वहीन मानते थे; वे रेगिस्तानों को अस्तित्वहीन मानते थे क्योंकि उन्हें मानव क्षेत्र में आने और उनके लिए कार्य करने का आदेश नहीं दिया गया था। तो यहाँ, यह विचार कि ज़ाफ़ोन एक *तोहू* में फैला हुआ है, ऊपर के गैर-मौजूद, गैर-कार्यात्मक, गैर-व्यवस्थित ब्रह्मांडीय पानी का एक संकेत है जिसके ऊपर स्वर्ग वास्तव में फैला हुआ था, सीएफ। भजन 104:2, 3.

पहली पंक्ति में *तोहू* दूसरी पंक्ति में अद्वितीय वाक्यांश *बेलेमा के समानांतर है*। यही वह शब्द है जिसका अनुवाद फिर से एनआईवी "कुछ नहीं" के रूप में करता है। यह एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ यह शब्द आता है, और निश्चित रूप से, यह हमारे लिए इसे बहुत कठिन स्थिति बनाता है। हम आमतौर पर शब्दों का अर्थ उनके उपयोग से निर्धारित करते हैं। यदि हमारे पास उपयोग के अन्य उदाहरण नहीं हैं, तो हमें शब्द का अर्थ समझने की कोशिश में बाधा आती है। यह विचार कि इसका पदार्थहीन स्थान, जहाँ पृथ्वी लटकी हुई है, कालानुक्रमिक होगा। प्राचीन विश्व या हिब्रू बाइबिल में कोई भी ऐसी चीज़ों के बारे में कुछ नहीं जानता है। पुनः, अस्तित्वहीन की मिस्री भावना के साथ, इसका तात्पर्य उस चीज़ से है जिसमें कार्य या व्यवस्था का अभाव है। इस दूसरे उपवाक्य में क्रिया *तालह है* जिसका अर्थ है "निलंबित करना।" यह अक्सर किसी को फाँसी देने के लिए, निष्पादन के एक रूप को संदर्भित करता है। इसका अनुवाद निलंबित करना बेहतर है, क्योंकि वे किसी को धरना या उस प्रकार की किसी चीज़ या पेड़ पर लटका देंगे। इसका बेहतर अनुवाद "निलंबित" है न कि "खत्म"।

यहाँ तक कि इस वाक्य में "पृथ्वी" शब्द भी सीधा नहीं है। हमें लगता है कि यह आसान होगा। लेकिन कुछ उदाहरणों में, हिब्रू बाइबिल और प्राचीन निकट पूर्व सजातीय भाषाओं दोनों में, इसका संदर्भ निचली दुनिया से भी है। इसलिए यहाँ मेरा मानना है कि *एरेत्ज़ का* संदर्भ पृथ्वी से नहीं, बल्कि पाताल लोक से होना चाहिए। तो हमारे पास पहली पंक्ति में *तोहू और दूसरी में बेलेमा दोनों हैं जो गैर-अस्तित्व का वर्णन करते हैं, जो कि ब्रह्मांडीय जल है, जिसके बारे में हम जानते हैं कि हमारे पास ऊपर ब्रह्मांडीय जल और नीचे ब्रह्मांडीय जल है।*

हमारे पास ज़ाफ़ोन है, जो उपरोक्त दायरे के बारे में बात करता है। और हमारे पास *eretz* है, जो नीचे के दायरे के बारे में बात करता है। इसलिए, मेरा प्रतिपादन होगा "स्वर्ग ब्रह्मांडीय गैर-अस्तित्व पर फैला हुआ है, पृथ्वी गैर-अस्तित्व पर लटकी हुई है।" तो, आपको ऊपर का पानी और नीचे का पानी मिलता है।

ये दो पद जिनके बारे में हमने बात की है, वे केवल उन कठिनाइयों के उदाहरण हैं जिनका हम अय्यूब की पुस्तक में सामना करते हैं। जब हम कोई अंग्रेजी अनुवाद खोलते हैं, तो हमारे मन में अक्सर यह विचार आता है कि किसी तरह सब कुछ ठीक हो गया है और पाठ समझ में आ गया है। लेकिन विशेष रूप से हिब्रू बाइबिल में, जरूरी नहीं कि ऐसा ही हो। अभी भी बहुत सारे शब्द हैं जो हमारे लिए समस्याएँ पैदा करते हैं, या जिनके अर्थ अज्ञात हैं, या शायद जिनके अर्थ आम तौर पर ज्ञात हैं, लेकिन पूरी बारीकियों को अंग्रेजी शब्दों में पकड़ना मुश्किल है। हमें वाक्यविन्यास संबंधी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, विशेषकर काव्यात्मक ग्रंथों में। और इसलिए, हमें बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है; अनुवादक अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते हैं, टिप्पणीकार इस सब पर प्रकाश डालने का प्रयास करते हैं। आप जानते हैं, पाठ की यथासंभव सर्वोत्तम समझ प्राप्त करने का प्रयास करने के लिए हर कोई मिलकर काम कर रहा है। नौकरी की किताब, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, विशेष रूप से कठिन है। और इसलिए, हम इन समस्याओं को उन दो समस्याओं के समान पाते हैं जिनका हमने अभी उल्लेख किया है।

चक्र 3 की अलंकारिक रणनीति [13:36-13:53]

तो, सौभाग्य से, समझ के दूसरे स्तर पर, हम अलंकारिक रणनीति और चक्र की सामान्य समझ, संवाद के चक्र को देख सकते हैं, और एक अच्छा विचार प्राप्त कर सकते हैं कि क्या चल रहा है, भले ही कुछ छंद अभी भी दे रहे हों हमें परेशानी।

चक्र 3: एलीपज़ और अय्यूब की प्रतिक्रिया [13:53-16:33]

तो, आइए चक्र तीन के तर्कों को संक्षेप में प्रस्तुत करें। निःसंदेह एलीपहाज़ मित्रों के लिए मुख्य वक्ता है। मध्यस्थ के बारे में आपकी सारी बातचीत का विचार मूल रूप से उसके पास है; याद रखें, अय्यूब ने इसे पहले भी उठाया है, एक मध्यस्थ, वकील, *गोयल*, उद्धारक, मध्यस्थ और सुनवाई की आपकी सभी बातें खोखली हैं। यह एक स्मोक स्क्रीन है। परमेश्वर तुम्हारे अन्याय के दुष्ट कार्यों को स्पष्ट रूप से जानता है। आपको वह मिल गया जिसके आप हकदार हैं। और मैं, एक बात से, इससे खुश हूँ। आपकी सबसे अच्छी कार्रवाई सुनना शुरू करना और बहस करना बंद करना है। जब आप ऐसा करते हैं, तो बस उन सभी लाभों और उपकारों की कल्पना करें जिनका आप फिर से आनंद लेंगे। अब अपना सामान वापस पाने पर एलीपज़ के सामान्य फोकस पर ध्यान दें। यहाँ, उसे अभी भी मित्र मानना कठिन है। ये बहुत कठोर शब्द हैं। वह अब कोमल नहीं हो रहा है; यदि वह कभी था, तो वह अब अय्यूब के साथ नरम व्यवहार नहीं कर रहा है। इसलिए, एलीपज़ अपने आरोपों में और भी गहरे उतरता जा रहा है।

अय्यूब ने शायद ही एलीपज़ को अपने कथन का सारांश देने के बारे में सोचा हो: यदि मुझे ईश्वर मिल जाता, तो मैं कल्पना करता हूँ कि वह कैसा होगा, लेकिन यह निराशाजनक है। मैं निर्दोष हूँ, और वह यह जानता है। यह कितनी भयावह स्थिति है। भगवान इस गड़बड़ी के बारे में कुछ क्यों नहीं करते? दमनकारी लोग बिना किसी जवाबदेही के जो चाहते हैं वही करते हैं। गरीब लोग, जो अपनी आजीविका कमाने की कोशिश कर रहे हैं, उनके अनियंत्रित अत्याचार से पीड़ित हैं। अपराधी बेलगाम अपना काम करते रहते हैं, लेकिन मुझे अब भी यकीन है कि ऐसे लोगों का कोई भविष्य नहीं है। उनकी दुष्टता अंततः उन पर हावी हो जाएगी।

देखें कि अय्यूब अभी भी प्रतिशोध सिद्धांत पर कायम है, और वह अभी भी दुनिया को प्रतिशोध सिद्धांत के साथ समझाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन वह मानता है कि उसकी अपनी परिस्थितियाँ, उसके अपने अनुभव, वास्तव में उस सिद्धांत का बहुत अच्छी तरह से समर्थन नहीं कर रहे हैं। इसलिए एलीपज़ की सलाह है, पश्चाताप करो, बहाल हो जाओ, और व्याख्यान सर्किट पर जाओ। मैं इसे थोड़ा हास्यास्पद ढंग से कहता हूँ क्योंकि वह मूल रूप से यह विचार प्रस्तुत करता है: तब आप हर किसी को बता सकते हैं कि भगवान ने आपके जीवन में कैसे काम किया है।

तो, व्याख्यान सर्किट पर जाएँ। अय्यूब का उत्तर: अपने चारों ओर देखो। जब दुनिया इतनी अव्यवस्थित हो तो अपने बारे में कौन सोच सकता है? तो, एलिपहाज़ और नौकरी का आदान-प्रदान इसी प्रकार होता है।

चक्र 3: बिलदाद और अय्यूब की प्रतिक्रिया [16:33-18:04]

अब, बिलदाद केवल कुछ छंदों के लिए कूदता है और मूल रूप से युगों के ज्ञान को याद करता है; वह बिलदाद है। ईश्वर अकल्पनीय रूप से महान है। मनुष्य आंतरिक रूप से दोषपूर्ण हैं और अंततः कोई फर्क नहीं पड़ता। धन्यवाद, बिलदाद।

बिलदाद को अय्यूब की प्रतिक्रिया: आपकी स्थिति बेतुकी और पूरी तरह से अप्रासंगिक है। आपने व्यवस्था स्थापित करने वाले ईश्वर का उल्लेख किया है, लेकिन आपने ईश्वर के कार्य की विशालता को समझना शुरू नहीं किया है। फिर भी उसने ब्रह्मांड में जो व्यवस्था स्थापित की है, उसके लिए श्लोक 26 यहीं आता है; वह मेरे जीवन में अव्यवस्था के अलावा कुछ नहीं लाया है। फिर भी, मैं आप सभी द्वारा दी गई सलाह का पालन करूंगा। मुझे क्षमा करें; मुझे वह ठीक से समझने दो। फिर भी, मैं आप सभी की दी हुई सलाह का कभी पालन नहीं करूंगा। मेरी धार्मिकता ही मेरे पास है। मैं अंत तक इससे जुड़ा रहूंगा। तुम मेरे शत्रु बन गए हो, और इस प्रकार परमेश्वर के भी शत्रु बन गए हो। तो, हम सभी जानते हैं कि आपके लिए क्या है।

तो, बिलदाद की सलाह को संश्लेषित करते हुए: उन तथ्यों का सामना करें जिन्हें परंपरा सबसे अच्छी तरह जानती है। अय्यूब का उत्तर: ईश्वर की अपार शक्ति ने ब्रह्मांड में व्यवस्था ला दी है, लेकिन मेरे जीवन में नहीं। मैं ईश्वर का शिकार हूँ, और आप भी होंगे। यहां मैं केवल अपनी धार्मिकता से चिपके रहने के लिए खड़ा हूँ। भाषणों की इस श्रृंखला का दार्शनिक फोकस और समाधान इस बात पर निर्भर करता है कि अय्यूब पाप स्वीकार करेगा या नहीं। संपूर्ण संवाद चक्र इसी बारे में है। एलीपहाज़ ने अपने आरोपों की व्याख्या की, जिसे अय्यूब ने दृढ़तापूर्वक नकार दिया।

चुनौती देने वाले के आरोप पर लौटें [18:04-19:24]

याद रखें कि पुस्तक की शुरुआत से ही, मेज़ पर चुनौती यह थी कि अय्यूब अपने चेहरे पर ईश्वर को कोसेगा? सवाल यह है कि निष्काम धार्मिकता है या नहीं। हमने इस विचार के बारे में बात की है कि

अय्यूब को अपनी ईमानदारी बनाए रखने की ज़रूरत है, चाहे वह ईश्वर के बारे में या दुनिया के बारे में कुछ भी सही या गलत हो, या अपनी स्थिति के बारे में उसकी धारणा के बारे में हो या वह अपने अनुभवों का मूल्यांकन कैसे करता हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। इसका तात्पर्य यह है कि, जब तक वह अपनी सत्यनिष्ठा बनाए रखता है, कि उसकी धार्मिकता धार्मिकता के बारे में है, लाभ के बारे में नहीं, तब चुनौती देने वाले का आरोप दूर हो जाएगा।

दोस्तों और पत्नी को उस स्थिति का प्रतिनिधित्व करना याद है, जिससे अय्यूब को उसकी धार्मिकता के बजाय उसके सामान को महत्व देना पड़ा। अय्यूब ने दृढ़तापूर्वक उस सोच का खंडन किया है।

संवाद अनुभाग का निष्कर्ष [19:24-21:02]

इसका मतलब है कि हम वास्तव में अध्याय 27:1 से 6 तक एक प्रमुख निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। ये अय्यूब के अंतिम शब्द हैं, और मैंने इसे संक्षेप में प्रस्तुत किया है, लेकिन आइए इसे पढ़ें क्योंकि यह वास्तव में महत्वपूर्ण है कि संवाद अनुभाग कैसे समाप्त होता है। मैं वास्तव में 27:2 से शुरू करने जा रहा हूँ "निश्चित रूप से ईश्वर जीवित है, जिसने मुझे न्याय से वंचित कर दिया है, सर्वशक्तिमान, जिसने मेरे जीवन को कड़वा बना दिया है, जब तक मेरे भीतर जीवन है, मेरे नथुनों में ईश्वर की सांस है, मेरे होंठ कोई बुरी बात न बोलेंगे, और मेरी जीभ झूठ न बोलेगी।" एक पल के लिए रुकें; वह किस झूठ की बात कर रहा है? वह जिस झूठ के बारे में बात कर रहा है उसका पता चल जाएगा यदि वह सहमत हो जाए कि उसने पाप किया है, यदि वह उस पाप को स्वीकार कर ले जिसके बारे में उसे विश्वास नहीं था कि उसने पाप किया है।

इसलिए मैं झूठ नहीं बोलूंगा. "मैं कभी नहीं मानूंगा कि आप सही हैं; जब तक मैं मर नहीं जाता, मैं अपनी ईमानदारी से इनकार नहीं करूंगा।" फिर, हम किस अखंडता की बात कर रहे हैं? अगला श्लोक. "मैं अपनी बेगुनाही बनाए रखूंगा और इसे कभी जाने नहीं दूंगा; जब तक मैं जीवित हूँ मेरी अंतरात्मा मुझे धिक्कार नहीं करेगी।" अय्यूब अपनी बेगुनाही पर कायम है, यानी कि उसने इसके लायक कुछ भी नहीं किया है, कि वह धर्मी है, और यह सब इसी के बारे में है, सामान के बारे में नहीं। यही उसकी ईमानदारी है.

चैलेंजर का मामला पूरा हो गया: अय्यूब ने अपनी बेगुनाही बरकरार रखी [21:02-21:43]

यह भाषण, फिर, संवाद अनुभाग में यह अंतिम खूंटी, चैलेंजर के विवाद के उपचार को निष्कर्ष तक लाता है। इस बिंदु पर, चैलेंजर का मामला पूरा हो गया है, और वह गलत साबित हुआ है। अय्यूब ने भीषणतम हमले के बावजूद अपनी बेगुनाही बरकरार रखी है, और उसने अपनी धार्मिकता बरकरार रखी है, भले ही उसने रास्ते में बहुत सारी गलत सोच प्रदर्शित की हो; याद रखें, नौकरी सही नहीं है। वह ईश्वर पर सही दृष्टिकोण नहीं दे रहा है, लेकिन वह अपनी सत्यनिष्ठा बनाए रखता है।

दोस्तों से अलग हुए [21:43-22:17]

वह अपने मित्र की सलाह को अस्वीकार कर देता है। वह किसी भी सुझाव को स्वीकार करके कि उसने पाप किया है, अपनी समृद्धि की बहाली से इंकार कर देता है। तो, इस बिंदु पर, हम पुस्तक में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर पहुँच गए हैं। संवाद चक्र समाप्त हो गया है, चैलेंजर का विवाद अलग रखा गया है। दोस्त बन गए। वे वास्तव में पुस्तक के दूसरे भाग में अंत तक शामिल नहीं हैं, जहाँ उनका फिर से उल्लेख किया गया है।

प्रवचन अनुभाग में संक्रमण [22:17-22:49]

यह वह जगह है जहाँ हम प्रवचन अनुभाग में संक्रमण की ओर बढ़ते हैं, जहाँ अय्यूब का आरोप लगाया जाएगा। क्या धर्मी लोगों को कष्ट सहना एक अच्छी नीति है? लेकिन इससे पहले कि हम उस तक पहुंचें, हम अध्याय 28 में भजन में ज्ञान के लिए पाए गए परिवर्तन को देखेंगे, और हम इसे अगले खंड में उठाएंगे।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 16, संवाद चक्र 3, कार्य 22-27 है। [22:49]

नौकरी की किताब
सत्र 17: संवाद श्रृंखला का समापन,
विज्डम इंटरल्यूड अध्याय 28
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 17 है, संवाद श्रृंखला का निष्कर्ष, विज्डम इंटरल्यूड अध्याय 28।

समीक्षा [00:25-1:54]

अब हम इस अंतराल अध्याय, अध्याय 28 में ज्ञान के भजन के बारे में बात करना चाहते हैं, लेकिन आइए थोड़ा समीक्षा करें कि यह हमें यहां कहां लाया है ताकि हम इसमें अपना दृष्टिकोण रख सकें। संवाद अनुभाग पूरा हो गया है। अय्यूब अपने मित्रों के साथ समाप्त हो गया है। वह बातचीत खत्म हो गई है। नौकरी नए सिरे से लाभ की संभावना से आकर्षित नहीं हुई है। भले ही वह दबाव रहा हो, उन्होंने मूल रूप से यह निष्कर्ष निकाला है कि प्रतिशोध सिद्धांत के रूप में जानी जाने वाली प्रणाली टूट गई है। वह संवादों की श्रृंखला दो थी। उन्होंने गलत काम को अपनी विपत्ति का कारण मानने से इनकार कर दिया है। वह संवादों में श्रृंखला तीन, चक्र तीन था।

उन्होंने साबित कर दिया है कि उनकी धार्मिकता इनाम की उम्मीद पर आधारित नहीं है, और ऐसा करने में, उन्होंने भगवान की नीतियों की रक्षा के लिए स्टार गवाह के रूप में अच्छी तरह से काम किया है। उन्होंने प्रदर्शित किया है कि निष्काम धार्मिकता जैसी कोई चीज़ होती है। इसलिए, चुनौती देने वाले का यह दावा कि धर्मी लोगों को पुरस्कृत करने की ईश्वर की नीति प्रतिकूल थी और यहाँ तक कि विध्वंसक भी थी, खारिज कर दिया गया है। चैलेंजर के मामले का प्रतिनिधित्व करने वाले दोस्तों को चुप करा दिया गया था - मामला खारिज कर दिया गया था।

बुद्धि के लिए भजन (अय्यूब 28) - वर्णनकर्ता का मध्यांतर [1:54-2:47]

लेकिन अब हम ज्ञान अंतराल के माध्यम से प्रवचन अनुभाग में अपना परिवर्तन कर रहे हैं। अध्याय 28, फिर से, जैसा कि हमने बात की, जब हमने पुस्तक की संरचना पर चर्चा की, अध्याय 28 वास्तव में एक अलग वक्ता का परिचय नहीं देता है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकालना आसान है कि अय्यूब

किसी तरह बोलना जारी रखता है। जैसा कि मैंने उस खंड में उल्लेख किया था, समस्या यह है कि अध्याय 28 में कही गई बातें अय्यूब के पहले या बाद में व्यक्त किए गए वास्तविक दृष्टिकोण पर बिल्कुल भी अच्छी तरह से प्रतिबिंबित नहीं करती हैं। इसलिए, मैं इसे कथावाचक के काम के रूप में देखता हूं जो हमें एक प्रकार का मध्यांतर दे रहा है, ऐसा कह सकता है, और हमें सोचने के एक अलग तरीके में परिवर्तित कर रहा है।

अय्यूब की संरचना 28, बुद्धि के लिए भजन [2:47-3:46]

तो, अध्याय 28 छंद 1 से 11 खनन के चित्रण का उपयोग करते हैं। उस चित्रण का मूल जोर यह है कि खनन छिपी हुई चीजों को प्रकाश में लाता है। श्लोक 12 से 19 तक, ज्ञान से संबंधित अनेक अलंकारिक प्रश्न हैं। यह सुझाव दिया गया है कि ज्ञान मनुष्यों के लिए दुर्गम है फिर भी मूल्य से परे और मानवीय प्रयास और सरलता से परे है। यह क्या है इसके कई संकेतक हैं। अब यह एक लौकिक चर्चा है, और इसके कई संकेतक हैं। फिर अध्याय 28 का अंतिम खंड, श्लोक 20 से 28, ईश्वर ज्ञान का मार्ग प्रदान करता है, और ईश्वर का भय ज्ञान की नींव है।

कार्य 28: बुद्धि और व्यवस्था नेक्सस [3:46-5:02]

तो, कुछ बिंदु क्या बताए जा रहे हैं? सबसे पहले, ज्ञान 28:12 में नहीं पाया जा सकता है, लेकिन यह ईश्वर से आता है जो 28:20 में है। इसलिए, यह स्रोत से, इसे खोजने की कोशिश के विपरीत है। ईश्वर ही है जो इसे देता है। बुद्धि ब्रह्मांड के घटकों के क्रम में पाई जाती है। फिर, यहां हमें ज्ञान और व्यवस्था के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध मिलता है। यह संपूर्ण बाइबिल में सत्य है। बुद्धि तब मिलती है जब कोई व्यक्ति व्यवस्था का अनुसरण करता है और व्यवस्था को समझता है तथा व्यवस्था का अभ्यास करता है। एक व्यवस्थित विश्व, व्यवस्थित जीवन और व्यवस्थित समाज ये सभी ज्ञान के लक्ष्य हैं। तो, ज्ञान ब्रह्मांड के घटकों के क्रम में पाया जाता है। आदेश, यह कहा जाता है, दैनिक कार्यों में आसानी से देखने योग्य नहीं है, लेकिन यह सृजन की नींव में सहायक था, और यह चल रहे कार्यों में अंतर्निहित है।

मित्रों न्याय फोकस, ईश्वर बुद्धि फोकस [5:02-7:01]

अय्यूब और उसके दोस्त सोचते हैं कि वे जानते हैं कि ब्रह्मांड की रचना कैसे हुई। प्रतिकार सिद्धांत उनका संचालन सिद्धांत है। उस समीकरण में, धर्मी लोग समृद्ध होंगे; दुष्टों को कष्ट होगा; उनके लिए संसार इसी प्रकार व्यवस्थित है। लेकिन निःसंदेह, ऐसा नहीं है। अय्यूब और उसके दोस्तों को सच्चा ज्ञान नहीं मिला है। जब हम श्लोक 27 को देखते हैं, "तब उसने [भगवान] ने बुद्धि को देखा और उसका मूल्यांकन किया। उसने इसकी पुष्टि की और इसका परीक्षण किया।" यहां ईश्वर सृजन को ज्ञान की कसौटी पर स्वीकार करता है, न्याय की कसौटी पर नहीं। जब अय्यूब और उसके दोस्तों ने प्रतिशोध सिद्धांत को व्यवस्था की नींव बनाने की कोशिश की, तो वे न्याय को ब्रह्मांड में व्यवस्था की नींव बना रहे थे। ईश्वर का यह वाक्यांश उसे पलट देता है और कहता है, "नहीं, आधार न्याय नहीं है।" उन्होंने ज्ञान को देखा और इसका मूल्यांकन किया, इसकी पुष्टि की, इसका परीक्षण किया और ज्ञान की कसौटी पर सृजन को मंजूरी दी। तो, यह थोड़ा अलग दृष्टिकोण है। अय्यूब और उसके दोस्तों ने जिस समीकरण का उपयोग किया है वह अपर्याप्त दिखाया गया है।

अब तक हम जिन नायकों से मिले हैं, अय्यूब के दोस्त, उन सभी की प्रतिष्ठा दुनिया के सबसे बुद्धिमान लोगों में से एक के रूप में है। लेकिन जब हम उनके भाषणों के माध्यम से संवादों के बारे में सोचते हैं, तो उनकी टिप्पणियों में प्रभु का भय प्रमुखता से सामने नहीं आया है। और यहीं, पुस्तक इसी पर केंद्रित है।

अय्यूब 28:18 प्रभु का भय मानना बुद्धि है [7:01-7:26]

श्लोक 28 अपनी स्थापना के तरीके में दिलचस्प है। यह मानव जाति के लिए एक निर्देश है, *एडम*। जब हम इसे पढ़ते हैं: "और उसने मानव जाति से कहा," यह एनआईवी है। "उसने मानव जाति से कहा, [वह *आदम* है] प्रभु का भय मानना - यही ज्ञान है, और बुराई से दूर रहना ही समझ है।"

प्रभु का भय विरोधाभासी है [7:26-8:49]

अब ईश्वर से डरने के इस विचार को हम यह सोचकर अच्छी तरह से समझ सकते हैं कि यह किससे भिन्न है। ईश्वर से डरना उसे अलग मानने और इसलिए उसकी उपेक्षा करने के विपरीत होगा। ईश्वर का भय मानना उसे अक्षम समझने और इसलिए उसके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करने के विपरीत होगा। ईश्वर का भय उसे सीमित या नपुंसक मानने और इसलिए तिरस्कृत होने के

विपरीत होगा। ईश्वर का भय उसे भ्रष्ट मानने और इसलिए उसे डांटे जाने योग्य मानने के विपरीत है। ईश्वर से डरना उसे अदूरदर्शी समझने और इसलिए सलाह दिए जाने के विपरीत होगा। ईश्वर से डरना उसे तुच्छ समझने और इसलिए नाराज होने के विपरीत होगा। ईश्वर से डरने का अर्थ ईश्वर को गंभीरता से लेने का विचार है; हमें ऐसा करने की ज़रूरत है ताकि हम उसे भगवान से कमतर समझने के किसी अन्य जाल में न फंसें।

अडोनाई का डर [भगवान, स्वामी] [8:49-11:28]

अब यह दिलचस्प है कि जब यह पद ईश्वर के भय के बारे में बात करता है, तो यह यहोवा के भय के बारे में नहीं, बल्कि अडोनाई के भय के बारे में बात करता है। यह सचमुच एक दिलचस्प विकल्प है। यह एलोहीम का डर नहीं है; यह यहोवा का भय है। यह पुस्तक में अडोनाई की एकमात्र घटना है। हिब्रू में अडोनाई का उपयोग केवल किसी प्राधिकारी व्यक्ति को संदर्भित करने के लिए किया जा सकता है, चाहे वह इंसान हो या भगवान। इसे अक्सर याहवे के लिए एक शीर्षक के रूप में उपयोग किया जाता है, लेकिन इसका उपयोग अक्सर स्वयं याहवे के संबंध में किया जाता है। तो, यहाँ यह बहुत दिलचस्प है। हम न शदै से डरते हैं, न परमेश्वर से डरते हैं, न यहोवा से डरते हैं, परन्तु यहोवा से डरते हैं।

इसे भगवान के मुख में भी डाला जाता है। यह भगवान बोल रहा है। "उसने मानवजाति से कहा, यहोवा का भय मानना ही बुद्धि है।" तो, यह स्वयं भगवान ही इस तरह से बोल रहे हैं। पुराने नियम में कहीं भी ईश्वर ने स्वयं को केवल अडोनाई शीर्षक से संदर्भित नहीं किया है, इससे जुड़े किसी अन्य लेबल के बिना। तो, यहाँ शब्दों का यह वास्तव में दिलचस्प चयन है। जब हम पाठों का विश्लेषण करते हैं तो यह उसका हिस्सा होता है। हम मानते हैं कि शब्दों का चयन सार्थक, जानबूझकर और उद्देश्यपूर्ण है, और इसलिए, हम उन पर सावधानीपूर्वक विचार करते हैं। अब, फिर से, अडोनाई अधिकार के मुद्दे को सामने लाता है। इसमें प्रभु या स्वामी का भाव है। और यह प्राधिकार के प्रति समर्पण के तत्व को सामने लाता है। यह ऐसी चीज़ है जिसकी इस संदर्भ में बहुत आवश्यकता है, इस ईश्वर से डरकर, उसके प्रति समर्पित होना। तो, नीतिवचन में समान कहावत के विपरीत जहां "प्रभु का भय बुद्धि की शुरुआत है।" यहाँ, "अडोनाई का भय ही बुद्धि है।"

ज्ञान के मार्ग के रूप में ईश्वर पर भरोसा करना बुद्धिमानी है। एक निश्चित लेख के साथ निश्चित रूप का प्रयोग श्लोक 12 और 20 दोनों में किया गया है - "ज्ञान।"

अंततः प्रभु का भय "बुराई से दूर रहने" के नैतिक उपदेश के समानान्तर हो जाता है। यह अनुष्ठान पालन के समानांतर नहीं है। तो फिर, यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में हमें जागरूक होने की आवश्यकता है।

अय्यूब की आलंकारिक भूमिका 28 बुद्धि के लिए भजन [11:28-13:08]

तो, अध्याय 28 की अलंकारिक भूमिका क्या है? सबसे पहले, यह हमें संवाद से प्रवचन की ओर ले जाता है। तो, इसकी वह यांत्रिक भूमिका है। दूसरा, यह चुनौती देने वाले के तर्क से धर्मी लोगों के लिए समृद्धि लाने के लिए एक अच्छा विचार नहीं है, अय्यूब के तर्क में परिवर्तित होता है, धर्मी लोगों को कष्ट सहने के लिए एक अच्छी नीति नहीं है, और पुस्तक का दूसरा भाग अय्यूब के विवाद से निपटने जा रहा है।

तीसरा, यह पुस्तक को न्याय की खोज से ज्ञान के स्रोत और समीकरण में ज्ञान के महत्व की समझ की ओर स्थानांतरित करता है। अय्यूब और उसके दोस्तों ने बुद्धि को समीकरण से बाहर कर दिया है। जैसा कि वे व्यवस्था को समझते हैं, यह सब न्याय के बारे में रहा है, लेकिन अब यह पूरी तरह से ज्ञान के बारे में हो गया है।

चौथा, अय्यूब ने प्रदर्शित किया है कि उसके पास चैलेंजर के संदेह के विपरीत एक निःस्वार्थ धार्मिकता है। और इसलिए, अब हम आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। पुस्तक को अभी तक अय्यूब की चुनौती से निपटना बाकी है। तो, अब सवाल यह है कि, जैसे ही हम अय्यूब की चुनौती से जुड़े अगले भाग में आगे बढ़ते हैं, वह यह है: क्या जब धर्मी लोग पीड़ित होते हैं तो क्या कोई सामंजस्य हो सकता है? यह, फिर से, चुनौती देने वाले के उस तर्क के विपरीत है जहां प्रश्न निःस्वार्थ धार्मिकता के बारे में था।

धर्मी पीड़ा के साथ सामंजस्य? [13:08-13:50]

यहाँ, जब धर्मी लोगों को कष्ट होता है तो क्या सुसंगति हो सकती है? यह नोटिस देता है कि अय्यूब नियंत्रण की स्थिति में नहीं है और उसकी अपेक्षा उस दिशा को निर्धारित नहीं करनी चाहिए जिसमें स्थिति आगे बढ़ती है। परमेश्वर की बुद्धि नियम बनाती है। इससे पता चलता है कि सुसंगति के बारे में मित्रों की धारणा त्रुटिपूर्ण और सरल है। मित्र की सलाह मानने से अय्यूब की दुनिया में सामंजस्य नहीं आ पाता। इसलिए, बुद्धि को वह समझा जाना चाहिए जो व्यवस्था और सुसंगति लाती है।

ईश्वर बुद्धि/व्यवस्था के स्रोत/लेखक के रूप में [13:50-15:06]

ईश्वर व्यवस्था का रचयिता और सुसंगति की नींव है, लेकिन कोई भी अकेले ईश्वर को ही सुसंगत या व्यवस्थित नहीं कह सकता। सृष्टि करते समय ईश्वर बुद्धि का प्रयोग कर रहा था, लेकिन यह कहना कि ईश्वर बुद्धिमान है, ईश्वर के स्वभाव को कमतर आंकता है। जैसा कि हमने इस पूरे पाठ्यक्रम की शुरुआत में उल्लेख किया था, यह विचार कि ईश्वर किसी तरह उसे कुछ बाहरी मानदंडों पर निर्भर बना रहा है। यहाँ भी वही बात है. निःसंदेह, परमेश्वर बुद्धिमानी से कार्य करता है। ईश्वर बुद्धि का स्रोत है। यह सबसे महत्वपूर्ण संबंध है. ईश्वर न्याय का स्रोत है, और ईश्वर बुद्धि का स्रोत है। इसलिए, ईश्वर बुद्धिमान है, या ईश्वर अच्छा है, या ईश्वर पवित्र है जैसी पुष्टिएं भ्रामक हैं क्योंकि विशेषण स्वयं वास्तव में ईश्वर में अपनी परिभाषा पाते हैं। कोई यह भी कह सकता है कि ईश्वर, ईश्वर है। हम जो भी ज्ञान पा सकते हैं उसकी नींव उन्हीं में है। कविता यह नहीं बताती कि ईश्वर बुद्धि है या उसके पास बुद्धि है।

विश्वास में व्यक्त भय [15:06-16:05]

जब हम प्रभु पर भरोसा करते हैं तो हम उनके प्रति अपना भय व्यक्त करते हैं, भले ही हमारी परिस्थितियाँ कितनी भी असुविधाजनक या भ्रमित करने वाली क्यों न हों। हमें उस पर इतना भरोसा है कि हम यह स्वीकार कर सकते हैं कि स्पष्टीकरण की जरूरत नहीं है। हमें विश्वास है कि उसका न्यायपूर्ण स्वभाव अजेय है। हालाँकि जिन परिस्थितियों में हम खुद को पाते हैं उनमें कोई पहचानने योग्य न्याय नहीं है। हमें विश्वास है कि उन्होंने सिस्टम को सबसे अच्छे तरीके से स्थापित किया है, जिसका अर्थ है सबसे बुद्धिमान तरीके से। यहां तक कि जब हम पतन से टूटी हुई व्यवस्था के परिणाम भुगत रहे होते हैं, तब भी हम हमारे प्रति उसके प्रेम पर भरोसा करते हैं। हमें भरोसा है कि

हमारी कठिनाइयों में भी, वह अपना प्यार दिखा सकता है और परीक्षणों के माध्यम से हमें मजबूत कर सकता है।

अय्यूब के महत्व पर निष्कर्ष 28 बुद्धि का भजन [16:05-16:44]

अध्याय 28 पुस्तक के प्रमुख अध्यायों में से एक है। हमें इस पर सावधानीपूर्वक ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि हम इसके संदेश को समझ सकें। तो, इसकी एक संरचनात्मक भूमिका है और इसलिए, एक अलंकारिक भूमिका है, लेकिन पुस्तक द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले धार्मिक संदेश में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि यह हमें दुनिया के संबंध में भगवान के बारे में सही तरीके से सोचने में मदद करती है। .

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 17 है, संवाद शृंखला का निष्कर्ष, विज्डम इंटरल्यूड अध्याय 28। [16:44]

नौकरी की किताब
सत्र 18: नौकरी का प्रवचन, नौकरी 29-31
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 18 है, जॉब का प्रवचन, जॉब 29-31।

नौकरी में प्रवचन अनुभाग का परिचय [00:24-00:58]

अय्यूब की पुस्तक का प्रवचन खंड तीन प्रमुख प्रवचनों से बना है, एक अय्यूब द्वारा, एक एलीहू द्वारा, और एक यहोवा द्वारा। लेकिन यह पहले से ही भ्रामक है क्योंकि उनमें से प्रत्येक के पास कई भाषण हैं, और इसलिए हमारे पास जटिल प्रवचन हैं। अय्यूब के तीन भाषण हैं। एलीहू के चार, और यहोवा के दो। यह एक बहुत ही दिलचस्प ऑफसेटिंग पैटर्न है जहां ऐसा लगता है कि एलीहू मुख्य वक्ता है। लेकिन निःसंदेह, ऐसा नहीं है।

अय्यूब के तीन भाषणों का सारांश (अय्यूब 29-31) [00:58-2:39]

इसलिए, इस खंड में, हम प्रवचन खंड में अय्यूब के प्रवचनों, उनके तीन भाषणों पर एक नज़र डालने जा रहे हैं। संक्षेप में, अध्याय 29 में, अय्यूब अतीत की सुसंगतता के बारे में सोच रहा है। आह, वे अच्छे पुराने दिन जब दुनिया के साथ सब कुछ सहज और सही था। प्रतिशोध का सिद्धांत काम कर रहा था, और वह एक खुशमिजाज़ व्यक्ति था, भगवान से डरता था, और सब कुछ ठीक चल रहा था। वह अध्याय 29 है।

अध्याय 30 वर्तमान की असंगति का वर्णन करता है। यहां हमें अय्यूब का एक बहुत ही मार्मिक कथन मिलता है कि उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। जाहिर तौर पर वह सिर्फ गोबर के ढेर पर नहीं घूम रहा है; वह शहर और इस तरह की चीज़ों के आसपास है। लोग उसका तिरस्कार करते हैं और उसे अस्वीकार करते हैं। उसे हर तरह से बहिष्कृत कर दिया गया है। तो, वर्तमान की असंगति।

अय्यूब, अध्याय 31 में, अय्यूब अपनी अपेक्षाओं को संशोधित करके या न्याय पर अपना ध्यान केंद्रित करके नहीं, बल्कि सुसंगतता की तलाश करता है, वास्तव में उसे यही करना चाहिए, लेकिन वह

अभी तक वहां नहीं है। बल्कि, वह निर्दोषता की शपथ के माध्यम से भगवान का हाथ थामने की कोशिश करता है। यह रणनीति उसकी समृद्धि वापस पाने के लिए नहीं बनाई गई है, बल्कि हमेशा की तरह, पुष्टि प्राप्त करने के लिए बनाई गई है। लेकिन वह ऐसा दृष्टिकोण अपनाता है जिससे चुपचाप उसे पुष्टि मिलेगी।

संवादों से तुलना करें [2:39-5:29]

तो, आइए इसकी तुलना संवादों में जो हमने पाया था, उससे करें, बस यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम पुस्तक की अलंकारिक रणनीति पर नज़र रख रहे हैं। संवादों में, मित्र अय्यूब को सुसंगतता और संतुलन खोजने के लिए एक समाधान पेश कर रहे थे। वे यह जानने में उसकी मदद करने की कोशिश कर रहे थे कि उसका सामान कैसे वापस लाया जाए। लेकिन इसकी एक कीमत चुकानी पड़ी। इससे पता चलता कि उसकी धार्मिकता लाभ से प्रेरित थी। सुसंगति प्राप्त करने का यही तरीका होता। उनका विश्वदृष्टिकोण ब्रह्मांड को न्याय पर आधारित मानता था। ऐसी स्थिति में, जिस महान सहजीवन की हमने बात की है, उसे सर्व-उद्देश्यीय संतुलन के रूप में तुष्टीकरण के साथ अपनाकर सुसंगतता कायम रखी जा सकती है। यदि ईश्वर क्रोधित है, तो उसकी ज़रूरतें पूरी नहीं हो रही हैं, आप उसकी ज़रूरतें पूरी करें, और फिर वह प्रसन्न हो जाएगा, और वह आपकी देखभाल करने के लिए वापस आ जाएगा और आपकी समृद्धि बहाल कर देगा। तो, यह विचार कि अय्यूब की रणनीति तब, जैसा कि दोस्तों ने इसे चित्रित किया होगा, अय्यूब की रणनीति तुष्टीकरण का मार्ग खोजने, देवता का अनुग्रह पुनः प्राप्त करने, और उसकी समृद्धि और आशीर्वाद की बहाली के लिए होनी चाहिए। यही उनका समीकरण है।

यदि अय्यूब उस विशेष रणनीति के माध्यम से सुसंगतता हासिल कर लेता, तो उसे स्व-हित वाली धार्मिकता का परिप्रेक्ष्य अपनाना पड़ता। अर्थात्, यह सब लाभ के बारे में है, सब सामान के बारे में है। पुस्तक के संवाद खंड में अंतर्निहित मुद्दा यह था कि क्या अय्यूब की धार्मिकता में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

अय्यूब के प्रवचनों में फोकस बदल जाता है। वह संतुलन में सामंजस्य के लिए अपना रास्ता तलाशता है। वह मित्रों के सुझावों को अपनाने वाला नहीं है। उनका अपना मार्ग, अंतर्निहित मुद्दा

अब अधिक परिचित प्रश्न से संबंधित है: भगवान की नीतियों को धर्मी लोगों को पीड़ित होने की अनुमति क्यों देनी चाहिए? यदि अय्यूब के उद्देश्य पूरे हो जाते हैं, तो उसकी कार्यप्रणाली अनिवार्य रूप से इस निष्कर्ष पर पहुंचेगी कि भगवान की नीतियां असंगत हैं। इस प्रकार, ईश्वर की नीतियों को चुनौती जारी रहती है। संवाद अनुभाग में, अय्यूब ने प्रदर्शित किया कि उसकी धार्मिकता उसके लिए समृद्धि के लाभों से अधिक महत्वपूर्ण थी।

परमेश्वर की प्रतिष्ठा पर अय्यूब की धार्मिकता [5:29-6:39]

अय्यूब के इस प्रवचन में यह स्पष्ट हो जाता है कि उसकी धार्मिकता उसके लिए ईश्वर की प्रतिष्ठा से अधिक महत्वपूर्ण है। तो, अब यह एक समस्या है। वह ईश्वर के बजाय स्वयं पर आधारित सुसंगतता चाहता है। याद रखें जब हमने त्रिभुज के बारे में बात की थी? अय्यूब अपने ही कोने में अपना किला बनाता है, अपनी धार्मिकता, और यह उसे यह प्रश्न करने के लिए प्रेरित करता है कि ईश्वर क्या कर रहा है। अध्याय 31 में उसकी बेगुनाही की शपथ का उद्देश्य उसे दोषमुक्त करना है। उस पुष्टि में, वह बहाल सुसंगतता और संतुलन पाने की उम्मीद करता है। हालाँकि अय्यूब ने कभी भी अपनी समृद्धि वापस पाने में दिलचस्पी नहीं दिखाई। वह समुदाय में एक नेक व्यक्ति के रूप में अपनी स्थिति फिर से हासिल करने में रुचि रखता है। लेकिन यह अभी भी निःस्वार्थ धार्मिकता है क्योंकि यह धार्मिकता पर आधारित स्थिति है, सामान पर आधारित नहीं।

अय्यूब की मासूमियत की शपथ बनाम भगवान की चुप्पी (अय्यूब 31) [6:39-10:14]

तो आइये एक नजर डालते हैं बेगुनाही की इस शपथ पर. यह पुस्तक के सबसे महत्वपूर्ण अध्यायों में से एक है। अय्यूब जो करता है वह यह है कि वह उन चीजों की पूरी सूची देखता है जिनके बारे में वह कसम खाता है कि उसने ऐसा नहीं किया है। वे सभी प्रकार के अपराध या अपराध हैं जिन्हें ईश्वर के विरुद्ध और धार्मिक जीवन के विपरीत माना गया होगा। इस परिदृश्य में, जरूरी नहीं कि अय्यूब अपनी पूर्व समृद्धि को पुनः प्राप्त कर ले, लेकिन उसकी आशा है कि उसकी प्रतिष्ठा सही साबित होगी, और उसकी धार्मिकता का दावा कायम रहेगा।

यह कैसे काम कर रहा है? अय्यूब निराश हो गया है, यह शायद बहुत हल्का शब्द है, लेकिन वह परमेश्वर की चुप्पी से निराश हो गया है। याद रखें, संवादों के माध्यम से; वह भगवान से प्रार्थना करता रहा कि वह दरबार में आएँ, आएँ और बातचीत में शामिल हों। याद रखें, अय्यूब खुद को एक नागरिक मुकदमे में मुआवज़े की मांग करने वाले वादी के रूप में देखता है। और इसलिए, वह भगवान को अदालत में बुलाता रहता है। वह एक वकील, एक मध्यस्थ की माँग करता रहता है। वह यह टकराव चाहता है, और भगवान की चुप्पी बहरा कर रही है। भगवान जवाब नहीं देंगे। इसलिए, अय्यूब ईश्वर की चुप्पी से त्रस्त है क्योंकि जब तक उसके अनुभव इतने नकारात्मक रहेंगे और ईश्वर नहीं बोलता है, तब तक धारणा यह है कि अय्यूब अनुग्रह से बाहर है, कि उसे दंडित किया जा रहा है।

इसलिए, अय्यूब निर्दोषता की इस शपथ में ईश्वर की चुप्पी के प्रभाव को उलटने की कोशिश कर रहा है। जब वह अपनी बेगुनाही की शपथ लेता है, तो वह कसम खाता है कि उसने यह पूरी रेंज, लगभग व्यापक रेंज नहीं की है; उसने ये अपराध नहीं किये हैं। यह शपथ खाकर, वह गेंद को भगवान के पाले में फेंक रहा है क्योंकि शपथ खाकर, यदि भगवान को अपनी शपथ बरकरार रखनी है, तो भगवान को उसके खिलाफ कार्रवाई करनी होगी। दूसरे शब्दों में, वह ईश्वर को कार्रवाई के लिए बाध्य करने का प्रयास कर रहा है। अगर उसने इनमें से कोई भी काम किया है, तो उसे मार डालो, उसे मार डालो। इसका मतलब यह है कि यदि भगवान ने उसे मार नहीं डाला, तो उसे दोषमुक्त कर दिया जाएगा। यदि ईश्वर चुप रहे, तो वह पुष्टि का दावा कर सकता है। कितनी चतुर रणनीति है। वह ईश्वर के विरुद्ध काम करने के बजाय अपने फायदे के लिए ईश्वर या कम से कम ईश्वर की चुप्पी में हेराफेरी करने की कोशिश कर रहा है।

तो फिर, अय्यूब अपनी पूर्व समृद्धि को पुनः प्राप्त नहीं कर पाएगा, लेकिन यदि वह दावा कर सकता है कि उसे इस तथ्य से सही ठहराया गया है कि भगवान ने उसे मारा नहीं है और इस तरह दोषमुक्त कर दिया है, तो वह समुदाय में अपनी स्थिति और स्थिति को पुनः प्राप्त करने की उम्मीद कर सकता है। देखो यह कैसे काम करता है।

अय्यूब के अराजक प्राणी के रूप में भगवान [10:14-11:32]

इस स्तर पर सुसंगतता प्रतिशोध सिद्धांत में नहीं बल्कि अय्यूब की आत्म-धार्मिकता की व्यक्तिगत भावना में पाई जाती है। यदि अय्यूब इसमें जीत जाता है, यदि यह रणनीति काम करती है, तो इससे परमेश्वर की नीतियां नष्ट हो जाती हैं और उसकी प्रतिष्ठा धूमिल हो जाती है। यदि अय्यूब ईश्वर के साथ इस टकराव में जीत जाता है, तो ईश्वर एक शक्तिशाली प्राणी बनकर रह जाता है, जिसमें न तो ज्ञान होता है और न ही न्याय, वास्तव में, एक अराजक प्राणी।

अध्याय तीन में अय्यूब के विलाप को पूरी तरह से याद रखें, अय्यूब ने कहा था, आप मेरे साथ एक अराजक प्राणी की तरह व्यवहार क्यों कर रहे हैं? और अब वह इसे पलट देता है और भगवान के साथ एक अराजक प्राणी के रूप में व्यवहार कर रहा है।

यह उन नतीजों से भी बदतर है जो संवाद परिदृश्य से आ सकते थे। वहाँ ईश्वर को पूरे प्राचीन निकट पूर्व के देवताओं की तरह एक देवता में बदल दिया गया होगा, जो महान सहजीवन में भाग लेगा और लाभ देगा ताकि लोग उसकी ज़रूरतों का समर्थन करना जारी रखें। यह अच्छा नहीं होता।

भगवान की प्रतिष्ठा दांव पर [11:32-12:37]

लेकिन अय्यूब के परिदृश्य में, यदि अय्यूब इस रणनीति के माध्यम से जीत जाता है, तो ईश्वर बिल्कुल भी ईश्वर नहीं है। अय्यूब की बेगुनाही की शपथ मेज पर एक गंभीर कार्ड रखती है। भगवान की प्रतिष्ठा दांव पर है। अब यह अय्यूब की प्रतिष्ठा नहीं है। यह अय्यूब की प्रेरणा नहीं है। यह ईश्वर की प्रतिष्ठा और ईश्वर की प्रेरणा है। इस अर्थ में, अय्यूब के आरोप में ईश्वर, उसकी प्रतिष्ठा और उसकी नीतियों को चैलेंजर की तुलना में अधिक नुकसान पहुंचाने का खतरा है। यह एक गंभीर चुनौती है। जैसे-जैसे हम अन्य चर्चाओं पर काम करेंगे, हम यह देखना शुरू करेंगे कि इसका समाधान कैसे किया जाता है। इससे पहले कि हम ईश्वर की प्रतिक्रिया पर पहुँचें, हमें एलीहू पर सावधानीपूर्वक नज़र डालनी होगी, और हम अगले खंड में ऐसा करेंगे।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 18 है, जॉब का प्रवचन, जॉब 29-31। [12:37]

नौकरी की किताब

सत्र 19: अय्यूब 31.1, उसकी आँखों से वाचा

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 19, अय्यूब अध्याय 31:1, उसकी आँखों से वाचा है।

परिचय [00:25-1:19]

हम एलीहू का प्रवचन करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। लेकिन इससे पहले कि हम इसमें उतरें, मैं अय्यूब की मासूमियत की शपथ में एक विशिष्ट कविता से निपटना चाहता हूँ। मैं अध्याय 31:1 की बात कर रहा हूँ। एनआईवी अनुवाद करता है, "मैंने अपनी आँखों से एक वाचा बनाई है, कि मैं किसी युवा महिला को कामुक दृष्टि से नहीं देखूँगा।" यह उनकी श्रृंखला की शुरुआत करने के लिए एक दिलचस्प कविता है। और मैं यह सुनिश्चित करने के लिए इसे ध्यान से देखना चाहता हूँ कि हम समझें कि यह क्या कहता है। इस खंड के अधिकांश भाग के लिए, मैं वास्तव में अपनी टिप्पणी पढ़ूँगा। यह नौकरी की पुस्तक पर एनआईवी एप्लीकेशन कमेंट्री है। मैंने पहले इसका उल्लेख किया है। यह उस किताब से थोड़ा अधिक विस्तार में है जो मैंने ट्रैम्पर लॉन्गमैन के साथ लिखी थी जिसका नाम था 'हाउ टू रीड जॉब'। इसलिए, मैं इस परिच्छेद की हिब्रू को समझने की विशिष्टताओं के बारे में बात करना चाहता हूँ।

वाचा [1:19-148]

कविता एक अनुबंध के संदर्भ के साथ शुरू होती है, और यह वहां काफी मानक शब्दावली है। वाचा बनाने के लिए शब्द और वाचा के लिए शब्द वही हैं जो आपको बाइबिल के पाठ में कहीं और मिलेंगे। इसलिए, एक वाचा अक्सर एक जागीरदार के साथ किया गया एक समझौता होता है, और यह सब बताता है कि अय्यूब की नज़र में जागीरदारों के साथ ऐसा व्यवहार किया जा रहा है जैसे उन्हें नियंत्रण में लाया जा रहा हो। यह संविदा भाषा का जोर होगा।

एटबोनेन, वासना नहीं बल्कि "खोज" या "पूछताछ" [1:48-3:41]

चूँकि यह श्लोक यौन नैतिकता के बारे में एक स्पष्ट कथन प्रतीत होता है, इसलिए हमें विवरणों पर ध्यानपूर्वक विचार करना होगा। निषिद्ध गतिविधि का वर्णन करने वाली दूसरी पंक्ति में क्रिया *एटबोनन* है। यह *रूट बिन का हिथपेल रूप* है, जो पुराने नियम में 22 बार और जॉब की पुस्तक में आठ बार आता है। इनमें से अधिकांश उदाहरण किसी वस्तु की बारीकी से या सावधानीपूर्वक जांच का वर्णन करते हैं। केवल एक घटना में, भजन 37.10 वह क्रिया है जिसके बाद यह विशेष पूर्वसर्ग '*अल*' आता है। हिब्रू में यह महत्वपूर्ण है; अलग-अलग पूर्वसर्गों के साथ प्रयोग की जाने वाली क्रिया पूर्वसर्ग के आधार पर अलग-अलग अर्थ ले सकती है।

इसलिए, हम इस एक घटना को बहुत ध्यान से देखते हैं जहां इस क्रिया रूप के बाद इसी पूर्वसर्ग का उपयोग किया जाता है। वहां इसका तात्पर्य दुष्टों की तलाश करना है, लेकिन उस मामले में उन्हें ढूंढना नहीं; न तो यह उदाहरण और न ही हिथपेल फॉर्म की कोई अन्य घटना कोई यौन बारीकियां रखती है। इसे लाने के बारे में यह हमारे लिए एक चेतावनी होनी चाहिए।

एनआईवी संदर्भ के आधार पर इसके अनुवाद पर पहुंचा है, शब्द के अन्य उपयोगों के आधार पर नहीं। यह टकटकी की व्याख्या वासनापूर्ण के रूप में करता है क्योंकि इसकी वस्तु कुंवारी है। हिब्रू शब्द *बेतूलाह* है। लेकिन यह व्याख्या संतोषजनक ढंग से यह नहीं बताती है कि अय्यूब की नजर में निषेध, बेतूला तक ही सीमित क्यों है। यदि यौन नैतिकता वास्तव में मुद्दा है, तो इस अनुबंध का किसी भी महिला तक विस्तार करना अधिक स्वाभाविक होगा, चाहे उसकी स्थिति कुछ भी हो।

***बेतूला*: कुंवारी और/या अपने पिता के संरक्षण में महिला [3:41-5:20]**

बेतूलाह, फिर से, "कुंवारी" एक सामान्य अनुवाद है, लेकिन यह वास्तव में महिला की यौन स्थिति या स्थिति नहीं है जो *बेतूलाह* शब्द द्वारा *संप्रेषित* की जाती है। यह एक ऐसी महिला को संदर्भित करता है जो अपने पिता के संरक्षण में रहती है। बेशक, ज्यादातर मामलों में, इसका मतलब यह है कि उसे कोई यौन अनुभव या यौन मुठभेड़ नहीं हुई है। तो, वह कुंवारी है। लेकिन पुराने नियम में एक या दो घटनाएँ हैं जहाँ कोई व्यक्ति जिसने स्पष्ट रूप से यौन संबंध बनाए हैं वह अभी भी *बेतूलाह* है।

इसलिए हमें सावधान रहना होगा और हम शब्दावली को कैसे वर्गीकृत करते हैं। जरूरी नहीं कि शब्द उन्हीं श्रेणियों में आएँ, जैसे वे अंग्रेजी वर्गीकरण प्रणालियों में आते हैं। इसलिए, इस्राएलियों को किसी महिला को इस आधार पर वर्गीकृत करने में अधिक रुचि थी कि वह किसके संरक्षण में है, उसका कोई पति है या नहीं, उसने एक बच्चे को जन्म दिया है या नहीं, यह उनकी वर्गीकरण प्रणाली है, न कि यह कि उसने यौन संबंध बनाए हैं या नहीं नहीं, जो हमारी वर्गीकरण प्रणाली है।

तो, यह एक *ऐसा मामला है* जिसे अय्यूब नहीं देखेगा। यदि कोई लड़की अपने पिता के संरक्षण में रहती है, तो इसका मतलब है कि वह शादी के लिए एक व्यवहार्य उम्मीदवार है, और इस समय समाज सहज रूप से बहुविवाह वाला था। तो, यह विचार कि अय्यूब शादी के लिए एक महिला पर विचार कर रहा होगा, वही यहाँ व्यक्त किया जा रहा है।

माहक्या? [5:20-5:46]

इसलिए, इस क्रिया की बेहतर समझ तक पहुंचने के लिए, हमें नए सिरे से शुरुआत करनी होगी। अय्यूब ने अपनी आंखों के विषय में वाचा बान्धी है। इतना तो स्पष्ट है. कविता का दूसरा भाग एक सामान्य प्रश्नवाचक कण *माह से शुरू होता है*, जिसका हिब्रू में अर्थ है "क्या", हालांकि इस कण का अय्यूब द्वारा उपयोग पूरी किताब में सुसंगत है। अधिकांश अनुवाद इस विशेष मामले में इसे प्रस्तुत नहीं करना चुनते हैं।

भजन 37:10 का योगदान [5:46-7:51]

आमतौर पर, जॉब में, यह कण एक अलंकारिक प्रश्न प्रस्तुत करता है, जो यहाँ भी संभव लगता है। भजन 37.10, जिस श्लोक का हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, वह इस क्रिया और पूर्वसर्ग का उपयोग करता है, और पाठक को दुष्टों के स्थान को चारों ओर देखने के लिए निर्देशित करने के लिए इस श्लोक के समान क्रिया का उपयोग करता है। इसके संदर्भ में, यह निर्देश बताता है कि यदि कोई दुष्टों की स्थिति के बारे में परिश्रमपूर्वक पूछताछ करता है, तो खोज से कुछ भी नहीं मिलेगा। यदि हम इस अवलोकन को अय्यूब के कथन पर लागू करते हैं, तो इसका अर्थ इस प्रकार होगा: चूँकि मैंने अपनी आँखों के संबंध में एक वाचा बाँधी है, तो मुझे बेटुला के बारे में पूछताछ

करने में क्या दिलचस्पी होगी? यानी शादी के लिए उसकी उपलब्धता के बारे में जांच करना या पूछताछ करना। *बेटूला* के बारे में पूछताछ करना किसी वेश्या के बारे में पूछताछ करने के समान नहीं है। यदि पाठ वास्तव में वासना के विरुद्ध बोल रहा था, तो हम क्रिया *हमाद* के उपयोग की अपेक्षा करेंगे। यह अधिक संभावित विकल्प होगा। इसके अलावा, *बेटूला* आम तौर पर एक कुंवारी का संकेत देता है, लेकिन कौमार्य शब्द के मूल अर्थ के वास्तविक प्रतिनिधि की तुलना में अधिक परिस्थितिजन्य है। खास बात यह है कि *बेटूला* एक विवाह योग्य लड़की है जो अभी भी अपने पिता के घर में है और उनके संरक्षण में है। विवाह की व्यवस्था करने के लिए *बेतुलहा* से पूछताछ की जाएगी। ऐसी जाँच संभवतः वासना से प्रेरित हो सकती है; हम न्यायाधीशों 14:2 में सैमसन के बारे में सोचते हैं, लेकिन यह कई विकल्पों में से केवल एक है और स्वचालित रूप से अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। वास्तव में, किसी भी व्यवस्थित विवाह की शुरुआत *बेतुलाह के बारे में पूछताछ करने से होती है*।

हरम और रुतबा वासना नहीं मुद्दा है [7:51-9:25]

इस चर्चा के प्रकाश में, अय्यूब की आँखों के संबंध में उसकी वाचा को तपस्या के प्रति प्रतिबद्धता के रूप में नहीं समझा जा सकता क्योंकि उसकी पहले से ही एक पत्नी है। तार्किक विकल्प यह है कि कथन हरम के अधिग्रहण से संबंधित है। जब आप किसी पत्नी के बारे में पूछताछ करते हैं तो आप यही करते हैं। प्राचीन विश्व में एक बड़ा हरम शक्ति और स्थिति का सूचक था। अय्यूब कई पत्नियों और रखैलियों को इकट्ठा करने के विचार से दूर हो गया है, और वह इस बात को रेखांकित करने के लिए इस निर्णय को अपनी आँखों के संबंध में एक वाचा के रूप में चित्रित करता है कि वह शिकार पर भी नहीं है। यह प्रतिज्ञा अध्याय 31, श्लोक 24 और 25 में उनके कथन को प्रतिबिंबित करती है, कि वह धन की खोज में लीन नहीं हैं। अय्यूब ने न तो गरीबी का व्रत लिया है और न ही शुद्धता का व्रत लिया है, बल्कि वह प्रतिष्ठा की जुनूनी खोज से बचता है।

यह व्याख्या लेखक द्वारा चुने गए प्रत्येक शब्द का ध्यान रखती है और इसलिए सबसे संभावित व्याख्या प्रस्तुत करती है। तदनुसार, इस श्लोक का यौन नैतिकता से कोई लेना-देना नहीं है, चाहे वे कितने भी महत्वपूर्ण क्यों न हों। इसके बजाय, यह अय्यूब की कई घोषणाओं के अनुरूप है कि

उसने अपने पद पर बैठे किसी व्यक्ति के लिए लुभावनी कार्रवाई करके सत्ता को मजबूत करने या उसका दुरुपयोग करने का प्रयास नहीं किया है।

हिब्रू पाठ को ध्यान से पढ़ने का महत्व [9:25-9:57]

तो, हम पाते हैं कि कविता का पाठ जितना हमने सोचा था उससे थोड़ा अलग है। यही परिणाम हो सकता है जब हम हिब्रू पाठ को ध्यान से पढ़ने में संलग्न होते हैं और फिर यह देखने का प्रयास करते हैं कि तर्क के तार्किक प्रवाह के प्रकाश में हमें क्या मिलता है। यह हमें एक अलग दृष्टिकोण दे सकता है। अब हम एलीहू की ओर बढ़ने के लिए तैयार हैं।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 19, अय्यूब 31:1, उसकी आँखों से वाचा है। [9:57]

नौकरी की किताब

सत्र 20: एलीहू प्रवचन, अय्यूब 32-37

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 20, एलीहू प्रवचन, अय्यूब 32-37 है।

एलीहू प्रवचन का परिचय (अय्यूब 32-37) [00:24-2:02]

अब हम नवागंतुक एलीहू के पास पहुँचे। पुस्तक के व्याख्याकारों द्वारा उन्हें एक हस्तक्षेपकर्ता के रूप में देखा गया है, एक ऐसा व्यक्ति जो पुस्तक के प्रवाह में, यदि हो भी तो, मोटे तौर पर फिट बैठता है। लेकिन इस बारे में मेरा दृष्टिकोण अलग है। निश्चित रूप से, उन्हें एक हस्तक्षेपकर्ता के रूप में देखा जा सकता है, लेकिन मेरा मानना है कि उनकी भूमिका पुस्तक के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और पुस्तक के तर्क में योगदान के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

यहां तक कि उनका नाम भी दिलचस्प है। अन्य मित्रों के नाम वास्तव में हिब्रू नामों जैसे नहीं लगते। लेकिन एलीहू स्पष्ट रूप से है, और यह अर्थपूर्ण है - "वह मेरा भगवान है।"

याद रखें जब हमने त्रिभुज के बारे में बात की थी? हमने कहा कि एलीहू ने अपना किला परमेश्वर के कोने में बनाया है, और वह परमेश्वर की रक्षा कर रहा है। और इसलिए, उस अर्थ में, एलीहू वास्तव में थियोडिसी का काम कर रहा है, भगवान के न्याय की रक्षा कर रहा है। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, एलीहू पुस्तक में किसी भी अन्य मानव वक्ता की तुलना में अधिक सही है, लेकिन वह अभी भी सही नहीं है। वह अभी भी इस लक्ष्य पर नहीं है कि किताब आखिर में हमें कैसे सोचना चाहती है। वह एक तरह से खुद को एक युवा के रूप में प्रस्तुत करता है, कोई ऐसा व्यक्ति जो केवल चुप रहकर और अवलोकन करके अपने बुद्धिमान ऋषि जैसे साथियों का सम्मान करता रहा है। लेकिन अब उसके पास बोलने के लिए इतने शब्द हो गए हैं कि वह उन्हें रोक नहीं पाता।

एलीहू की भूमिका: अय्यूब की आत्म-धार्मिकता को उजागर करना [2:02-2:43]

और इसलिए, आइए 32 से 37 तक एलीहू के प्रवचन की भूमिका पर एक नज़र डालें। एलीहू पुस्तक में एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो अय्यूब के धार्मिक पहलू में एक विशिष्ट उल्लंघन से संबंधित एक विशिष्ट आरोप प्रस्तुत करता है। इसलिए, जहां दोस्त केवल यह सुझाव दे सकते हैं कि अय्यूब ने गलत किया होगा, निःसंदेह, अय्यूब ने पिछले अध्याय में अपनी बेगुनाही की शपथ ली है। एलीहू को एक विशिष्ट आरोप लगाना है, और यह अय्यूब की आत्म-धार्मिकता से संबंधित है।

एलीहू और अय्यूब की बेगुनाही की शपथ [2:43-3:53]

वैसे, इससे पहले कि हम इसमें बहुत आगे बढ़ें, हमें ध्यान देना चाहिए कि अय्यूब की बेगुनाही की शपथ के बाद सस्पेंस बरकरार है। अय्यूब ने अपनी बेगुनाही की शपथ लेकर परमेश्वर के सामने चुनौती पेश की है। और इसलिए, ईश्वर के साथ टकराव एक बहुत ही तीखे संघर्ष की ओर ले जा रहा है, और जब कथावाचक एक और चरित्र का परिचय देता है तो हम सस्पेंस के किनारे पर लटक जाते हैं। किताब में यह वास्तव में एक दिलचस्प तरह की रणनीति है कि जब हम व्यावहारिक रूप से अपनी सांसें रोक रहे होते हैं, यह देखते हुए कि यहोवा कैसे प्रतिक्रिया देगा, हमें एलीहू के भाषण मिलते हैं। और हम कहते हैं, क्या हो रहा है? क्या यह एक विज्ञापन है? तुम्हें पता है क्या हो रहा है। यह विघटनकारी लगता है। फिर, उनमें से कुछ को लगा कि यह वास्तव में विघटनकारी है, लेकिन मुझे लगता है कि यह सब पुस्तक के संकलनकर्ता की रणनीति का हिस्सा है। वह आपको इस बारे में थोड़ा जानने देगा कि क्या परमेश्वर अय्यूब को उत्तर देगा या नहीं। और इसलिए, इस बीच, एलीहू ने अपनी बात रखी।

एलीहू चैलेंजर के समानांतर [3:53-4:47]

पुस्तक के दूसरे भाग में एलीहू की भूमिका, कुछ मायनों में, पुस्तक के पहले भाग में चैलेंजर की भूमिका के समान है क्योंकि वह अय्यूब की धार्मिकता को देखने के लिए एक वैकल्पिक तरीका प्रस्तावित करता है। चैलेंजर ने सुझाव दिया कि अय्यूब की धार्मिकता को केवल समृद्धि के लाभों की खोज के रूप में देखा जा सकता है। एलीहू उस दिशा में नहीं जाने वाला है। वह सुझाव देने जा रहा है कि अय्यूब की धार्मिकता को देखने का वैकल्पिक तरीका आत्म-धार्मिकता है। चुनौती देने वाले ने

अय्यूब के इरादों पर सवाल उठाया, एलीहू वास्तव में अय्यूब की धार्मिकता पर सवाल उठाता है। पुस्तक में ऐसा करने वाला वह एकमात्र व्यक्ति है, जिसमें ईश्वर भी शामिल है।

एलीहू द्वारा प्रतिशोध सिद्धांत को निवारक के रूप में पुनः लागू करना [4:47-6:11]

यद्यपि एलीहू बुराई के आरोप से परमेश्वर का बचाव करता है, आप इसे अध्याय 34 में कई बार पा सकते हैं। वह 36:3 और 37:23 में परमेश्वर के न्याय का बचाव करता है। फिर भी वह प्रतिशोध सिद्धांत के मोटे प्रतिमान को स्वीकार करता है, जो अध्याय 34:11 और 36:11 और 12 है। इसलिए, भगवान पर बुराई का आरोप नहीं है। ईश्वर को न्याय करने वाले के रूप में देखा जाता है। फिर भी प्रतिशोध सिद्धांत सत्य है। अब, याद रखें कि हमने इस बारे में बात की थी कि जब हमने त्रिभुज के बारे में बात की थी तो एलीहू ने ऐसा कैसे किया? वह प्रतिशोध सिद्धांत को फिर से परिभाषित करता है, न कि केवल अतीत में की गई चीजों के लिए उपचारात्मक होना बल्कि आने वाली चीजों की आशंका के लिए निवारक होना। वह अय्यूब के उद्देश्यों के बारे में चुनौती देने वाले से सहमत है, यह 35:3 में है, और उसका प्रमुख मुद्दा यह है कि वह अय्यूब पर आत्म-धार्मिकता के पाप का आरोप लगाता है। वह उस पाप को ही अय्यूब के दुःख का कारण मानता है। आप इसे 34 श्लोक 35 से 37 में पा सकते हैं।

एलीहू ने अय्यूब पर आत्म-धार्मिकता का आरोप लगाया [6:11-8:04]

उनका तर्क यह है कि खुद के बचाव में अय्यूब की आत्म-धार्मिकता इतनी गंभीर है कि उसके खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई को उचित ठहराया जा सकता है। एलिहू भिन्नता एक निर्णय है जो अपराध के साथ आगे बढ़ सकता है क्योंकि इसका उद्देश्य आक्रामक व्यवहार को सामने लाना हो सकता है। तो, उस अर्थ में, यह लगभग वैसा ही है जैसे अय्यूब की पीड़ा उसे यह प्रकट करने के लिए उकसा रही होगी कि पर्दे के पीछे वास्तव में क्या चल रहा है। समस्या को प्रकट करने के लिए कष्ट आवश्यक था; एलीहू का जोर धार्मिकता पर है, न कि केवल महान सहजीवन पर, हालांकि वह सवाल करता है कि क्या भगवान को मानवीय धार्मिकता की आवश्यकता है। शायद यह उतना महत्वपूर्ण भी नहीं है।

अय्यूब के आत्मतुष्ट रवैये की निंदा करने में वह बिल्कुल सही है। हम इसे अय्यूब के भाषणों में और ईश्वर की कीमत पर अपनी रक्षा करने की अय्यूब की इच्छा में देख सकते हैं। यह अय्यूब और उसकी सोच की एक वैध आलोचना है। एलीहू उन चीज़ों को बाहर लाता है। लेकिन एलीहू अय्यूब की प्रेरणाओं के बारे में गलत है; एलीहू महान सहजीवन रवैये से घृणा करता है और मानता है कि अय्यूब अभी भी लाभ की इच्छा रखता है। अय्यूब ने भलीभांति प्रदर्शित किया है कि किसी भी कीमत पर समृद्धि उसके जीवन की प्रेरक प्रेरणा नहीं है। तो, इस तरह, एलीहू अय्यूब के बारे में गलत है।

एलीहू द्वारा परमेश्वर के न्याय की रक्षा [8:04-8:41]

एलीहू ईश्वर के बारे में सही है जब वह इस बात पर जोर देता है कि ईश्वर हमारे प्रति जवाबदेह नहीं है और उसके चरित्र के अन्य सभी पहलुओं के साथ उसका न्याय अपराजेय है। हम भगवान से सवाल नहीं कर सकते; हम भगवान से बेहतर काम नहीं कर सकते। हम उनके शासन पर सवाल उठाने की हिम्मत नहीं करते। ईश्वर आकस्मिक नहीं है, और हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि उसके कार्य हमारे मूल्यांकन या सुधार के अधीन हैं। इन बातों में एलीहू सही है। और फिर, वह ईश्वर के बारे में एक बहुत ही उचित उन्नत दृष्टिकोण देता है।

एलीहू की त्रुटिपूर्ण थियोडिसी [8:41-10:09]

साथ ही, वह भगवान की नीतियों की प्रकृति के बारे में गलत है। उसके पास अपर्याप्त थियोडिसी बनी हुई है, और वह थियोडिसी का प्रयास कर रहा है। उसे इस बात का एहसास नहीं है कि थियोडिसी के प्रयास में, वह उसी गलती का शिकार हो रहा है जिसके लिए वह अय्यूब पर आरोप लगाता है। यानी एलीहू न्याय के आधार पर सामंजस्य लाने की अपनी क्षमता को ज़्यादा आंक रहा है। एलीहू अभी भी त्रिकोण पर काम कर रहा है। वह इसे अपने उपयोग के लिए नया आकार देने की कोशिश करता है, लेकिन वह अभी भी त्रिकोण पर काम कर रहा है। वह अब भी सोचता है कि न्याय व्यवस्था की नींव है। वह अभी भी थियोडिसी में लगे हुए हैं। वह अब भी सोचता है कि सुसंगतता न्याय से आती है, और वह अब भी सोचता है कि वह एक सरल समीकरण बना सकता है। यह अय्यूब और उसके दोस्तों द्वारा उपयोग किए जा रहे समीकरण से थोड़ा अधिक जटिल है

क्योंकि यह प्रतिशोध सिद्धांत को फिर से परिभाषित करता है, लेकिन यह अभी भी इस विचार को व्यक्त करता है कि एक सरल न्याय समीकरण सुसंगतता ला सकता है। उस पर, वह गलत है। और उन चीज़ों पर हमारे दृष्टिकोण को समायोजित करने के लिए यहोवा के भाषणों की आवश्यकता होगी।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 20 है, एलीहू का प्रवचन, अय्यूब 32-37। [10:09]

नौकरी की किताब

सत्र 21: भगवान की वाणी 1 और अय्यूब की प्रतिक्रिया (अय्यूब 28-40:5)

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 21, भगवान का भाषण 1 और अय्यूब की प्रतिक्रिया, अय्यूब 38-40:5 है।

यहोवा के भाषणों का परिचय (अय्यूब 38-40:5) [00:28-1:52]

अब हम अंततः पुस्तक के सबसे महत्वपूर्ण भाग पर पहुँच गए हैं: यहोवा के भाषण। निस्संदेह, यह तीसरा प्रवचन खंड है। जब हमने सस्पेंस का अनुभव किया तो अय्यूब की बेगुनाही की शपथ हवा में लटकी हुई थी। और इसलिए, अब हम पाते हैं कि यहोवा आकर बोलने वाले हैं। इसकी शुरुआत इस बात से होती है कि प्रभु ने तूफ़ान, बवंडर में से अय्यूब से बात की। यह आम तौर पर भगवान की उपस्थिति की संगत है, लेकिन इसका यह भी अनुमान है कि जो कुछ हो रहा है उससे वह विशेष रूप से खुश नहीं है। निस्संदेह, हम पाते हैं कि ईश्वर हर किसी की सोच में सुधार लाता है।

दिलचस्प बात यह है कि वह अय्यूब की बेगुनाही की शपथ का जवाब नहीं देता है। इसलिए, इसका यह अर्थ नहीं लगाया जा सकता है कि अय्यूब ने परमेश्वर के सामने दबाव डाला है। वह अपने न्याय का बचाव नहीं करता, जो बहुत दिलचस्प है क्योंकि बाकी सभी ने न्याय पर आधारित व्यवस्था स्थापित की है।

गैर-आदेशित दुनिया में जटिलता [1:52-3:18]

तो, हमने जो पाया वह यह है कि इसके बजाय, वह एक पूरी तरह से अलग रणनीति अपनाता है, और वास्तव में, जब वह शुरू करता है, तो आपको आश्चर्य होता है कि वह कहाँ से आ रहा है। क्या चल रहा है? वह जो कर रहा है वह दुनिया की जटिलता को प्रदर्शित करने की कोशिश कर रहा है। यहां तक कि हम व्यवस्थित दुनिया की जटिलता की भी पुष्टि करेंगे। वह बहुत सारे मुद्दों से निपटता है जो बहुत किनारे पर हैं, व्यवस्थित दुनिया के चरम क्षेत्र हैं, ऐसी चीजें हैं जिन्हें मनुष्य बहुत अच्छी

तरह से नहीं समझते हैं। दुनिया की जटिलता दिखाकर, वह अय्यूब की अज्ञानता को प्रदर्शित कर रहा है कि यह कैसे काम करता है और इसे कैसे व्यवस्थित किया जाता है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि अय्यूब और उसके दोस्त इस आधार पर काम कर रहे हैं कि वे समझते हैं कि दुनिया कैसे व्यवस्थित होती है, और यह न्याय और प्रतिशोध सिद्धांत के अनुसार व्यवस्थित होती है। यहोवा अपने भाषण में जो करता है वह यह प्रदर्शित करता है, वास्तव में, वह दावा करता है कि वहाँ व्यवस्था है जहाँ लोगों ने सोचा कि वहाँ व्यवस्था नहीं है।

आदेश, गैर-आदेश और अव्यवस्था [3:18-5:45]

अब, इस बिंदु पर, मुझे कुछ समय लेने और अपनी शब्दावली समझाने की आवश्यकता है। मैं गैर-आदेश, आदेश और अव्यवस्था का उपयोग करता हूँ। गैर-व्यवस्था स्वभाव से बुरी नहीं है। कभी-कभी इसे अराजकता कहा जाता है, लेकिन यह अच्छा नहीं है क्योंकि इससे पता चलता है कि शायद कुछ मानवकृत है या कुछ ऐसा है जो स्वाभाविक रूप से बुरा है। गैर-आदेश तटस्थ है। अभी तक इसका ऑर्डर नहीं दिया गया है।

मैं एक ऐसी स्थिति के बारे में सोचता हूँ जहाँ आप एक नई जगह पर जा रहे हैं, और आप अपने सभी पैक-अप बक्से लाते हैं और उन्हें कमरे के चारों ओर रखते हैं, अपने नए घर में व्यवस्था लाने के लिए तैयार होते हैं। बक्से गैर-ऑर्डर का प्रतिनिधित्व करते हैं। कोई भी चीज़ उस तरह से काम नहीं कर रही है जैसे उसे करना चाहिए; कुछ भी उद्देश्यपूर्वक रखा या पहुंच योग्य नहीं है। यह सब बक्सों में पैक है, बिना ऑर्डर के, ऑर्डर करने के लिए तैयार है। उत्पत्ति 1 श्लोक दो में गैर-व्यवस्था से शुरू होती है, और भगवान के रचनात्मक कार्य व्यवस्था लाते हैं। अतः सृजन एक व्यवस्था लाने वाली प्रक्रिया है। नीतिवचन हमें बताते हैं कि ईश्वर बुद्धि के माध्यम से सृजन करता है, और बुद्धि, जैसा कि हम पहले ही बात कर चुके हैं, क्रम की खोज करना और चीजों को व्यवस्थित तरीके से समझना, चीजों को समझना है। तो, गैर-आदेश प्रक्रिया का प्रारंभिक भाग है।

वैसे, यह लगभग सभी प्राचीन निकट पूर्वी ब्रह्मांड विज्ञान में सच है। वे गैर-आदेश से शुरू करते हैं। फिर आपको ऑर्डर मिलेगा। जब ईश्वर उत्पत्ति में सृजन करता है, तो वह सभी गैर-व्यवस्था को भंग नहीं करता है; आखिरकार, बगीचे के अंदर एक आदेशित स्थान है और बगीचे के बाहर एक गैर-

आदेशित स्थान है। समुद्र अभी भी वहीं है, अव्यवस्थित। और इसलिए, भगवान एक इष्टतम आदेश लेकर आए हैं। जब वह कहता रहता है कि यह अच्छा है तो इसका यही मतलब है। यह इस व्यवस्थित प्रणाली में आवश्यकतानुसार कार्य कर रहा है। अधिकांश प्राचीन निकट पूर्वी लोग इसी प्रकार की अवधारणा के बारे में बात करते हैं; मिस्र में, हमारे पास मात की अवधारणा है, जो आदेश है।

प्राचीन विश्व के सभी प्रकार के साहित्य का केंद्र बिंदु यही है। ब्रह्माण्ड विज्ञान और कानून या शिलालेखों में अक्सर इस बारे में बात की जाती है कि राजा कैसे व्यवस्था लाता है। इसलिए, ऑर्डर बहुत महत्वपूर्ण है।

लेकिन अभी भी गैर-व्यवस्थित दुनिया मौजूद है। लोगों को व्यवस्था लाने में मदद करने के लिए भगवान की छवि में बनाया गया है। हम भगवान, उप-शासनकर्ताओं के साथ साझेदारी कर रहे हैं, व्यवस्था लाने की उनकी योजनाओं में भाग ले रहे हैं। तो, हमारे पास अभी भी दुनिया में गैर-व्यवस्था है और हमारे पास व्यवस्था है जैसा कि भगवान ने इसे लाया है।

लेकिन फिर एक तीसरा तत्व विकार है। मैं इसका उपयोग आदेश के विरुद्ध इन खतरों का वर्णन करने के लिए करता हूँ जो बुराई से उत्पन्न होते हैं। अव्यवस्था एक ऐसी चीज़ है जो स्वाभाविक रूप से बुराई है। तो, हम व्यवस्था, गैर-व्यवस्था और अव्यवस्था की दुनिया में रहते हैं।

नौकरी और गैर-आदेश और प्रतिशोध सिद्धांत [5:45-8:08]

अय्यूब और उसके दोस्तों ने सोचा है कि उनके जीवन में सभी अव्यवस्था, पीड़ा और उस तरह की चीजें अव्यवस्था और बुरे कार्यों से आती हैं; यह प्रतिकार सिद्धांत है। इसलिए, जैसा कि भगवान ब्रह्माण्ड के उन क्षेत्रों के बारे में बात करते हैं जो प्रदर्शित करते हैं कि गैर-आदेश के लिए भी आदेश है, यहां तक कि जिन चीजों को गैर-आदेशित माना जाता है उनमें भी आदेश है, वह दिखा रहे हैं कि वे हैं, अय्यूब और उसके दोस्त, कि वे नहीं हैं समीकरण बनाने के क्रम के बारे में वास्तव में पर्याप्त जानकार। तो, ऐसा करने में, भगवान एक सिद्धांत के आत्मविश्वासपूर्ण सूत्रीकरण का खंडन करते हैं जो दुनिया के संचालन को एक सरल प्रस्ताव, प्रतिशोध सिद्धांत तक सीमित कर देता है। इस प्रक्रिया में, वह इस विचार को खारिज कर देता है कि न्याय व्यवस्था की नींव है।

नौकरी 38 और गैर-आदेश [8:08-10:44]

हम देख सकते हैं कि जब हम अध्याय 38 में देखते हैं, जैसे वह क्रमबद्ध दुनिया के बारे में बात कर रहा है, और हम शुरू करते हैं, मुझे देखने दो, "क्या आपने पृथ्वी के विशाल विस्तार को समझ लिया है?" मैं श्लोक 18 में हूँ, " यदि तुम यह सब जानते हो तो मुझे बताओ। प्रकाश के निवास का मार्ग क्या है? अंधकार कहाँ रहता है? क्या तुम उन्हें उनके स्थानों पर ले जा सकते हो? क्या तुम उनके निवासों का मार्ग जानते हो? निश्चित रूप से तुम्हें पता है, क्योंकि तुम पहले ही पैदा हो चुके थे, तुम इतने साल जी चुके हो।"

वैसे, व्यंग्य की इस अंगूठी पर ध्यान दें। मैंने इस विचार का उल्लेख किया है कि यहोवा के भाषण भी साहित्यिक रचनाएँ हैं। मुझे नहीं लगता कि हमें ईश्वर को व्यंग्य करने वाला मानना चाहिए। बात को स्पष्ट करने के लिए यह उसके मुँह में डाला जाता है।

"क्या तू ने हिम के भण्डार में प्रवेश किया है, वा ओलों के भण्डार देखे हैं, जिन्हें मैं संकट के समय, और युद्ध के दिनों के लिये बचाकर रखता हूँ? जिस स्थान पर बिजली तितर-बितर होती है, उस स्थान का मार्ग क्या है? पूरब की हवाएँ पृथ्वी पर बिखरी हुई हैं?" ध्यान दें कि वह इन ब्रह्मांडीय परिचालनों के बारे में बात कर रहा है, और क्या आप जानते हैं कि वे कैसे काम करते हैं, अय्यूब? परन्तु देखो, विशेष रूप से पद 25, "जो मूसलाधार वर्षा के लिये नहर काटता है, और आंधी के लिये मार्ग काटता है, उस देश में जहाँ कोई नहीं रहता, वह निर्जन मरुभूमि है।" आप देखिए, प्रतिशोध का सिद्धांत न्याय है। व्यवस्था की नींव के रूप में न्याय व्यवस्था में वर्षा की भूमिका होती है। यह निर्णय ला सकता है, बाढ़ ला सकता है; यह समृद्धि ला सकता है, धरती पर उर्वरता ला सकता है और पौधे उगा सकता है।

भगवान एक बात कहते हैं; क्या तुमने ध्यान नहीं दिया कि जहाँ कोई नहीं रहता वहाँ वर्षा होती है? यहां न्याय व्यवस्था में बारिश नहीं चल रही है। भगवान निश्चित रूप से इसका इस तरह उपयोग कर सकते हैं। उन्होंने कुछ श्लोक पहले ही इस विचार का उल्लेख किया था कि वह मुसीबत के समय के लिए आरक्षित हैं। तो, भगवान उन चीज़ों का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन वे हमेशा न्याय प्रणाली में काम नहीं करते हैं।

विरोधाभासी प्रतिशोध सिद्धांत और न्याय आधार के रूप में [10:44-11:50]

और इसलिए, हम यहां पाते हैं कि ईश्वर अय्यूब को उसकी कुछ धारणाओं से वंचित कर रहा है क्योंकि वह उसे उसकी अज्ञानता से अवगत कराता है। यह सब दर्शाता है कि प्रतिशोध सिद्धांत यह समझने के लिए उपयुक्त सूत्र नहीं है कि दुनिया कैसे काम करती है।

इस पर अय्यूब की प्रतिक्रिया हमें अध्याय 40 के पहले छंदों में मिलती है। भगवान चुनौती देते हुए कहते हैं: "क्या जो सर्वशक्तिमान से झगड़ा करता है, वह उसे सुधारेगा? जो परमेश्वर पर दोष लगाता है, वह उसे उत्तर दे!" आगे खड़े रहो अय्यूब. अय्यूब ने उत्तर दिया, मैं अयोग्य हूं, मैं तुम्हें कैसे उत्तर दूं? मैं ने अपना हाथ अपने मुंह पर रख लिया। अय्यूब परमेश्वर के प्रश्नों का उत्तर देने में अपनी असमर्थता स्वीकार करता है। वह पर्याप्त नहीं है।

अज्ञान पर्याप्त नहीं है [11:50-12:56]

पुस्तक का लक्ष्य सिर्फ इतना ही नहीं है, "ठीक है, हम कुछ नहीं जानते।" कबूल की गई अज्ञानता हमें उन समाधानों तक नहीं ले जाती जो किताब पेश करती है। यह पुस्तक हमें इस बारे में दृढ़ विश्वास विकसित करने में मदद करना चाहती है कि दुनिया कैसे व्यवस्थित है और भगवान की नीतियों के बारे में कैसे सोचा जाए। निस्संदेह, हम पाते हैं कि अय्यूब ने स्वयं परमेश्वर के बारे में बुरा कहा है। भगवान उस पर उसे चुनौती देने जा रहे हैं। हम इसे अगले भाग में भगवान के दूसरे भाषण के परिचय के रूप में लेंगे, जो न केवल नकारात्मक चीजें लाएगा, जो हम नहीं जानते हैं, बल्कि यह कुछ सकारात्मक सलाह देगा, और यह ऐसा करेगा इन दो अद्भुत प्राणियों, बेहेमोथ और लेविथान के माध्यम से।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 21, भगवान का भाषण 1 और अय्यूब की प्रतिक्रिया, अय्यूब 38-40:5 है। [12:56]

नौकरी की किताब

सत्र 22: भगवान का भाषण 2, बेहेमोथ और लेविथान

और अय्यूब की प्रतिक्रिया (अय्यूब 40.6-41.34)

जॉन वाल्टन द्वारा

यह जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 22, परमेश्वर का भाषण 2, बेहेमोथ और लेविथान, और अय्यूब की प्रतिक्रिया, अय्यूब 40:6-41:34 है।

भगवान की वाणी 2 का परिचय [00:31-1:12]

अब हम अंततः यहोवा के दूसरे भाषण पर पहुँचते हैं। हम मनुष्यों की अज्ञानता से आगे बढ़कर वास्तव में इस विचार को प्राप्त करने जा रहे हैं कि लोगों को कैसे सोचना चाहिए। यह दिलचस्प है कि पुस्तक का यह मूल संदेश पुस्तक के उस हिस्से में है जिसे सबसे दुर्गम, सबसे भ्रमित करने वाला माना गया है, और मूल रूप से, लोग बस अपने हाथ ऊपर कर देते हैं और कहते हैं कि उन्हें नहीं पता कि इसके साथ क्या करना है। फिर भी, इसमें सटीक रूप से बताया गया है कि किताब हमें कैसे सोचना चाहती है। हम इसके साथ कुछ मजा करने जा रहे हैं।

यहोवा बोलता है [1:12-2:31]

चलो एक नज़र मारें। इसकी शुरुआत तब होती है जब भगवान अध्याय 40 के छठे छंद में अपना दूसरा भाषण प्रस्तुत करते हैं। और फिर, यहोवा तूफान के बीच से बोलते हैं। यहां याद रखें, यदि मैंने इसका उल्लेख नहीं किया है, तो यहोवा बोल रहा है। यह एलोहिम नहीं है। यह शादाई नहीं है। यह अडोनाई नहीं है। यह यहोवा बोल रहा है। प्रस्तावना में हमारे पास यहोवा थे, और अब अंत में हमारे पास यहोवा के भाषण हैं। फिर, यह हमें एक इज़राइली एहसास देता है। अय्यूब ने एल शदाई के बारे में बात की है, लेकिन यह यहोवा ही है जो स्पष्टीकरण देने आया है। और इसलिए, यह दिलचस्प है कि यहोवा बोल रहा है।

तो, हमने अय्यूब को इस संबोधन में उनकी पहली कुछ पंक्तियाँ पढ़ीं, "अपने आप को एक आदमी की तरह संभालो; मैं तुमसे सवाल करूंगा, और तुम मुझे जवाब दोगे" [40:7]। निःसंदेह, अय्यूब ही

प्रश्न पूछने वाला था। अय्यूब ही मांगें कर रहा है। अय्यूब यहोवा की चुप्पी से निपटने की कोशिश कर रहा है। और अब यहोवा उत्तर देने नहीं आता; वह सवाल करने आ रहा है।

तो, अय्यूब के पास अपने सभी प्रश्न थे, और अब, ऐसा कहा जा सकता है, मेज पर कोई भी प्रश्न नहीं बचा है। अय्यूब ने अपना हाथ अपने मुँह पर रख लिया है। तो, उसने अपने प्रश्न पूछना समाप्त कर दिया है। अब यहोवा उससे प्रश्न करेगा।

अय्यूब द्वारा परमेश्वर के न्याय पर प्रश्न उठाना [2:31-4:37]

श्लोक आठ बहुत महत्वपूर्ण है। वह कहता है, "क्या आप मेरे न्याय को बदनाम करेंगे? क्या आप खुद को सही ठहराने के लिए मेरी निंदा करेंगे?" तब हम देख सकते हैं कि यदि अय्यूब के भाषणों में यह स्पष्ट नहीं हुआ है, तो हम देख सकते हैं कि अय्यूब ने परमेश्वर के न्याय पर प्रश्न उठाया है।

यहोवा स्वयं ऐसा कहता है। तो फिर, हमें याद दिलाया गया है कि अय्यूब ने परमेश्वर की प्रतिष्ठा के साथ न्याय नहीं किया है। जो कुछ भी घटित हुआ, अय्यूब ने उस पर अच्छी प्रतिक्रिया नहीं दी।

अय्यूब ने परमेश्वर के प्रति अच्छी भावना व्यक्त नहीं की है। तो, यहाँ यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिया गया है। और अब परमेश्वर जो करता है वह अय्यूब को चुनौती देता है। "क्या तेरे पास परमेश्वर के समान भुजा है, क्या तेरी वाणी उसके समान गरज सकती है? अपने आप को महिमा और महिमा से सजाओ, और अपने आप को सम्मान और ऐश्वर्य का वस्त्र पहनाओ। अपने क्रोध की आग

भड़काओ।" यह ऐसा है मानो यहोवा कह रहा हो, "ठीक है, अय्यूब, एक दिन के लिए भगवान बनने की कोशिश करो। क्या तुम सच में सोचते हो कि तुम्हें यह पता चल गया है कि यह कैसे काम करता है? खैर, चलो देखते हैं कि यह सब कितनी अच्छी तरह काम करता है।" श्लोक 12, "जितने घमण्डी हैं उन सब पर दृष्टि करके उनको नम्र करो; दुष्टों को जहाँ वे खड़े हों, वहीं से कुचल डालो।" क्या आपको लगता है कि व्यवस्था इसी तरह काम करती है, न्याय एक बुनियाद के रूप में? वह कहते हैं, "यह देखने लायक होगा कि क्या आप वास्तव में इसे पूरा कर सकते हैं।"

लेकिन अब वह अपना ध्यान दो प्राणियों, बेहेमोथ और लेविथान पर केंद्रित करता है। उसने अय्यूब को अपनी धार्मिकता, अय्यूब की धार्मिकता, को परमेश्वर के न्याय पर सवाल उठाने का आधार मानने के लिए फटकारा। वह दुनिया पर न्याय थोपने की अय्यूब की क्षमता को अलंकारिक रूप से

चुनौती देता है, है ना? अय्यूब सोचता है कि ईश्वर यही करता है--प्रतिशोध सिद्धांत। ईश्वर ने अय्यूब को दुनिया पर न्याय थोपने की चुनौती दी।

बेहेमोथ और लेविथान की पहचान [4:37-5:44]

और इसलिए, लोगों की वांछित मुद्रा को संबोधित करने के लिए, उन्होंने बेहेमोथ और लेविथान इन पात्रों का परिचय दिया। आइए उनकी पहचान के बारे में बात करके शुरुआत करें। वे न तो ज्ञात प्राकृतिक प्रजातियाँ हैं और न ही अब विलुप्त हो चुकी हैं। मैं इसके बारे में अधिक विस्तार में नहीं जा रहा हूँ, लेकिन जब हम इन प्राणियों की विशेषताओं की जाँच करते हैं तो यह वास्तव में बहुत स्पष्ट हो जाता है। वे हमारे द्वारा ज्ञात किसी भी चीज़ से मेल नहीं खाते हैं। लेविथान में जिस तत्व का किसी भी जैविक या विलुप्त प्रजाति से मिलान करना सबसे कठिन है, वह है आग में सांस लेना। हम वास्तव में किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानते जो ऐसा करता हो, किसी प्राणी को जो ऐसा करता हो। और इसलिए, उस अर्थ में, हमें कहीं और देखना होगा।

अराजक जीव [5:44-11:07]

मेरा प्रस्ताव है कि वे अराजक प्राणी हैं। अराजक जीव प्राचीन निकट पूर्व में एक प्रसिद्ध श्रेणी हैं और प्राचीन दर्शकों द्वारा बहुत आसानी से पहचाने जाने योग्य हैं। वे अराजक प्राणियों के बारे में ठीक-ठीक जानते हैं। लेविथान एक ज्ञात अराजक प्राणी है, न केवल हिब्रू बाइबिल में अन्य स्थानों पर बल्कि उगारिटिक ग्रंथों में भी।

अराजक जीव सीमांत प्राणी हैं जो व्यवस्थित दुनिया की परिधि पर मौजूद होते हैं, लगभग एक पैर और एक पैर बाहर की तरह। वे सर्वोत्कृष्ट प्राणी हैं जिनकी अमूर्त विशेषताएं ज्ञात जानवरों द्वारा साझा की जाती हैं। यह विचार कि कुछ लोगों ने बेहेमोथ में दरियाई घोड़े की कुछ झलक या लेविथान में मगरमच्छ की कुछ झलक देखी है, केवल इतना ही बताता है कि दरियाई घोड़ा या मगरमच्छ, एक तरह से बेहेमोथ या लेविथान की संतान होगी। उनके दल और यह नहीं कि बेहेमोथ वास्तव में एक दरियाई घोड़ा है या कि लेविथान वास्तव में एक मगरमच्छ है।

अराजक प्राणियों की श्रेणी, जैसा कि मैंने कहा, किनारे पर रहने वाले सीमांत प्राणियों से आबाद है, जैसे कि कोयोट या उल्लू या शतुरमुर्ग या लकड़बग्घा, साथ ही डरावने जानवर जो केवल कल्पना

की आँखों में देखे जाते हैं। दोनों प्रकार अराजक प्राणियों की इस श्रेणी में हैं। बाद वाला समूह, ये डरावने जानवर, पूरी तरह से प्राणीशास्त्रीय नहीं हैं। वास्तव में, वे अक्सर मिश्रित प्राणी होते हैं। तो, शेर का सिर, बाज के पंख, ग्रिफ़िन जैसे या स्फिंक्स जैसे जीव। और इसलिए, अराजक प्राणी अक्सर मिश्रित होते हैं, लेकिन हमेशा नहीं।

अराजक प्राणियों को भगवान द्वारा बनाया गया माना जाता है। हम इसे विशेष रूप से उत्पत्ति 1, महान समुद्री जीवों और 1:21 में देखते हैं। लेकिन वे गैर-ऑर्डर जारी रखने की क्षमता का प्रतिनिधित्व करते हैं, जैसे कि बगीचे के बाहर कम ऑर्डर वाले क्षेत्र में कांटे और थिसल। कांटे और थीस्ल गैर-व्यवस्था का प्रमाण हैं, फिर भी वे आंशिक रूप से व्यवस्थित दुनिया में हैं।

जब भजन 104 में भगवान लेविथान के बारे में बात करते हैं, तो उन्होंने लेविथान को उसके साथ खेलने के लिए बनाया। जब उत्पत्ति 1:21 में बड़े समुद्री जीवों का उल्लेख किया गया है तो वे परमेश्वर की रचना का हिस्सा हैं। वास्तव में, उत्पत्ति वापस आती है और " *बरा*" शब्द का उपयोग उत्पत्ति 1 में पहली बार श्लोक 1 के बाद से इसे विशेष रूप से समुद्री राक्षसों से जोड़ने के लिए करती है, बस यह स्पष्ट करने के लिए कि वे भी आदेशित का हिस्सा हैं प्रणाली। इसलिए, एक अर्थ में, हम उन्हें ब्रह्मांड-विरोधी प्राणी कह सकते हैं। वे एक तरह से ब्रह्मांड के विरुद्ध काम करते हैं, लेकिन वे सख्ती से गैर-आदेश के दायरे में नहीं हैं। वे व्यवस्थित दुनिया का हिस्सा हैं, लेकिन वे अपने नासमझ स्वभाव के कारण गैर-व्यवस्था के एजेंट के रूप में काम करते हैं। अराजक प्राणी नैतिक रूप से बुरे नहीं होते हैं, लेकिन वे गंभीर नुकसान पहुंचा सकते हैं क्योंकि वे सिर्फ अपनी प्रवृत्ति से काम करते हैं।

तो, एक अर्थ में, हम तुलना कर सकते हैं कि हम बवंडर के बारे में कैसे सोच सकते हैं। यह नैतिक रूप से बुरा नहीं है, लेकिन यह गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है क्योंकि यह वही करता है जो बवंडर करता है। तो फिर, अराजक जीव ईश्वर के दुश्मन नहीं हैं, लेकिन वे मनुष्यों के बीच तबाही मचा सकते हैं।

जिस प्रकार समुद्र गैर-व्यवस्था के दायरे में है, उसी प्रकार इसकी सीमा निर्धारित करके इसे ईश्वर द्वारा नियंत्रित किया जाता है। ये जीव किसी भी दृष्टि से पालतू नहीं हैं। फिर भी वे परमेश्वर के नियंत्रण में हैं।

बेहेमोथ वास्तव में "मवेशी" शब्द का बहुवचन है, और यह कल्पना करने योग्य सबसे शक्तिशाली भूमि जानवर को संदर्भित करता है। यह एक प्रकार से भूमि के जानवरों का अमूर्तन है।

लेविथान सबसे शक्तिशाली समुद्री जीव होगा जिसकी कल्पना की जा सकती है। और इसलिए, पाठ अराजक प्राणियों को चित्रित करने के लिए इनका उपयोग करता है। और फिर, दरियाई घोड़ा और मगरमच्छ निश्चित रूप से खतरनाक हैं, और उन्हें आम तौर पर इन जैसे अराजक प्राणियों के अंडे या अनुचर माना जा सकता है।

साहित्यिक पात्रों के रूप में बेहेमोथ और लेविथान की भूमिका [11:07-12:06]

अब, यह कहने के बाद, हमें यह पहचानना चाहिए कि प्राणियों की पहचान उनकी साहित्यिक भूमिका को पहचानने जितनी महत्वपूर्ण नहीं है जितनी कि पुस्तक में पात्रों की है। प्राचीन दर्शकों ने बेहेमोथ और लेविथान को पहचान लिया होगा। उनसे उनकी पहचान जुड़ी होगी। लेकिन इसके बावजूद, पुस्तक के लेखक द्वारा बेहेमोथ और लेविथान को पात्रों, साहित्यिक पात्रों के रूप में उपयोग किया जा रहा है जिनकी पुस्तक में एक भूमिका और एक उद्देश्य है। यदि हम इन साहित्यिक पात्रों का उपयोग करके पुस्तक के आधिकारिक संदेश को समझने जा रहे हैं, तो हमें पहचान के विवादों से परे देखना होगा कि उनका उपयोग कैसे किया जाता है।

नौकरी में अन्यत्र अराजक जीव [12:06-14:08]

पुस्तक में कई अवसरों पर अराजक प्राणियों का उल्लेख किया गया है। तो, किताब पढ़ते हुए, हम उन्हें पहले ही देख चुके हैं। अध्याय तीन में अय्यूब का विलाप 3:8 में उन लोगों के बारे में बताया गया जो लेविथान से मुकाबला करने के लिए तैयार थे। एलीपज को अय्यूब की पहली प्रतिक्रिया में पूछा गया कि परमेश्वर उसके साथ अराजक प्राणी के रूप में व्यवहार क्यों कर रहा है। वह 7:12 में है। वहां वह हिब्रू शब्द *तैनिम का उपयोग करता है*, जो उत्पत्ति 1:21 में वही हिब्रू शब्द है। अय्यूब को ऐसा लगता है जैसे उसके साथ एक अराजक प्राणी के रूप में व्यवहार किया जा रहा है क्योंकि

भगवान उसे सुरक्षा में रख रहा है। अब यह प्राचीन निकट पूर्व में हम जो जानते हैं, उससे मेल खाता है। प्राचीन निकट पूर्व में देवताओं को आंशिक रूप से पालतू जानवरों को पट्टे पर रखने और उन्हें अपने उद्देश्यों के लिए उपयोग करने के लिए जाना जाता था, भले ही वे गैर-आदेश के इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे। तो, अध्याय 30, श्लोक 15 से 23 में अय्यूब सुझाव देता है कि ईश्वर स्वयं एक अराजक प्राणी की तरह कार्य कर रहा है।

परमेश्वर अय्यूब के साथ एक अराजक प्राणी के रूप में व्यवहार नहीं कर रहा है, जितना कि वह अय्यूब से बेहेमोथ की भूमिका में आने के लिए कह रहा है। ईश्वर किसी अराजक प्राणी की तरह कार्य नहीं कर रहा है। इसके बजाय, वह लेविथान से कहीं बेहतर है और उसे उसी रूप में पहचाना जाना चाहिए। मेरा मानना है कि अब यह परिचय दे रहा है कि पाठ में बेहेमोथ और लेविथान का उपयोग कैसे किया जा रहा है। फिर से, अय्यूब ने ईश्वर पर अराजक प्राणी की तरह कार्य करने का आरोप लगाया है, और ईश्वर कहते हैं, "ओह, नहीं, यह उससे भी बदतर है। यह उससे भी बड़ा है।" और इसलिए, जैसा कि हम देखते हैं कि जो कहा जा रहा है, हम उसे समझाएंगे। हमें बेहेमोथ और लेविथान का विश्लेषण उनकी पहचान के लिए नहीं बल्कि उनकी साहित्यिक भूमिका के लिए करने की आवश्यकता है।

बेहेमोथ और अय्यूब की तुलना [14:08-16:08]

इसलिए, जब हम अध्याय 40, पद 15 खोलते हैं, तो परमेश्वर अय्यूब का ध्यान बेहेमोथ की ओर निर्देशित करता है। "बेहेमोथ को देखो," और फिर अगली पंक्ति पर ध्यान दो। "बेहेमोथ को देखो, जिसे मैं ने तुम्हारे साथ मिलकर बनाया है।" अय्यूब और बेहेमोथ को एक साथ समूहीकृत किया गया है। भगवान ने दोनों को बनाया है। यह दिलचस्प है कि जब हम बेहेमोथ से संबंधित उस संक्षिप्त खंड को देखते हैं, तो यह श्लोक 24, फिर 15 से 24 तक जाता है। यहोवा न तो अय्यूब के बारे में और न ही स्वयं बेहेमोथ के लिए कुछ भी करने की बात करता है। श्लोक 15 में, बेहेमोथ संतुष्ट और पोषित है, जैसा कि अय्यूब था। आपको याद है 15 ने तुलना प्रस्तुत की थी। इसलिए, बेहेमोथ अय्यूब की तरह संतुष्ट और पोषित है। 16 से 18 में, परमेश्वर ने बेहेमोथ को वैसे ही मजबूत बनाया जैसे उसने अय्यूब को बनाया था। 40 आयत 19 में, बेहेमोथ अपनी तरह के लोगों में पहले स्थान पर है, जैसा कि

अय्यूब करता है। इसकी पहचान 15 :7 में की गई थी। पद 20 में, बेहेमोथ की देखभाल की जाती है, जैसे अय्यूब की थी। अध्याय 40 के 21 से 22 में, बेहेमोथ को अय्यूब की तरह आश्रय दिया गया है। 23 में, अब यह 23 और 24 में परिवर्तन करना शुरू कर रहा है, जो बेहेमोथ खंड का अंत है। 23 में, बेहेमोथ उग्र नदी से चिंतित नहीं है। अनुमान या निहितार्थ बल्कि है, और न ही आपको होना चाहिए। वह भरोसा करता है और सुरक्षित है, जैसा आपको होना चाहिए। उसे पकड़ा या फंसाया नहीं जा सकता, जिसके प्रति आपको भी अजेय होना चाहिए और खुद को प्रतिरोधी दिखाना चाहिए। श्लोक 24 इस बारे में बात करता है "क्या कोई उसे आँखों से पकड़ सकता है, या फँसा सकता है और उसकी नाक छेद सकता है?" "नाक" शब्द क्रोध का शब्द है। " और छेदा नहीं जा सकता" यह पाठ में एक कठिन शब्द है; इसका अर्थ कभी-कभी "नामांकित" या "नामित" या "प्रवेशित" होता है। तो फिर, विचार यहाँ है जिसके प्रति आपको अजेय होना चाहिए।

बेहेमोथ की तुलना अय्यूब से की जा रही है। इसका परिचय ठीक पहले श्लोक में दिया गया है। उसके बाद हम बेहेमोथ के बारे में जो कुछ भी पढ़ते हैं, हमें उसकी तुलना अय्यूब से करनी चाहिए। इस प्रकार यह अनुभाग कार्य कर रहा है। तो अय्यूब को बेहेमोथ जैसा होना चाहिए। याद रखें अय्यूब ने शिकायत की थी, "आप मेरे साथ एक अराजक प्राणी की तरह व्यवहार कर रहे हैं।" यहाँ, भाषण में कहा गया है, "ठीक है, आपको इस संबंध में थोड़ा अधिक अराजक प्राणी की तरह होना चाहिए।" हम उस पर वापस आएंगे।

यहोवा लेविथान से भी महान है [16:08-22:44]

आइए लेविथान की ओर मुड़ें। एक लंबा अनुभाग, और आइए फिर से इस पर ध्यान दें कि यह क्या कहता है और क्या नहीं कहता है। पहले आठ छंद दूसरे व्यक्ति रूप का उपयोग करते हैं। "क्या आप यह कर सकते हैं? क्या आप वह कर सकते हैं?" दूसरे व्यक्ति के रूप में है। इस बात पर ध्यान केंद्रित करना कि अय्यूब लेविथान के साथ क्या कर सकता है और क्या नहीं।

थोड़े से के साथ, मैं इस विचार के बारे में थोड़ा से अधिक सोचता हूँ: यदि आप लेविथान के साथ ये चीजें नहीं कर सकते हैं, तो उसे मछली के कांटे से खींच लें, उसकी जीभ को बांध दें, उसकी नाक के माध्यम से एक रस्सी डाल दें, ठीक है। क्या यह दया की भीख मांगेगा? क्या यह आपके साथ

नरमी बरतेगा? क्या आप इसके साथ कोई समझौता कर सकते हैं? क्या आप इसका एक पालतू जानवर बना सकते हैं? यदि आप लेविथान के साथ ऐसा नहीं करेंगे, तो आप यहोवा के साथ ऐसा करने की अपेक्षा क्यों करेंगे? आप उसे फंसाने की उम्मीद क्यों करेंगे? उसकी जुबान बंद करो, उसके साथ एक समझौता करो और उसे पालतू बनाओ। आप ऐसा क्यों करेंगे?

दूसरे व्यक्ति पर स्विच करने से पता चलता है कि लेविथान की तुलना यहोवा से की जानी है। तो, 41:3, "क्या यह आपसे दया की भीख मांगता रहेगा?" अय्यूब एक तरह से यही चाहता था कि परमेश्वर ऐसा करे। श्लोक 10 और 11, "कोई भी इतना उग्र नहीं है कि उसे भड़का सके। फिर कौन मेरे विरुद्ध खड़ा हो सकता है? मुझ पर किसका दावा है कि मुझे भुगतान करना होगा?" यहोवा स्वयं अपने और लेविथान के बीच संबंध बनाता है। इतना नहीं कि वह लेविथान जैसा है, बल्कि इसलिए कि वह लेविथान से बहुत बड़ा है। यदि आप लेविथान के प्रति इस तरह से कार्य नहीं कर सकते, तो आप क्यों सोचेंगे कि आप यहोवा के प्रति इस तरह से कार्य कर सकते हैं?

यह खंड कभी भी इस बारे में बात नहीं करता है कि भगवान लेविथान के साथ क्या करता है। फिर भी बहुत सारे व्याख्याकार उस दिशा में चले गए हैं। यह लेविथान पर यहोवा के नियंत्रण के बारे में बात नहीं करता है। यह यहोवा द्वारा लेविथान को पराजित करने के बारे में बात नहीं करता है। हमारे यहां एक अलग तरह का बयान दिया जा रहा है।

अध्याय 41 में, जैसे ही हम इस जानकारी के माध्यम से आगे बढ़ते हैं, लेविथान को नियंत्रित नहीं किया जा सकता है, और न ही यहोवा को। लेविथान समर्पण नहीं करेगा या दया की भीख नहीं मांगेगा; यहोवा भी नहीं करेगा। लेविथान को घायल या वश में नहीं किया जा सकता। उसके विरुद्ध संघर्ष करना निराशाजनक है। यहोवा के लिए भी यही सच है।

हमने 10 और 11 में स्पष्ट तुलना पढ़ी; तुम्हारे समेत किसी का भी मेरे खिलाफ दावा नहीं है, अय्यूब। 12 से 18 में, आप लगाम पाने के लिए उसका मुंह जबरदस्ती नहीं खोल सकते। क्या हमें वह मिलता है? अय्यूब क्या करने का प्रयास कर रहा है? वह यहोवा का दोहन करने और उस पर लगाम लगाने की कोशिश कर रहा है। यहोवा को नियंत्रित या पालतू नहीं बनाया जा सकता। वह वश में नहीं है।

19 से 25 तक, क्रोधित होने पर लेविथान खतरनाक होता है, जैसे यहोवा है। 26 से 32 तक, लेविथान

अजेय है, जैसे यहोवा है। श्लोक 33, कोई भी प्राणी उसके बराबर नहीं है। निस्संदेह, इसका तात्पर्य यह है कि अय्यूब लेविथान के बराबर नहीं है, यहोवा के बराबर होने की बात तो दूर की बात है। पद 34 लेविथान उन सब पर प्रभुता करता है जो घमंडी हैं। इसकी तुलना 11 से 14 में इस भाषण की शुरुआत से करें, जहां भगवान अय्यूब से कहते हैं, तुम्हें पता है, अपने आप को हथियारबंद करो, जो बुरे हैं उन पर हावी हो जाओ। यह लेविथान है जो उन सभी पर हावी है जो घमंडी हैं। अध्याय 40, श्लोक 11 और 12 में अय्यूब घमंडी को नीचा नहीं दिखा सकता। न ही वह घमंडी पर राजा को वश में कर सकता है, 41:34। ईश्वर उस अर्थ में अभिमानियों का राजा भी है। वह उन पर शासन करता है। यह सब चर्चा करता है कि अय्यूब लेविथान के साथ क्या नहीं कर सकता। ये ऐसी चीज़ें भी हैं जो अय्यूब को सीखनी चाहिए जो वह यहोवा के साथ नहीं कर सकता। तो, अय्यूब को क्या सीखना चाहिए, और यह वही है जो हम सभी को सीखना चाहिए, हम ईश्वर को पालतू नहीं बना सकते।

पुस्तक के संदेश में अराजक प्राणियों की भूमिका [22:44-24:19]

तो, पुस्तक के संदेश में इन प्राणियों की भूमिका, सबसे पहले, उन्हें लौकिक बुराई के अवतार के रूप में चित्रित नहीं किया गया है। एक दुभाषिया ने तो यह भी सुझाव दिया है कि वे पुस्तक की शुरुआत में चैलेंजर के समकक्ष हैं। मैं इसे इसके लगभग बिल्कुल विपरीत रूप में देखता हूं। किसी भी प्राणी को दुष्ट के रूप में वर्णित नहीं किया गया है, न ही प्राणी *हसतन*, *चुनौती देने वाले* का प्रतिनिधित्व करता है, और न ही वे शुरुआती अध्यायों से चुनौती देने वाले की भूमिका या स्थिति लेते हैं। उनका वर्णन इस तरह से नहीं किया गया है कि वे दुनिया में व्यवस्था के लिए खतरों को वश में करने और लौकिक न्याय लाने की ईश्वर की क्षमता के प्रमाण के रूप में काम कर सकें। पाठ उनके साथ वैसा व्यवहार नहीं करता है। यह उन्हें उस तरह से प्रस्तुत नहीं करता है।

ईश्वर द्वारा उन्हें वश में करने का कोई संदर्भ नहीं है। तो, वे ईश्वर को वश में करने, आदेश न देने की गवाही के रूप में कैसे खड़े हो सकते हैं? हमें पाठ में जो कहा गया है उसके अनुरूप चलना होगा। लौकिक न्याय न तो अधर में लटका हुआ है और न ही यहोवा जो करने को कहा गया है उसका परिणाम है। पुस्तक इस बात पर जोर नहीं देती है कि ईश्वर संपूर्ण ब्रह्मांड या मानवीय अनुभव के

लिए न्याय लाता है। किताब यह दावा नहीं करती. यही वह दावा है जो अय्यूब और उसके दोस्त प्रतिशोध सिद्धांत के माध्यम से करना चाहते थे।

न्याय के बारे में नहीं [24:19-24:52]

यहोवा के पहले भाषण ने संकेत दिया कि अय्यूब को कैसे नहीं सोचना चाहिए। दूसरा भाषण इंगित करता है कि अय्यूब को कैसे सोचना चाहिए। किसी भी भाषण में यहोवा अय्यूब की धार्मिकता या उसके स्वयं के न्याय को संबोधित नहीं करता है। इसमें एक स्पष्ट संदेश के सबसे करीब है, जो कि हम यहोवा के चरम भाषण में अपेक्षा करते हैं।

इंसानों को बेहेमोथ की तरह भरोसा करना चाहिए [24:52-25:47]

बेहेमोथ के संबंध में बताई गई बात बढ़ते पानी में इसकी स्थिरता से संबंधित है। बेहेमोथ धर्मी नहीं है। लेविथान बस नहीं है। बेहेमोथ को स्थानांतरित नहीं किया जा सकता। लेविथान को चुनौती नहीं दी जा सकती। यहोवा उन्हें पराजित नहीं करता या उन पर अपनी श्रेष्ठता दिखाने के लिए उनका दोहन नहीं करता। इनका उपयोग चित्रण के रूप में किया जाता है जिससे मनुष्य कुछ महत्वपूर्ण सबक सीख सकते हैं। मनुष्यों को उफनती नदियों का जवाब सुरक्षा और विश्वास के साथ देना चाहिए, जैसा कि बेहेमोथ इस साहित्यिक प्रस्तुति में करता है।

मनुष्यों को यह नहीं सोचना चाहिए कि वे यहोवा को वश में कर सकते हैं या उसे चुनौती दे सकते हैं क्योंकि वे लेविथान को चुनौती या वश में नहीं कर सकते हैं, जो यहोवा से हीन है।

मनुष्य लेविथान या ईश्वर को वश में नहीं कर सकता; अय्यूब की प्रतिक्रिया [25:47-27:10]

अध्याय 42 में अय्यूब की दूसरी प्रतिक्रिया, श्लोक दो से छह तक, दर्शाती है कि वह यहोवा द्वारा बताए गए बिंदुओं को समझता है। मैं इसे जल्दी से पढ़ूंगा. "मैं जानता हूँ कि तुम सब कुछ कर सकते हो, तुम्हारा कोई भी उद्देश्य विफल नहीं हो सकता।" फिर, इसका मतलब यह है कि अय्यूब उसे वश में नहीं कर सकता या अय्यूब के अपने उद्देश्यों के लिए उसे पालतू नहीं बना सकता।

"आपने पूछा, 'यह कौन है जो बिना ज्ञान के मेरी योजनाओं को अस्पष्ट कर देता है?'" यहां भगवान की योजनाओं को अस्पष्ट करने पर ध्यान दें; अय्यूब ने ईश्वर की योजनाओं को अस्पष्ट कर दिया

क्योंकि उसने संकेत दिया कि ईश्वर की योजनाएँ ब्रह्मांड को न्याय के अनुसार व्यवस्थित करने के लिए प्रतिशोध सिद्धांत को लागू करने की थीं। यह परमेश्वर की योजनाओं को संबोधित करता है। जो ज्ञान के बिना परमेश्वर की योजनाओं को अस्पष्ट करता है। "निश्चित रूप से मैंने उन चीज़ों के बारे में बात की जो मुझे समझ में नहीं आई, वे चीज़ें मेरे लिए जानने के लिए बहुत अद्भुत थीं।"

आश्चर्यजनक बात यह है कि मूलतः यह मानव वेतन ग्रेड से परे है। आप इसे समझ नहीं सकते।

नौकरी वापस लेना और जमा करना [27:10-30:47]

"तू ने कहा, 'अब सुनो, और मैं बोलूंगा; मैं तुझ से प्रश्न करूंगा, और तू मुझे उत्तर देगा।' मेरे कानों ने तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आंखों ने तुझे देखा है। इस कारण मैं अपने आप को तुच्छ जानता हूँ, और धूल और राख में मन फिराता हूँ। फिर से, मेरे लिए, इससे पता चलता है कि वह स्वीकार करता है कि जो कुछ उसने सोचा था कि वह जानता था, उसमें वह अभिमानपूर्ण था। वह मुकर जाता है, और वह समर्पण कर देता है। यह उनकी पहली प्रतिक्रिया की तरह नहीं है जहां उन्होंने कहा था, मेरी बात खत्म हो गई है। वह मुकर जाता है, और वह समर्पण कर देता है। यहाँ हिब्रू शब्द "मेरे लिए बहुत अद्भुत " के लिए है, ऐसी बातें जो मैं नहीं जानता था। हिब्रू शब्द *पेले क्रातात्पर्य* दैवीय क्षेत्र की उस जानकारी से है जो मानवीय समझ से परे है।

"पश्चाताप" शब्द पर। आइए इसके बारे में थोड़ा बताएं। यह श्लोक छह में है, "धूल और राख में पश्चाताप करो।" यह क्रिया का निफल रूप है। यह अन्य शब्दों से अलग है जिसका अनुवाद "पश्चाताप" के रूप में किया जा सकता है। एलीपज ने उससे पश्चाताप करने का आग्रह किया था। वह शब्द था *शूव*, पीछे मुड़ना, दिशा बदलना, अपना व्यवहार बदलना। यहां अय्यूब व्यवहार परिवर्तन का सुझाव नहीं देता बल्कि अपने पिछले बयानों को वापस लेना चाहता है। वह उसी मौखिक रूप का उपयोग करता है जिसका उपयोग निर्गमन 32:14, यिर्मयाह 4:28, यिर्मयाह 18:10, जोएल 2:13, और योना 3:10 जैसे स्थानों में तब किया जाता है जब परमेश्वर अपना मन बदलता है। इसलिए, सभी दिलचस्प अंश, दुर्भाग्य से, हम संबोधित करने में समय नहीं बिता सकते। इसकी कई घटनाएँ पछतावे वाली स्थितियों में घटित होती हैं। यह खेद की अभिव्यक्ति है। अय्यूब के बयानों में, उसे अपने पिछले बयानों पर पछतावा है। ईश्वर का उनका चरित्र-चित्रण उनकी अपनी

समझ, उनकी अहंकारी चुनौतियों पर एक अभिमानपूर्ण विश्वास है। इस तरह हम अय्यूब के पछतावे को समझेंगे।

यहां दिया गया बयान अन्य मुद्दों को भी खोलता है। जब यहां पूर्वसर्ग 'अल' के साथ प्रयोग किया जाता है, तो इसका मतलब आम तौर पर किसी चीज़ पर पुनर्विचार करना या, अधिक बार, किसी चीज़ को दिमाग से बाहर निकालना, उसके बारे में सब कुछ भूल जाना होता है। इस कविता में, हम सुझाव दे सकते हैं कि यह कुछ ऐसा है जिसे वह अपने दिमाग से निकाल देता है। यह धूल और राख है; यह यही कहता है. यह कहता है, ठीक है, यह कहता है, "संबंधित पश्चाताप"--' अल। इसलिए, वह इस धूल और राख को अपने दिमाग से निकाल देता है। यह धूल और राख से पश्चाताप नहीं है. वह यहाँ पूर्वसर्ग नहीं है. बल्कि, वह पूरी धूल और राख वाली बात पर पुनर्विचार करता है, और वह धूल और राख को अपने दिमाग से निकाल देता है। इसलिए उन्होंने अपने शोक की समाप्ति की घोषणा की है, और उन्होंने अपनी वास्तविकता को स्वीकार कर लिया है।

बेहेमोथ और लेविथान का महत्व [30:47-31:29]

तब हम देख सकते हैं कि बेहेमोथ और लेविथान पुस्तक को आकार देने में अत्यंत महत्वपूर्ण पात्र हैं। यह दरियाई घोड़े और मगरमच्छ के बारे में नहीं है। यह डायनासोर के बारे में नहीं है. यह इस बारे में नहीं है कि हम पौराणिक कथाओं या उस प्रकार की चीज़ों के बारे में बात कर रहे हैं। यह वास्तव में अराजक प्राणियों के बारे में भी नहीं है, हालांकि वे हैं। यह इस बारे में है कि इन प्राणियों को कैसे चित्रित किया जाता है और यह अय्यूब और किताब पढ़ने वाले हम सभी के लिए एक संदेश के रूप में कैसे खड़ा होता है। और जैसे ही हम अन्य खंडों की ओर बढ़ेंगे हम उन मुद्दों का समाधान करेंगे।

यह जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 22, परमेश्वर का भाषण 2, बेहेमोथ और लेविथान, और अय्यूब की प्रतिक्रिया, अय्यूब 40:6-41:34 है। [31:29]

काम

सत्र 23: उपसंहार, अय्यूब 42

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 23, उपसंहार कार्य 42 है।

उपसंहार का परिचय [00:23-2:04]

तो, हम अंततः उपसंहार, गद्य भाग पर पहुँच गए हैं जो पुस्तक को समाप्त करता है। यह 42:7 में शुरू होता है। एक तरह से सारे भाषण खत्म हो गए हैं। तो, अब हम कुछ ढीले सिरे जोड़ रहे हैं। लेकिन वास्तव में ये ढीले सिरे ही हैं जिन्होंने बहुत से लोगों के लिए भ्रम पैदा कर दिया है। उपसंहार को पुस्तक का समापन संदेश देने के रूप में देखना आसान है, लेकिन ऐसा नहीं है। यह केवल एक ढीले सिरे को बांधना है। आइए इस पर एक नजर डालें।

श्लोक सात से नौ में, हमें अय्यूब के मित्रों की फटकार और मेल-मिलाप मिलता है। परमेश्वर ने एलीपज से, जो प्रत्यक्षतः उस दल का प्रवक्ता था, कहा, मैं तुझ से और तेरे दोनों मित्रों से क्रोधित हूँ, क्योंकि तुम ने मेरे विषय में सच नहीं कहा, जैसा कि मेरे दास अय्यूब ने कहा है। इसलिये अब सात बैल और सात मेढ़े ले कर मेरे पास जाओ। दास अय्यूब और अपने लिये होमबलि चढ़ाओ। मेरा दास अय्यूब तुम्हारे लिये प्रार्थना करेगा, और मैं उसकी प्रार्थना स्वीकार करूँगा, और तुम्हारी मूर्खता के अनुसार तुम्हारे साथ व्यवहार नहीं करूँगा। तुम ने मेरे विषय में मेरे दास अय्यूब की नाई सच नहीं कहा है।

अब ध्यान दें, सबसे पहले, कि ये तीन दोस्त हैं, एलीहू नहीं। इस फटकार में एलीहू शामिल नहीं है। ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि वह किताब में बाद में जोड़ा गया था। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने ईश्वर के बारे में सही बात कही है। और इसलिए, वह इस फटकार में शामिल नहीं है।

अनुवाद मुद्दा: "मेरे लिए सत्य जैसा..." नहीं "मेरे बारे में" 2:04-3:18]

लेकिन अब तक हमें यहां अनुवाद में कठिनाई का सामना करना पड़ा है, नौकरी की किताब में यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। एनआईवी "मेरे बारे में सच" बोलने की बात करता है। और मैंने बस उस भाषा का उपयोग किया क्योंकि अनुवाद में यही है। "सत्य" शब्द *नेकोनाह* शब्द है। हिब्रू में

नेकोनाह इंंगित करता है कि कुछ तार्किक, समझदार और सत्यापन योग्य है। तो, यह सत्य के विचार का तार्किक, समझदार और सत्यापन योग्य व्यवहार है। लेकिन हमें जिस चीज़ पर ध्यान देना है वह इस क्रिया और इसके बाद आने वाले पूर्वसर्ग का संयोजन है। एनआईवी ने उस पूर्वसर्ग का अनुवाद "के बारे में" किया। तो "आपने मेरे बारे में बात की है।" समस्या यह है कि पूरे पुराने नियम में लगातार इस क्रिया और पूर्वसर्ग के संयोजन का अर्थ है "किसी ऐसे व्यक्ति से बात करना जो आम तौर पर मौजूद है।" यह "उनके बारे में" नहीं बोल रहा है। यह "उनसे" बात कर रहा है।

संवादों के लिए नहीं बल्कि उपसंहार वक्तव्यों के लिए ईश्वरीय स्वीकृति [3:18-5:17]

अब इससे कुछ समस्याएँ पैदा होती हैं। हम देख सकते हैं कि अनुवादक एक अलग दिशा में क्यों चले गए हैं क्योंकि इसका यहां क्या मतलब है? सबसे पहले, यह संदर्भित करता है कि अय्यूब ने अपने पिछले भाषण में, अध्याय 42 के एक से छह तक श्लोकों में परमेश्वर से क्या बात की थी। वह अब है; अय्यूब ने वही कहा है जो ठीक है। उसने भगवान से बात की है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि अय्यूब ने पूरी किताब में जो कुछ भी कहा है वह सही या सत्य नहीं है, या *नेकोनाह*। अय्यूब ने बहुत सी बातें गलत कही हैं। तो इससे मदद मिलती है क्योंकि अय्यूब ने अभी-अभी यहोवा से जो कहा है उसे ही स्वीकृति दी गई है, और यह उन बातों के विपरीत है जो उसने पूरी किताब में कही हैं। इसलिए, परमेश्वर ने यह घोषित नहीं किया है कि अय्यूब ने जो कुछ कहा वह सही है। बल्कि उसने अय्यूब की प्रतिक्रिया को स्वीकृति दी है और मित्रों को ताड़ना दी है। तुलनात्मक रूप से पश्चाताप न करने के कारण उनकी तुलना की जाती है और उन्हें दंडित किया जाता है। ऐसा नहीं है कि दोस्तों ने भगवान को गलत बात कही। उन्होंने भगवान से बिल्कुल भी बात नहीं की। ठीक है? तो, यह सभी संवादों के बारे में नहीं है, "तुमने वह नहीं कहा जो मेरे लिए सही है," भगवान एलीपज से कहते हैं, "जैसा कि मेरे सेवक अय्यूब ने कहा है।" वे चुप रहे हैं और अय्यूब की तरह कोई पश्चातापपूर्ण प्रतिक्रिया नहीं दी है। यह एक महत्वपूर्ण कथन है क्योंकि यह इस टिप्पणी को पुस्तक के इस अंतिम भाग पर केंद्रित करता है।

उपसंहार की अलंकारिक रणनीति: प्रतिशोध सिद्धांत की बहाली नहीं [5:17-8:22]

अब, उपसंहार की अलंकारिक रणनीति, यह क्या कर रही है? लोगों ने इसे पुस्तक का वैध निष्कर्ष मानना समस्याग्रस्त माना है। यह लोगों के लिए वास्तविक समस्याएँ खड़ी करता है; आखिरकार, अय्यूब की समृद्धि बहाल करने से वह पीड़ा नहीं मिटती जो उसने अनुभव की थी। घोल के छल्ले खोखले होते हैं। यदि यह उत्तर है, तो भगवान इसे वापस देते हैं। इसमें खोखलापन महसूस होता है। अय्यूब को अधिक बच्चे उपलब्ध कराने से उन बच्चों का दुःख कम नहीं होता जिन्हें उसने खो दिया था।

इस बिंदु पर, मैं आपको याद दिला दूँ कि मैंने सुझाव दिया है कि पुस्तक एक विचार प्रयोग है। इसका मतलब यह नहीं है कि हमें उन बच्चों पर शोक मनाने वाली वास्तविक नौकरी की कल्पना करनी होगी जिन्हें भगवान ने छीन लिया है। यह सब विचार प्रयोग के दायरे में है। भगवान की समृद्धि को बहाल करना, मुझे खेद है, अय्यूब की समृद्धि को बहाल करना प्रतिशोध सिद्धांत की पुनर्स्थापना जैसा लगता है। इसका कोई मतलब क्यों है? ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर प्रतिशोध सिद्धांत की अपर्याप्तता स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। तो इसे वापस क्यों लाएं? ये कुछ समस्याएं हैं जो लोगों को पुस्तक के साथ हुई हैं। तो, आइये इसके बारे में सोचें। याद रखें कि पुस्तक का फोकस ईश्वर की नीतियां हैं। चुनौती देने वाले ने दावा किया था कि मुझे खेद है कि समृद्ध होने के लिए धर्मी लोगों को कष्ट सहना एक खराब नीति है। अय्यूब का दावा है कि धर्मी लोगों को कष्ट सहना एक खराब नीति है। पहले 27 अध्याय चैलेंजर के दावों का पता लगाते हैं, जिसमें अय्यूब ने अपना विश्वास बनाए रखा है कि धार्मिकता, समृद्धि नहीं, सबसे ज्यादा मायने रखती है। अय्यूब प्रदर्शित करता है कि धार्मिकता के लिए धर्मी होना संभव है। वह, सचमुच, बिना कुछ लिए परमेश्वर की सेवा करेगा। पुस्तक इसी तरह अय्यूब के दावे को संबोधित करती है और निष्कर्ष निकालती है कि धर्मी लोगों को समृद्ध करना ईश्वर की नीति नहीं है। निश्चित रूप से यह ईश्वर की नीति नहीं है। उपसंहार में अय्यूब की समृद्धि को बहाल करके, भगवान एक स्पष्ट बयान देता है कि वह पहले की तरह कार्य करना जारी रखेगा, और नीति अपरिवर्तित रहेगी। उनकी नीतियों के सामने चुनौतियां खड़ी हो गई हैं। और इसलिए, वह अपनी नीतियों को अपरिवर्तित बहाल करता है। चैलेंजर और जॉब द्वारा प्रस्तुत मामले अस्थिर साबित हुए हैं। ईश्वर प्रतिकार सिद्धांत से बंधा नहीं है।

एक उपहार के रूप में समृद्धि [8:22-9:08]

अय्यूब अब अपनी समृद्धि के बारे में अलग ढंग से सोच सकता है। ऐसा कुछ नहीं जिसके लिए वह प्रतिशोध सिद्धांत के आधार पर हकदार है, जो कि दुनिया कैसे काम करती है इसकी नींव है। उसे अलग ढंग से सोचना होगा। समृद्धि कोई पुरस्कार नहीं है जो उसने अर्जित किया है या वह पुरस्कार नहीं है जिसे ईश्वर देने के लिए बाध्य है। वह जो भी समृद्धि अनुभव करता है वह ईश्वर का उपहार है, स्पष्ट और सरल। अय्यूब की समृद्धि की बहाली का उद्देश्य उसके दर्द को मिटाना नहीं है। यह प्राथमिक रूप से अय्यूब के लाभ के लिए भी नहीं है। पुनर्स्थापना का मुद्दा यह नहीं है। याद रखें, यह अय्यूब के बारे में नहीं है; यह भगवान के बारे में है। अय्यूब की नवीकृत समृद्धि के माध्यम से, भगवान की चुनौतीपूर्ण नीतियों को बहाल किया जाता है। धर्मी की समृद्धि कोई दी हुई नहीं है। यह यांत्रिक नहीं है। यह वह आधार नहीं है जिस पर ब्रह्मांड को व्यवस्थित किया गया है। यह ईश्वर का दायित्व नहीं है, बल्कि यह ईश्वर की प्रसन्नता है। उपसंहार यह सुझाव नहीं देता है कि जब हम पीड़ित होते हैं, तो हम भविष्य की संतुष्टि की उम्मीद के साथ खुद को सांत्वना दे सकते हैं - किसी दिन, हम सब कुछ वापस पा लेंगे। यह निश्चित रूप से किताब का सबक नहीं है।

हमारा उद्देश्य एक चरित्र के रूप में अय्यूब से सीखना या उसके अनुभवों से सीखना नहीं है। किताब हमें खुद को उसकी जगह पर रखने के लिए नहीं कहती है; यह हममें से कुछ लोगों के लिए काफी आसानी से आता है। यह हमें उसके व्यवहार के अनुसार अपनी प्रतिक्रियाएँ प्रस्तुत करने के लिए नहीं कहता है। हमें अय्यूब की तरह नहीं बनना चाहिए। इसके बजाय, पुस्तक हमें यह सीखने के लिए प्रेरित करती है कि ईश्वर के बारे में अधिक सटीकता से कैसे सोचा जाए, जैसे अय्यूब हमारे साथ सीखता है, ईश्वर के बारे में अधिक सटीकता से कैसे सोचा जाए। परमेश्वर उन लोगों पर कृपा दिखाने से प्रसन्न होता है जो उसके प्रति वफादार हैं। लेकिन दुनिया उस आधार पर काम करने के लिए बाध्य नहीं है।

अय्यूब की समृद्धि और त्रिकोण की बहाली: बुद्धि, न्याय नहीं [9:08-14:39]

अय्यूब की समृद्धि की बहाली प्रतिशोध सिद्धांत की अयोग्य पुनर्स्थापना के बराबर नहीं है। अय्यूब के आशीर्वाद को अब एक अलग दृष्टि से देखा जाना चाहिए। न तो भगवान की नीतियां और न ही दुनिया के संचालन थियोडिसी के रूप में लागू प्रतिशोध सिद्धांत पर आधारित हैं।

तो, भगवान त्रिभुज पर कहाँ फिट बैठता है? याद रखें, हमने इस त्रिकोण के बारे में प्रतिशोध सिद्धांत और अय्यूब की धार्मिकता और भगवान के न्याय के बारे में बात की है और जहां हर कोई खुद को स्थित करता है और जहां उन्होंने अपना किला बनाया है, और वे क्या छोड़ने को तैयार हैं।

तो, भगवान त्रिभुज पर कहाँ फिट बैठता है? वह नहीं करता. भगवान त्रिकोण को अस्वीकार करते हैं. भगवान इसे टुकड़े-टुकड़े करके फेंक देते हैं। भगवान त्रिकोण का विचार नहीं खरीदते। वह ब्रह्मांड की व्यवस्था को समझने का मानवीय प्रयास था। ये उनके सरल समीकरण थे जो काम नहीं आए। इसलिये एलीहू भी गलत था; वह अब भी सोचता था कि न्याय ही बुनियाद है। उन्होंने अभी भी त्रिकोण में फिट होने की कोशिश की, भले ही उन्होंने इसे बढ़ाया और सतही उद्देश्यों पर काम किया। भगवान त्रिकोण में फिट नहीं बैठते. त्रिकोण अस्वीकृत है. हमारे पास दावों का त्रिकोण नहीं है. आधार न्याय नहीं है. आधार बुद्धि है.

जब घटनाएँ घटित होती दिखाई देती हैं, तो प्रतिशोध सिद्धांत के अनुसार, उन्हें केवल भगवान के चरित्र के तरंग प्रभावों के रूप में देखा जाना चाहिए क्योंकि वह अपनी बुद्धि में आशीर्वाद और न्याय लाने के लिए संलग्न है। यह हमें यह स्पष्टीकरण नहीं देता कि धर्मी लोग कष्ट क्यों सहते हैं। हमें अपनी अपेक्षाओं को अय्यूब के अनुभवों पर आधारित नहीं करना चाहिए। अय्यूब को अपनी पीड़ा के लिए कोई स्पष्टीकरण नहीं मिलता है, और पुस्तक पाठकों के लिए उस शून्य को नहीं भरती है जैसे कि हमें स्पष्टीकरण दिया जाना चाहिए। पुस्तक में दी गई एकमात्र व्याख्या ऐसी दुनिया में ईश्वर और उसकी नीतियों के बारे में सही सोच से संबंधित है जहां पीड़ा व्यापक और अपरिहार्य है। इसका सरोकार इसी से है।

तो फिर, उपसंहार पुस्तक का एकदम सही निष्कर्ष है। भगवान की नीतियों की चुनौतियों का समाधान किया गया है। ईश्वर और ब्रह्मांड के बारे में विभिन्न गलतफहमियाँ दूर हो गई हैं। हमें ज्ञान प्राप्त हुआ है. यह ज्ञान हमारे कष्टों को कम नहीं करता है, लेकिन यह हमें मूर्खतापूर्ण सोच से बचने

में मदद करता है जो हमें ईश्वर को अस्वीकार करने के लिए प्रेरित कर सकता है जब हमें वास्तव में उसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है। तो, उपसंहार पुस्तक का निष्कर्ष है, लेकिन इसमें पुस्तक का संदेश शामिल नहीं है। पुस्तक का संदेश ईश्वर की वाणी से निकला।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 23, उपसंहार, अय्यूब 42 है। [14:39]

नौकरी की किताब

सत्र 24: नौकरी की किताब में नौकरी

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 24 है, नौकरी की किताब में नौकरी।

परिचय [00:21-00:45]

अब हम अय्यूब की पुस्तक के कुछ पात्रों पर एक प्रकार का सारांश डालते हुए कुछ खंड खर्च करने जा रहे हैं। अब, सबसे पहले, निश्चित रूप से, हम अय्यूब पर एक नज़र डालने जा रहे हैं, और फिर हम दुनिया पर नज़र डालने जा रहे हैं और अय्यूब की पुस्तक में दुनिया को कैसे समझा जाता है। और फिर, अंततः, हम अय्यूब की पुस्तक में परमेश्वर पर एक नज़र डालेंगे। तो ये कुछ ऐसे खंड हैं जो सामने आ रहे हैं।

पुस्तक में अय्यूब की भूमिका [00:45-2:00]

तो, आइए अय्यूब पर एक नज़र डालें और पुस्तक में और पुस्तक के संदेश में उसकी भूमिका को संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास करें। अय्यूब की भूमिका पुस्तक की समस्या को प्रस्तुत करना है। उनकी भूमिका वह उत्तर देने की नहीं है जो पुस्तक प्रस्तुत करती है। उनके दृष्टिकोण पीड़ा पर प्रतिक्रिया करने का एक और गलत तरीका दर्शाते हैं। वह अपर्याप्त ज्ञान का भी चित्रण करता है। उसकी सराहना इस बात के लिए नहीं की जाती है कि वह किस प्रकार पीड़ा के प्रति प्रतिक्रिया करता है, बल्कि उसकी धार्मिकता की गुणवत्ता और प्रेरणा तथा अंततः उसके त्याग के लिए की जाती है। वह क्यों पीड़ित है, इस बारे में उसके विचार, ईश्वर अन्यायी है, और अपने दर्द के इलाज के लिए उसका नुस्खा ईश्वर का सामना करना है। वे दोनों गलत हैं। इसलिए, हमें सावधान रहना होगा कि हम नौकरी की किताब में उससे अपना नेतृत्व लेने की उम्मीद में न आएँ।

अय्यूब की धार्मिकता [2:00-3:03]

अब, उसकी धार्मिकता, वह धार्मिकता है जो किसी को उसके आसपास की दुनिया से अलग करती है। वह अय्यूब 31 है, जब अय्यूब अपनी बेगुनाही की शपथ लेता है, तो वह एक तरह से वर्णन करता है कि वह अपनी धार्मिकता को कैसे समझता है। तो, यह पूर्ण धार्मिकता नहीं है, जैसा कि भगवान की नज़र में, कोई

भी धर्मी नहीं है जैसा कि भजन हमें बताते हैं। परन्तु इस प्रकार की धार्मिकता तुम्हें संसार से अलग करती है। यह वास्तव में लाभ के विपरीत पुस्तक में खड़ा है।

यही वह बिंदु है जिसमें अय्यूब की रुचि है, उसकी धार्मिकता में, न कि लाभों में। वह धार्मिकता की बहुत दृढ़ता से रक्षा करता है। क्या अय्यूब अंततः इस बात में दिलचस्पी रखता है कि उसे अपने धर्मी व्यवहार से क्या हासिल होगा, या वैकल्पिक रूप से, क्या उसके धर्मी व्यवहार का लाभ की परवाह किए बिना स्वतंत्र मूल्य है? और, निःसंदेह, वह ऐसे ही चलता है।

अय्यूब धर्मी क्यों है? [3:03-3:45]

यदि उसकी धार्मिकता संभावित लाभ से प्रेरित नहीं है, तो उसे क्या प्रेरित करता है? अय्यूब धर्मी क्यों है? पाठ वास्तव में कुछ नहीं कहता है क्योंकि इसकी अधिकतर रुचि यह स्थापित करने में है कि लाभ प्रेरक है या नहीं, यदि लाभ प्रेरक नहीं है, तो इसने अपनी बात रख दी है।

अय्यूब पूर्ण होने का दावा नहीं कर रहा है। पुस्तक उसे पूर्ण के रूप में नहीं पहचानती। वह केवल उन अपराधों के लिए निर्दोष घोषित होना चाहता है जो उसके नाटकीय पतन का कारण बने। यह अय्यूब की अपनी धार्मिकता में रुचि है।

अय्यूब की धर्मपरायणता - क्षुद्र? [3:45-7:45]

आइए हम धर्मपरायणता में उनकी रुचि की ओर वापस मुड़ें। हमने इस बारे में पहले भी बात की है, अध्याय एक में छंद चार और पांच के हमारे उपचार के दौरान। मैं अनुष्ठान प्रदर्शन के बारे में बात करने के लिए "धर्मपरायणता" शब्द का उपयोग कर रहा हूँ क्योंकि प्राचीन दुनिया में इसके बारे में इसी तरह सोचा जाता था। याद रखें, यह महान सहजीवन--लाड़-प्यार वाले देवताओं से जुड़ा है। तो, धर्मपरायणता वे अनुष्ठान क्रियाएं हैं जो देवताओं को प्रसन्न करने के लिए महान सहजीवन प्रणाली में काम करती हैं। उस प्रकार की धर्मपरायणता देवताओं के नाजुक अहंकार और उनकी अस्थिरता के विरुद्ध बीमा थी। इस अर्थ में, धर्मपरायणता, धार्मिकता के लिए परस्पर अनन्य नहीं है, बल्कि प्राचीन दुनिया के अधिकांश हिस्सों में देवताओं के साथ अच्छी स्थिति में बने रहने के लिए आवश्यक थी। आपको बस इस अनुष्ठान प्रदर्शन की आवश्यकता थी। पूरी किताब में, अय्यूब की स्थिति को सुधारने के लिए आवश्यक प्रतिक्रिया के रूप में धर्मपरायणता को कभी भी प्रस्तावित नहीं किया गया, यहाँ तक कि उसके दोस्तों द्वारा भी नहीं। उन्होंने कभी यह सुझाव नहीं दिया कि अनुष्ठान करने से उनकी समस्या का समाधान हो जाएगा।

लेकिन महान सहजीवन उसकी धार्मिकता और उसकी धर्मपरायणता के लिए अनुमानित प्रेरणा है। अर्थात्, वह ऐसा अपने लाभ के लिए कर रहा है। धर्मपरायणता को समस्या के भाग या समाधान के भाग के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता है। यह बातचीत से अजीब तरह से अनुपस्थित है। यह, फिर से, हमारा ध्यान अय्यूब अध्याय एक, श्लोक चार और पाँच में इसकी प्रमुखता की ओर आकर्षित करता है। अय्यूब अपने बच्चों की ओर से बलिदान देता है, यदि उन्होंने कोई गंभीर, फिर भी अनजाने में, अपराध किया हो। यह दर्शाता है कि अय्यूब किसी गलती के प्रति औपचारिक रूप से कर्तव्यनिष्ठ है। हालाँकि पुस्तक इस बात से चिंतित नहीं है कि वह पर्याप्त रूप से पवित्र है या नहीं, और फिर, जैसा कि हमने पहले बात की थी, मुझे लगता है कि यह इसके बजाय एक संभावित भेद्यता को व्यक्त करती है।

जैसे-जैसे किताब सामने आती है, अय्यूब बार-बार अदालत में भगवान का सामना करने के लिए एक मध्यस्थ, एक वकील को शामिल करने की कोशिश करता है। उन्होंने स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकाला है कि भगवान को क्षुद्र होना चाहिए, धार्मिकता के साथ धार्मिकता का दौरा करना, मुझे खेद है, तकनीकी रूप से तीव्र पीड़ा और दुर्भाग्य के साथ। अय्यूब की अत्यधिक कर्तव्यनिष्ठ परंपरा स्वर्ग के दृश्य तक पुल प्रदान करती है। यह संभव है कि चुनौती देने वाले का सुझाव अय्यूब की धार्मिक धार्मिकता के संभावित निहितार्थों पर भी आधारित हो। यदि अय्यूब को यह संदेह है कि ईश्वर क्षुद्र होने की ओर प्रवृत्त है, इस हद तक कि वह ऐसी अल्प संभावनाओं के आधार पर इन कठिन अनुष्ठानों में संलग्न है, तो यह अनुमान लगाया जा सकता है कि अय्यूब न केवल अपनी धर्मपरायणता में, बल्कि अपनी धार्मिकता में भी भय से प्रेरित है। एक अनुचित और मनमौजी देवता के हमले का निशाना बनना।

यदि अय्यूब धर्मपरायणता के लिए प्रेरित होता है क्योंकि वह ईश्वर को तुच्छ मानता है, तो क्या यह भी संभव नहीं है कि अय्यूब धार्मिकता के लिए प्रेरित होता है क्योंकि वह मानता है कि ईश्वर की कृपा नीलामी पर है। चुनौती देने वाले के पास यह विश्वास करने का अच्छा कारण है कि अय्यूब महान सहजीवन की सीमा के भीतर कार्य कर सकता है और इसलिए इस मुद्दे को भगवान के सामने उठाना उचित है। चैलेंजर का सुझाव तब द्वेष का कार्य नहीं बल्कि एक तार्किक निष्कर्ष है।

अय्यूब की सत्यनिष्ठा [7:45-8:22]

तो, अय्यूब की सत्यनिष्ठा यह है कि अय्यूब परमेश्वर या उसकी नीतियों के बारे में अपने आकलन में न तो सही है और न ही सही है। लेकिन एक चीज़ जो वह सही कर लेता है, वह है कि वह अपनी ईमानदारी

बरकरार रखता है। पुनः, अध्याय 27 में, श्लोक दो से छह तक यह तब पूरा होता है जब यह प्रदर्शित होता है कि वास्तव में अय्यूब बिना किसी शुल्क के परमेश्वर की सेवा करता है। यही उनकी ईमानदारी है।

यदि अय्यूब अपनी पत्नी या मित्रों की सलाह मानता, तो यह प्रदर्शित होता कि उसने परमेश्वर की सेवा व्यर्थ नहीं की। उसकी ईमानदारी जब्त कर ली जाएगी।

आत्म-धर्म के रूप में नौकरी [8:22-9:29]

अय्यूब को आत्म-धर्म भी देखा जाता है, विशेषकर एलीहू की जांच के तहत। केवल इसलिए स्व-धर्म होना उचित नहीं है कि कोई व्यक्ति धर्म है, और यही सच्चा अय्यूब भी है। उसकी स्व-धार्मिकता एक समस्या है क्योंकि वह इसे स्वयं को ईश्वर से ऊँचा स्थापित करने के साधन के रूप में उपयोग करता है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब अय्यूब का अपनी धार्मिकता के प्रति दृष्टिकोण इतना आश्वस्त होता है कि वह इसे बनाए रखने के लिए परमेश्वर के न्याय को बदनाम करने के लिए तैयार हो जाता है। और, निस्संदेह, अध्याय 40, श्लोक आठ में भगवान के शब्द बताते हैं कि वास्तव में यही हुआ था।

इसलिए, अय्यूब पुस्तक में कई मामलों में एक व्यक्ति के रूप में विफल रहता है। वह एक ऐसा लड़का है जिसके पास बहुत कुछ है और वह कुछ महत्वपूर्ण चीजें सही ढंग से करता है। लेकिन वह बहुत सारी गलतियाँ भी करता है।

यह पुस्तक ईश्वर द्वारा हमें बेहतर उत्तरों की ओर ले जाने के बारे में है [9:29-11:20]

और इसलिए फिर से, हमें यह याद रखना होगा कि एक चरित्र के रूप में अय्यूब पुस्तक का फोकस नहीं है। किताब ईश्वर के बारे में है, अय्यूब के बारे में नहीं। अय्यूब की प्रतिक्रियाएँ हमारे लिए आदर्श नहीं हैं। उसकी सराहना करने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन जिस तरह से वह अपनी स्थिति पर प्रतिक्रिया करता है, उसमें भी बहुत कुछ ऐसा है जिस पर उसकी निंदा की जाती है। अय्यूब किताब का एक और पात्र है जो गलतियाँ करता है।

किताब हमें यह बताना चाहती है कि चीजों को कैसे सही किया जाए। अय्यूब किताब में एक ऐसा पात्र है जिसके पास चीजों को सही करने की सबसे अधिक संभावना है। क्योंकि उसकी धार्मिकता स्वीकृत और मान्यता प्राप्त है, लेकिन चीजों को सही तरीके से करने की इतनी उच्च मान्यता वाला व्यक्ति भी चीजें टूटने पर हमेशा अच्छी प्रतिक्रिया नहीं देता है। यह पुस्तक हमें चीजें गलत होने पर बेहतर प्रतिक्रिया की ओर ले जाना चाहती है, विशेषकर ईश्वर के बारे में कैसे सोचें। इन सबके मामले में अय्यूब एक अच्छा मॉडल नहीं

है। और इसलिए, वह इस बात का हिस्सा है कि किताब कैसे अपना संदेश प्रकट करती है। हमें किताब के संदेश को सीखने की ज़रूरत है, न कि अय्यूब को ऊँचे स्थान पर रखने की।

हम अगली बार अपना ध्यान दुनिया की ओर केंद्रित करने जा रहे हैं। तो यह अगला खंड होगा कि दुनिया पुस्तक में अपनी भूमिका कैसे निभाती है।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 24 है, नौकरी की किताब में नौकरी। [11:20]

नौकरी की किताब
सत्र 25: नौकरी की किताब में दुनिया:
आदेश, गैर-आदेश और अव्यवस्था
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 25 है, द वर्ल्ड इन द बुक ऑफ़ जॉब: ऑर्डर, नॉन-ऑर्डर, और डिसऑर्डर।

परिचय [00:27-00:58]

अब हम इस बारे में बात करना चाहते हैं कि हमें अपने आसपास की दुनिया के बारे में कैसे सोचना चाहिए। ईश्वर दुनिया में कैसे काम करता है, यह इस पर आधारित है कि हमें नौकरी की किताब में क्या दिया गया है। हम पहले ही गैर-आदेश, व्यवस्था और अव्यवस्था की अवधारणा पेश कर चुके हैं। हम यहां इसकी थोड़ी समीक्षा करेंगे और फिर इस बारे में बात करेंगे कि अय्यूब की पुस्तक और हमारे धर्मशास्त्र में इसका क्या महत्व है।

सृजन: आदेश, गैर-आदेश और अव्यवस्था [00:58-3:48]

सृजन, सबसे महत्वपूर्ण बात, ब्रह्मांड को व्यवस्थित करने का एक कार्य था, जिससे हर चीज़ उस तरह से काम कर रही थी जिस तरह से भगवान चाहते थे। यह प्राचीन दुनिया में सृजन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है और यकीनन हमारी दुनिया में, हमारे सोचने का तरीका भी। केवल वस्तुएँ बनाना ही पर्याप्त नहीं है। बेशक, भगवान ने ऐसा किया। उसने वस्तुएँ बनाईं, लेकिन हर चीज़ को एक व्यवस्थित प्रणाली में उसके नियंत्रण में लाना था जो उसके उद्देश्यों को पूरा करती हो। और यह सामग्री से कहीं आगे तक जाता है। यही सृजन की क्रमबद्ध प्रक्रिया है।

उत्पत्ति एक, जैसा कि हमने उल्लेख किया है, गैर-आदेशित श्लोक दो से शुरू हुई, मौलिक स्थिति जिसमें कच्चे माल मौजूद थे लेकिन फिर भी भगवान के उद्देश्यों के अनुसार उनकी भूमिका और कार्य को सौंपा जाना आवश्यक था। हम उन बक्सों के चित्रण का उपयोग करते हैं जिन्हें खोलना आवश्यक है। जिन कमरों को व्यवस्थित करने की जरूरत थी। यह गैर-आदेश, फिर भी, बुरा नहीं है। यह अभी अपने अंतिम रूप में पूरा नहीं हुआ है। यह कार्य प्रगति पर है।

सृजन को क्रमबद्ध करने के आरंभिक कार्य का परिणाम कुल क्रम में नहीं था, और वह डिज़ाइन द्वारा था। समुद्र गैर-व्यवस्था का स्थान है। बगीचे के बाहर बगीचे के अंदर जैसी व्यवस्था नहीं थी। ये सभी चीजें हैं जिनकी हम यहां समीक्षा कर रहे हैं। लोगों को ईश्वर के साथ मिलकर उसकी छवि में उप-शासक के रूप में आदेश देने की प्रक्रिया को जारी रखने के लिए काम करने के लिए बनाया गया था।

ईश्वर पूर्ण व्यवस्था प्राप्त करने में किसी तरह असमर्थ नहीं था, या किसी तरह हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि वह ऐसा करने में विफल रहा। अपनी बुद्धिमत्ता से, उन्होंने एक विस्तारित प्रक्रिया के माध्यम से काम करने और लोगों को साझेदारी में लाने का विकल्प चुना। पतन से पहले भी, लोग एक ऐसी दुनिया में रहते थे जिसकी विशेषता स्थापित व्यवस्था के साथ-साथ निरंतर गैर-व्यवस्था भी थी।

यह उत्पत्ति तीन में है कि विकार चित्र में प्रवेश करता है। जैसा कि हमने बताया, अव्यवस्था उस चीज़ को दर्शाती है जो बुराई है, और यह लोगों द्वारा किया जाता है। बुराई की लौकिक ताकतें भी हो सकती हैं, लेकिन दुनिया में अव्यवस्था काफी हद तक लोगों पर टिकी हुई है।

इसलिए, हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जिसकी विशेषता व्यवस्था है, जैसा कि भगवान ने इसे स्थापित किया है, गैर-आदेश जारी रखते हुए, जिसे अभी तक संबोधित नहीं किया गया है और दुर्भाग्य से, अव्यवस्था हावी है। तब हमारे चारों ओर का संसार पूरी तरह से ईश्वर के गुणों से संपन्न नहीं है। यह सबसे महत्वपूर्ण बिंदुओं में से एक है जो नौकरी की किताब दुनिया के बारे में बताती है।

प्रतिशोध सिद्धांत [3:48-5:06]

अय्यूब और उसके दोस्तों ने प्रतिशोध सिद्धांत को ब्रह्मांड की नींव के रूप में अपनाया क्योंकि वे किसी तरह मानते थे कि भगवान का न्याय प्राकृतिक दुनिया में व्याप्त था और दुनिया भगवान के गुणों के अनुसार संचालित होती थी। यह मामला नहीं है। फिर, यह एक गिरी हुई दुनिया है।

अव्यवस्था है। वहां नॉन-ऑर्डर बना हुआ है। संसार का नियमित संचालन ईश्वर के प्राकृतिक चरित्र या गुणों को प्रतिबिंबित नहीं करता है।

बुद्धि और अ-व्यवस्था [5:06-7:39]

यह उनकी बुद्धिमत्ता ही थी जिसने धीरे-धीरे व्यवस्था लाने का निर्णय लिया। अब वह किसी भी समय और किसी भी तरह से अपनी इच्छा थोप सकता है। लेकिन उन्होंने इस ब्रह्मांड में एक ऐसा क्षेत्र स्थापित किया है जहां गैर-व्यवस्था बनी रही और जहां अव्यवस्था को घुसपैठ करने की अनुमति दी गई। फिर से, यहोवा के स्वयं के आग्रह को याद करें कि बारिश और बाढ़ को स्वचालित रूप से उसके न्याय या आशीर्वाद या दंड की प्रतिक्रिया नहीं माना जाना चाहिए। वहां बारिश होती है जहां कोई नहीं रहता. प्राकृतिक आपदाएँ, जिन चीजों को हम प्राकृतिक आपदाएँ, तूफान, सुनामी, भूकंप, बवंडर, सूखा, अकाल, प्लेग, महामारी के साथ-साथ जैविक स्तर पर उत्परिवर्तन कहते हैं, उन सभी को दुनिया में गैर-व्यवस्था के पहलुओं के रूप में पहचाना जा सकता है।

कुछ लोगों ने यह बात कही है कि उनमें से कुछ प्राकृतिक आपदाओं का वास्तव में बड़े पारिस्थितिकी तंत्र और ब्रह्मांड में सकारात्मक परिणाम होता है। यह केवल एक और संकेत है कि ईश्वर आदेशित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए गैर-आदेश का उपयोग कर सकता है। अब, निःसंदेह, ये प्राकृतिक आपदाएँ, जैसा कि हम इन्हें कहते हैं, गंभीर रूप से नकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं। ईश्वर संभावित रूप से उन्हें सज़ा के रूप में इस्तेमाल कर सकता है, लेकिन हम कभी नहीं जान सकते कि वह उन्हें सज़ा के रूप में कब इस्तेमाल कर रहा है या कब नहीं। वे किसी भी नैतिक अर्थ में आंतरिक रूप से बुरे नहीं हैं, फिर भी वे परमेश्वर के नियंत्रण के प्रति प्रतिरक्षित नहीं हैं। लेकिन जब भी हम उन्हें देखते हैं तो उन्हें निर्णय देने वाले उपकरण नहीं माना जा सकता। वे ईश्वर से स्वतंत्र रूप से काम नहीं करते हैं, लेकिन हमें उसकी कल्पना ऐसे नहीं करनी चाहिए कि वह रिमोट कंट्रोल डिवाइस लेकर यह पता लगा रहा है कि कौन से घर बवंडर की चपेट में आने वाले हैं और कौन से नहीं। वे इंसानों की तरह उसकी आज्ञा के अधीन हैं, हालाँकि हम रोबोट नहीं हैं। तो, कोई रिमोट कंट्रोल नहीं है। वे बोली योग्य हैं, ईश्वर के नियंत्रण के अधीन हैं, फिर भी यांत्रिक नहीं हैं।

परमेश्वर का नियंत्रण और बुद्धि [7:39-9:08]

तो, हम परमेश्वर के नियंत्रण के बारे में क्या सीखते हैं? यदि ब्रह्मांड उसके गुणों के अधीन नहीं है और यदि जिन चीजों का हम अनुभव करते हैं उनका उपयोग वह पुरस्कार या दंड के लिए कर सकता है, लेकिन हमेशा नहीं। तो फिर हम संसार में ईश्वर के नियंत्रण के बारे में कैसे सोचते हैं? यह दिलचस्प है कि हम इस बारे में सवाल नहीं उठाते कि गुरुत्वाकर्षण ने एक निश्चित स्थिति में क्यों काम किया। हमें यह भी नहीं पूछना चाहिए कि एक जगह बारिश क्यों हुई और दूसरी जगह क्यों नहीं। हम यह सवाल नहीं उठाते कि गिरने पर हड्डी क्यों टूटती है, और न ही हमें यह पूछना चाहिए कि एक व्यक्ति को मधुमेह या कैंसर क्यों होता है और दूसरे को नहीं। ईश्वर की बुद्धि दुनिया में उसी तरह स्थापित है जिस तरह से उसने इसे बनाने के लिए चुना है। यह गुरुत्वाकर्षण या कोशिका विभाजन की प्रत्येक अभिव्यक्ति में नहीं पाया जाता है। उनकी बुद्धि विशिष्टताओं में नहीं है। यह वह तरीका है जिससे उसने दुनिया को काम करने के लिए तैयार किया। ईश्वर के नियंत्रण को समझना हमारे व्यक्तिगत व्यक्तिगत अनुभवों या आचरण की तुलना में ब्रह्मांडीय व्यवस्था से अधिक जुड़ा हुआ है।

न्याय, ब्रह्मांड की धुरी नहीं [9:08-11:09]

अब, फिर भी, यह लोगों को यह पूछने के लिए प्रेरित कर सकता है कि, भगवान ने इस प्रणाली को इस तरह क्यों बनाया जैसा उसने बनाया? यह हमें हमेशा बुद्धिमानीपूर्ण नहीं लगता, लेकिन यह ऐसा प्रश्न नहीं है जिसका उत्तर हम नहीं दे सकते। हम कह सकते हैं, अय्यूब की किताब के आधार पर उसने न्याय के लिए ऐसा नहीं किया। न्याय ब्रह्मांड की धुरी नहीं है। ईश्वर ने दुनिया में जो ताकतें बनाई हैं, वे समझदार नहीं हैं। वे दृढ़ इच्छाशक्ति वाले नहीं हैं। वे नैतिक नहीं हैं, और ईश्वर सूक्ष्म प्रबंधन नहीं करता है।

दुनिया में और भी बहुत कुछ है, न्याय के अलावा ब्रह्मांड के संचालन में भी बहुत कुछ है। यदि न्याय हर चीज़ के मूल में होता, तो हमारा अस्तित्व ही नहीं होता। हम पतित प्राणी हैं। अपनी बुद्धि में, ईश्वर ब्रह्माण्ड को उसी प्रकार कार्य करने का आदेश देता है जैसा वह करता है। वह हस्तक्षेप करने में सक्षम है। यदि वह ऐसा करना चाहता है तो वह सूक्ष्म प्रबंधन करने में भी सक्षम है, लेकिन यह सामान्य बात नहीं है।

अपनी गिरी हुई अवस्था में संसार केवल उसकी बुद्धि से ही चल सकता है। हम हर चीज़ का आकलन उसके न्याय के आधार पर नहीं कर सकते। यह अय्यूब की पुस्तक का संदेश है जो हमें यह समझने में मदद करता है कि दुनिया आवश्यक रूप से उस तरह से संचालित नहीं होती जिस तरह से हम सोचते हैं या जिस तरह से हम सोचते हैं कि इसे होना चाहिए। परमेश्वर ने, अपनी बुद्धि से, इसे स्थापित किया है। खैर, इससे हमें अब अय्यूब की पुस्तक में ईश्वर के बारे में सोचने के लिए प्रेरित होना चाहिए, और यह हमारा अगला खंड होगा।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 25 है, द वर्ल्ड इन द बुक ऑफ़ जॉब: ऑर्डर, नॉन-ऑर्डर, और डिसऑर्डर। [11:09]

नौकरी की किताब
सत्र 26: नौकरी की किताब में भगवान
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 26 है, नौकरी की किताब में भगवान।

परिचय: भगवान का संदिग्ध व्यवहार? [00:22-2:06]

तो, अब हम एक बहुत ही दिलचस्प अध्ययन पर पहुँच रहे हैं। हम अय्यूब की पुस्तक में परमेश्वर को कैसे देखते हैं? आप जानते हैं, जब आप इसे देखना शुरू करते हैं, तो यह बहुत अच्छा नहीं लगता है। हां, और फिर, चीजों को सबसे बुनियादी आकस्मिक पढ़ने के तरीके से देखकर, उसे लगता है कि उसे पूछना होगा कि शैतान क्या कर रहा है। वह एक आदमी के जीवन के साथ दांव लगाता है। वह अपनी स्वयं की स्वीकारोक्ति के कारण अय्यूब को बर्बाद कर देता है, जिसमें उसके परिवार का सफाया भी शामिल है। वह उन आरोपों के स्पष्टीकरण के लिए अय्यूब की बार-बार की गई दलीलों को नजरअंदाज कर देता है, जिनके कारण उसे बर्बाद होना पड़ा। वह अय्यूब को "मैं भगवान हूँ, और तुम नहीं हो" जैसे भाषण से डराता है। वह उसे बताता है कि कैसे उसने पौराणिक शक्ति और रहस्य के दो प्राणी बनाए। वो सब किस बारे में है? वह बिना किसी स्पष्टीकरण या बचाव के उसे उसकी समृद्धि वापस दे देता है। वाह वाकई? यह वह भगवान है जिसकी हम पूजा करते हैं। यह समझना आसान है कि पुस्तक के पाठक भगवान की तस्वीर के साथ संघर्ष करते हैं। यदि यह इतना विनाशकारी न होता तो यह लगभग हास्यास्पद लगता। क्या यह ईश्वर का स्वयं का रहस्योद्घाटन है? हम इन नेतृत्वों को कैसे लेते हैं जिनका अंत विनाशकारी प्रतीत होता है?

किताब ईश्वर के बारे में क्या बताती है [2:06-3:14]

मुझे लगता है कि हमें यहां अपनी खोज को दोबारा लिखना होगा। इसके बजाय, क्या यह ईश्वर का स्वयं का रहस्योद्घाटन है, आइए पूछें, यह पुस्तक ईश्वर के बारे में क्या प्रकट करती है? मेरा प्रस्ताव है कि जब हम अय्यूब की पुस्तक में ईश्वर के बारे में सोचते हैं, तो हमें इस विचार से शुरुआत करनी होगी कि वह भी अय्यूब की तरह ही एक चरित्र है और उसके दोस्त और उसकी पत्नी भी पात्र हैं।

जैसे बेहेमोथ और लेविथान पात्र हैं। वे पात्र हैं, और ईश्वर एक पात्र है जिसे साहित्य में अलंकारिक रूप से आकार दिया गया है। पुस्तक के लेखक ने ईश्वर के चरित्र को आकार दिया है।

ईश्वर के बारे में प्रारंभिक प्रश्नों पर दोबारा गौर करना [3:14-7:08]

अब उन प्रतीत होने वाली नकारात्मक विशेषताओं पर विचार करते हुए जिनका हमने उल्लेख किया है, आइए उन पर फिर से विचार करें। क्या भगवान को चैलेंजर की गतिविधियों के बारे में सूचित करने की आवश्यकता है? नहीं, पुस्तक उन्हें पारंपरिक सोच का उपयोग करते हुए प्रस्तुत करती है कि स्वर्गीय परिषद स्वर्ग के दृश्य में बातचीत को मंचित करने के लिए कैसे काम करती है। इसी से कारोबार आगे बढ़ता है। यहोवा को साहित्यिक चरित्र-चित्रण द्वारा चित्रित किया गया है। उन्हें एक शाही व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जो उन पदाधिकारियों से रिपोर्ट प्राप्त करता है जिन्हें कार्य सौंपे गए हैं। यहोवा वह भूमिका निभाता है। यह एक साहित्यिक रूपांकन है। हमें यह विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है कि ईश्वर वास्तव में इसी तरह से कार्य करता है। यदि आपने ऐसा किया भी, तो यह मानने का कोई कारण नहीं होगा कि उसका प्रश्न उसकी अज्ञानता को प्रकट करता है। उनके प्रश्न का उद्देश्य केवल एक रिपोर्ट प्राप्त करना और प्रतिक्रिया उत्पन्न करना है। यह स्थिति स्थापित करता है। इसकी एक साहित्यिक भूमिका है।

क्या ईश्वर स्वयं को शैतान के साथ दांव पर लगाता है? नहीं, अनेक खातों पर, हम उनमें से कुछ पर पहले ही चर्चा कर चुके हैं। यह इस बारे में रहस्योद्घाटन नहीं कर रहा है कि ईश्वर कैसे कार्य करता है। इसके द्वारा निभाई गई साहित्यिक भूमिका, इसे एक दांव कहें, हालांकि मुझे नहीं पता कि यह क्या है, शुरू से ही यह प्रदर्शित करना है कि अय्यूब की पीड़ा उसके द्वारा किए गए किसी भी कार्य का परिणाम नहीं है। वही बुनियाद है। यह उस परिदृश्य को स्थापित करता है जो पुस्तक में सामने आने वाला है। प्रश्न महत्वपूर्ण भाग है: क्या अय्यूब बिना कुछ लिए परमेश्वर की सेवा करता है? बाकी सब एक साहित्यिक सेटअप है, ताकि मुद्दे का इलाज किया जा सके।

क्या परमेश्वर को यह पता लगाना है कि अय्यूब की प्रेरणाएँ वास्तव में क्या हैं? मेरा मतलब है, क्या यह विस्तारित पुस्तक अय्यूब की प्रेरणाओं की खोज करने के लिए है? क्या भगवान को नहीं पता?

क्या उसे पता लगाने की ज़रूरत है? नहीं, उसे पता लगाने की ज़रूरत नहीं है. पाठकों के लिए यह प्रश्न हल नहीं हो रहा है कि क्या अब तक का सबसे धर्मी व्यक्ति दुनिया के बिखर जाने पर भी अपनी धार्मिकता बनाए रखेगा? यह पाठ हमारे प्रश्नों का उत्तर देता है, न कि ईश्वर की अनिश्चितताओं का। परमेश्वर को अय्यूब के बारे में कोई अनिश्चितता नहीं है। पाठकों को यह बताने में कोई लाभ नहीं है कि ईश्वर जानता है कि अय्यूब की प्रेरणाएँ क्या हैं और वे शुद्ध हैं क्योंकि यह अय्यूब नहीं है जो हमारी अंतिम चिंता है। पाठकों के रूप में, हम इसकी जांच कर रहे हैं, या हमें इस बात की जांच में ले जाया जा रहा है कि भगवान का न्याय हमारे अनुभवों और परिस्थितियों के साथ कैसे संपर्क करता है। पुस्तक का संबंध इस बात से है कि हमें क्या खोजने की आवश्यकता है, न कि इस बात से कि ईश्वर को क्या खोजने की आवश्यकता है। फिर, स्वर्ग का दृश्य प्रश्नों को गति देने का एक साहित्यिक उपकरण है।

एक खेल के रूप में काम [7:08-8:08]

क्या परमेश्वर को अय्यूब की परवाह है? क्या हमें अय्यूब के प्रति परमेश्वर की सापेक्ष देखभाल का अनुमान उसके प्रश्न से लगाना चाहिए, "क्या तू ने मेरे दास अय्यूब को देखा है?" खैर, हम अय्यूब के परिचय से लेकर अय्यूब के बारे में बातचीत से उसके बारे में परमेश्वर की भावनाओं का अनुमान नहीं लगा सकते। स्वर्ग के दृश्य में हर चीज़ एक साहित्यिक रचना, एक उपकरण, एक परिदृश्य है जिसे दृश्य को शाब्दिक रूप से सेट करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। पात्रों को नाटक के पात्र ही माना जाना चाहिए। मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूँ कि जॉब को एक नाटक या नाटकीय प्रस्तुति के रूप में डिज़ाइन किया गया है, लेकिन हमें पात्रों के बारे में इसी तरह सोचना होगा। उन्हें कथा द्वारा आकार दिया जा रहा है, और उनके कार्य कथा के उद्देश्यों को पूरा करते हैं।

चरम चरित्र-चित्रण: ईश्वर अपरिवर्तनीय के रूप में [8:08-12:17]

क्या परमेश्वर को अय्यूब की परवाह नहीं है क्योंकि वह उसकी बर्बादी की शुरुआत कर रहा है? नहीं, हम इसका अनुमान नहीं लगा सकते. साहित्यिक परिदृश्य ऐसे सभी आकलनों को परे रखता है। क्या परमेश्वर अय्यूब के बच्चों को हिंसक तरीके से मिटा देता है? केवल एक बात कहने के लिए भगवान को मानव जीवन के प्रति लापरवाह मानने का कोई कारण नहीं है।

अय्यूब की पीड़ा की चरम सीमा को उसकी धार्मिकता और समृद्धि की चरम सीमा के समान ही स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है। बातचीत के लिए चरम महत्वपूर्ण है। कुल हानि से कम कुछ भी उस ज्ञान निर्देश के लिए आवश्यक कारक प्रदान नहीं करेगा जिस पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यदि अय्यूब ने सिर्फ अपनी संपत्ति खोई है, अपने परिवार को नहीं, तो आप वास्तव में इस मुद्दे पर बात नहीं कर सकते। यदि अय्यूब ने अपना स्वास्थ्य नहीं, बल्कि अपनी संपत्ति और अपना परिवार खो दिया होता, तो बातचीत काम नहीं करती। आप हमेशा कहेंगे, ठीक है, उसने सब कुछ नहीं खोया है। आप जानते हैं, उनका परिवार उनके स्वास्थ्य से अधिक महत्वपूर्ण था। तो, उसने केवल अपना स्वास्थ्य या धन खोया। खैर, कम से कम उसे परिवार तो मिल गया। लेकिन नहीं, इस बातचीत के लिए उसे सब कुछ खोना होगा।

यह उसी प्रकार की सोच है जिसका उपयोग हम तब करते हैं जब हम यीशु के दृष्टांतों का सामना करते हैं, जो ऐसी स्थितियों का निर्माण करके यथार्थवादी मुद्दों की जांच करते हैं जो यथार्थवाद को बेहद अतिरंजित और अविश्वसनीय कारकों के साथ मिलाते हैं। चरम तब एक स्पष्ट संकेत प्रदान करते हैं कि हम एक साहित्यिक निर्माण से निपट रहे हैं।

क्या परमेश्वर अय्यूब की विनती को हृदयहीनता से अनदेखा करता है? खैर, यह सच है कि ईश्वर अनुत्तरदायी है। लेकिन अगर अय्यूब परमेश्वर को मुकदमे में फंसाने में सफल हो गया तो किताब और उसकी शिक्षा बुरी तरह से लड़खड़ा जाएगी। फिर ईश्वर ऐसी याचनाओं से अप्रभावित है, इससे वह हृदयहीन नहीं हो जाता; यह दर्शाता है कि यह समाधान का मार्ग नहीं है।

पुस्तक के संदेश का उद्देश्य यह बताना है कि ईश्वर द्वारा स्पष्टीकरण देने से संदेश प्राप्त नहीं होता है। और इसलिए, निःसंदेह, परमेश्वर अय्यूब द्वारा उसे स्पष्टीकरण देने के लिए आकर्षित करने के प्रयासों को अस्वीकार कर देता है। स्पष्टीकरण देने से पुस्तक का संदेश नष्ट हो जाएगा। ईश्वर की स्थिति का इस बात से कोई लेना-देना नहीं है कि वह अय्यूब के प्रति भावनात्मक रूप से उत्तरदायी है या नहीं। यह मुद्दा दांव पर नहीं है।

क्या परमेश्वर अय्यूब को डराकर चुप करा देता है? खैर, यहोवा के भाषणों में, उसे निर्विवाद रूप से डराने वाले के रूप में चित्रित किया गया है, क्योंकि आखिरकार, वह वश में नहीं है; वह पालतू नहीं

है। लेकिन क्या लेखक का इरादा पाठक को धिनौने झगड़ों में फंसाने का है? यह स्तोत्रों की पुस्तक के बिल्कुल विपरीत है, जिसमें ईश्वर सभी प्रकार की चिंताओं के साथ संपर्क में आता है। यहोवा की यह मुद्रा धार्मिक अंत के बजाय साहित्यिक साधन के रूप में आवश्यक है। बात यह नहीं है कि ईश्वर अप्राप्य है। मुद्दा यह है कि वह अप्रासंगिक है।

यीशु के दृष्टांतों के साथ नौकरी समानताएं [12:17-15:12]

हमने यीशु के दृष्टान्तों का उदाहरण लिया है। आइए यहां बात स्पष्ट करने के लिए एक जोड़े पर नजर डालें। यदि आप मैथ्यू 20 में श्रमिकों और उनकी मजदूरी के दृष्टांत पर नजर डालें, तो भगवान को ज़मींदार के रूप में चित्रित किया गया है। हम यह अनुमान नहीं लगा सके कि ईश्वर वास्तव में इस तरह से कार्य करता है। वेतन के भुगतान का स्वर्ग में लोगों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है, इसका सीधा संबंध नहीं है। केवल अंतिम घंटे काम करने वालों को समान वेतन की पेशकश उस बिंदु को उजागर करने के लिए जानबूझकर अतिशयोक्ति है जो दृष्टांत बता रहा है। हम उस दृष्टांत के माध्यम से यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि ईश्वर कैसे कार्य करता है।

ल्यूक 16 में, हमारे पास चतुर प्रबंधक का दृष्टान्त है। अपने प्रबंधकों के प्रति स्वामी की कृपादृष्टि की प्रतिक्रिया का अर्थ यह नहीं लगाया जाना चाहिए कि ईश्वर चाहता है कि हम भी उसी प्रकार उसकी कृपादृष्टि करें। भगवान का चरित्र एक चतुर संचालिका के रूप में प्रकट नहीं हो रहा है। लेकिन दृष्टांत में उन्हें यही साहित्यिक भूमिका दी गई है।

मैथ्यू 18:21 से 35 में निर्दयी सेवक इस प्रकार समाप्त होता है, "मेरा स्वर्गीय पिता तुममें से हर एक के साथ इसी प्रकार व्यवहार करेगा।" फिर भी, हम मदद नहीं कर सकते हैं लेकिन ध्यान दें कि मालिक नौकर को यातना के लिए सौंप देता है जब तक कि वह चुकाने में सक्षम न हो जाए। हम दृष्टांत के संदेश और ईश्वर के स्वरूप के बीच एक सूक्ष्म अंतर महसूस कर सकते हैं।

और अंत में, देर रात के अनुरोध का दृष्टांत, ल्यूक 11 श्लोक पाँच से आठ तक। वह चरित्र जो ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है, मदद करने के लिए अनिच्छुक है और जरूरतमंद व्यक्ति की डांट से उसे कार्रवाई में शामिल होने की जरूरत है। अपनी बात स्पष्ट करने के लिए यह ईश्वर का चरम चित्रण

होगा। इनमें से किसी में भी, क्या हम दृष्टांत की उस जानकारी का उपयोग वास्तव में ईश्वर कैसा है, इसकी रूपरेखा तैयार करने के लिए करते हैं? हम समझते हैं कि दृष्टान्त का आशय कहीं और है। इसी प्रकार, ईश्वर अय्यूब की पुस्तक में एक पात्र है। जिस प्रकार वह दृष्टांतों में एक पात्र है, उसी प्रकार यह जांचना महत्वपूर्ण है कि लेखक उस पात्र के साथ क्या करता है। यह किरदार जो करता है उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। पुस्तक का संदेश ईश्वर की गतिविधियों में नहीं बल्कि ईश्वर की योजनाओं, उद्देश्यों और उसकी नीतियों के बारे में दी गई जानकारी में निहित है।

अय्यूब की पुस्तक में ईश्वर के बारे में संदेश [15:12-16:21]

परमेश्वर के मार्ग लोगों की कल्पना से कहीं अधिक जटिल हैं। उन्हें एक साधारण समीकरण तक सीमित नहीं किया जा सकता। परमेश्वर के बारे में हम जो सीखते हैं वह यह है कि उसे हमारे द्वारा पुष्टि की आवश्यकता नहीं है। वह हमारे प्रति जवाबदेह नहीं है। अपनी बुद्धि से, उसने जैसा उचित समझा, वैसा संसार बनाया और हम उस बुद्धि पर भरोसा करते हैं। इसलिए हमें पुष्टि करनी चाहिए कि परमेश्वर के मार्ग सर्वोत्तम मार्ग हैं। ये वो बातें हैं जो किताब से निकलती हैं, क्योंकि यह हमें ईश्वर के बारे में सिखाती है। हमें सावधान रहना होगा कि हम पुस्तक के गलत क्षेत्रों से ऐसी जानकारी न लें जिससे ईश्वर की विकृत तस्वीर बन जाए। यह अब हमें अय्यूब की पुस्तक के धर्मशास्त्र को समझने की कोशिश करने के लिए प्रेरित करेगा, और यह हमारा अगला खंड होगा।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 26 है, नौकरी की किताब में भगवान। [16:21]

नौकरी की किताब
सत्र 27: नौकरी की पुस्तक का धर्मशास्त्र
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 27 है, नौकरी की पुस्तक का धर्मशास्त्र।

परिचय [00:22-00:48]

अब हम अय्यूब की पुस्तक के धर्मशास्त्र को विकसित करने का प्रयास करने के लिए तैयार हैं। हमने इसके उद्देश्य और इसके संदेश के बारे में बात की है। हमने इस बारे में बात की है कि पुस्तक में ईश्वर का वर्णन कैसे किया गया है, और वे सभी महत्वपूर्ण तत्व हैं, लेकिन आइए धर्मशास्त्र को एक साथ जोड़ने का प्रयास करें। जिन तरीकों से हम इस तक पहुंच सकते हैं उनमें से एक है ईश्वर के बारे में अय्यूब के झूठे विचारों से सीखने का प्रयास करना।

भगवान क्षुद्र नहीं है [00:48-3:09]

तो, आइए इस विचार से शुरुआत करें कि ईश्वर क्षुद्र है। फिर, अय्यूब यही सोचता था कि परमेश्वर छोटा है। अय्यूब न केवल इस संभावना के संबंध में संदिग्ध है कि वह भगवान के पुरस्कारों के प्रति अत्यधिक चौकस है, बल्कि वह भगवान के फैसले के प्रति भी अत्यधिक चौकस है। हम इसे अध्याय सात में पाते हैं, हम इसे अध्याय 14 में पाते हैं।

यह विचार कि अय्यूब परमेश्वर के न्याय के विचार को बहुत, बहुत गहराई से महसूस कर रहा है, और यह आज भी काफी विशिष्ट है। लोग कभी-कभी यह सोचने में अभ्यस्त हो जाते हैं कि ईश्वर अति-सतर्क है, चाहे वह पुरस्कार हो या निर्णय। किसी पीड़ित व्यक्ति के लिए यह कहना असामान्य नहीं है कि वह मुझसे क्या चाहता है? मैंने वह सब कुछ किया है जो उसने कहा था! और इस विचार के साथ कि ईश्वर किसी तरह हमारी कल्पना से भी अधिक कठोर होने वाला है। लोग आश्चर्य करने लगते हैं कि क्या भगवान एक दशक पहले हुई किसी छोटी-मोटी गलती या किसी चूक पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं और क्या भगवान ने अभी भी उसे कस कर पकड़ रखा है और उसे जाने नहीं दे

रहे हैं। हमें वास्तव में ईश्वर के बारे में सोचने के उन तरीकों से सावधान रहना होगा। हम अति-सतर्क नहीं होना चाहते या यह नहीं सोचना चाहते कि ईश्वर इन चीज़ों के प्रति अति-सक्षम है। हमने मत्ती 5:48 में कहा है कि ईश्वर पूर्ण है, और वह चाहता है कि हम पूर्ण बनें जैसे वह पूर्ण है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह निर्दयतापूर्वक हमसे छोटी-छोटी गलतियों का हिसाब मांगता है। वहां बात बिल्कुल भी ऐसी नहीं है। पवित्रशास्त्र हमें आश्चर्य करता है कि वह हमारी कमज़ोरियों को जानता है, और उसे एहसास होता है कि हम कमज़ोर हैं; उदाहरण के लिए, भजन 103 में। इसलिए, हमें यह पहचानना होगा कि ईश्वर के बारे में अय्यूब की चिंताएँ छोटी हैं और हम भी उसी तरह चिंतित हो सकते हैं। सचमुच, हमें ईश्वर के बारे में उस तरह के दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करना होगा।

ईश्वर अन्यायी नहीं है [3:09-8:02]

एक और दृष्टिकोण जो हम अय्यूब में पाते हैं वह यह है कि अय्यूब वास्तव में ईश्वर को अन्यायी मानता है। अय्यूब का यह दावा कि परमेश्वर के कार्यों से लाभ नहीं उठाया जा सकता, उसकी प्रारंभिक पुष्टियों के केंद्र में हैं, 1:21, 2:10। लेकिन वह वास्तव में अय्यूब के लिए केवल एक अस्थायी पद है। वह अंततः अपने तरीकों के न्याय के लिए भगवान को बुलाने की कोशिश करता है। याद रखें, वह अदालत में सुनवाई की मांग करता है। वह ईश्वर पर अपमानजनक शक्ति का आरोप लगाता है। यदि यह न्याय का मामला है तो इसमें एक सूक्ष्म परिवर्तन है कि कौन उसे चुनौती दे सकता है - वह अय्यूब 9:19 है; वह निर्दोष और दुष्ट दोनों को नष्ट कर देता है। यह अय्यूब 9:22 में केवल तीन पद बाद का है। 19:7 में, अय्यूब का दावा है कि कोई *मिशपैट नहीं है*। *मिशपत* न्याय के लिए हिब्रू शब्द है। और 27:2 में, वह दावा करता है कि परमेश्वर ने उससे *मिशपत रोक लिया है*। हम इसे 34:5 में भी देख सकते हैं। तो, यह विचार यह है कि ईश्वर उस पर खरा नहीं उतर रहा है जिसकी उससे उचित अपेक्षा की जानी चाहिए।

अध्याय 16, छंद 9 से 14 में, वह भगवान के खिलाफ एक हमलावर, एक प्रतिद्वंद्वी, एक विश्वासघाती और बिना किसी दया वाले योद्धा के रूप में अपने आरोपों को पंक्तिबद्ध करता है। अध्याय 40:8 में अय्यूब को परमेश्वर की फटकार यह स्पष्ट करती है कि अय्यूब ने परमेश्वर को अन्यायी माना है।

फिर, यह अक्सर हमारी आधुनिक प्रतिक्रियाओं की विशेषता है जब जीवन उस तरह नहीं चलता जैसा हम सोचते हैं कि उसे चलना चाहिए। जब हम दुनिया भर में ऐसी चीजें देखते हैं जो वास्तव में हमें परेशान करती हैं, तो हमारे लिए यह सोचना शुरू कर देना स्वाभाविक है कि भगवान किसी तरह उन मानकों से कम हो रहे हैं जो उन्हें रखने चाहिए। लेकिन अगर हम जीवन में आने वाली हर परिस्थिति में न्याय की उम्मीद करते हैं, तो हम अनिवार्य रूप से निराश होंगे। और, हमारी हताशा में, वह निराशा ईश्वर को अपने ध्यान में ले जा सकती है। समस्या यह है कि हम भी इस आधार को स्वीकार करने लगे हैं कि यदि न्याय ईश्वर से आता है और वह सर्वशक्तिमान है, तो हमें दिन-ब-दिन अपने अनुभव से ईश्वर के न्याय को प्रतिबिंबित करने की अपेक्षा करनी चाहिए। हम आसानी से ऐसा सोचते हैं। इस सोच में दोष यह है कि यह मानता है कि ब्रह्मांड ईश्वर के गुणों से अंकित है। यह खारिज की गई किताबों का एक दृश्य है।

गलती यह सोचना है कि न्याय सुनिश्चित करने के लिए भगवान की योजना दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। हम यह सोचने की गलती करते हैं कि यह ईश्वर की योजना है। वह बस यही नहीं कर रहा है। जब हमारे जीवन में न्याय कार्यान्वित नहीं होता है, तो यह निष्कर्ष निकालना आसान होता है कि ईश्वर निर्णय ले रहा है, लेकिन न्याय उन निर्णयों को संचालित नहीं कर रहा है। यदि वह न्याय के बिना शक्ति का प्रयोग कर रहा है, तो वह उस अराजक प्राणी की तरह बन जाता है जैसा अय्यूब ने उसे चित्रित किया है।

ऐसे में, वह ऑर्डर नहीं ला रहा है। वह व्यवस्था का स्रोत नहीं है। इसके बजाय, वह गैर-आदेश का प्रतिनिधित्व करता है। इस दुनिया में जहां व्यवस्था, गैर-व्यवस्था और अव्यवस्था तीनों मौजूद हैं, वहां न्याय का राज नहीं हो सकता। तो, याद रखें, हमने जो विकल्प सुझाया है वह यह है कि भगवान का डिज़ाइन उनकी बुद्धि का प्रतिबिंब है। वह व्यवस्था का स्रोत और केंद्र है, लेकिन न तो गैर-व्यवस्था और न ही अव्यवस्था उसके नियंत्रण से बाहर है। ईश्वर का मूल्यांकन किसी बाहरी मानक के अनुसार नहीं किया जा सकता, क्योंकि इससे वह उस मानक पर निर्भर हो जाएगा। हमारा स्थान भगवान को जवाबदेह ठहराने का नहीं है। उसे जवाबदेही के लिए बुलाना नहीं है क्योंकि ऐसा करने से अंततः ईश्वर को ईश्वर से कमतर माना जाएगा।

ईश्वर से छेड़छाड़ नहीं की जा सकती [8:02-11:00]

अय्यूब यह भी दिखाता है कि उसका मानना है कि ईश्वर के साथ छेड़छाड़ की जा सकती है। अय्यूब ईश्वर को इतना हाशिए पर रखता है कि उसे बरगलाया जा सकता है। अय्यूब ने परमेश्वर को उलझाने, उसे अदालत में खींचने की कोशिश की थी, और वह असफल रहा। तो, फिर वह उसका उपयोग करता है। यह अध्याय 31 में निर्दोषता की प्रतिज्ञा है। अय्यूब को अब इस बात पर विश्वास नहीं है कि उसे ईश्वर से न्याय मिलेगा। अब वह समाज में संतुलन स्थापित करके किसी प्रकार की सुसंगतता चाहता है। उसकी बेगुनाही की शपथ यही करने का प्रयास करती है। वह उन सभी अपराधों को गिनाता है जो उसने नहीं किए हैं, मूल रूप से भगवान को आमंत्रित करता है कि यदि वह वास्तव में उन अपराधों में से किसी का दोषी है तो उसे मार डाला जाए और भगवान की चुप्पी बनी रहती है। परमेश्वर की चुप्पी ने अय्यूब के विरुद्ध काम किया था, और अय्यूब उसे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करने की कोशिश करता है। वह उन्हें कार्रवाई करने के लिए बाध्य करके ईश्वर का हाथ थामने का इरादा रखता है या ईश्वर की चुप्पी में, अय्यूब को दोषसिद्धि मिलेगी। परमेश्वर की चुप्पी में, उसने चुपचाप, निष्क्रिय रूप से अय्यूब को दोषमुक्त कर दिया होता। यदि ईश्वर द्वारा अय्यूब की प्रारंभिक बर्बादी अनुचित साबित होती है, तो ईश्वर को अपनी नीतियों में असंगत देखा जाएगा। यदि प्रतिशोध सिद्धांत उसकी नीतियों को परिभाषित करता है तो अय्यूब की प्रतिष्ठा बच जाएगी जबकि भगवान की प्रतिष्ठा जब्त हो जाएगी। अय्यूब 1, श्लोक 4 से 5 में, हमने इसके बारे में बहुत बात की है; अय्यूब के व्यवहार से पता चलता है कि उसका मानना है कि ईश्वर को प्रबंधित किया जा सकता है। वह इस बात पर विश्वास करने के लिए आगे बढ़ गया है कि ईश्वर को अनुष्ठानिक तरीकों से मात दी जा सकती है। खतरा यह है कि हमें यह विश्वास हो सकता है कि ईश्वर अपनी अपेक्षाओं के प्रति अति-सतर्क हो सकता है। अय्यूब को आश्चर्य होता है कि क्या ईश्वर उदासीन, हिंसक, व्यस्त या शायद अयोग्य भी है। आज हमारे लिए यह विश्वास करना बहुत आसान है कि ईश्वर को हेरफेर किया जा सकता है, चाहे हमारे दान के माध्यम से, हमारी चर्च उपस्थिति, हमारी पूजा, या ईसाई अनुशासनों के हमारे प्रदर्शन के माध्यम से, कि किसी तरह, हम ईश्वर को वह करने के लिए हेरफेर कर सकते हैं जो हम चाहते हैं कि वह करे। यह सोचने का लाभ-उन्मुख

तरीका है, और हम ऐसा नहीं कर सकते। हमें इसे अपने अंदर बर्दाश्त नहीं करना चाहिए.

निष्कर्ष [11:00-11:56]

इसलिए, अय्यूब की किताब से हमें जो बहुत सारा धर्मशास्त्र मिलता है, वह तब मिलता है जब हम ईश्वर के बारे में सोचने में अय्यूब की त्रुटियों को पहचानते हैं, अपने आप में उन्हीं झुकावों को पहचानते हैं, और फिर किताब से निकलने वाला एक अच्छा धर्मशास्त्र हमें उन गलतफहमियों को दूर करने में मदद कर सकता है। भगवान और सुनिश्चित करें कि वे हमारे सोचने के तरीकों को चित्रित न करें।

पुस्तक का धर्मशास्त्र, निस्संदेह, ईश्वर की तस्वीर से परे, पीड़ा की तस्वीर तक जाता है। और हम अगले खंड में अपना ध्यान अय्यूब की पुस्तक में पीड़ा के धर्मशास्त्र की ओर लगाएंगे।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 27 है, नौकरी की पुस्तक का धर्मशास्त्र। [11:56]

नौकरी की किताब

सत्र 28: दुख का धर्मशास्त्र और नौकरी की पुस्तक

जॉन वाल्टन द्वारा

यह जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 28, पीड़ा और नौकरी की किताब है।

परिचय [00:22-1:03]

अब हम अपना ध्यान अय्यूब की पुस्तक में पीड़ा के धर्मशास्त्र की ओर लगा सकते हैं। यहां तक कि जब हम ऐसा करते हैं, तो याद रखें कि हमने नोट किया है कि पुस्तक वास्तव में हमें पीड़ा के उत्तर जानने में मदद करने के लिए नहीं बनाई गई है और न ही वास्तव में हमें एक मॉडल देने के लिए बनाई गई है कि पीड़ा कैसी दिखनी चाहिए, और हमें इस पर कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए। . इसका उद्देश्य केवल हमें पीड़ा के समय ईश्वर के बारे में उचित रूप से सोचने में मदद करना है। लेकिन फिर भी, हम अय्यूब की पुस्तक में पीड़ा के धर्मशास्त्र के कुछ महत्वपूर्ण तत्वों को रेखांकित कर सकते हैं।

दुख के स्तर और प्रकार [1:03-2:19]

जब हम पीड़ा के बारे में बात करते हैं, तो निस्संदेह, हम कई अलग-अलग स्तरों के बारे में बात कर सकते हैं। हम दीर्घकालिक या दुर्बल कर देने वाले दर्द या चोट के साथ शारीरिक पीड़ा के बारे में बात कर सकते हैं। हम मनोवैज्ञानिक पीड़ा के बारे में बात कर सकते हैं: दुःख, शर्म, चिंता, अपमानजनक या टूटे हुए रिश्ते। हम परिस्थितिजन्य पीड़ा, खान-पान संबंधी विकार के साथ रहना, एचआईवी या तंत्रिका संबंधी बीमारी के बारे में बात कर सकते हैं। हम सरोगेट पीड़ा के बारे में भी बात कर सकते हैं क्योंकि हम वृद्धों या असाध्य रूप से बीमार लोगों की देखभाल करते हैं, पीड़ा इसलिए क्योंकि जो हमारे निकट हैं वे पीड़ित हैं। अंत में, हम प्रणालीगत पीड़ा के बारे में सोच सकते हैं क्योंकि हम उन लोगों पर विचार करते हैं जिन्हें दमनकारी शासन से खतरा है, मानव तस्करी, भूख और बीमारी के शिकार हैं। तब हम देखते हैं कि पीड़ा हमारे अनुभव और हमारी दुनिया में

कई, कई अलग-अलग स्तरों पर मौजूद है। दुख हमें तोड़ सकता है, और यह उस टूटी हुई दुनिया की विशेषता है जिसमें हम रहते हैं।

पीड़ा से प्रश्न उठते हैं [2:19-4:32]

इसलिए, पीड़ा का कोई भी धर्मशास्त्र यह पूछता है कि हम पीड़ा के संबंध में ईश्वर के बारे में कैसे सोचते हैं। पीड़ा के धर्मशास्त्र को यही करना चाहिए। तो, हम इस तरह के मुद्दों पर विचार कर सकते हैं: भगवान ने ऐसी दुनिया क्यों बनाई है जिसमें ऐसी पीड़ा मौजूद हो सकती है? वह इसे जारी क्यों रहने देता है? मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है? क्या भगवान मुझे कुछ सिखाने की कोशिश कर रहे हैं? क्या मैंने कुछ गलत किया? ये कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनका हमें समाधान करने की आवश्यकता है। मूल रूप से, एक ईश्वर जो सर्वथा अच्छा और सर्वशक्तिमान है तथा जिसमें न्याय और करुणा है, वह ऐसी दुनिया बनाने की अनुमति देना तो दूर की बात है, जिसमें पीड़ा इतनी व्यापक है?

अब, निःसंदेह, संशयवादियों के पास इसे देखने के अपने तरीके हैं। वे कहते हैं कि हम अपर्याप्त ईश्वर के लिए सिर्फ बहाना बना रहे हैं, कि या तो कोई ईश्वर नहीं है या ऐसा ईश्वर जो ऐसी चीजों की अनुमति देगा वह हमारी पूजा के योग्य नहीं है।

यदि हम ईश्वर को सही ठहराने के प्रयास करते हैं, तो हमें इस धारणा के तहत काम करना होगा कि उसे कुछ बाहरी मानदंडों के अनुरूप होना होगा, जो कि वह नहीं करता है, और हम यह निर्धारित करने के लिए न्यायाधीश की बेंच पर बैठ सकते हैं कि क्या वह हमारी अपेक्षाओं को पूरा करने में सफल रहा है। हम न तो भगवान से अपने लिए हिसाब मांगते हैं और न ही यह पूछते हैं कि हमारा जीवन, या दुनिया वैसी क्यों है जैसी वे हैं। इससे उत्पन्न होने वाली पीड़ा का कोई धर्मशास्त्र नहीं है। हम अंततः यह जानना चाहते हैं कि अय्यूब की पुस्तक हमें यह सीखने में मदद कर सकती है कि पीड़ा के आलोक में ईश्वर के बारे में कैसे सोचा जाए, चाहे वह व्यक्तिगत हो या सार्वभौमिक। तो, आइए इसे पांच दृष्टिकोणों के संबंध में देखें।

दुख पर पाँच परिप्रेक्ष्य:

1) **दुख समस्त मानव जाति के लिए सार्वभौमिक है [4:32-5:07]**

नंबर एक, पीड़ा सारी मानवता की नियति है। यदि आप अभी पीड़ित नहीं हैं, तो संभावना यह है कि अंततः आप पीड़ित होंगे। दुख सारी मानवता की नियति है। और उस अर्थ में, यह एक व्यक्ति को यहां कष्ट सहने के लिए और एक व्यक्ति को वहां कष्ट भोगने के लिए चुनना नहीं है। यह वही है जो हम सभी कॉर्पोरेट और व्यक्तिगत रूप से अनुभव करते हैं, कुछ अधिक, कुछ कम स्पष्ट।

2) पीड़ा सृजन की प्रक्रिया की एक आकस्मिकता है [5:07-7:54]

नंबर दो, पीड़ा सृजन प्रक्रिया की एक आकस्मिकता है। हम अभी तक पूर्ण सुव्यवस्थित दुनिया में नहीं रह रहे हैं, और नई सृष्टि तक हम ऐसा नहीं करेंगे। तब पीड़ित होना अपेक्षित आकस्मिकताओं में से एक है क्योंकि व्यवस्था अभी तक पूरी तरह से प्राप्त नहीं हुई है। दुःख के लिए अव्यवस्थित एवं अव्यवस्था दोनों ही उत्तरदायी हैं। भगवान का डिज़ाइन हमें तंत्रिका तंत्र के साथ बनाना था जो हमें दर्द के रूप में अनुभव होने वाले संभावित नुकसान की चेतावनी देता है। इसी तरह भगवान ने हमें बनाया है। यदि हमारा तंत्रिका तंत्र विफल हो जाता है, तो हमें बड़ी समस्याएँ होती हैं। भगवान ने हमें भावनाओं के साथ बनाया है, और अपनी भावनाओं के माध्यम से, हम आहत भावनाओं का अनुभव कर सकते हैं। यदि हम शारीरिक या भावनात्मक रूप से कुछ भी महसूस नहीं कर सकते तो हमें चोट नहीं पहुँच सकती। क्या हमने सोचा कि यह अच्छी बात है कि भगवान ने हमें तंत्रिका तंत्र और भावनाओं के साथ बनाया है? चूँकि हम प्यार करने में सक्षम हैं, हम दर्द के प्रति संवेदनशील हैं क्योंकि प्यार अक्सर इस जीवन में दर्द का कारण बनता है। इस संसार में, इस प्रकार के शरीरों के साथ, कष्ट अपरिहार्य है। हमें इसे अपनी अपेक्षाओं में शामिल करना होगा। सामान्य को कष्ट-मुक्त जीवन के रूप में परिभाषित नहीं किया जा सकता। यह सामान्य नहीं है। सृजन की प्रक्रिया में वास्तविकताओं को देखते हुए सामान्य को फिर से परिभाषित करना होगा। यदि हम दुख की आशा करते हैं, तो जब हम इसका अनुभव करेंगे तो यह असामान्य नहीं लगेगा। इससे दुख सहना आसान नहीं होता है, लेकिन यह इसके बारे में हमारे दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकता है। हमें पीड़ा के लिए अकेला नहीं छोड़ा गया है। एक मानव जाति के रूप में, हम यही अनुभव करते हैं।

3) दुख आंतरिक रूप से पाप से जुड़ा नहीं है [7:54-11:26]

तीसरा, दुख को आंतरिक रूप से पाप से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। पीड़ा, कभी-कभी, अव्यवस्था का परिणाम हो सकती है। पाप कोई करता है और उसका फल कोई और भुगतता है, परंतु इसका अनुभव अव्यवस्थित अपूर्ण रचना के परिणाम स्वरूप भी हो सकता है। कुछ पीड़ाएँ निर्विवाद रूप से पाप का प्रत्यक्ष प्राकृतिक परिणाम हैं। निःसंदेह। ईश्वर कष्ट को पाप की सजा के रूप में उपयोग कर सकता है, लेकिन हम कभी यह नहीं मान सकते कि हमारा या किसी और का कष्ट ईश्वर द्वारा दंड का कार्य है। पवित्रशास्त्र में केवल भविष्यसूचक आवाज़ें ही पहचान सकती थीं कि परमेश्वर की सज़ा क्या थी और क्या नहीं। हमारे पास ऐसी कोई भविष्यसूचक आवाज़ नहीं है। हम अच्छी तरह से विश्वास कर सकते हैं कि हम वही काटेंगे जो हमने बोया है गलातियों 6:7, लेकिन यह हमें व्यवहार और परिस्थितियों के बीच एक-से-एक पत्राचार करने की अनुमति नहीं देता है। हालाँकि, पीड़ा हमें अपने जीवन का मूल्यांकन करने, यह निर्धारित करने के लिए प्रेरित कर सकती है कि हम सही रास्ते पर हैं या नहीं। ईश्वर की बुद्धि पर भरोसा करना बाइबल की सबसे मजबूत सलाह है। यह पर्याप्त होना चाहिए।

ट्रस्ट यह पूछने से बचता है, भगवान ने ऐसा क्यों किया? या उसने ऐसा क्यों होने दिया? यह हमें उस क्षेत्र में ले जाता है जहाँ हमें मार्गदर्शन देने के लिए कोई नौवहन उपकरण मौजूद नहीं है। ईश्वर न तो हर परिस्थिति का सूक्ष्म प्रबंधन कर रहा है और न ही आपके या मेरे जीवन में होने वाली हर चीज़ पर हस्ताक्षर कर रहा है। फिर भी यह सोचना विपरीत दिशा में एक गलती होगी कि वह दूर है और अलग हो गया है।

मुझे "अनुमति" और "परमिट" जैसे शब्दों का उपयोग करने पर भी आश्चर्य होता है। मुझे नहीं लगता कि हमें इनका इस्तेमाल ईश्वर पर दोष मढ़ने के लिए करना चाहिए। ये कुछ ऐसे एकमात्र शब्द हैं जिनसे हम उसे कुछ हद तक हटा सकते हैं, लेकिन यह हमारी भाषा है, और यह ईश्वर को समझाने के लिए अपर्याप्त है।

जॉन पोलकिंगहॉर्न ने बयान दिया है कि "दुनिया की पीड़ा और बुराई ईश्वर की कमजोरी, अनदेखी या उदासीनता के कारण नहीं है, बल्कि वे ईश्वर के अलावा किसी अन्य रचना की अपरिहार्य लागत हैं।" "किसी रचना की अपरिहार्य लागत को ईश्वर के अलावा अन्य होने की अनुमति दी जाती है।"

4) विश्वास को गहरा करने के अवसर के रूप में कष्ट उठाना [11:26-14:18]

नंबर चार, पीड़ा के धर्मशास्त्र में, ऐसे दृष्टिकोण जिन्हें हम अपना सकते हैं। हम यह पहचान सकते हैं कि कभी-कभी पीड़ा हमारे विश्वास को गहरा करने का अवसर प्रदान कर सकती है। हममें से किसी ने भी अपने जीवन में चाहे जितनी भी पीड़ा का अनुभव किया हो, उस पीड़ा ने हमें वह बनाने में योगदान दिया है जो हम हैं, चाहे वह अच्छा हो या बुरा। मैं आपको रोमियों 5:3 की ओर इंगित करूंगा।

हम बाइबिल की शिक्षा के आधार पर यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि ईश्वर चाहता है कि हर कोई स्वस्थ और खुश रहे। इसलिए, हमें अपनी स्थिति के समाधान के लिए केवल विश्वास के साथ प्रार्थना करने की आवश्यकता है। हो सकता है कि भगवान ऐसा करना न चाहें। हम अपने और दूसरों के लिए उपचार के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। हमें विश्वास होना चाहिए कि यदि ईश्वर चाहे तो वह ठीक कर सकता है, लेकिन हम उससे माँग करने की स्थिति में नहीं हैं। जब परमेश्वर अपने लोगों इसराइल को जल के माध्यम से लाने की बात करता है, तो हमें यह समझना होगा कि यह संकटपूर्ण जल से बचने में उनकी मदद करने से अलग है। वह मुसीबत के समय में उनसे मिलने जा रहा है। शायद हमारे लिए यह प्रार्थना करना अधिक महत्वपूर्ण है कि ईश्वर हमें कष्ट सहने के लिए और परीक्षण या संकट के समय में उसे दूर करने के बजाय उसके प्रति वफादार रहने के लिए मजबूत करे।

यह महत्वपूर्ण है कि हम ईश्वर में निराशा के साथ प्रतिक्रिया न करें। ईश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करने में चूक नहीं करता या चूक नहीं करता। यदि हमें ऐसा लगता है कि वह हमारी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरा है, तो समस्या उसमें नहीं है। हमें अपनी अपेक्षाओं की दोबारा जांच करनी चाहिए। जब जीवन अपने सबसे निचले स्तर पर हो तो हमारे लिए ईश्वर का सम्मान करने का प्रयास करना महत्वपूर्ण है। आशा खत्म हो जाने पर भी हमें उस पर भरोसा करने का प्रयास करना चाहिए। ईश्वर हमसे यही अपेक्षा करता है। हम एक ऐसी दुनिया में हैं जहां दुख सहना पड़ता है और हम इस पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं, यह सब मायने रखता है।

5) मसीह की पीड़ा में भाग लेना [14:18-15:01]

अंत में, पाँचवाँ परिप्रेक्ष्य यह है कि जब हम पीड़ित होते हैं, तो हम मसीह की पीड़ा में भाग लेते हैं। मसीह एक अलग रास्ता दिखा रहे थे जो हार के माध्यम से विजय दिलाएगा, जिसकी क्रॉस अनिवार्य रूप से गवाही देता है। हमें सदैव शत्रुओं से मुक्ति की आशा नहीं करनी चाहिए। मैं आपको फिलिप्पियों 3:10 की ओर निर्देशित करूंगा। इसलिए, हम अपने कष्टों का सामना करने का प्रयास कर सकते हैं क्योंकि हम कल्पना करते हैं कि हम मसीह के कष्टों में भाग ले रहे हैं।

निष्कर्ष [15:01-15:49]

इनमें से कोई भी यह सुझाव नहीं देता कि हमें अपने जीवन से दुख समाप्त होने की उम्मीद करनी चाहिए। यह हमारी दुनिया की स्थिति और हमारी मानवीय दुर्दशा है। हमें ईश्वर को दोष देने के बारे में नहीं सोचना चाहिए। हमें यह देखना चाहिए कि हमारे जीवन में उसकी गवाही देते समय हमारे कष्टों के माध्यम से कौन से उद्देश्य पूरे हो सकते हैं। तो, पुस्तक में थोड़ा सा धर्मशास्त्र है। अब हम अपना ध्यान नौकरी की पुस्तक के संदेश को सारांशित करने की ओर लगाना चाहते हैं, और वह अगले खंड में होगा।

यह जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 28, पीड़ा और नौकरी की किताब है। [15:49]

नौकरी की किताब
सत्र 29: अय्यूब की पुस्तक का संदेश
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 29 है, नौकरी की पुस्तक का संदेश।

क्यों प्रश्न का कोई उत्तर नहीं [00:21-2:35]

तो, अंततः, हम नौकरी की पुस्तक के संदेश को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए तैयार हैं। क्या यह उत्तर देता है? यह इस पर निर्भर करता है कि आपके प्रश्न क्या हैं। यदि आपका प्रश्न है, "क्यों?", तो शायद नहीं। अय्यूब ने कभी नहीं बताया कि उसे कष्ट क्यों हुआ। अय्यूब के व्यवहार में उस पीड़ा का कोई कारण या कारण नहीं है। जब हम अतीत की ओर देखते हैं तो हम कारण तलाश रहे होते हैं। जैसा कि हमने जॉन 9 में बात की थी, हमें उद्देश्य की तलाश में, यीशु की सलाह पर भविष्य की ओर देखना चाहिए। अतीत के बारे में पूछने का पहला प्रयास क्यों छोड़ दिया जाना चाहिए। और यहां तक कि बाद वाले उद्देश्य की तलाश को भी हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए क्योंकि तथ्य यह है कि जब हम उद्देश्य की तलाश करते हैं, तब भी हम उसे हमेशा नहीं पाते हैं। यह सोचने का कोई आधार नहीं है कि कारण मौजूद हैं।

हमारा आधुनिक रुझान यह कहने का है कि, ठीक है, शायद मैं कारण नहीं जान सकता, लेकिन मैं स्वर्ग में इसका पता लगा लूंगा। मैं कल्पना करता हूं कि लोग कारण जानने के लिए बूथ पर कतार में खड़े हैं और यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि उन्हें यह या वह कष्ट क्यों झेलना पड़ा। इस पर भरोसा मत करो. क्योंकि ऐसा सिर्फ नहीं है कि हम कारण नहीं जानते, और ऐसा भी नहीं है कि हम कारण नहीं जान सकते; बात यह है कि हो सकता है कि इसका कोई कारण न हो। हमारे कुछ अनुभव ऐसी दुनिया में रहने का परिणाम हैं जिसमें गैर-व्यवस्था और अव्यवस्था शामिल है; फिर, वे अनुभव कारणों का परिणाम नहीं हैं। वे दुनिया जैसी है वैसी होने का परिणाम हैं। यह कोई कारण नहीं है.

अपनी रक्षा के लिए भगवान को बुलाना गलत है [2:35-2:55]

इसके विपरीत, हम अपने कष्टों के लिए उद्देश्य तलाश सकते हैं, लेकिन इसकी कोई गारंटी नहीं है कि हम उन्हें ढूँढ लेंगे, और उद्देश्य स्वयं जटिल हो सकते हैं। इसलिए, यदि आपका प्रश्न यह है कि आपको अय्यूब की पुस्तक में या कभी भी उत्तर की अपेक्षा क्यों नहीं करनी चाहिए। यदि आपका प्रश्न यह है कि ईश्वर क्या कर रहा है? और आपके मन में यह विचार है कि ईश्वर इस संसार में क्या कर रहा है, इसके लिए उसे बहुत कुछ उत्तर देना है ; ठीक है, नहीं, हमें उस उत्तर की अपेक्षा भी नहीं करनी चाहिए। हमें यह आशा नहीं करनी चाहिए कि ईश्वर स्वयं अपनी रक्षा करेगा। ईश्वर को अदालत में बुलाना, उससे अपना बचाव करवाना अय्यूब की गलती है। नहीं, नहीं , हमें ईश्वर से यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि वह अपनी रक्षा करेगा। ईश्वर जो कर रहा है उसकी व्याख्याएँ निश्चित रूप से हमारे वेतन ग्रेड से बहुत ऊपर और हमारी खोज से परे हैं।

निष्काम धार्मिकता [2:55-4:49]

क्या होगा यदि हमारा प्रश्न यह है: क्या निष्काम धार्मिकता है? अब, निस्संदेह, यह वह प्रश्न नहीं है जो लोग पूछते हैं, लेकिन यह वह प्रश्न है जो चैलेंजर ने प्रस्तुत किया है, और यह वह प्रश्न है जो पुस्तक के एक बड़े हिस्से के लिए एक विषय है। यह वास्तव में पूछने के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है क्योंकि पुस्तक यही प्रश्न प्रस्तुत करती है। क्या कोई बिना कुछ लिये भगवान की सेवा करता है? क्या मैं? क्या आप? हमें ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, ताकि हम निःशुल्क सेवा करने के लिए तैयार रहें। ईसाइयों के रूप में, हमारे पास लाभ, शाश्वत जीवन, क्षमा, मोक्ष और लाभ हैं, लेकिन हम उन्हें अर्जित नहीं करते हैं। ऐसा नहीं है कि हम उनके लायक हैं। हमें बिना किसी शुल्क के ईश्वर की सेवा करने के लिए तैयार रहना चाहिए, भले ही हमें इससे कोई लाभ न मिले।

इसका कोई कारण नहीं हो सकता है [4:49-5:27]

इस तथ्य से परे कि हमें कोई स्पष्टीकरण नहीं मिलता कि कुछ क्यों हुआ, पुस्तक हमें उस महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि तक पहुंचने में मदद करती है जिसके बारे में हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि कोई स्पष्टीकरण है। फिर, कोई कारण नहीं है। दूसरे शब्दों में, यह सिर्फ एक मामला नहीं है कि एक उत्तर है, और हम केवल इसलिए नहीं जान सकते क्योंकि हम इसे समझ नहीं सकते हैं या

क्योंकि इसे रोका जा रहा है। हो सकता है कि इसका कोई कारण न हो, और हमें इसके साथ जीने के लिए तैयार रहना होगा।

हम भगवान, भगवान से आगे नहीं निकल सकते [5:27-6:22]

एक और बात जो हम सीखते हैं वह यह है कि हम ईश्वर, ईश्वर से बाहर नहीं निकल सकते। हमें अपने आप को यह भ्रम नहीं रखना चाहिए कि, दुनिया पर शासन करते हुए, हम इसे बेहतर कर सकते हैं। याद रखें, अध्याय 40 में, भगवान अय्यूब को अलंकारिक रूप से यह प्रदान करता है। आगे बढ़ो, इसे आजमाओ। वो कैसा जा रहा है? हम इसे बेहतर नहीं कर सकते। इसका मतलब यह नहीं है कि हम यह कह रहे हैं, "ठीक है, भगवान बहुत अच्छा काम नहीं करता है। मैं इसे बेहतर नहीं कर सकता, लेकिन वह बहुत अच्छा काम नहीं कर रहा है।" नहीं, नहीं, लेकिन हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हम ईश्वर, ईश्वर को मात दे सकते हैं। इस तरह की गलत सोच हमें बिल्कुल अय्यूब की जगह पर खड़ा कर देती है, हम ईश्वर के बारे में बहुत ही सरल और यंत्रवत् सोचते हैं और अपने बारे में बहुत ऊँचा सोचते हैं।

मुख्य संदेश दुख के बीच में भगवान पर भरोसा करना है [6:22-8:05]

पुस्तक के संदेश की कुंजी यह है कि विश्वास ही एकमात्र संभावित प्रतिक्रिया है। हमारे अनुभव व्याख्या से परे हैं। यदि कुछ भी मौजूद है तो कारण क्षणभंगुर और अपर्याप्त हैं। स्थिति जितनी बदतर हो, उस पर भरोसा करना उतना ही कठिन होता है और ऐसा करना उतना ही आवश्यक होता है। लेकिन भरोसा यही है। यदि हमारे पास सभी उत्तर हों, तो हमें भरोसा करने की आवश्यकता नहीं होगी। विश्वास वहां आता है जहां तर्क विफल हो जाता है। भगवान की बुद्धि प्रबल है। ईश्वर के न्याय की पुष्टि की जानी चाहिए लेकिन हमारे अनुभवों में स्पष्ट होने की उम्मीद नहीं की जा सकती। हमारे दिमाग में हमारे लाभों का अवमूल्यन होना चाहिए। हम लाभ के लिए नहीं जीते हैं। ईश्वर के साथ हमारी साझेदारी सर्वोपरि है। उसने हमें ब्रह्मांड के लिए अपनी योजनाओं और उद्देश्यों के एक महान उद्यम में भागीदार बनाया है। वह जो कर रहा है उसमें हमें सहभागी बनना होगा, उसके साथ साझेदारी करनी होगी। हम इससे जो प्राप्त करते हैं उसका मूल्य है लेकिन यह हमारी प्रतिबद्धताओं और व्यवहार में प्रेरक कारक नहीं होना चाहिए।

इब्राहीम और लाभ के बिना भगवान की सेवा [8:05-10:37]

अय्यूब की पुस्तक का सन्देश: क्या तुम परमेश्वर की सेवा मुफ्त में करते हो? या क्या आप केवल उससे प्राप्त होने वाले लाभ के लिए ही परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं? फिर, इब्राहीम को कुछ ऐसा ही करने के लिए कहा गया। उस वेदी पर सिर्फ उसका बेटा ही नहीं बंधा था। यह वाचा और सभी वाचा के वादे थे क्योंकि यदि इसहाक नहीं होता, तो कोई वाचा नहीं होती। परिवार खत्म हो जाता है, कोई ज़मीन नहीं, कोई परिवार नहीं, कोई आशीर्वाद नहीं। उस समय तक वाचा उस वेदी पर थी; परमेश्वर ने इब्राहीम से जो कुछ भी त्यागने के लिए कहा, उसने बदले में उससे कुछ बेहतर करने का वादा किया। फिर भी, इब्राहीम के लिए विश्वास की आवश्यकता थी, लेकिन वह हमेशा विश्वास में प्रतिक्रिया देकर वाचा के माध्यम से लाभ प्राप्त करने में सफल रहा।

अध्याय 22 में, ऐसा नहीं है। इब्राहीम के पास हासिल करने के लिए कुछ भी नहीं है, ऐसा कुछ भी नहीं है जो उस कूबड़ से उबरना आसान बना दे। उसे कुछ भी हासिल नहीं होने वाला। वास्तव में, वह वह सब कुछ त्यागने जा रहा है जो वह प्राप्त कर सकता था। इसीलिए भगवान अध्याय 22, श्लोक 12 में कहते हैं। "अब मुझे पता चला है कि तुम भगवान से डरते हो।" उस शब्द का विकल्प होता। "अब मुझे पता है कि आप इसमें अपने लिए हैं, कि आप इसमें लाभ के लिए हैं, कि आप केवल तभी विश्वास दिखा रहे हैं जब आपको इससे कुछ मिलता है।" वह दूसरा विकल्प होता। परन्तु अब, सारी वाचा अपने प्रिय पुत्र के साथ उस वेदी पर बैठ गई जब वह इसे त्यागने के लिए तैयार था; भगवान ने कहा, "अब मुझे पता चला कि तुम भगवान से डरते हो।" निष्काम धार्मिकता यही है: बाकी सब कुछ त्यागने के लिए तैयार रहना।

तो यह नौकरी की किताब का प्रश्न है। क्या हममें से कोई ईश्वर से व्यर्थ ही डरता है? यह पूछने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रश्न है, और यह हमें हमारे अंतिम खंड तक ले जाएगा। नौकरी की किताब का आवेदन.

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 29 है, नौकरी की पुस्तक का संदेश। [10:37]

नौकरी की किताब
सत्र 30: नौकरी की पुस्तक का अनुप्रयोग
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 30 है, नौकरी की पुस्तक का अनुप्रयोग।

परिचय: अनुप्रयोग, कार्य बिंदु नहीं बल्कि सोच बिंदु [00:23-1:53]

तो अंततः, हम नौकरी की पुस्तक को लागू करने के बारे में कैसे सोचते हैं? हमने अपने जीवन के लिए अय्यूब की पुस्तक से क्या सीखा है? जब मैं आवेदन के बारे में सोचता हूँ, तो जरूरी नहीं कि मैं इसके बारे में कार्रवाई बिंदुओं के संदर्भ में सोचता हूँ जो मैं इस सप्ताह कर सकता हूँ। इसमें कुछ भी गलत नहीं है, और कभी-कभी हम उन चीज़ों की पहचान कर सकते हैं जो वास्तव में हमारे व्यवहार को बदल सकती हैं जब हमें किसी ऐसी चीज़ की ओर इशारा किया जाता है जिसे हम गलत तरीके से कर रहे हैं। वह ठीक है।

लेकिन मुझे लगता है कि अनुप्रयोग का एक और भी महत्वपूर्ण पहलू है; कार्य बिंदुओं के संदर्भ में सोचने के बजाय, मैं सोच बिंदुओं के बारे में बात करना पसंद करूंगा। हम अलग तरीके से कैसे सोच सकते हैं? अंत में, हम नहीं चाहते कि बाइबल हमें इस सप्ताह के लिए त्वरित समाधान दे। हम चाहते थे कि यह हमारे दिलों और जीवन में समा जाए ताकि हम वास्तव में अलग तरह से सोचना शुरू करें। जैसे ही हम अलग सोचेंगे, हम अलग तरह से कार्य करेंगे। चूँकि हम अलग तरह से सोचते हैं, इसलिए इस सप्ताह केवल एक कार्य बिंदु के लिए थोड़ी सी रणनीति बनाने के बजाय जो कुछ भी आएगा उसके लिए हम तैयार रहेंगे।

दुख के लिए तैयार रहना [1:53-4:20]

कष्ट सहने और ईश्वर के बारे में सोचने जैसी किसी बात पर जब जीवन गलत हो जाए तो हमें उसके लिए तैयार रहना होगा। एक मैराथन धावक एक सुबह उठकर उस दिन मैराथन दौड़ने का फैसला

नहीं करता है। एक कॉन्सर्ट पियानोवादक हजारों लोगों के सामने कॉन्सर्ट हॉल में नहीं जाता है और एक जटिल टुकड़े को देखने-पढ़ने का फैसला नहीं करता है। यह तैयारी ही है जो हमें सफल होने का मौका देती है। जीवन अलग नहीं है। हमें जीवन की आकस्मिकताओं, उन चीज़ों के लिए तैयार रहने की ज़रूरत है जो बिना किसी चेतावनी के हम पर आती हैं। यदि आप तब तक प्रतीक्षा करते हैं जब तक कि यह आपके ऊपर न आ जाए, तो आप वास्तव में इसके लिए तैयार नहीं होंगे। तैयारी करने में बहुत देर हो जाएगी।

जब मेरे बच्चे छोटे थे और ड्राइविंग शुरू करने के लिए तैयार हो रहे थे, तो मैंने फैसला किया कि अंधेरी सुनसान सड़क पर कहीं टायर फटने तक इंतजार करना अच्छा विचार नहीं है और उन्हें यह सीखने के लिए कोई मदद नहीं मिल रही है कि गाड़ी कैसे बदलें। सपाट टायर। इसलिए, हमने सड़क पर एक अच्छा, आरामदायक दिन चुना और सीखा कि टायर कैसे बदलना है।

समय से पहले तैयारी करें क्योंकि जब वास्तविक परिस्थिति आएगी, तो हो सकता है कि आप वास्तव में मूड में न हों। कभी-कभी मैं नौकरी की किताब के बारे में ऐसा ही सोचता हूँ। मुझे यकीन नहीं है कि यह पढ़ने के लिए एक अच्छी किताब है जब आपने वास्तव में पीड़ा शुरू कर दी है क्योंकि आपको इसके माध्यम से बहुत धैर्यपूर्वक काम करना पड़ता है, जो कि यह जो देना है उसे प्राप्त करने के लिए लगभग थका देने वाला होता है। जब दुख हम पर हावी हो जाता है, तो हमारा उस पर ध्यान ही नहीं जाता; हमारे पास ध्यान देने की क्षमता नहीं है।

इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि हम सबक सीखने का प्रयास करें, उन सोच बिंदुओं को अपने अंदर समाहित करें और समझ के भंडार को भरें, ताकि जीवन में ज़रूरत पड़ने पर हम इसका उपयोग कर सकें।

नौकरी हमें आराम पहुंचाने के लिए नहीं है [4:20-5:01]

तो चलिए इसके बारे में कुछ बात करते हैं। क्या किताब आराम देती है? निश्चित रूप से इसका इरादा यह नहीं है। यह आपको आराम देने की कोशिश नहीं कर रहा है। अय्यूब को दोस्तों या परिवार या यहोवा से आराम नहीं मिलता है। यह स्पष्टीकरण या उत्तर के माध्यम से आराम नहीं

देता है। और वास्तव में, जब पुनर्स्थापना होती है, तब भी इसका उद्देश्य आराम लाना नहीं होता है। नहीं, किताब से आराम नहीं मिलता। हमें इसे लागू करने के बारे में इस तरह नहीं सोचना चाहिए।

नौकरी स्वीकार्यता सिखाती है और सोचने के बिंदुओं को प्रोत्साहित करती है [5:01-7:46]

आराम का विकल्प यह है कि किताब हमें स्वीकार्यता सीखने में मदद करती है। हमारे दर्द या पीड़ा पर एक संशोधित दृष्टिकोण प्राप्त करने में स्वीकृति पाई जाती है। यह हमें अपने बारे में और अपनी स्थिति के बारे में अलग-अलग दृष्टि से सोचने और ईश्वर को नई रोशनी में देखने में मदद करता है। यह पुस्तक हमें जीवन में जो कुछ भी सामना करती है, उसे स्वीकार करने में मदद कर सकती है, चाहे वह कितना भी कठिन क्यों न हो।

मैं इसे किसी ऐसी चीज़ तक सीमित करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ जिसे वास्तव में हथियारों की लंबाई पर रखा जा सके। हम जानते हैं कि पीड़ा ऐसी नहीं है। अय्यूब की पुस्तक हमें ईश्वर के नियंत्रण की सीमाओं के बजाय ईश्वर के नियंत्रण की शर्तों को समझने में मदद करती है, ईश्वर के नियंत्रण की शर्तों और इससे हमें क्या उम्मीद करनी चाहिए या क्या उम्मीद नहीं करनी चाहिए। उम्मीदें बहुत महत्वपूर्ण हैं। हमें स्पष्टीकरणों में आराम पाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। हम उस तरीके को स्वीकार करना चाहते हैं जिस तरह से भगवान ने दुनिया को काम करने के लिए बनाया है, यह स्वीकार करना चाहते हैं कि हम जो अनुभव करते हैं वह व्यर्थ नहीं है।

पुस्तक हमें आशा और विश्वास करने का कारण प्रदान करती है। इसलिए, हमारे पास यहां मार्चिंग आदेशों का एक सेट नहीं है, एक उपचारात्मक एप्लिकेशन है, जो हमें बताता है कि इस सप्ताह कैसे कार्य करना है। यह हमारी अपर्याप्तताओं या हमारी विफलताओं का सामना कर सकता है, लेकिन यह वित्तीय संकट में बिलों का भुगतान करने जैसा है। आप बस बिलों की बाढ़ से निपटने का प्रयास करें। लेकिन यह हमें सीखना, सोचना सिखा रहा है। इन चिंतन बिंदुओं को मैं रचनात्मक अनुप्रयोग कहता हूँ। इसमें जो सही है उसे करने से कहीं अधिक शामिल है। यह हमें यह सोचने की राह पर ले जाता है कि क्या सही है, अच्छी सोच की आदतें और दिनचर्या अपनाने की राह पर। इसमें शामिल है कि हम अपने बारे में कैसे सोचते हैं, हम अपने आसपास की दुनिया के बारे में कैसे सोचते हैं। और निःसंदेह, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम ईश्वर के बारे में कैसे

सोचते हैं। यह जीवन भर के लिए आंतरिक संसाधनों का आधार प्रदान करता है जो हमें उन परिस्थितियों का अच्छी तरह से जवाब देने में मदद करेगा जिनका हम सामना कर सकते हैं। वित्तीय संकट में बकाया बिलों का भुगतान करने के बजाय, यह एक बचत खाता खोलने और भविष्य के लिए बैंक में पैसा रखने जैसा है। हममें से कोई भी आमने-सामने रहना पसंद नहीं करता।

ईश्वर पिकायुन नहीं है [7:46-8:59]

तो, ईश्वर के बारे में कौन से विचार बिंदु हैं जिन्हें हम अपने जीवन और अपनी सोच पर लागू कर सकते हैं? भगवान पिकायुन नहीं है। अनुशासन के बावजूद, निःसंदेह, परमेश्वर उन लोगों को अनुशासित करता है जिनसे वह प्रेम करता है। परन्तु अनुग्रह स्मरण रखो; परमेश्वर अनुग्रह का परमेश्वर है।

मेरी हाल ही में एक ऐसे व्यक्ति से बातचीत हुई जो जीवन भर कट्टर ईसाई रहा। वे अब एक लाइलाज बीमारी के अंतिम दौर में थे। उन्होंने कुछ डर व्यक्त किया कि, किसी तरह, ईसा मसीह के सामने खड़े होने पर वे आलोचना के घेरे में आ जायेंगे कि उन्होंने पर्याप्त काम नहीं किया है। इस व्यक्ति ने अपना पूरा जीवन ईश्वर की निःस्वार्थ सेवा में बिताया था, और इस बात का थोड़ा आभास था कि ईश्वर पिकायुन है। कृपा याद रखें।

ईश्वर हमारे प्रति जवाबदेह नहीं है [8:59-9:18]

ईश्वर के बारे में सोचने का एक और बिंदु वह है जिसका उल्लेख हम पहले ही कुछ बार कर चुके हैं। भगवान हमारे प्रति जवाबदेह नहीं है। यह कभी न सोचें कि ईश्वर हमारे प्रति जवाबदेह है। हमें ईश्वर के प्रति ऐसे संदेह नहीं पालने चाहिए कि हम उस पर संदेह करने और उसके बारे में सबसे बुरा सोचने को तैयार हो जाएं।

ईश्वर कोई अराजक प्राणी नहीं है [9:18-9:53]

सोचने का एक अन्य बिंदु यह है कि ईश्वर मनमाना होने के बजाय सुसंगत है। वह बुरा होने के बजाय अच्छा है। अनियंत्रित शक्ति का दुरुपयोग करने के बजाय अनुग्रह का प्रदर्शन करना उनकी

विशेषता है। ईश्वर कोई अराजक प्राणी नहीं है जो शक्तिशाली, शरारती, मनमाना, अनैतिक, प्रवृत्ति और स्वार्थ से प्रेरित हो। ईश्वर कोई अराजक प्राणी नहीं है।

भगवान की कीमत पर अपना बचाव नहीं करना चाहिए [9:53-10:13]

सोचने का एक और बिंदु, हमें ईश्वर की कीमत पर खुद को सही साबित नहीं करना चाहिए या खुद को सही नहीं ठहराना चाहिए। हम पहले ही इन मुद्दों के बारे में बुक ऑफ जॉब में बात कर चुके हैं, और हमें उन्हें अपने जीवन और अपनी सोच में समाहित करना होगा।

ईश्वर के साथ छेड़छाड़ करना एक बुरा विचार है [10:13-10:51]

ईश्वर के साथ छेड़छाड़ करना हमेशा एक बुरा विचार है - हमेशा एक बुरा विचार। हम परमेश्वर को बदलने का प्रयास करने का साहस नहीं करते। उसे हमें बदलने की जरूरत है। कोई भी तस्वीर जो हम सोचते हैं कि हम ईश्वर के साथ उसे अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए मजबूर करने के लिए बना सकते हैं, अंत में उसे कमजोर कर देगी। आप वह परिणाम नहीं चाहते। हम ऐसा ईश्वर नहीं चाहते जो हमारे कहने और बुलाने पर निर्भर हो। ऐसा भगवान कोई भगवान नहीं है। हमें कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि हम परमेश्वर पर उसके वादों को फेंककर उसे एक कोने में धकेल सकते हैं; संभवतः, जिनका हम उपयोग कर रहे हैं वे वैसे भी वादे नहीं हैं। या, जैसा कि अय्यूब ने किया था, अपनी बेगुनाही की प्रतिज्ञा के साथ, भगवान को हेरफेर करने की कोशिश कर रहा था। हम उसका समर्थन एक कोने में नहीं कर सकते। हम नहीं चाहते। हम नहीं चाहिए।

हम भगवान से मांग नहीं कर सकते [10:51-12:44]

हमें कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि हम यह मांग कर सकते हैं कि ईश्वर हमारे चुने हुए समय पर हमारे निर्दिष्ट तंत्रों द्वारा हमें उत्तर दे। हम मांग करने की स्थिति में नहीं हैं। हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि चूँकि हम अपने आप को वफ़ादार मानते हैं इसलिए ईश्वर हमसे इस प्रकार की प्रतिक्रिया चाहता है जो हम चाहते हैं। भगवान का हम पर कुछ भी बकाया नहीं है। हमने कुछ भी नहीं कमाया है। हम उन परिणामों के लिए प्रार्थना करने में स्वतंत्र महसूस कर सकते हैं जो हम चाहते हैं, उपचार, मार्गदर्शन, जो भी हो, लेकिन इस प्रक्रिया में, भगवान को भगवान बनने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए। इसका कोई दूसरा तरीका नहीं हो सकता। कभी-कभी हमें उन समस्याओं से ठीक होने के बजाय

शारीरिक समस्याओं के साथ जीने के लिए उसकी ताकत की आवश्यकता होती है। हमें इसे स्वीकार करना होगा। कभी-कभी हमें अपनी परिस्थितियों को बदलने के लिए प्रेरित करने के बजाय उस स्थिति में बने रहने के लिए उसके प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है जो हमें अस्थिर लगती है। आखिरकार, प्रभु की प्रार्थना याद रखें, "तुम्हारा राज्य आये" - मेरा नहीं। "तुम्हारी इच्छा पूरी होगी" - मेरी नहीं।

निष्काम धार्मिकता [12:44-14:55]

भगवान जिन प्रार्थनाओं का उत्तर देने में सबसे अधिक प्रसन्न होते हैं, वे वे हैं जो उनसे हमें ऐसे लोगों के रूप में आकार देने के लिए कहती हैं जो जहां भी वे हमें रखें, उनकी सेवा और सम्मान कर सकें। तो, आइये निष्काम धार्मिकता के इस मुद्दे पर आते हैं। अय्यूब दर्शाता है कि ऐसी कोई चीज़ है। और इसलिए, क्या हमारी धार्मिकता और विश्वासयोग्यता उदासीन है? यदि आज हम अपने जीवन में परमेश्वर के आशीर्वाद के सभी प्रमाण खो देते, जैसा कि अय्यूब ने किया था, यदि हमारे पास भविष्य के आशीर्वाद, स्वर्ग, या अनन्त जीवन की कोई आशा नहीं थी, यही वह स्थिति है जिस पर इब्राहीम को विचार करना पड़ा, तो क्या हम तब भी वफादार बने रहेंगे भगवान के लिए और अपने जीवन से उसकी सेवा करो? क्या हम उसकी सेवा इसलिए करते हैं क्योंकि वह योग्य है या इसलिए कि वह उदार है? यह एक सरल प्रश्न है। यदि कोई लाभ न हो तो क्या हम उसकी सेवा करेंगे? हम ऐसी यात्रा पर नहीं हैं जिसके अंत में पुरस्कार मिले। हम एक ऐसे रिश्ते में हैं जिसमें जिम्मेदारियां हैं। मसीह के माध्यम से परमेश्वर के साथ हमारा रिश्ता सिर्फ हमारे पापों से बचाए जाने के बारे में नहीं है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह एक बुलाहट और एक रिश्ते के लिए बचाए जाने के बारे में है, भगवान के साथ एक रिश्ता जहां हम राज्य के काम में भागीदार हैं। मसीह के माध्यम से ईश्वर के साथ हमारा रिश्ता हमें वह नया दर्जा, वह नई पहचान, ईश्वर के राज्य में भागीदार, उसकी योजनाओं और उद्देश्यों की दिशा में काम करता है। रिश्ता स्वर्ग तक रुका नहीं है। मसीह में होना स्वर्ग से बंधे होने से अधिक महत्वपूर्ण है।

1 पतरस 3:15 पीड़ा के संदर्भ में आशा का उत्तर [14:55-16:55]

1 पतरस, 3:15 "अपने हृदयों में मसीह को प्रभु मानकर आदर करो। जो कोई तुमसे तुम्हारी आशा का कारण पूछे, उसे उत्तर देने के लिए सदैव तैयार रहो।" मुझे यह अविश्वसनीय लगता है कि हम अक्सर उस श्लोक का उपयोग ऐसे करते हैं जैसे कि यह क्षमा मांगने का आह्वान हो। और इसलिए, आशा के लिए एक कारण देना हमारे सभी विश्वासों के लिए एक कारण और व्याख्या देना है। यह वह नहीं है जो श्लोक कहता है, और यह वह नहीं है जो संदर्भ इंगित करता है। यह पीड़ा के बारे में एक अंश है। और जब यह कहता है, "हर उस व्यक्ति को उत्तर देने के लिए तैयार रहें जो आपसे आपकी आशा का कारण पूछता है," तो यह उस स्थिति का संदर्भ दे रहा है जहां आप स्पष्ट रूप से पीड़ित हैं, और आपके आस-पास हर कोई इसे जानता है और इसे देखता है। जब वे आपको आशा के साथ प्रतिक्रिया करते हुए देखते हैं, तो वे अब भी यही चाहते हैं। वे पूछने वाले हैं कि जब आपका जीवन इतनी जर्जर अवस्था में हो तो आप आशा से कैसे भरे रह सकते हैं? और पतरस कहता है, उत्तर तैयार रखो। यह हमारे बारे में यह समझाने के बारे में है कि हम ईश्वर के बारे में, दुनिया के बारे में, पीड़ा के बारे में कैसे सोचते हैं। उत्तर देने के लिए तैयार रहें।

ईश्वर की बुद्धि और हमारे भरोसे की प्रतिक्रिया [16:55-17:41]

यदि हम वास्तव में विश्वास करते हैं कि ईश्वर बुद्धिमान है और हम नहीं हैं, तो हम अपनी समझ की कमी के बावजूद नियंत्रण उसे सौंप सकते हैं। जब हम अतीत की ओर देखते हैं, तो हम कारणों की तलाश कर रहे होते हैं; हमें उद्देश्य की तलाश में भविष्य की ओर देखना चाहिए। हमें यह कल्पना करने की ज़रूरत नहीं है कि कोई स्पष्टीकरण है। हम भगवान, भगवान को बाहर नहीं कर सकते। ये वे बिंदु हैं जो हमने देखे हैं। हमें ऐसी धार्मिकता बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए जो हमें मिलने वाले लाभों पर आधारित न हो। भगवान की बुद्धि प्रबल है। विश्वास ही एकमात्र संभावित प्रतिक्रिया है।

द शोक: ईश्वर अच्छा है [17:41-20:25]

विलियम पॉल यंग के काफी विवादास्पद उपन्यास द शोक में इसे बहुत मार्मिक ढंग से सामने लाया गया है। लोगों को पुस्तक में बहुत सी चीज़ें विवादास्पद लगीं, और हो सकता है कि उनमें से कुछ उचित ही हों। लेकिन मैंने पाया कि पुस्तक में कुछ अविश्वसनीय अंतर्दृष्टियाँ थीं। मैं पुस्तक के अंत से

दो छोटे अंश पढ़ना चाहता हूँ, क्योंकि ईश्वर की आकृति उस पात्र से बात कर रही है जो पीड़ित है। हमने अय्यूब की पुस्तक से जो सीखा है उसके आलोक में इसे सुनें। "आप वास्तविकता की एक बहुत छोटी और अधूरी तस्वीर के आधार पर उस दुनिया को समझने की कोशिश करते हैं जिसमें आप रहते हैं। यह चोट, दर्द, आत्म-केंद्रितता और शक्ति की एक छोटी सी गांठ के माध्यम से एक परेड को देखने और यह विश्वास करने जैसा है कि आप हैं अपने आप में और महत्वहीन। इन सभी विचारों में शक्तिशाली झूठ शामिल हैं। आप दर्द और मृत्यु को अंतिम बुराइयों के रूप में देखते हैं, और ईश्वर अंतिम विश्वासघाती है या, शायद, सबसे अच्छा, मौलिक रूप से अविश्वसनीय है। आप शर्तों को निर्धारित करते हैं और मेरे कार्यों का न्याय करते हैं और मुझे ढूँढते हैं दोषी। आपके जीवन में वास्तविक अंतर्निहित दोष यह है कि आप नहीं सोचते कि मैं अच्छा हूँ। यदि आप जानते थे कि मैं अच्छा था और व्यक्तिगत जीवन की हर चीज का अर्थ, अंत और सभी प्रक्रियाएं मेरी अच्छाई से आच्छादित हैं, तो हालाँकि आप हमेशा यह नहीं समझ सकते कि मैं क्या कर रहा हूँ, आप मुझ पर भरोसा करेंगे, लेकिन आप ऐसा नहीं करते। आप विश्वास पैदा नहीं कर सकते, जैसे आप विनम्रता नहीं कर सकते। यह या तो है या नहीं है। विश्वास एक रिश्ते का फल है जो तुम जानते हो कि तुम से प्रेम किया जाता है। क्योंकि तुम नहीं जानते कि मैं तुम से प्रेम करता हूँ, तुम भरोसा नहीं कर सकते।"

ROMI 11:33-35: उनकी बुद्धि की गहराई [20:25-23:05]

शक्तिशाली अंतर्दृष्टि. यह हममें से कई लोगों का वर्णन करता है। हम ईश्वर पर संदेह तब करने लगते हैं जब हमारा जीवन बर्बाद हो रहा होता है। मैं रोमियों अध्याय 11, श्लोक 33 से 35 के एक सुप्रसिद्ध अंश के साथ अपनी बात समाप्त करता हूँ। यह एक स्तुतिगान है जिसे हमने कई बार सुना है लेकिन इसके बारे में अय्यूब की पुस्तक के प्रकाश में सोचते हैं। और जैसे-जैसे मैं इसे पढ़ूंगा, मैं इसका विस्तार करता जाऊंगा। "हे भगवान की बुद्धि और ज्ञान के धन की गहराई।" ध्यान दें कि यह कैसे ज्ञान और परमेश्वर के ज्ञान के धन की गहराई को रेखांकित करता है। लेकिन फिर अगली पंक्ति देखें. "उसके निर्णय कितने अप्राप्य हैं।" निर्णय, यही उसका न्याय है। हम इसी बारे में बात कर रहे हैं। "उसके निर्णय कितने अप्राप्य हैं।" आप यह सब काम नहीं कर सकते, "और उसके

रास्ते पता लगाने से परे हैं।" फिर यह अगले तार्किक स्थान पर चला जाता है। अगला महान कदम है "जिसने प्रभु के मन को जान लिया है।" हम समझ नहीं पा रहे कि वह क्या कर रहा है। "या उसका सलाहकार कौन रहा है।" एक मिनट के लिए भी मत सोचो; आप उसे सलाह दे सकते हैं, उसे बेहतर तरीका बता सकते हैं, यह सब समझा सकते हैं। और फिर यह ठीक उसी मुद्दे पर आ जाता है, "जिसने कभी भगवान को कुछ दिया है, भगवान उसे उसका बदला चुकाए।" उसका हम पर कुछ भी बकाया नहीं है। हम किसी भी चीज़ के लायक नहीं हैं। और फिर यह स्तुति के एक चपरासी के साथ समाप्त होता है "क्योंकि उसी से और उसी के द्वारा और उसी को सब कुछ है। और उसी की महिमा सर्वदा होती रहे।" -- विश्वास।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह नौकरी की पुस्तक का सत्र 30 अनुप्रयोग है। [23:05]